सहाइफ़-ए-हिकमत

असल इब्रानी मतन से
नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिन्क्स रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

The Wisdom Books and Psalms. Job-Song of Songs in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew
Urdu Geo Version (UGV)
© 2010 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broadstreet, #169, Glen Allen, Virginia
23060, United States of America

www.urdugeoversion.com

फ़हरिस्त-ए-कुतुब

सहाइफ़-ए-हिकमत और ज़बूर

अय्यूब	**7**	**वाइज़**	**184**
ज़बूर	**45**	**ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात**	**196**
अम्साल	**150**		

हर्फ़-ए-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आप के हाथ में किताब-ए-मुक़द्दस का नया उर्दू तर्जुमा है। यह इलाही किताब इन्सान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इस में इन्सान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उस के लिए उस की मर्ज़ी और मन्शा का इज़हार है।

किताब-ए-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मज्मूआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहाइफ़, हिक्मत और ज़बूर के सहाइफ़, और अन्बिया के सहाइफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजील-ए-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इब्रानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेर-ए-नज़र मतन इन ज़बानों का बराह-ए-रास्त तर्जुमा है। मुतर्जिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़्हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतर्जिमीन को दो सवालों का सामना है: पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तर्जुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तर्जुमा करना मक़्सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाश्नी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतर्जिम को फ़ैसला करना होता है कि कहां तक वुह लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ तर्जुमा करे और कहां तक उर्दू ज़बान की सिह्हत, ख़ूबसूरती और चाश्नी को मद्द-ए-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तर्जुमा करे। मुख़्तलिफ़ तर्जुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा बहत फ़रक़ नज़र आता है उस का यही सबब है कि एक मुतर्जिम असल अल्फ़ाज़ का ज़ियादा पाबन्द रहा है जबकि दूसरे ने मफ़्हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तर्जुमे में जहां तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उन्वानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उन को महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अन्बिया के लिए इज़्ज़त के वुह अल्क़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिन का आज कल रिवाज है, इस लिए इल्हामी मतन के एह्तिराम को मल्हूज़-ए-ख़ातिर रखते हुए तर्जुमे में अल्क़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताब-ए-मुक़द्दस में मज़्कूर जवाहिरात का तर्जुमा जदीद साएंसी तह्क़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़्दारें क़दरे बदल गईं इस लिए तर्जुमे में उन की अदाएगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहां रूह का लफ़्ज़ सीग़ा-ए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहां उस से मुराद रूह-उल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ा-ए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजील-ए-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़्ल से इंजील-ए-मुक़द्दस के कई उर्दू तर्जुमे दस्तयाब हैं। इन सब का मक़्सद यही है कि असल ज़बान का मफ़्हूम अदा किया जाए। इन का आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तर्जुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़्हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यूँ मुख़्तलिफ़ तर्जुमे मिल कर कलाम-ए-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तर्जुमा भी उस के ज़िन्दा कलाम का मतलब और मक़्सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़ियादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 मुल्क-ए-ऊज़ में एक बेइल्ज़ाम आदमी
रहता था जिस का नाम अय्यूब था।
वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़
मानता और हर बुराई से दूर रहता था। 2उस
के सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 3साथ
साथ उस के बहुत माल-मवेशी थे : 7,000
भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500
जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उस के बेशुमार
नौकर-नौकरानियाँ भी थे। ग़रज़ मशरिक़ के
तमाम बाशिन्दों में इस आदमी की हैसियत
सब से बड़ी थी।

4उस के बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी
अपने घरों में ज़ियाफ़त करें। इस के लिए
वह अपनी तीन बहनों को भी अपने साथ
खाने और पीने की दावत देते थे। 5हर दफ़ा
जब ज़ियाफ़त के दिन इख़तिताम तक पहुँचते
तो अय्यूब अपने बच्चों को बुला कर उन्हें
पाक-साफ़ कर देता और सुब्ह-सवेरे उठ कर
हर एक के लिए भस्म होने वाली एक एक
क़ुर्बानी पेश करता। क्यूँकि वह कहता था, "हो
सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में
अल्लाह पर लानत की हो।" चुनाँचे अय्यूब
हर ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही करता था।

अय्यूब के किरदार पर इल्ज़ाम

6एक दिन फ़रिश्ते[a] अपने आप को रब के
हुज़ूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के
दरमियान मौजूद था। 7रब ने इब्लीस से पूछा,
"तू कहाँ से आया है?" इब्लीस ने जवाब
दिया, "मैं दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता
रहा।"

8रब बोला, "क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर
तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और
नहीं। क्यूँकि वह बेइल्ज़ाम है, वह सीधी राह
पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर
बुराई से दूर रहता है।"

9इब्लीस ने रब को जवाब दिया, "बेशक,
लेकिन क्या अय्यूब यूँ ही अल्लाह का ख़ौफ़
मानता है? 10तू ने तो उस के, उस के घराने
के और उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द
हिफ़ाज़ती बाड़ लगाई है। और जो कुछ उस के
हाथ ने किया उस पर तू ने बरकत दी, नतीजे
में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पूरे
मुल्क में फैल गए हैं। 11लेकिन वह क्या करेगा
अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर सब कुछ
तबाह करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह
पर ही तुझ पर लानत करेगा।"

12रब ने इब्लीस से कहा, "ठीक है, जो कुछ
भी उस का है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

के बदन को हाथ न लगाना।" इब्लीस रब के हुज़ूर से चला गया।

13एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के मुताबिक़ ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे। 14अचानक एक क़ासिद अय्यूब के पास पहुँच कर कहने लगा, "बैल खेत में हल चला रहे थे और गधियाँ साथ वाली ज़मीन पर चर रही थीं 15कि सबा के लोगों ने हम पर हम्ला करके सब कुछ छीन लिया। उन्हों ने तमाम मुलाज़िमों को तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

16वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और क़ासिद पहुँचा जिस ने इत्तिला दी, "अल्लाह की आग ने आसमान से गिर कर आप की तमाम भेड़-बकरियों और मुलाज़िमों को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

17वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा क़ासिद पहुँचा। वह बोला, "बाबल के कस्दियों ने तीन गुरोहों में तक़्सीम हो कर हमारे ऊँटों पर हम्ला किया और सब कुछ छीन लिया। तमाम मुलाज़िमों को उन्हों ने तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

18वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा क़ासिद पहुँचा। उस ने कहा, "आप के बेटे-बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे 19कि अचानक रेगिस्तान की जानिब से एक ज़ोरदार आँधी आई जो घर के चारों कोनों से यूँ टकराई कि वह जवानों पर गिर पड़ा। सब के सब हलाक हो गए। सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।"

20यह सब कुछ सुन कर अय्यूब उठा। अपना लिबास फाड़ कर उस ने अपने सर के बाल मुंडवाए। फिर उस ने ज़मीन पर गिर कर औंधे मुँह रब को सिज्दा किया। 21वह बोला, "मैं नंगी हालत में माँ के पेट से निकला और नंगी हालत में कूच कर जाऊँगा। रब ने दिया, रब ने लिया, रब का नाम मुबारक हो!"

22इस सारे मुआमले में अय्यूब ने न गुनाह किया, न अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका।

अय्यूब पर बीमारी का हम्ला

2 एक दिन फ़रिश्ते[a] दुबारा अपने आप को रब के हुज़ूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के दरमियान मौजूद था। 2रब ने इब्लीस से पूछा, "तू कहाँ से आया है?" इब्लीस ने जवाब दिया, "मैं दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता रहा।" 3रब बोला, "क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर तवज्जुह दी? ज़मीन पर उस जैसा कोई और नहीं। वह बेइल्ज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है। अभी तक वह अपने बेइल्ज़ाम किरदार पर क़ाइम है हालाँकि तू ने मुझे उसे बिलावजह तबाह करने पर उकसाया।"

4इब्लीस ने जवाब दिया, "खाल का बदला खाल ही होता है! इन्सान अपनी जान को बचाने के लिए अपना सब कुछ दे देता है। 5लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर उस का जिस्म[b] छू दे? तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।"

6रब ने इब्लीस से कहा, "ठीक है, वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।" 7इब्लीस रब के हुज़ूर से चला गया और अय्यूब को सताने लगा। चाँद से ले कर तल्वे तक अय्यूब के पूरे जिस्म पर बदतरीन क़िस्म के फोड़े निकल आए। 8तब अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे से अपनी जिल्द को खुरचने लगा।

9उस की बीवी बोली, "क्या तू अब तक अपने बेइल्ज़ाम किरदार पर क़ाइम है? अल्लाह पर लानत करके दम छोड़ दे!" 10लेकिन उस ने जवाब दिया, "तू अहमक़

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : गोश्त-पोस्त और हड्डियाँ।

औरत की सी बातें कर रही है। अल्लाह की तरफ़ से भलाई तो हम क़बूल करते हैं, तो क्या मुनासिब नहीं कि उस के हाथ से मुसीबत भी क़बूल करें?" इस सारे मुआमले में अय्यूब ने अपने मुँह से गुनाह न किया।

अय्यूब के तीन दोस्त

11अय्यूब के तीन दोस्त थे। उन के नाम इलीफ़ज़ तेमानी, बिल्दद सूख़ी और ज़ूफ़र नामाती थे। जब उन्हें इत्तिला मिली कि अय्यूब पर यह तमाम आफ़त आ गई है तो हर एक अपने घर से रवाना हुआ। उन्हों ने मिल कर फ़ैसला किया कि इकट्ठे अफ़्सोस करने और अय्यूब को तसल्ली देने जाएंगे। 12जब उन्हों ने दूर से अपनी नज़र उठा कर अय्यूब को देखा तो उस की इतनी बुरी हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता था। तब वह ज़ार-ओ-क़तार रोने लगे। अपने कपड़े फाड़ कर उन्हों ने अपने सरों पर ख़ाक डाली। 13फिर वह उस के साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अर्से में उन्हों ने अय्यूब से एक भी बात न की, क्यूँकि उन्हों ने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

अय्यूब की आह-ओ-ज़ारी

3 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन पर लानत करने लगा। 2उस ने कहा,

3"वह दिन मिट जाए जब मैं ने जन्म लिया,
वह रात जिस ने कहा, 'पेट में लड़का पैदा हुआ है!' 4वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए,
एक किरन भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो बुलन्दियों पर है उस का ख़याल न करे।
5तारीकी और घना अंधेरा उस पर क़ब्ज़ा करे,
काले काले बादल उस पर छाए रहें, हाँ वह रौशनी से महरूम हो कर सख़्त दह्शतज़दा हो जाए। 6घना अंधेरा उस रात को छीन ले जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ। उसे न साल,
न किसी महीने के दिनों में शुमार किया जाए।
7वह रात बाँझ रहे, उस में ख़ुशी का नारा न लगाया जाए। 8जो दिनों पर लानत भेजते और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के क़ाबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें। 9उस रात के धुन्दल्के में टिमटिमाने वाले सितारे बुझ जाएँ, फ़ज्र का इन्तिज़ार करना बेफ़ाइदा ही रहे बल्कि वह रात तुलू-ए-सुब्ह की पलकें[a] भी न देखे। 10क्यूँकि उस ने मेरी माँ को मुझे जन्म देने से न रोका, वर्ना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों से छुपी रहती।

11मैं पैदाइश के वक़्त क्यूँ मर न गया, माँ के पेट से निकलते वक़्त जान क्यूँ न दे दी? 12माँ के घुटनों ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यूँ कहा, उस की छातियों ने मुझे दूध क्यूँ पिलाया? 13अगर यह न होता तो इस वक़्त मैं सुकून से लेटा रहता, आराम से सोया होता। 14मैं उन ही के साथ होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुशीर थे, जिन्हों ने खंडरात अज़ सर-ए-नौ तामीर किए। 15मैं उन के साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। 16मुझे ज़ाए हो जाने वाले बच्चे की तरह क्यूँ न ज़मीन में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यूँ न दफ़नाया गया जिस ने कभी रौशनी न देखी? 17उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तग-ओ-दौ करते करते थक गए थे। 18वहाँ क़ैदी इत्मीनान से रहते हैं, उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी पड़ती जो उन्हें जीते जी हाँकता रहा। 19उस जगह छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, ग़ुलाम अपने मालिक से आज़ाद रहता है।

20अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और शिकस्तादिलों को ज़िन्दगी क्यूँ अता करता है? 21वह तो मौत के इन्तिज़ार में रहते हैं लेकिन बेफ़ाइदा। वह खोद खोद कर उसे यूँ तलाश करते हैं जिस तरह किसी पोशीदा

[a]पलकों से मुराद पहली किरनें है।

ख़ज़ाने को। 22अगर उन्हें क़ब्र नसीब हो तो
वह बाग़ बाग़ हो कर जश्न मनाते हैं। 23अल्लाह
उस को ज़िन्दा क्यूँ रखता जिस की नज़रों से
रास्ता ओझल हो गया है और जिस के चारों
तरफ़ उस ने बाड़ लगाई है। 24क्यूँकि जब मुझे
रोटी खानी है तो हाय हाय करता हूँ, मेरी आहें
पानी की तरह मुँह से फूट निकलती हैं। 25जिस
चीज़ से मैं डरता था वह मुझ पर आई, जिस
से मैं ख़ौफ़ खाता था उस से मेरा वास्ता पड़ा।
26न मुझे इत्मीनान हुआ, न सुकून या आराम
बल्कि मुझ पर बेचैनी ग़ालिब आई।"

इलीफ़ज़ का एतिराज़ : इन्सान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

4 यह कुछ सुन कर इलीफ़ज़ तेमानी ने
जवाब दिया,
2"क्या तुझ से बात करने का कोई फ़ाइदा
है? तू तो यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। लेकिन
दूसरी तरफ़ कौन अपने अल्फ़ाज़ रोक सकता
है? 3ज़रा सोच ले, तू ने ख़ुद बहुतों को
तर्बियत दी, कई लोगों के थकेमान्दे हाथों को
तक़वियत दी है। 4तेरे अल्फ़ाज़ ने ठोकर खाने
वाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते हुए
घुटने तू ने मज़बूत किए। 5लेकिन अब जब
मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बर्दाश्त
नहीं कर सकता, अब जब ख़ुद उस की ज़द
में आ गया तो तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 6क्या
तेरा एतिमाद इस पर मुन्हसिर नहीं है कि तू
अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी उम्मीद इस पर
नहीं कि तू बेइल्ज़ाम राहों पर चले?
7सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक
हुआ है? हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर
चलते हैं वह कभी रू-ए-ज़मीन पर से मिट
नहीं गए। 8जहाँ तक मैं ने देखा, जो नाइन्साफ़ी
का हल चलाए और नुक़्सान का बीज बोए वह
इस की फ़सल काटता है। 9ऐसे लोग अल्लाह
की एक फूँक से तबाह, उस के क़हर के एक
झोंके से हलाक हो जाते हैं। 10शेरबबर की
दहाड़ें ख़ामोश हो गईं, जवान शेर के दाँत झड़
गए हैं। 11शिकार न मिलने की वजह से शेर
हलाक हो जाता और शेरनी के बच्चे परागन्दा
हो जाते हैं।
12एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास
पहुँची, उस के चन्द अल्फ़ाज़ मेरे कान तक
पहुँच गए। 13रात को ऐसी रोयाएँ पेश आईं
जो उस वक़्त देखी जाती हैं जब इन्सान गहरी
नींद सोया होता है। इन से मैं परेशानकुन
ख़यालात में मुब्तला हुआ। 14मुझ पर दह्शत
और थरथराहट ग़ालिब आई, मेरी तमाम
हड्डियाँ लरज़ उठीं। 15फिर मेरे चेहरे के सामने
से हवा का झोंका गुज़र गया और मेरे तमाम
रोंगटे खड़े हो गए। 16एक हस्ती मेरे सामने
खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका, एक शक्ल
मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। ख़ामोशी थी,
फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, 17'क्या इन्सान
अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है,
क्या इन्सान अपने ख़ालिक़ के सामने पाक-
साफ़ ठहर सकता है?' 18देख, अल्लाह
अपने ख़ादिमों पर भरोसा नहीं करता, अपने
फ़रिश्तों को वह अहमक़ ठहराता है। 19तो
फिर वह इन्सान पर क्यूँ भरोसा रखे जो मिट्टी
के घर में रहता, ऐसे मकान में जिस की बुन्याद
ख़ाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह
कुचला जाता है। 20सुब्ह को वह ज़िन्दा है
लेकिन शाम तक पाश पाश हो जाता, अबद
तक हलाक हो जाता है, और कोई भी ध्यान
नहीं देता। 21उस के ख़ैमे के रस्से ढीले करो तो
वह हिक्मत हासिल किए बग़ैर इन्तिक़ाल कर
जाता है।

अल्लाह की तादीब तस्लीम कर

5 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब
देगा? कोई नहीं! मुक़द्दसीन में
से तू किस की तरफ़ रुजू कर सकता
है? 2क्यूँकि अहमक़ की रंजीदगी उसे मार
डालती, सादालौह की सरगर्मी उसे मौत के
घाट उतार देती है। 3मैं ने ख़ुद एक अहमक़
को जड़ पकड़ते देखा, लेकिन मैं ने फ़ौरन

ही उस के घर पर लानत भेजी। 4उस के
फ़र्ज़न्द नजात से दूर रहते। उन्हें शहर के
दरवाज़े में रौंदा जाता है, और बचाने वाला
कोई नहीं। 5भूके उस की फ़सल खा जाते,
काँटेदार बाड़ों में महफ़ूज़ माल भी छीन लेते
हैं। प्यासे अफ़राद हाँपते हुए उस की दौलत के
पीछे पड़ जाते हैं। 6क्यूँकि बुराई ख़ाक से नहीं
निकलती और दुख-दर्द मिट्टी से नहीं फूटता
7बल्कि इन्सान ख़ुद इस का बाइस है, दुख-
दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता है।
यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की
चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

8लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो
अल्लाह से दरयाफ़्त करता, उसे ही अपना
मुआमला पेश करता। 9वही इतने अज़ीम
काम करता है कि कोई उन की तह तक नहीं
पहुँच सकता, इतने मोजिज़े कि कोई उन्हें गिन
नहीं सकता। 10वही रू-ए-ज़मीन को बारिश
अता करता, खुले मैदान पर पानी बरसा
देता है। 11पस्तहालों को वह सरफ़राज़ करता
और मातम करने वालों को उठा कर महफ़ूज़
मक़ाम पर रख देता है। 12वह चालाकों के
मन्सूबे तोड़ देता है ताकि उन के हाथ नाकाम
रहें। 13वह दानिशमन्दों को उन की अपनी
चालाकी के फंदे में फंसा देता है तो होश्यारों
की साज़िशें अचानक ही ख़त्म हो जाती हैं।
14दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता,
और दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोल
कर फिरते हैं। 15अल्लाह ज़रूरतमन्दों को उन
के मुँह की तलवार और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े
से बचा लेता है। 16यूँ पस्तहालों को उम्मीद
दी जाती और नाइन्साफ़ी का मुँह बन्द किया
जाता है।

17मुबारक है वह इन्सान जिस की मलामत
अल्लाह करता है! चुनाँचे क़ादिर-ए-मुतलक़
की तादीब को हक़ीर न जान। 18क्यूँकि वह
ज़ख़्मी करता लेकिन मर्हम-पट्टी भी लगा देता
है, वह ज़र्ब लगाता लेकिन अपने हाथों से
शिफ़ा भी बख़्शता है। 19वह तुझे छः मुसीबतों
से छुड़ाएगा, और अगर इस के बाद भी कोई
आए तो तुझे नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। 20अगर
काल पड़े तो वह फ़िद्या दे कर तुझे मौत से
बचाएगा, जंग में तुझे तलवार की ज़द में आने
नहीं देगा। 21तू ज़बान के कोड़ों से महफ़ूज़
रहेगा, और जब तबाही आए तो डरने की
ज़रूरत नहीं होगी। 22तू तबाही और काल
की हंसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी जानवरों
से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। 23क्यूँकि तेरा खुले
मैदान के पत्थरों के साथ अह्द होगा, इस लिए
उस के जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से
ज़िन्दगी गुज़ारेंगे। 24तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा
महफ़ूज़ है। जब तू अपने घर का मुआइना
करे तो मालूम होगा कि कुछ गुम नहीं हुआ।
25तू देखेगा कि तेरी औलाद बढ़ती जाएगी,
तेरे फ़र्ज़न्द ज़मीन पर घास की तरह फैलते
जाएंगे। 26तू वक़्त पर जमाशुदा पूलों की तरह
उम्ररसीदा हो कर क़ब्र में उतरेगा।

27हम ने तहक़ीक़ करके मालूम किया है कि
ऐसा ही है। चुनाँचे हमारी बात सुन कर उसे
अपना ले!"

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझ से क्या ग़लती हुई है

6 तब अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2"काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया
जा सके और मेरी मुसीबत तराज़ू में तोली जा
सके! 3क्यूँकि वह समुन्दर की रेत से ज़्यादा
भारी हो गई है। इसी लिए मेरी बातें बेतुकी
सी लग रही हैं। 4क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़ के
तीर मुझ में गड़ गए हैं, मेरी रूह उन का ज़हर
पी रही है। हाँ, अल्लाह के हौलनाक हमले
मेरे ख़िलाफ़ सफ़आरा हैं। 5क्या जंगली गधा
ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास दस्तयाब
हो? या क्या बैल डकराता है जब उसे चारा
हासिल हो? 6क्या फीका खाना नमक के

बग़ैर खाया जाता, या अंडे की सफेदी[a] में ज़ाइक़ा है? 7ऐसी चीज़ को मैं छूता भी नहीं, ऐसी ख़ुराक से मुझे घिन ही आती है।

8काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी आर्ज़ू पूरी करे! 9काश वह मुझे कुचल देने के लिए तय्यार हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ा कर मुझे हलाक करे। 10फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली होती बल्कि मैं मुस्तक़िल दर्द के मारे पेच-ओ-ताब खाने के बावुजूद ख़ुशी मनाता कि मैं ने क़ुद्दूस ख़ुदा के फ़रमानों का इन्कार नहीं किया।

11मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इन्तिज़ार करूँ, मेरा क्या अच्छा अन्जाम है कि सब्र करूँ? 12क्या मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा जिस्म पीतल जैसा मज़बूत है? 13नहीं, मुझ से हर सहारा छीन लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि कामयाबी का इम्कान ही नहीं रहा।

14जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से इन्कार करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है। 15मेरे भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती हैं। 16उस वक़्त वह बर्फ़ से भर कर गदली हो जाती हैं, 17लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गर्मी में ओझल हो जाती हैं। 18तब क़ाफ़िले अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन बेफ़ाइदा। वह रेगिस्तान में पहुँच कर तबाह हो जाते हैं। 19तैमा के क़ाफ़िले इस पानी की तलाश में रहते, सबा के सफ़र करने वाले ताजिर उस पर उम्मीद रखते हैं, 20लेकिन बेसूद। जिस पर उन्हों ने एतिमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ पहुँचते हैं तो शर्मिन्दा हो जाते हैं।

21तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम हौलनाक बात देख कर दह्शतज़दा हो गए हो। 22क्या मैं ने कहा, 'मुझे तोह्फ़ा दे दो, अपनी दौलत में से मेरी ख़ातिर रिश्वत दो, 23मुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाओ, फ़िद्या दे कर ज़ालिम के क़ब्ज़े से बचाओ'?

24मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मान कर ख़ामोश हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझ से ग़लती हुई है। 25सीधी राह की बातें कितनी तक्लीफ़दिह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस क़िस्म की तर्बियत हासिल होगी? 26क्या तुम समझते हो कि ख़ाली अल्फ़ाज़ मुआमले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रअन्दाज़ करते हो? 27क्या तुम यतीम के लिए भी क़ुरआ डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

28लेकिन अब ख़ुद फ़ैसला करो, मुझ पर नज़र डाल कर सोच लो। अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे रू-ब-रू झूट नहीं बोलता। 29अपनी ग़लती तस्लीम करो ताकि नाइन्साफ़ी न हो। अपनी ग़लती मान लो, क्यूँकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। 30क्या मेरी ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदिह बातें पहचान नहीं सकता?

अल्लाह मुझे क्यूँ नहीं छोड़ता?

7 इन्सान दुनिया में सख़्त ख़िदमत करने पर मज्बूर होता है, जीते जी वह मज़दूर की सी ज़िन्दगी गुज़ारता है। 2ग़ुलाम की तरह वह शाम के साय का आरज़ूमन्द होता, मज़दूर की तरह मज़दूरी के इन्तिज़ार में रहता है। 3मुझे भी बेमानी महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4जब बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म नहीं होगी, और मैं फ़ज्र तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। 5मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। 6मेरे दिन जूलाहे की नाल[b] से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने अन्जाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म हो गया है।

[a] या ख़त्मी का रस।

[b] यानी शटल।

7ऐ अल्लाह, ख़याल रख कि मेरी ज़िन्दगी
दम भर की ही है! मेरी आँखें आइन्दा कभी
ख़ुशहाली नहीं देखेंगी। 8जो मुझे इस वक़्त
देखे वह आइन्दा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी
तरफ़ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं। 9जिस
तरह बादल ओझल हो कर ख़त्म हो जाता
है उसी तरह पाताल में उतरने वाला वापस
नहीं आता। 10वह दुबारा अपने घर वापस
नहीं आएगा, और उस का मक़ाम उसे नहीं
जानता।

11चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो
मेरे मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा
हालत में बात करूँगा, अपने दिल की तल्ख़ी
का इज़हार करके आह-ओ-ज़ारी करूँगा।
12ऐ अल्लाह, क्या मैं समुन्दर या समुन्दरी
अज़दहा हूँ कि तू ने मुझे नज़रबन्द कर रखा
है? 13जब मैं कहता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे
तसल्ली दे, सोने से मेरा ग़म हल्का हो जाए'
14तो तू मुझे हौलनाक ख़्वाबों से हिम्मत हारने
देता, रोयाओं से मुझे दह्शत खिलाता है।
15मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता
हूँ, काश कोई मेरा गला घूँट कर मुझे मार डाले,
काश मैं ज़िन्दा न रहूँ बल्कि दम छोड़ूँ। 16मैं ने
ज़िन्दगी को रद्द कर दिया है, अब मैं ज़्यादा
देर तक ज़िन्दा नहीं रहूँगा। मुझे छोड़, क्यूँकि
मेरे दिन दम भर के ही हैं।

17इन्सान क्या है कि तू उस की इतनी क़दर
करे, उस पर इतना ध्यान दे? 18वह इतना
अहम तो नहीं है कि तू हर सुब्ह उस का
मुआइना करे, हर लम्हा उस की जाँच-पड़ताल
करे। 19क्या तू मुझे तकने से कभी नहीं बाज़
आएगा? क्या तू मुझे इतना सुकून भी नहीं
देगा कि पल भर के लिए थूक निगलूँ? 20ऐ
इन्सान के पहरेदार, अगर मुझ से ग़लती हुई
भी तो इस से मैं ने तेरा क्या नुक़्सान किया? तू
ने मुझे अपने ग़ज़ब का निशाना क्यूँ बनाया?
मैं तेरे लिए बोझ क्यूँ बन गया हूँ? 21तू
मेरा जुर्म मुआफ़ क्यूँ नहीं करता, मेरा क़ुसूर
दरगुज़र क्यूँ नहीं करता? क्यूँकि जल्द ही मैं
ख़ाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश भी करे
तो नहीं मिलूँगा, क्यूँकि मैं हूँगा नहीं।"

बिल्दद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

8 तब बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,
2"तू कब तक इस क़िस्म की बातें
करेगा? कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके
निकलेंगे? 3क्या अल्लाह इन्साफ़ का ख़ून
कर सकता, क्या क़ादिर-ए-मुतलक़ रास्ती को
आगे पीछे कर सकता है? 4तेरे बेटों ने उस
का गुनाह किया है, इस लिए उस ने उन्हें उन
के जुर्म के क़ब्ज़े में छोड़ दिया। 5अब तेरे
लिए लाज़िम है कि तू अल्लाह का तालिब
हो और क़ादिर-ए-मुतलक़ से इल्तिजा करे,
6कि तू पाक हो और सीधी राह पर चले। फिर
वह अब भी तेरी ख़ातिर जोश में आ कर तेरी
रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल करेगा।
7तब तेरा मुस्तक़बिल निहायत अज़ीम होगा,
ख़्वाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त क्यूँ
न हो।

8गुज़श्ता नस्ल से ज़रा पूछ ले, उस पर
ध्यान दे जो उन के बापदादा ने तहक़ीक़ात
के बाद मालूम किया। 9क्यूँकि हम ख़ुद कल
ही पैदा हुए और कुछ नहीं जानते, ज़मीन पर
हमारे दिन साय जैसे आरिज़ी हैं। 10लेकिन यह
तुझे तालीम दे कर बात बता सकते हैं, यह
तुझे अपने दिल में जमाशुदा इल्म पेश कर
सकते हैं। 11क्या आबी नर्सल वहाँ उगता है
जहाँ दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ फलता
फूलता है जहाँ पानी नहीं? 12उस की कोंपलें
अभी निकल रही हैं और उसे तोड़ा नहीं गया
कि अगर पानी न मिले तो बाक़ी हरियाली
से पहले ही सूख जाता है। 13यह है उन का
अन्जाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी
तरह बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14जिस
पर वह एतिमाद करता है वह निहायत ही
नाज़ुक है, जिस पर उस का भरोसा है वह
मकड़ी के जाले जैसा कमज़ोर है। 15जब वह

जाले पर टेक लगाए तो खड़ा नहीं रहता, जब
उसे पकड़ ले तो क़ाइम नहीं रहता।
16बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिन्द है।
उस की कोंपलें चारों तरफ़ फैल जाती, 17उस
की जड़ें पत्थर के ढेर पर छा कर उन में टिक
जाती हैं। 18लेकिन अगर उसे उखाड़ा जाए
तो जिस जगह पहले उग रही थी वह उस का
इन्कार करके कहेगी, 'मैं ने तुझे कभी देखा भी
नहीं।' 19यह है उस की राह की नाम-निहाद
ख़ुशी! जहाँ पहले था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन
से फूट निकलेंगे।
20यक़ीनन अल्लाह बेइल्ज़ाम आदमी को
मुस्तरद नहीं करता, यक़ीनन वह शरीर
आदमी के हाथ मज़बूत नहीं करता। 21वह
एक बार फिर तुझे ऐसी ख़ुशी बख़्शेगा कि तू
हंस उठेगा और शादमानी के नारे लगाएगा।
22जो तुझ से नफ़रत करते हैं वह शर्म से
मुलब्बस हो जाएंगे, और बेदीनों के ख़ैमे नेस्त-
ओ-नाबूद होंगे।"

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

9 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2"मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुरुस्त
है। लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इन्सान किस
तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? 3अगर वह
अदालत में अल्लाह के साथ लड़ना चाहे तो
उस के हज़ार सवालात पर एक का भी जवाब
नहीं दे सकेगा। 4अल्लाह का दिल दानिशमन्द
और उस की क़ुदरत अज़ीम है। कौन कभी
उस से बह्स-मुबाहसा करके कामयाब रहा
है?
5अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और
उन्हें पता ही नहीं चलता। वह ग़ुस्से में आ
कर उन्हें उलटा देता है। 6वह ज़मीन को हिला
देता है तो वह लरज़ कर अपनी जगह से हट
जाती है, उस के बुन्यादी सतून काँप उठते हैं।
7वह सूरज को हुक्म देता है तो तुलू नहीं होता,
सितारों पर मुहर लगाता है तो उन की चमक-
दमक बन्द हो जाती है।
8अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह
तान देता, वही समुन्दरी अज़दहे की पीठ
को पाँओ तले कुचल देता है। 9वही दुब्ब-ए-
अक्बर, जौज़े, ख़ोशा-ए-पर्वीन और जुनूबी
सितारों के झुर्मटों का ख़ालिक़ है। 10वह इतने
अज़ीम काम करता है कि कोई उन की तह
तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े करता
है कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 11जब वह
मेरे सामने से गुज़रे तो मैं उसे नहीं देखता,
जब वह मेरे क़रीब से फिरे तो मुझे मालूम नहीं
होता। 12अगर वह कुछ छीन ले तो कौन उसे
रोकेगा? कौन उस से कहेगा, 'तू क्या कर
रहा है?' 13अल्लाह तो अपना ग़ज़ब नाज़िल
करने से बाज़ नहीं आता। उस के रोब तले
रहब अज़दहे के मददगार भी दबक गए।
14तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस
तरह उस से बात करने के मुनासिब अल्फ़ाज़
चुन लूँ? 15अगर मैं हक़ पर होता भी तो
अपना दिफ़ा न कर सकता। इस मुख़ालिफ़
से मैं इल्तिजा करने के इलावा और कुछ नहीं
कर सकता। 16अगर वह मेरी चीख़ों का जवाब
देता भी तो मुझे यक़ीन न आता कि वह मेरी
बात पर ध्यान देगा।
17थोड़ी सी ग़लती के जवाब में वह मुझे
पाश पाश करता, बिलावजह मुझे बार बार
ज़ख़्मी करता है। 18वह मुझे साँस भी नहीं
लेने देता बल्कि कड़वे ज़हर से सेर कर देता
है। 19जहाँ ताक़त की बात है तो वही क़वी है,
जहाँ इन्साफ़ की बात है तो कौन उसे पेशी के
लिए बुला सकता है? 20गो मैं बेगुनाह हूँ तो
भी मेरा अपना मुँह मुझे क़ुसूरवार ठहराएगा,
गो बेइल्ज़ाम हूँ तो भी वह मुझे मुजरिम क़रार
देगा।
21जो कुछ भी हो, मैं बेइल्ज़ाम हूँ! मैं अपनी
जान की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िन्दगी
हक़ीर जानता हूँ। 22ख़ैर, एक ही बात है, इस
लिए मैं कहता हूँ, 'अल्लाह बेइल्ज़ाम और

बेदीन दोनों को ही हलाक कर देता है।' 23जब कभी अचानक कोई आफ़त इन्सान को मौत के घाट उतारे तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी पर हँसता है। 24अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले किया जाए तो अल्लाह उस के क़ाज़ियों की आँखें बन्द कर देता है। अगर यह उस की तरफ़ से नहीं तो फिर किस की तरफ़ से है?

25मेरे दिन दौड़ने वाले आदमी से कहीं ज़्यादा तेज़ी से बीत गए, ख़ुशी देखे बग़ैर भाग निकले हैं। 26वह सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र गए हैं, उस उक़ाब की तरह जो अपने शिकार पर झपट्टा मारता है। 27अगर मैं कहूँ, 'आओ मैं अपनी आहें भूल जाऊँ, अपने चेहरे की उदासी दूर करके ख़ुशी का इज़हार करूँ' 28तो फिर भी मैं उन तमाम तकालीफ़ से डरता हूँ जो मुझे बर्दाश्त करनी हैं। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह नहीं ठहराता।

29जो कुछ भी हो मुझे क़ुसूरवार ही क़रार दिया गया है, चुनाँचे इस का क्या फ़ाइदा कि मैं बेमानी तग-ओ-दौ में मसरूफ़ रहूँ? 30गो मैं साबुन से नहा लूँ और अपने हाथ सोडे[a] से धो लूँ 31ताहम तू मुझे गढ़े की कीचड़ में यूँ धंसने देता है कि मुझे अपने कपड़ों से घिन आती है।

32अल्लाह तो मुझ जैसा इन्सान नहीं कि मैं जवाब में उस से कहूँ, 'आओ हम अदालत में जा कर एक दूसरे का मुक़ाबला करें।' 33काश हमारे दरमियान सालिस हो जो हम दोनों पर हाथ रखे, 34जो मेरी पीठ पर से अल्लाह का डंडा हटाए ताकि उस का ख़ौफ़ मुझे दह्शतज़दा न करे। 35तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए बग़ैर बोलता, क्यूँकि फ़ित्री तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

मुझे अपनी जान से घिन आती है

10 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं आज़ादी से आह-ओ-ज़ारी करूँगा, खुले तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा। 2मैं अल्लाह से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि बता कि तेरा मुझ पर क्या इल्ज़ाम है। 3क्या तू ज़ुल्म करके मुझे रद्द करने में ख़ुशी मह्सूस करता है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया? साथ साथ तू बेदीनों के मन्सूबों पर अपनी मन्ज़ूरी का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता है? 4क्या तेरी आँखें इन्सानी हैं? क्या तू सिर्फ़ इन्सान की सी नज़र से देखता है? 5क्या तेरे दिन और साल फ़ानी इन्सान जैसे मह्दूद हैं? हरगिज़ नहीं! 6तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू मेरे क़ुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहक़ीक़ करता रहे? 7तू तो जानता है कि मैं बेक़ुसूर हूँ और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।

8तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील दे कर बनाया। और अब तू ने मुड़ कर मुझे तबाह कर दिया है। 9ज़रा इस का ख़याल रख कि तू ने मुझे मिट्टी से बनाया। अब तू मुझे दुबारा ख़ाक में तब्दील कर रहा है। 10तू ने ख़ुद मुझे दूध की तरह उंडेल कर पनीर की तरह जमने दिया। 11तू ही ने मुझे जिल्द और गोश्त-पोस्त से मुलब्बस किया, हड्डियों और नसों से तय्यार किया। 12तू ही ने मुझे ज़िन्दगी और अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल ने मेरी रूह को मह्फ़ूज़ रखा।

13लेकिन एक बात तू ने अपने दिल में छुपाए रखी, हाँ मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14वह यह है कि 'अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की पहरादारी करूँगा। मैं उसे उस के क़ुसूर से बरी नहीं करूँगा।'

15अगर मैं क़ुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़्सोस! और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर उठाने की जुरअत नहीं करता, क्यूँकि मैं शर्म खा खा कर सेर हो गया हूँ। मुझे ख़ूब मुसीबत पिलाई गई है। 16और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू शेरबबर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना क़ुदरत का इज़हार करता है। 17तू

[a]लफ़्ज़ी मतलब : क़लियाब, लाई (lye)।

मेरे ख़िलाफ़ नए गवाहों को खड़ा करता और
मुझ पर अपने ग़ज़ब में इज़ाफ़ा करता है, तेरे
लश्कर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हम्ला करते हैं।
18तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यूँ निकाल लाया?
बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता और
किसी को नज़र न आता। 19यूँ होता जैसा मैं
कभी ज़िन्दा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट से
क़ब्र में पहुँचाया जाता। 20क्या मेरे दिन थोड़े
नहीं हैं? मुझे तन्हा छोड़! मुझ से अपना
मुँह फेर ले ताकि मैं चन्द एक लम्हों के लिए
ख़ुश हो सकूँ, 21क्यूँकि जल्द ही मुझे कूच
करके वहाँ जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं
आता, उस मुल्क में जिस में तारीकी और घने
साय रहते हैं। 22वह मुल्क अंधेरा ही अंधेरा
और काला ही काला है, उस में घने साय और
बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी अंधेरा ही है।"

ज़ूफ़र का जवाब : तौबा कर

11 फिर ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे
कर कहा,
2"क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना
चाहिए? क्या यह आदमी अपनी ख़ाली बातों
की बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3क्या
तेरी बेमानी बातें लोगों के मुँह यूँ बन्द करेंगी
कि तू आज़ादी से लान-तान करता जाए और
कोई तुझे शर्मिन्दा न कर सके? 4अल्लाह से
तू कहता है, 'मेरी तालीम पाक है, और तेरी
नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।'
5काश अल्लाह ख़ुद तेरे साथ हमकलाम
हो, वह अपने होंटों को खोल कर तुझ से
बात करे! 6काश वह तेरे लिए हिक्मत के
भेद खोले, क्यूँकि वह इन्सान की समझ के
नज़दीक मोजिज़े से हैं। तब तू जान लेता कि
अल्लाह तेरे गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र
कर रहा है।
7क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है?
क्या तू क़ादिर-ए-मुतलक़ के कामिल इल्म
तक पहुँच सकता है? 8वह तो आसमान से
बुलन्द है, चुनाँचे तू क्या कर सकता है? वह
पाताल से गहरा है, चुनाँचे तू क्या जान सकता
है? 9उस की लम्बाई ज़मीन से बड़ी और
चौड़ाई समुन्दर से ज़्यादा है।
10अगर वह कहीं से गुज़र कर किसी को
गिरिफ़्तार करे या अदालत में उस का हिसाब
करे तो कौन उसे रोकेगा? 11क्यूँकि वह
फ़रेबदिह आदमियों को जान लेता है, जब भी
उसे बुराई नज़र आए तो वह उस पर ख़ूब ध्यान
देता है। 12अक़्ल से ख़ाली आदमी किस तरह
समझ पा सकता है? यह उतना ही नामुमकिन
है जितना यह कि जंगली गधे से इन्सान पैदा
हो।
13ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से
अल्लाह की तरफ़ माइल कर और अपने हाथ
उस की तरफ़ उठा! 14अगर तेरे हाथ गुनाह में
मुलव्वस हों तो उसे दूर कर और अपने ख़ैमे में
बुराई बसने न दे! 15तब तू बेइल्ज़ाम हालत में
अपना चेहरा उठा सकेगा, तू मज़बूती से खड़ा
रहेगा और डरेगा नहीं। 16तू अपना दुख-दर्द
भूल जाएगा, और वह सिर्फ़ गुज़रे सैलाब की
तरह याद रहेगा। 17तेरी ज़िन्दगी दोपहर की
तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुब्ह की मानिन्द
रौशन हो जाएगी। 18चूँकि उम्मीद होगी इस
लिए तू महफ़ूज़ होगा और सलामती से लेट
जाएगा। 19तू आराम करेगा, और कोई तुझे
दह्शतज़दा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग तेरी
नज़र-ए-इनायत हासिल करने की कोशिश
करेंगे। 20लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो
जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उन की
उम्मीद मायूसकुन होगी।"[a]

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

12 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2"लगता है कि तुम ही वाहिद
दानिशमन्द हो, कि हिक्मत तुम्हारे साथ ही मर
जाएगी। 3लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं

[a] या उन की वाहिद उम्मीद इस में होगी कि दम छोड़ें।

तुम से अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें
नहीं जानता? 4मैं तो अपने दोस्तों के लिए
मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ, मैं जिस की
दुआएँ अल्लाह सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह
और बेइल्ज़ाम हूँ दूसरों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ! 5जो सुकून से ज़िन्दगी
गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा को हक़ीर जानता
है। वह कहता है, 'आओ, हम उसे ठोकर मारें
जिस के पाँओ डगमगाने लगे हैं।' 6ग़ारतगरों
के ख़ैमों में आराम-ओ-सुकून है, और अल्लाह
को तैश दिलाने वाले हिफ़ाज़त से रहते हैं, गो
वह अल्लाह के हाथ में हैं।

7ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ
ले तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिन्दों
से पता कर तो वह तुझे दुरुस्त जवाब देंगे।
8ज़मीन से बात कर तो वह तुझे तालीम देगी,
बल्कि समुन्दर की मछलियाँ भी तुझे इस का
मफ़हूम सुनाएँगी। 9इन में से एक भी नहीं
जो न जानता हो कि रब के हाथ ने यह सब
कुछ किया है। 10उसी के हाथ में हर जानदार
की जान, तमाम इन्सानों का दम है। 11कान
तो अल्फ़ाज़ की यूँ जाँच-पड़ताल करता है
जिस तरह ज़बान खानों में इम्तियाज़ करती
है। 12और हिक्मत उन में पाई जाती है जो
उम्ररसीदा हैं, समझ मुतअद्दिद दिन गुज़रने के
बाद ही आती है।

13हिक्मत और क़ुदरत अल्लाह की है, वही
मस्लहत और समझ का मालिक है। 14जो
कुछ वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा,
जिसे वह गिरिफ़्तार करे उसे आज़ाद नहीं
किया जाएगा। 15जब वह पानी रोके तो काल
पड़ता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में
तबाही मचा देता है।

16उस के पास क़ुव्वत और दानाई है।
भटकने और भटकाने वाला दोनों ही उस
के हाथ में हैं। 17मुशीरों को वह नंगे पाँओ
अपने साथ ले जाता है, क़ाज़ियों को अहमक़
साबित करता है। 18वह बादशाहों का पटका
खोल कर उन की कमरों में रस्सा बांधता है।
19इमामों को वह नंगे पाँओ अपने साथ ले
जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों को तबाह
करता है। 20क़ाबिल-ए-एतिमाद अफ़राद से
वह बोलने की क़ाबिलियत और बुज़ुर्गों से
इम्तियाज़ करने की लियाक़त छीन लेता है।
21वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत का इज़हार
करके ज़ोर-आवरों का पटका खोल देता है।

22वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और
गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23वह
क़ौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी
करता है, उम्मतों को मुन्तशिर भी करता और
उन की क़ियादत भी करता है। 24वह मुल्क के
राहनुमाओं को अक़्ल से महरूम करके उन्हें
ऐसे बयाबान में आवारा फिरने देता है जहाँ
रास्ता ही नहीं। 25तब वह अंधेरे में रौशनी के
बग़ैर टटोल टटोल कर घूमते हैं। अल्लाह ही
उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह भटकने
देता है।

13 यह सब कुछ मैं ने अपनी आँखों
से देखा, अपने कानों से सुन कर
समझ लिया है। 2इल्म के लिहाज़ से मैं तुम्हारे
बराबर हूँ। इस नाते से मैं तुम से कम नहीं
हूँ। 3लेकिन मैं क़ादिर-ए-मुतलक़ से ही बात
करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ ही मुबाहसा
करने की आर्ज़ू रखता हूँ।

4जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, तुम सब
फ़रेबदिह लेप लगाने वाले और बेकार डाक्टर
हो। 5काश तुम सरासर ख़ामोश रहते! ऐसा
करने से तुम्हारी हिक्मत कहीं ज़्यादा ज़ाहिर
होती। 6मुबाहसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो,
अदालत में मेरे बयानात पर ग़ौर करो!

7क्या तुम अल्लाह की ख़ातिर कजरौ बातें
पेश करते हो, क्या उसी की ख़ातिर झूट बोलते
हो? 8क्या तुम उस की जानिबदारी करना
चाहते हो, अल्लाह के हक़ में लड़ना चाहते
हो? 9सोच लो, अगर वह तुम्हारी जाँच करे
तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे यूँ
धोका दे सकते हो जिस तरह इन्सान को धोका
दिया जाता है?

10अगर तुम ख़ुफ़िया तौर पर भी जानिब-
दारी दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख़्त सज़ा
देगा। 11क्या उस का रोब तुम्हें ख़ौफ़ज़दा नहीं
करेगा? क्या तुम उस से सख़्त दहशत नहीं
खाओगे? 12फिर जिन कहावतों की याद तुम
दिलाते रहते हो वह राख की अम्साल साबित
होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के
अल्फ़ाज़ हैं।

13ख़ामोश हो कर मुझ से बाज़ आओ! जो
कुछ भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना
चाहता हूँ। 14मैं अपने आप को ख़तरे में डालने
के लिए तय्यार हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा।
15शायद वह मुझे मार डाले। कोई बात नहीं,
क्यूँकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो कुछ भी
हो में उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा
करूँगा। 16और इस में मैं पनाह लेता हूँ कि
बेदीन उस के हुज़ूर आने की जुरअत नहीं
करता।

17ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो, अपने कान
मेरे बयानात पर धरो। 18तुम्हें पता चलेगा
कि मैं ने एहतियात और तरतीब से अपना
मुआमला तय्यार किया है। मुझे साफ़ मालूम है
कि मैं हक़ पर हूँ! 19अगर कोई मुझे मुजरिम
साबित कर सके तो मैं चुप हो जाऊँगा, दम
छोड़ने तक ख़ामोश रहूँगा।

अय्यूब की मायूसी में दुआ

20ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरख़्वास्तें
मन्ज़ूर कर ताकि मुझे तुझ से छुप जाने की
ज़रूरत न हो। 21पहले, अपना हाथ मुझ से
दूर कर ताकि तेरा ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न
करे। 22दूसरे, इस के बाद मुझे बुला ताकि मैं
जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और तू ही
इस का जवाब दे।

23मुझ से कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई
हैं? मुझ पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर
कर! 24तू अपना चेहरा मुझ से छुपाए क्यूँ
रखता है? तू मुझे क्यूँ अपना दुश्मन समझता
है? 25क्या तू हवा के झोंकों के उड़ाए हुए पत्ते
को दहशत खिलाना चाहता, ख़ुश्क भूसे का
ताक़्क़ुब करना चाहता है?

26यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तल्ख़
तजरिबों से गुज़रूँ, तेरी ही मर्ज़ी है कि मैं
अपनी जवानी के गुनाहों की सज़ा पाऊँ।[a] 27तू
मेरे पाँओ को काठ में ठोंक कर मेरी तमाम
राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर एक
नक़्श-ए-क़दम पर ध्यान देता है, 28गो मैं मै
की घिसी फटी मश्क और कीड़ों का ख़राब
किया हुआ लिबास हूँ।

14 औरत से पैदा हुआ इन्सान चन्द
एक दिन ज़िन्दा रहता है, और उस
की ज़िन्दगी बेचैनी से भरी रहती है। 2फूल की
तरह वह चन्द लम्हों के लिए फूट निकलता,
फिर मुरझा जाता है। साय की तरह वह थोड़ी
देर के बाद ओझल हो जाता और क़ाइम नहीं
रहता। 3क्या तू वाक़ई एक ऐसी मख़्लूक़ का
इतने ग़ौर से मुआइना करना चाहता है? मैं
कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर
लाए?

4कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर
सकता है? कोई नहीं! 5इन्सान की उम्र तो
मुक़र्रर हुई है, उस के महीनों की तादाद तुझे
मालूम है, क्यूँकि तू ही ने उस के दिनों की वह
हद बांधी है जिस से आगे वह बढ़ नहीं सकता।
6चुनाँचे अपनी निगाह उस से फेर ले और उसे
छोड़ दे ताकि वह मज़दूर की तरह अपने थोड़े
दिनों से कुछ मज़ा ले सके।

7अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी
बहुत उम्मीद बाक़ी रहती है, क्यूँकि ऐन
मुमकिन है कि मुढ से कोंपलें फूट निकलें और
उस की नई शाख़ें उगती जाएँ। 8बेशक उस की
जड़ें पुरानी हो जाएँ और उस का मुढ मिट्टी में
ख़त्म होने लगे, 9लेकिन पानी की ख़ुशबू सूँघते
ही वह कोंपलें निकालने लगेगा, और पनीरी
की सी टहनियाँ उस से फूटने लगेंगी।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मीरास में पाऊँ।

10लेकिन इन्सान फ़र्क़ है। मरते वक़्त उस
की हर तरह की ताक़त जाती रहती है, दम
छोड़ते वक़्त उस का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहता। 11वह उस झील की मानिन्द है
जिस का पानी ओझल हो जाए, उस नदी
की मानिन्द जो सुकड़ कर ख़ुश्क हो जाए।
12वफ़ात पाने वाले का यही हाल है। वह
लेट जाता और कभी नहीं उठेगा। जब तक
आसमान क़ाइम है न वह जाग उठेगा, न उसे
जगाया जाएगा।

13काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे
वहाँ उस वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक
तेरा क़हर ठंडा न हो जाता! काश तू एक वक़्त
मुक़र्रर करे जब तू मेरा दुबारा ख़याल करेगा।
14(क्यूँकि अगर इन्सान मर जाए तो क्या वह
दुबारा ज़िन्दा हो जाएगा?) फिर मैं अपनी
सख़्त ख़िदमत के तमाम दिन बर्दाश्त करता,
उस वक़्त तक इन्तिज़ार करता जब तक मेरी
सबुकदोशी न हो जाती। 15तब तू मुझे आवाज़
देता और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के
काम का आरज़ूमन्द होता। 16उस वक़्त भी
तू मेरे हर क़दम का शुमार करता, लेकिन न
सिर्फ़ इस मक़्सद से कि मेरे गुनाहों पर ध्यान
दे। 17तू मेरे जराइम थैले में बांध कर उस पर
मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक देता।

18लेकिन अफ़्सोस! जिस तरह पहाड़ गिर
कर चूर चूर हो जाता और चटान खिसक
जाती है, 19जिस तरह बहता पानी पत्थर को
रगड़ रगड़ कर ख़त्म करता और सैलाब मिट्टी
को बहा ले जाता है उसी तरह तू इन्सान की
उम्मीद ख़ाक में मिला देता है। 20तू मुकम्मल
तौर पर उस पर ग़ालिब आ जाता तो वह कूच
कर जाता है, तू उस का चेहरा बिगाड़ कर
उसे फ़ारिग़ कर देता है। 21अगर उस के बच्चों
को सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं
चलता, अगर उन्हें पस्त किया जाए तो यह
भी उस के इल्म में नहीं आता। 22वह सिर्फ़
अपने ही जिस्म का दर्द महसूस करता और
अपने लिए ही मातम करता है।"

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़्र बक रहा है

15 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे
कर कहा,

2"क्या दानिशमन्द को जवाब में बेहूदा
ख़यालात पेश करने चाहिएँ? क्या उसे अपना
पेट तपती मशरिक़ी हवा से भरना चाहिए?
3क्या मुनासिब है कि वह फ़ुज़ूल बह्स-
मुबाहसा करे, ऐसी बातें करे जो बेफ़ाइदा हैं?
हरगिज़ नहीं!

4लेकिन तेरा रवय्या इस से कहीं बुरा है।
तू अल्लाह का ख़ौफ़ छोड़ कर उस के हुज़ूर
ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करने का फ़र्ज़ हक़ीर जानता
है। 5तेरा क़ुसूर ही तेरे मुँह को ऐसी बातें करने
की तहरीक दे रहा है, इसी लिए तू ने चालाकों
की ज़बान अपना ली है। 6मुझे तुझे क़ुसूरवार
ठहराने की ज़रूरत ही नहीं, क्यूँकि तेरा अपना
ही मुँह तुझे मुजरिम ठहराता है, तेरे अपने ही
होंट तेरे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।

7क्या तू सब से पहले पैदा हुआ इन्सान है?
क्या तू ने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया?
8जब अल्लाह की मजलिस मुनअक़िद हो
जाए तो क्या तू भी उन की बातें सुनता है?
क्या सिर्फ़ तुझे ही हिक्मत हासिल है? 9तू
क्या जानता है जो हम नहीं जानते? तुझे किस
बात की समझ आई है जिस का इल्म हम
नहीं रखते? 10हमारे दरमियान भी उम्ररसीदा
बुज़ुर्ग हैं, ऐसे आदमी जो तेरे वालिद से भी
बूढ़े हैं।

11ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की
तसल्ली देने वाली बातों की कोई अहमियत
नहीं? क्या तू इस की क़दर नहीं कर सकता
कि नर्मी से तुझ से बात की जा रही है?
12तेरे दिल के जज़्बात तुझे यूँ उड़ा कर क्यूँ
ले जाएँ, तेरी आँखें क्यूँ इतनी चमक उठें 13कि
आख़िरकार तू अपना ग़ुस्सा अल्लाह पर उतार
कर ऐसी बातें अपने मुँह से उगल दे?

14भला इन्सान क्या है कि पाक-साफ़
ठहरे? औरत से पैदा हुई मख़्लूक़ क्या है

कि रास्तबाज़ साबित हो? कुछ भी नहीं!
15अल्लाह तो अपने मुक़द्दस ख़ादिमों पर भी
भरोसा नहीं रखता, बल्कि आसमान भी उस
की नज़र में पाक नहीं है। 16तो फिर वह इन्सान
पर भरोसा क्यूँ रखे जो क़ाबिल-ए-घिन और
बिगड़ा हुआ है, जो बुराई को पानी की तरह
पी लेता है।

17मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता
हूँ। मैं तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर
ज़ाहिर हुआ है, 18वह कुछ जो दानिशमन्दों
ने पेश किया और जो उन्हें अपने बापदादा
से मिला था। उन से कुछ छुपाया नहीं गया
था। 19(बापदादा से मुराद वह वाहिद लोग हैं
जिन्हें उस वक़्त मुल्क दिया गया जब कोई भी
परदेसी उन में नहीं फिरता था)।

20वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन
डर के मारे तड़पता रहता, और जितने भी
साल ज़ालिम के लिए मह्फ़ूज़ रखे गए हैं उतने
ही साल वह पेच-ओ-ताब खाता रहता है।
21दह्शतनाक आवाज़ें उस के कानों में गूँजती
रहती हैं, और अम्न-ओ-अमान के वक़्त ही
तबाही मचाने वाला उस पर टूट पड़ता है।
22उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद ही नहीं,
क्यूँकि उसे तलवार के लिए तय्यार रखा गया
है।

23वह मारा मारा फिरता है, आख़िरकार वह
गिद्धों की ख़ोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है
कि तारीकी का दिन क़रीब ही है। 24तंगी और
मुसीबत उसे दह्शत खिलाती, हम्लाआवर
बादशाह की तरह उस पर ग़ालिब आती हैं।
25और वजह क्या है? यह कि उस ने अपना
हाथ अल्लाह के ख़िलाफ़ उठाया, क़ादिर-
ए-मुतलक़ के सामने तकब्बुर दिखाया है।
26अपनी मोटी और मज़बूत ढाल की पनाह
में अकड़ कर वह तेज़ी से अल्लाह पर हम्ला
करता है।

27गो इस वक़्त उस का चेहरा चर्बी से
चमकता और उस की कमर मोटी है, 28लेकिन
आइन्दा वह तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे
मकानों में जो सब के छोड़े हुए हैं और जो
जल्द ही पत्थर के ढेर बन जाएंगे। 29वह अमीर
नहीं होगा, उस की दौलत क़ाइम नहीं रहेगी,
उस की जायदाद मुल्क में फैली नहीं रहेगी।

30वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की
कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे
अपने मुँह की एक फूँक से उड़ा कर तबाह
कर देगा। 31वह धोके पर भरोसा न करे, वर्ना
वह भटक जाएगा और उस का अज्र धोका
ही होगा। 32वक़्त से पहले ही उसे इस का पूरा
मुआवज़ा मिलेगा, उस की कोंपल कभी नहीं
फले फूलेगी।

33वह अंगूर की उस बेल की मानिन्द होगा
जिस का फल कच्ची हालत में ही गिर जाए,
ज़ैतून के उस दरख़्त की मानिन्द जिस के
तमाम फूल झड़ जाएँ। 34क्यूँकि बेदीनों का
जथ्था बंजर रहेगा, और आग रिश्वतख़ोरों के
ख़ैमों को भस्म करेगी। 35उन के पाँओ दुख-
दर्द से भारी हो जाते, और वह बुराई को जन्म
देते हैं। उन का पेट धोका ही पैदा करता है।"

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

16 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2"इस तरह की मैं ने बहुत सी बातें
सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ़ दुख-दर्द का
बाइस है। 3क्या तुम्हारी लफ़्फ़ाज़ी कभी ख़त्म
नहीं होगी? तुझे क्या चीज़ बेचैन कर रही है
कि तू मुझे जवाब देने पर मज्बूर है? 4अगर
मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी
बातें कर सकता। फिर मैं भी तुम्हारे ख़िलाफ़
पुरअल्फ़ाज़ तक़रीरें पेश करके तौबा तौबा
कह सकता। 5लेकिन मैं ऐसा न करता। मैं
तुम्हें अपनी बातों से तक़वियत देता, अफ़्सोस
के इज़हार से तुम्हें तस्कीन देता। 6लेकिन मेरे
साथ ऐसा सुलूक नहीं हो रहा। अगर मैं बोलूँ
तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ तो
मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है,
उस ने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है।

8उस ने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे
ख़िलाफ़ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली
हालत खड़ी हो कर मेरे ख़िलाफ़ गवाही देती
है। 9अल्लाह का ग़ज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह
मेरा दुश्मन और मेरा मुख़ालिफ़ बन गया है जो
मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीस पीस कर मुझे अपनी
आँखों से छेद रहा है।[a] 10लोग गला फाड़ कर
मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे गाल पर थप्पड़ मार
कर मेरी बेइज़्ज़ती करते हैं। सब के सब मेरे
ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो गए हैं। 11अल्लाह ने मुझे
शरीरों के हवाले कर दिया, मुझे बेदीनों के
चंगुल में फंसा दिया है। 12मैं सुकून से ज़िन्दगी
गुज़ार रहा था कि उस ने मुझे पाश पाश कर
दिया, मुझे गले से पकड़ कर ज़मीन पर पटख़
दिया। उस ने मुझे अपना निशाना बना लिया,
13फिर उस के तीरअन्दाज़ों ने मुझे घेर लिया।
उस ने बेरहमी से मेरे गुर्दों को चीर डाला,
मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया। 14बार बार
वह मेरी क़िलाबन्दी में रख़ना डालता रहा,
पहलवान की तरह मुझ पर हम्ला करता रहा।

15मैं ने टाँके लगा कर अपनी जिल्द के साथ
टाट का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शान-
ओ-शौकत ख़ाक में मिलाई है। 16रो रो कर
मेरा चेहरा सूज गया है, मेरी पलकों पर घना
अंधेरा छा गया है। 17लेकिन वजह क्या है?
मेरे हाथ तो ज़ुल्म से बरी रहे, मेरी दुआ पाक-
साफ़ रही है।

18ऐ ज़मीन, मेरे ख़ून को मत ढाँपना!
मेरी आह-ओ-ज़ारी कभी आराम की जगह
न पाए बल्कि गूँजती रहे। 19अब भी मेरा
गवाह आसमान पर है, मेरे हक़ में गवाही देने
वाला बुलन्दियों पर है। 20मेरी आह-ओ-ज़ारी
मेरा तर्जुमान है, मैं बेख़्वाबी से अल्लाह के
इन्तिज़ार में रहता हूँ। 21मेरी आहें अल्लाह के
सामने फ़ानी इन्सान के हक़ में बात करेंगी,
उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के हक़
में बात करे। 22क्यूँकि थोड़े ही सालों के बाद
मैं उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिस से
वापस नहीं आऊँगा।

अल्लाह से इल्तिजा

17 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे
दिन बुझ गए हैं। क़ब्रिस्तान ही
मेरे इन्तिज़ार में है। 2मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़
ही मज़ाक़ सुनाई देता, मेरी आँखें लोगों का
हटधर्म रवय्या देखते देखते थक गई हैं। 3ऐ
अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से
क़बूल फ़रमा, क्यूँकि और कोई नहीं जो उसे
दे। 4उन के ज़हनों को तू ने बन्द कर दिया,
इस लिए तो उन से इज़्ज़त नहीं पाएगा। 5वह
उस आदमी की मानिन्द हैं जो अपने दोस्तों
को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि उस के
अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

6अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यूँ निशाना
बनाया है कि मैं क़ौमों में इब्रतअंगेज़ मिसाल
बन गया हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर
थूकते हैं। 7मेरी आँखें ग़म खा खा कर धुन्दला
गई हैं, मेरे आज़ा यहाँ तक सूख गए कि
साया ही रह गया है। 8यह देख कर सीधी राह
पर चलने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते और
बेगुनाह बेदीनों के ख़िलाफ़ मुश्तइल हो जाते
हैं। 9रास्तबाज़ अपनी राह पर क़ाइम रहते,
और जिन के हाथ पाक हैं वह तक़वियत पाते
हैं। 10लेकिन जहाँ तक तुम सब का ताल्लुक़
है, आओ दुबारा मुझ पर हम्ला करो! मुझे तुम
में एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मन्सूबे और
दिल की आर्ज़ूएँ ख़ाक में मिल गई हैं 12जिन से
रात दिन में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर
करके क़रीब आई थी। 13अगर मैं सिर्फ़ इतनी
ही उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह
कैसी उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर
तारीकी में बिछा कर 14क़ब्र से कहूँ, 'तू मेरा
बाप है' और कीड़े से, 'ऐ मेरी अम्मी, ऐ मेरी

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी आँखें मेरे ख़िलाफ़ तेज़
करता है।

बहन' 15तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन
कहेगा, 'मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है'?
16तब मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी,
और हम मिल कर ख़ाक में धँस जाएंगे।"

बिल्दद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

18 बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर
कहा,
2"तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इन से
बाज़ आ कर होश में आ! तब ही हम सहीह
बात कर सकेंगे। 3तू हमें डंगर जैसे अहमक़
क्यूँ समझता है? 4गो तू आग-बगूला हो कर
अपने आप को फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे
बाइस ज़मीन को वीरान होना चाहिए और
चटानों को अपनी जगह से खिसक्ना चाहिए?
हरगिज़ नहीं!
5यक़ीनन बेदीन का चराग़ बुझ जाएगा, उस
की आग का शोला आइन्दा नहीं चमकेगा।
6उस के ख़ैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उस
के ऊपर की शमा बुझ जाएगी। 7उस के लम्बे
क़दम रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे, और उस का
अपना मन्सूबा उसे पटख़ देगा।
8उस के अपने पाँओ उसे जाल में फंसा देते
हैं, वह दाम पर ही चलता फिरता है। 9फंदा
उस की एड़ी पकड़ लेता, कमन्द उसे जकड़
लेती है। 10उसे फंसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा
हुआ है, रास्ते में फंदा बिछा है।
11वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे
क़दम-ब-क़दम दह्शत खिलाती और उस की
नाक में दम करती हैं। 12आफ़त उसे हड़प कर
लेना चाहती है, तबाही तय्यार खड़ी है ताकि
उसे गिरते वक़्त ही पकड़ ले। 13बीमारी उस
की जिल्द को खा जाती, मौत का पहलौठा
उस के आज़ा को निगल लेता है। 14उसे उस
के ख़ैमे की हिफ़ाज़त से छीन लिया जाता
और घसीट कर दह्शतों के बादशाह के सामने
लाया जाता है।
15उस के ख़ैमे में आग बसती, उस के घर
पर गंधक बिखर जाती है। 16नीचे उस की जड़ें
सूख जाती, ऊपर उस की शाख़ें मुरझा जाती
हैं। 17ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है,
कहीं भी उस का नाम-ओ-निशान नहीं रहता।
18उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता,
दुनिया से भगा कर ख़ारिज किया जाता
है। 19क़ौम में उस की न औलाद न नस्ल
रहेगी, जहाँ पहले रहता था वहाँ कोई नहीं
बचेगा। 20उस का अन्जाम देख कर मग़रिब के
बाशिन्दों के रोंगटे खड़े हो जाते और मशरिक़
के बाशिन्दे दह्शतज़दा हो जाते हैं। 21यही है
बेदीन के घर का अन्जाम, उसी के मक़ाम का
जो अल्लाह को नहीं जानता।"

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिन्दा ज़िन्दा है

19 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,
2"तुम कब तक मुझ पर तशद्दुद
करना चाहते हो, कब तक मुझे अल्फ़ाज़ से
टुकड़े टुकड़े करना चाहते हो? 3अब तुम ने
दस बार मुझे मलामत की है, तुम ने शर्म किए
बग़ैर मेरे साथ बदसुलूकी की है। 4अगर यह
बात सहीह भी हो कि मैं ग़लत राह पर आ
गया हूँ तो मुझे ही इस का नतीजा भुगतना
है। 5लेकिन चूँकि तुम मुझ पर अपनी सब्क़त
दिखाना चाहते और मेरी रुस्वाई मुझे डाँटने के
लिए इस्तेमाल कर रहे हो 6तो फिर जान लो,
अल्लाह ने ख़ुद मुझे ग़लत राह पर ला कर
अपने दाम से घेर लिया है।
7गो मैं चीख़ कर कहूँ, 'मुझ पर ज़ुल्म हो
रहा है,' लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो
मैं मदद के लिए पुकारूँ, लेकिन इन्साफ़ नहीं
पाता। 8उस ने मेरे रास्ते में ऐसी दीवार खड़ी
कर दी कि मैं गुज़र नहीं सकता, उस ने मेरी
राहों पर अंधेरा ही छा जाने दिया है। 9उस ने
मेरी इज़्ज़त मुझ से छीन कर मेरे सर से ताज
उतार दिया है। 10चारों तरफ़ से उस ने मुझे ढा
दिया तो मैं तबाह हुआ। उस ने मेरी उम्मीद को

दरख़्त की तरह जड़ से उखाड़ दिया है। 11उस
का क़हर मेरे ख़िलाफ़ भड़क उठा है, और वह
मुझे अपने दुश्मनों में शुमार करता है। 12उस
के दस्ते मिल कर मुझ पर हम्ला करने आए
हैं। उन्हों ने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर
लगाया है ताकि उस में रख़ना डालें। उन्हों ने
चारों तरफ़ से मेरे ख़ैमे का मुहासरा किया है।
13मेरे भाइयों को उस ने मुझ से दूर कर
दिया, और मेरे जानने वालों ने मेरा हुक़्क़ा-
पानी बन्द कर दिया है। 14मेरे रिश्तेदारों ने
मुझे तर्क कर दिया, मेरे क़रीबी दोस्त मुझे
भूल गए हैं। 15मेरे दामनगीर और नौकरानियाँ
मुझे अजनबी समझते हैं। उन की नज़र में मैं
अजनबी हूँ। 16मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ
तो वह जवाब नहीं देता। गो मैं अपने मुँह से
उस से इल्तिजा करूँ तो भी वह नहीं आता।
17मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे
सगे भाई मुझे मकरूह समझते हैं। 18यहाँ तक
कि छोटे बच्चे भी मुझे हक़ीर जानते हैं। अगर
मैं उठने की कोशिश करूँ तो वह अपना मुँह
दूसरी तरफ़ फेर लेते हैं। 19मेरे दिली दोस्त मुझे
कराहियत की निगाह से देखते हैं, जो मुझे
प्यारे थे वह मेरे मुख़ालिफ़ हो गए हैं। 20मेरी
जिल्द सुकड़ कर मेरी हड्डियों के साथ जा लगी
है। मैं मौत से बाल बाल बच गया हूँ।[a]
21मेरे दोस्तो, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर
तरस खाओ। क्यूँकि अल्लाह ही के हाथ ने
मुझे मारा है। 22तुम क्यूँ अल्लाह की तरह मेरे
पीछे पड़ गए हो, क्यूँ मेरा गोश्त खा खा कर
सेर नहीं होते?
23काश मेरी बातें क़लमबन्द हो जाएँ! काश
वह यादगार पर कन्दा की जाएँ, 24लोहे की
छैनी और सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में
नक़्श की जाएँ! 25लेकिन मैं जानता हूँ कि
मेरा छुड़ाने वाला ज़िन्दा है और आख़िरकार
मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा हो जाएगा, 26गो
मेरी जिल्द यूँ उतारी भी गई हो। लेकिन मेरी
आर्ज़ू है कि जिस्म में होते हुए अल्लाह को
देखूँ, 27कि मैं ख़ुद ही उसे देखूँ, न कि अजनबी
बल्कि अपनी ही आँखों से उस पर निगाह
करूँ। इस आर्ज़ू की शिद्दत से मेरा दिल तबाह
हो रहा है।
28तुम कहते हो, 'हम कितनी सख़्ती से
अय्यूब का ताक़्क़ुब करेंगे' और मसले की
जड़ तो उसी में पिनहाँ है। 29लेकिन तुम्हें ख़ुद
तलवार से डरना चाहिए, क्यूँकि तुम्हारा ग़ुस्सा
तलवार की सज़ा के लाइक़ है, तुम्हें जानना
चाहिए कि अदालत आने वाली है।"

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुन्सिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

20 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर
कहा,
2"यक़ीनन मेरे मुज़्तरिब ख़यालात और वह
एहसासात जो मेरे अन्दर से उभर रहे हैं मुझे
जवाब देने पर मज्बूर कर रहे हैं। 3मुझे ऐसी
नसीहत सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्ज़ती का
बाइस थी, लेकिन मेरी समझ मुझे जवाब देने
की तहरीक दे रही है।
4क्या तुझे मालूम नहीं कि क़दीम ज़माने से
यानी जब से इन्सान को ज़मीन पर रखा गया
5शरीर का फ़त्हमन्द नारा आरिज़ी और बेदीन
की ख़ुशी पल भर की साबित हुई है? 6गो उस
का क़द-ओ-क़ामत आसमान तक पहुँचे और
उस का सर बादलों को छुए 7ताहम वह अपने
फ़ुज़्ले की तरह अबद तक तबाह हो जाएगा।
जिन्हों ने उसे पहले देखा था वह पूछेंगे, 'अब
वह कहाँ है?'
8वह ख़्वाब की तरह उड़ जाता और
आइन्दा कहीं नहीं पाया जाएगा, उसे रात की
रोया की तरह भुला दिया जाता है। 9जिस
आँख ने उसे देखा वह उसे आइन्दा कभी नहीं
देखेगी। उस का घर दुबारा उस का मुशाहदा
नहीं करेगा। 10उस की औलाद को ग़रीबों से

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई
है।' मतलब मुब्हम सा है।

भीक माँगनी पड़ेगी, उस के अपने हाथों को दौलत वापस देनी पड़ेगी। 11जवानी की जिस ताक़त से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उस के साथ ही ख़ाक में मिल जाएगी।

12बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, 13उसे मह्फ़ूज़ रख कर जाने नहीं देता। 14लेकिन उस की ख़ुराक पेट में आ कर ख़राब हो जाती बल्कि साँप का ज़हर बन जाती है। 15जो दौलत उस ने निगल ली उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उस के पेट से ख़ारिज करेगा। 16उस ने साँप का ज़हर चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार डालेगी। 17वह नदियों से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा, शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा। 18जो कुछ उस ने हासिल किया उसे वह हज़म नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो दौलत उस ने अपने कारोबार से कमाई उस से वह लुत्फ़ नहीं उठाएगा। 19क्यूँकि उस ने पस्तहालों पर ज़ुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उस ने ऐसे घरों को छीन लिया है जिन्हें उस ने तामीर नहीं किया था। 20उस ने पेट में कभी सुकून मह्सूस नहीं किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने नहीं दिया। 21जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं बचता, इस लिए उस की ख़ुशहाली क़ाइम नहीं रहेगी। 22जूँ ही उसे कस्रत की चीज़ें हासिल होंगी वह मुसीबत में फंस जाएगा। तब दुख-दर्द का पूरा ज़ोर उस पर आएगा। 23काश अल्लाह बेदीन का पेट भर कर अपना भड़कता क़हर उस पर नाज़िल करे, काश वह अपना ग़ज़ब उस पर बरसाए।

24गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए, लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25जब वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक उस के कलेजे में से निकलेगी। उसे दह्शतनाक वाक़िआत पेश आएँगे। 26गहरी तारीकी उस के ख़ज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग जो इन्सानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी। उस के ख़ैमे के जितने लोग बच निकले उन्हें वह खा जाएगी। 27आसमान उसे मुजरिम ठहराएगा, ज़मीन उस के ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी हो जाएगी। 28सैलाब उस का घर उड़ा ले जाएगा, ग़ज़ब के दिन शिद्दत से बहता हुआ पानी उस पर से गुज़रेगा। 29यह है वह अज्र जो अल्लाह बेदीनों को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उन के लिए मुक़र्रर की है।”

अय्यूब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

21 फिर अय्यूब ने जवाब में कहा,
2“ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो! यही करने से मुझे तसल्ली दो! 3जब तक मैं अपनी बात पेश न करूँ मुझे बर्दाश्त करो, इस के बाद अगर चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। 4क्या मैं किसी इन्सान से एहतिजाज कर रहा हूँ? हरगिज़ नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग आ गई है। 5मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह पर रखोगे।

6जब कभी मुझे वह ख़याल याद आता है जो मैं पेश करना चाहता हूँ तो मैं दह्शतज़दा हो जाता हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है। 7ख़याल यह है कि बेदीन क्यूँ जीते रहते हैं? न सिर्फ़ वह उम्ररसीदा हो जाते बल्कि उन की ताक़त बढ़ती रहती है।

8उन के बच्चे उन के सामने क़ाइम हो जाते, उन की औलाद उन की आँखों के सामने मज़बूत हो जाती है। 9उन के घर मह्फ़ूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती है। 10उन का साँड नस्ल बढ़ाने में कभी नाकाम नहीं होता, उन की गाय वक़्त पर जन्म देती, और उस के बच्चे कभी ज़ाए नहीं होते।

11वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजते हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की तरह घर से निकलते हैं। उन के लड़के कूदते फाँदते नज़र आते हैं। 12वह दफ़ और सरोद

बजा कर गीत गाते और बाँसरी की सुरीली आवाज़ निकाल कर अपना दिल बहलाते हैं। 13उन की ज़िन्दगी ख़ुशहाल रहती है, वह हर दिन से पूरा लुत्फ़ उठाते और आख़िरकार बड़े सुकून से पाताल में उतर जाते हैं।

14और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते हैं, 'हम से दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना नहीं चाहते। 15क़ादिर-ए-मुतलक़ कौन है कि हम उस की ख़िदमत करें? उस से दुआ करने से हमें क्या फ़ाइदा होगा?' 16क्या उन की ख़ुशहाली उन के अपने हाथ में नहीं होती? क्या बेदीनों के मन्सूबे अल्लाह से दूर नहीं रहते?

17ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग़ कभी नहीं बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती है? क्या अल्लाह कभी क़हर में आ कर उन पर वह तबाही नाज़िल करता है जो उन का मुनासिब हिस्सा है? 18क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे की तरह और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह उड़ा ले जाती है? अफ़्सोस, ऐसा नहीं होता। 19शायद तुम कहो, 'अल्लाह उन्हें सज़ा देने के बजाए उन के बच्चों को सज़ा देगा।' लेकिन मैं कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा देनी चाहिए ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा ख़ूब जान ले। 20उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही देखें, वह ख़ुद क़ादिर-ए-मुतलक़ के ग़ज़ब का प्याला पी ले। 21क्यूँकि जब उस की ज़िन्दगी के मुक़र्ररा दिन इख़तिताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि मेरे बाद घर वालों के साथ क्या होगा।

22लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता है? वह तो बुलन्दियों पर रहने वालों की भी अदालत करता है। 23एक शख़्स वफ़ात पाते वक़्त ख़ूब तन्दुरुस्त होता है। जीते जी वह बड़े सुकून और इत्मीनान से ज़िन्दगी गुज़ार सका। 24उस के बर्तन दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों का गूदा तर-ओ-ताज़ा रहा। 25दूसरा शख़्स शिकस्ता हालत में मर जाता है और उसे कभी ख़ुशहाली का लुत्फ़ नसीब नहीं हुआ। 26अब दोनों मिल कर ख़ाक में पड़े रहते हैं, दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढाँपे रहते हैं।

27सुनो, मैं तुम्हारे ख़यालात और उन साज़िशों से वाक़िफ़ हूँ जिन से तुम मुझ पर ज़ुल्म करना चाहते हो। 28क्यूँकि तुम कहते हो, 'रईस का घर कहाँ है? वह ख़ैमा किधर गया जिस में बेदीन बसते थे? वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह हो गए हैं।' 29लेकिन उन से पूछ लो जो इधर उधर सफ़र करते रहते हैं। तुम्हें उन की गवाही तस्लीम करनी चाहिए 30कि आफ़त के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा जाता है, कि ग़ज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।

31कौन उस के रू-ब-रू उस के चाल-चलन की मलामत करता, कौन उसे उस के ग़लत काम का मुनासिब अज्र देता है? 32लोग उस के जनाज़े में शरीक हो कर उसे क़ब्र तक ले जाते हैं। उस की क़ब्र पर चौकीदार लगाया जाता है। 33वादी की मिट्टी के ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम दुनिया, उस के आगे आगे अनगिनत हुजूम चलता है। 34चुनाँचे तुम मुझे अबस बातों से क्यूँ तसल्ली दे रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र आती है।"

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

22 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर कहा,

2"क्या अल्लाह इन्सान से फ़ाइदा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! उस के लिए दानिशमन्द भी फ़ाइदे का बाइस नहीं। 3अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह इस से अपने लिए नफ़ा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर तू बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ हासिल होता है? 4अल्लाह तुझे तेरी ख़ुदातरस ज़िन्दगी के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि वह इसी लिए अदालत में तुझ से जवाब तलब कर रहा है।

5नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे ला-मह्दूद
गुनाह हैं।
6जब तेरे भाइयों ने तुझ से क़र्ज़ लिया तो
तू ने बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो
उन्हों ने तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तू
ने उन्हें उन के कपड़ों से महरूम कर दिया
होगा। 7तू ने थकेमान्दों को पानी पिलाने से
और भूके मरने वालों को खाना खिलाने से
इन्कार किया होगा। 8बेशक तेरा रवय्या इस
ख़याल पर मब्नी था कि पूरा मुल्क ताक़तवरों
की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग उस में
रह सकते हैं। 9तू ने बेवाओं को ख़ाली हाथ
मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश
की होगी। 10इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता
है, अचानक ही तुझे दह्शतनाक वाक़िआत
डराते हैं। 11यही वजह है कि तुझ पर ऐसा
अंधेरा छा गया है कि तू देख नहीं सकता, कि
सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।
12क्या अल्लाह आसमान की बुलन्दियों पर
नहीं होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता
है, ख़्वाह वह कितने ही ऊँचे क्यूँ न हों। 13तो
भी तू कहता है, 'अल्लाह क्या जानता है?
क्या वह काले बादलों में से देख कर अदालत
कर सकता है? 14वह घने बादलों में छुपा
रहता है, इस लिए जब वह आसमान के गुम्बद
पर चलता है तो उसे कुछ नज़र नहीं आता।'
15क्या तू उस क़दीम राह से बाज़ नहीं आएगा
जिस पर बदकार चलते रहे हैं? 16वह तो
अपने मुक़र्ररा वक़्त से पहले ही सुकड़ गए,
उन की बुन्यादें सैलाब से ही उड़ा ली गईं।
17उन्हों ने अल्लाह से कहा, 'हम से दूर हो जा,'
और 'क़ादिर-ए-मुतलक़ हमारे लिए क्या कुछ
कर सकता है?' 18लेकिन अल्लाह ही ने उन
के घरों को भरपूर ख़ुशहाली से नवाज़ा, गो
बेदीनों के बुरे मन्सूबे उस से दूर ही दूर रहते
हैं। 19रास्तबाज़ उन की तबाही देख कर ख़ुश
हुए, बेक़ुसूरों ने उन की हंसी उड़ा कर कहा,
20'लो, यह देखो, उन की जायदाद किस तरह
मिट गई, उन की दौलत किस तरह भस्म हो
गई है!'
21ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके
सलामती हासिल कर, तब ही तू ख़ुशहाली
पाएगा। 22अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना
ले, उस के फ़रमान अपने दिल में मह्फ़ूज़
रख। 23अगर तू क़ादिर-ए-मुतलक़ के पास
वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे
ख़ैमे से बदी दूर ही रहेगी। 24सोने को ख़ाक
के बराबर, ओफ़ीर का ख़ालिस सोना वादी
के पत्थर के बराबर समझ ले 25तो क़ादिर-
ए-मुतलक़ ख़ुद तेरा सोना होगा, वही तेरे
लिए चाँदी का ढेर होगा। 26तब तू क़ादिर-ए-
मुतलक़ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और अल्लाह
के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27तू उस
से इल्तिजा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू
अपनी मन्नतें बढ़ा सकेगा। 28जो कुछ भी तू
करने का इरादा रखे उस में तुझे कामयाबी
होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी। 29क्यूँकि
जो शेख़ी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता
जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नजात देता
है। 30वह बेक़ुसूर को छुड़ाता है, चुनाँचे अगर
तेरे हाथ पाक हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।"

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

23 अय्यूब ने जवाब में कहा,
2"बेशक आज मेरी शिकायत
सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी
आहों पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।
3काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि
उस की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4फिर
मैं अपना मुआमला तरतीबवार उस के सामने
पेश करता, मैं अपना मुँह दलाइल से भर
लेता। 5तब मुझे उस के जवाबों का पता
चलता, मैं उस के बयानात पर ग़ौर कर
सकता। 6क्या वह अपनी अज़ीम क़ुव्वत मुझ
से लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह
यक़ीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7अगर मैं
वहाँ उस के हुज़ूर आ सकता तो दियानतदार

आदमी की तरह उस के साथ मुक़द्दमा लड़ता।
तब मैं हमेशा के लिए अपने मुन्सिफ़ से बच
निकलता!
8लेकिन अफ़्सोस, अगर मैं मशरिक़ की
तरफ़ जाऊँ तो वह वहाँ नहीं होता, मग़रिब की
जानिब बढ़ूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता। 9शिमाल
मैं उसे ढूँढ़ूँ तो वह दिखाई नहीं देता, जुनूब की
तरफ़ रुख़ करूँ तो वहाँ भी पोशीदा रहता है।
10क्यूँकि वह मेरी राह को जानता है। अगर वह
मेरी जाँच-पड़ताल करता तो मैं ख़ालिस सोना
साबित होता। 11मेरे क़दम उस की राह में रहे
हैं, मैं राह से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटा बल्कि
सीधा उस पर चलता रहा। 12मैं उस के होंटों
के फ़रमान से बाज़ नहीं आया बल्कि अपने
दिल में ही उस के मुँह की बातें महफ़ूज़ रखी
हैं।
13अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक
सकता है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे
अमल में लाता है। 14जो भी मन्सूबा उस ने मेरे
लिए बांधा उसे वह ज़रूर पूरा करेगा। और
उस के ज़हन में मज़ीद बहुत से ऐसे मन्सूबे
हैं। 15इसी लिए मैं उस के हुज़ूर दह्शतज़दा
हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो उस से
डरता हूँ। 16अल्लाह ने ख़ुद मुझे शिकस्तादिल
किया, क़ादिर-ए-मुतलक़ ही ने मुझे दह्शत
खिलाई है। 17क्यूँकि न मैं तारीकी से तबाह हो
रहा हूँ, न इस लिए कि घने अंधेरे ने मेरे चेहरे
को ढाँप दिया है।

ज़मीन पर कितनी नाइन्साफ़ी पाई जाती है

24 क़ादिर-ए-मुतलक़ अदालत के
औक़ात क्यूँ नहीं मुक़र्रर करता?
जो उसे जानते हैं वह ऐसे दिन क्यूँ नहीं देखते?
2बेदीन अपनी ज़मीनों की हुदूद को आगे पीछे
करते और दूसरों के रेवड़ लूट कर अपनी
चरागाहों में ले जाते हैं। 3वह यतीमों का गधा
हाँक कर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को
क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर
अपना बैल दे। 4वह ज़रूरतमन्दों को रास्ते से
हटाते हैं, चुनाँचे मुल्क के ग़रीबों को सरासर
छुप जाना पड़ता है।
5ज़रूरतमन्द बयाबान में जंगली गधों की
तरह काम करने के लिए निकलते हैं। ख़ुराक
का खोज लगा लगा कर वह इधर उधर घूमते
फिरते हैं बल्कि रेगिस्तान ही उन्हें उन के बच्चों
के लिए खाना मुहय्या करता है। 6जो खेत उन
के अपने नहीं हैं उन में वह फ़सल काटते हैं,
और बेदीनों के अंगूर के बाग़ों में जा कर वह दो
चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने के बाद
बाक़ी रह गए थे। 7कपड़ों से महरूम रह कर
वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दी
में उन के पास कम्बल तक नहीं होता। 8पहाड़ों
की बारिश से वह भीग जाते और पनाहगाह न
होने के बाइस पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।
9बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद
से छीन लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा
को क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर
पर अपना शीरख़्वार बच्चा दे। 10ग़रीब बरहना
हालत में और कपड़े पहने बग़ैर फिरते हैं, वह
भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं। 11ज़ैतून
के जो दरख़्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए
थे उन के दरमियान ग़रीब ज़ैतून का तेल
निकालते हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के
हौज़ों में अंगूर को पाँओ तले कुचल कर उस
का रस निकालते हैं। 12शहर से मरने वालों
की आहें निकलती हैं और ज़ख़्मी लोग मदद
के लिए चीख़ते चिल्लाते हैं। इस के बावुजूद
अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।
13यह बेदीन उन में से हैं जो नूर से सरकश
हो गए हैं। न वह उस की राहों से वाक़िफ़
हैं, न उन में रहते हैं। 14सुब्ह-सवेरे क़ातिल
उठता है ताकि मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द
को क़त्ल करे। रात को चोर चक्कर काटता
है। 15ज़िनाकार की आँखें शाम के धुन्दल्के
के इन्तिज़ार में रहती हैं, यह सोच कर कि
उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा।
निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है।

16डाकू अंधेरे में घरों में नक़ब लगाते जबकि
दिन के वक़्त वह छुप कर अपने पीछे कुंडी
लगा लेते हैं। नूर को वह जानते ही नहीं।
17गहरी तारीकी ही उन की सुब्ह होती है,
क्यूँकि उन की घने अंधेरे की दह्शतों से दोस्ती
हो गई है।
18लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग
हैं, मुल्क में उन का हिस्सा मलऊन है और
उन के अंगूर के बाग़ों की तरफ़ कोई रुजू नहीं
करता। 19जिस तरह काल और झुलसती गर्मी
बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं उसी तरह पाताल
गुनाहगारों को छीन लेता है। 20माँ का रहम
उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और
उन की याद जाती रहती है। यक़ीनन बेदीनी
लकड़ी की तरह टूट जाती है। 21बेदीन बाँझ
औरत पर ज़ुल्म और बेवाओं से बदसुलूकी
करते हैं, 22लेकिन अल्लाह ज़बरदस्तों को
अपनी क़ुदरत से घसीट कर ले जाता है।
वह मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई
यक़ीन नहीं कि ज़िन्दा रहेंगे। 23अल्लाह उन्हें
हिफ़ाज़त से आराम करने देता है, लेकिन उस
की आँखें उन की राहों की पहरादारी करती
रहती हैं। 24लम्हा भर के लिए वह सरफ़राज़
होते, लेकिन फिर नेस्त-ओ-नाबूद हो जाते हैं।
उन्हें ख़ाक में मिला कर सब की तरह जमा
किया जाता है, वह गन्दुम की कटी हुई बालों
की तरह मुरझा जाते हैं।
25क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुत्तफ़िक़
नहीं तो वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ,
वह दिखाए कि मेरे दलाइल बातिल हैं।"

बिल्दद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

25 फिर बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर
कहा,
2"अल्लाह की हुकूमत दह्शतनाक है। वही
अपनी बुलन्दियों पर सलामती क़ाइम रखता
है। 3क्या कोई उस के दस्तों की तादाद गिन
सकता है? उस का नूर किस पर नहीं
चमकता? 4तो फिर इन्सान अल्लाह के सामने
किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? जो
औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़
साबित हो सकता है? 5उस की नज़र में न चाँद
पुरनूर है, न सितारे पाक हैं। 6तो फिर इन्सान
किस तरह पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही
है? आदमज़ाद तो मकोड़ा ही है।"

अय्यूब : तू ने मुझे कितने अच्छे मश्वरे दिए हैं!

26 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2"वाह जी वाह! तू ने क्या ख़ूब
उसे सहारा दिया जो बेबस है, क्या ख़ूब उस
बाज़ू को मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है!
3तू ने उसे कितने अच्छे मश्वरे दिए जो हिक्मत
से महरूम है, अपनी समझ की कितनी गहरी
बातें उस पर ज़ाहिर की हैं। 4तू ने किस की
मदद से यह कुछ पेश किया है? किस ने तेरी
रूह में वह बातें डालीं जो तेरे मुँह से निकल
आई हैं?

कौन अल्लाह की अज़मत का अन्दाज़ा लगा सकता है?

5अल्लाह के सामने वह तमाम मुर्दा अर्वाह
जो पानी और उस में रहने वालों के नीचे बसती
हैं डर के मारे तड़प उठती हैं। 6हाँ, उस के
सामने पाताल बरहना और उस की गहराइयाँ
बेनिक़ाब हैं।
7अल्लाह ही ने शिमाल को वीरान-ओ-
सुन्सान जगह के ऊपर तान लिया, उसी ने
ज़मीन को यूँ लगा दिया कि वह किसी चीज़
से लटकी हुई नहीं है। 8उस ने अपने बादलों
में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ तले न
फटे। 9उस ने अपना तख़्त नज़रों से छुपा कर
अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 10उस
ने पानी की सतह पर दाइरा बनाया जो रौशनी
और अंधेरे के दरमियान हद बन गया।
11आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की
धमकी पर वह दह्शतज़दा हुए। 12अपनी

क़ुदरत से अल्लाह ने समुन्दर को थमा दिया,
अपनी हिक्मत से रहब अज़दहे को टुकड़े
टुकड़े कर दिया। 13उस के रूह ने आसमान
को साफ़ किया, उस के हाथ ने फ़रार होने
वाले साँप को छेद डाला। 14लेकिन ऐसे काम
उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं।
जो कुछ हम उस के बारे में सुनते हैं वह धीमी
धीमी आवाज़ से हमारे कान तक पहुँचता है।
तो फिर कौन उस की क़ुदरत की कड़कती
आवाज़ समझ सकता है?”

मैं बेक़ुसूर हूँ

27 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी
रखी,

2“अल्लाह की हयात की क़सम जिस ने
मेरा इन्साफ़ करने से इन्कार किया, क़ादिर-ए-
मुतलक़ की क़सम जिस ने मेरी ज़िन्दगी तल्ख़
कर दी है, 3मेरे जीते जी, हाँ जब तक अल्लाह
का दम मेरी नाक में है 4मेरे होंट झूट नहीं
बोलेंगे, मेरी ज़बान धोका बयान नहीं करेगी।
5मैं कभी तस्लीम नहीं करूँगा कि तुम्हारी बात
दुरुस्त है। मैं बेइल्ज़ाम हूँ और मरते दम तक
इस के उलट नहीं कहूँगा। 6मैं इसरार करता हूँ
कि रास्तबाज़ हूँ और इस से कभी बाज़ नहीं
आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के बारे
में मुझे मलामत नहीं करता।

7अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही
सुलूक किया जाए जो बेदीनों के साथ किया
जाएगा, कि मेरे मुख़ालिफ़ का वह अन्जाम
हो जो बदकारों को पेश आएगा। 8क्यूँकि
उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद रहेगी जब
उसे इस ज़िन्दगी से मुन्क़ते किया जाएगा,
जब अल्लाह उस की जान उस से तलब
करेगा? 9क्या अल्लाह उस की चीख़ें सुनेगा
जब वह मुसीबत में फंस कर मदद के लिए
पुकारेगा? 10या क्या वह क़ादिर-ए-मुतलक़
से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और हर वक़्त अल्लाह
को पुकारेगा?

11अब मैं तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत के बारे
में तालीम दूँगा, क़ादिर-ए-मुतलक़ का इरादा
तुम से नहीं छुपाऊँगा। 12देखो, तुम सब ने इस
का मुशाहदा किया है। तो फिर इस क़िस्म की
बातिल बातें क्यूँ करते हो?

बेदीन ज़िन्दा नहीं रहेगा

13बेदीन अल्लाह से क्या अज्र पाएगा,
ज़ालिम को क़ादिर-ए-मुतलक़ से मीरास में
क्या मिलेगा? 14गो उस के बच्चे मुतअद्दिद
हों, लेकिन आख़िरकार वह तलवार की ज़द
में आएँगे। उस की औलाद भूकी रहेगी। 15जो
बच जाएँ उन्हें मोहलक बीमारी से क़ब्र में
पहुँचाया जाएगा, और उन की बेवाएँ मातम
नहीं कर पाएँगी। 16बेशक वह ख़ाक की तरह
चाँदी का ढेर लगाए और मिट्टी की तरह नफ़ीस
कपड़ों का तोदा इकट्ठा करे, 17लेकिन जो
कपड़े वह जमा करे उन्हें रास्तबाज़ पहन लेगा,
और जो चाँदी वह इकट्ठी करे उसे बेक़ुसूर
तक़्सीम करेगा। 18जो घर बेदीन बना ले वह
घोंसले की मानिन्द है, उस आरिज़ी झोंपड़ी
की मानिन्द जो चौकीदार अपने लिए बना
लेता है। 19वह अमीर हालत में सो जाता
है, लेकिन आख़िरी दफ़ा। जब अपनी आँखें
खोल लेता तो तमाम दौलत जाती रही है।
20उस पर हौलनाक वाक़िआत का सैलाब टूट
पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है।
21मशरिक़ी लू उसे उड़ा ले जाती, उसे उठा कर
उस के मक़ाम से दूर फैंक देती है। 22बेरहमी
से वह उस पर यूँ झपट्टा मारती रहती है कि
उसे बार बार भागना पड़ता है। 23वह तालियाँ
बजा कर अपनी हिक़ारत का इज़हार करती,
अपनी जगह से आवाज़े कसती है।

हिक्मत कहाँ पाई जाती है?

28 यक़ीनन चाँदी की कानें होती
हैं और ऐसी जगहें जहाँ सोना
ख़ालिस किया जाता है। 2लोहा ज़मीन से
निकाला जाता और लोग पत्थर पिघला कर

ताँबा बना लेते हैं। 3इन्सान अंधेरे को ख़त्म
करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक
कच्ची धात का खोज लगाता है, ख़्वाह वह
कितने अंधेरे में क्यूँ न हो। 4एक अजनबी क़ौम
सुरंग लगाती है। जब रस्सों से लटके हुए काम
करते और इन्सानों से दूर कान में झूमते हैं तो
ज़मीन पर गुज़रने वालों को उन की याद ही
नहीं रहती। 5ज़मीन की सतह पर ख़ुराक पैदा
होती है जबकि उस की गहराइयाँ यूँ तब्दील हो
जाती हैं जैसे उस में आग लगी हो। 6पत्थरों
से संग-ए-लाजवर्द निकाला जाता है जिस में
सोने के ज़र्रे भी पाए जाते हैं।

7यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी
परिन्दा नहीं जानता, जो किसी भी बाज़ ने
नहीं देखा। 8जंगल के रोबदार जानवरों में से
कोई भी इन राहों पर नहीं चला, किसी भी
शेरबबर ने इन पर क़दम नहीं रखा। 9इन्सान
संग-ए-चक़्माक़ पर हाथ लगा कर पहाड़ों को
जड़ से उलटा देता है। 10वह पत्थर में सुरंग
लगा कर हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ देख
लेता 11और ज़मीनदोज़ नदियों को बन्द करके
पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

12लेकिन हिक्मत कहाँ पाई जाती है, समझ
कहाँ से मिलती है? 13इन्सान उस तक जाने
वाली राह नहीं जानता, क्यूँकि उसे मुल्क-ए-
हयात में पाया नहीं जाता। 14समुन्दर कहता
है, 'हिक्मत मेरे पास नहीं है,' और उस की
गहराइयाँ बयान करती हैं, 'यहाँ भी नहीं है।'

15हिक्मत को न ख़ालिस सोने, न चाँदी से
ख़रीदा जा सकता है। 16उसे पाने के लिए
न ओफ़ीर का सोना, न बेशक़ीमत अक़ीक़-
ए-अह्मर[a] या संग-ए-लाजवर्द[b] काफ़ी हैं।
17सोना और शीशा उस का मुक़ाबला नहीं
कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात के इवज़
मिल सकती है। 18उस की निस्बत मूँगा और
बिल्लौर की क्या क़दर है? हिक्मत से भरी
थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा क़ीमती है।
19एथोपिया का ज़बर्जद[c] उस का मुक़ाबला
नहीं कर सकता, उसे ख़ालिस सोने के लिए
ख़रीदा नहीं जा सकता।

20हिक्मत कहाँ से आती, समझ कहाँ से
मिल सकती है? 21वह तमाम जानदारों से
पोशीदा रहती बल्कि परिन्दों से भी छुपी रहती
है। 22पाताल और मौत उस के बारे में कहते
हैं, 'हम ने उस के बारे में सिर्फ़ अफ़्वाहें सुनी
हैं।'

23लेकिन अल्लाह उस तक जाने वाली राह
को जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल
सकती है। 24क्यूँकि उसी ने ज़मीन की हुदूद
तक देखा, आसमान तले सब कुछ पर नज़र
डाली 25ताकि हवा का वज़न मुक़र्रर करे
और पानी की पैमाइश करके उस की हुदूद
मुतअय्यिन करे। 26उसी ने बारिश के लिए
फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती
बिजली के लिए रास्ता तय्यार किया। 27उसी
वक़्त उस ने हिक्मत को देख कर उस की
जाँच-पड़ताल की। उस ने उसे क़ाइम भी
किया और उस की तह तक तहक़ीक़ भी की।
28इन्सान से उस ने कहा, 'सुनो, अल्लाह का
ख़ौफ़ मानना ही हिक्मत और बुराई से दूर
रहना ही समझ है'।"

काश मेरी ज़िन्दगी पहले की तरह हो

29 अय्यूब ने अपनी बात जारी रख
कर कहा,

2"काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार
सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था,
3जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती
रही और मैं उस की रौशनी की मदद से अंधेरे
में चलता था। 4उस वक़्त मेरी जवानी उरूज
पर थी और मेरा ख़ैमा अल्लाह के साय में
रहता था। 5क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरे साथ था,
और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था। 6कस्रत
के बाइस मेरे क़दम दही से धोए रहते और

[a] carnelian
[b] lapis lazuli
[c] peridot

चटान से तेल की नदियाँ फूट कर निकलती थीं।

7जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकल
कर चौक में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता 8तो
जवान आदमी मुझे देख कर पीछे हट कर
छुप जाते, बुज़ुर्ग उठ कर खड़े रहते, 9रईस
बोलने से बाज़ आ कर मुँह पर हाथ रखते,
10शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उन की
ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उस ने मुझे
मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उस ने
मेरे हक़ में गवाही दी। 12क्यूँकि जो मुसीबत में
आ कर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा
यतीम को छुटकारा देता था। 13तबाह होने
वाले मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं
के दिलों से ख़ुशी के नारे उभर आते थे। 14मैं
रास्तबाज़ी से मुलब्बस और रास्तबाज़ी मुझ
से मुलब्बस रहती थी, इन्साफ़ मेरा चोग़ा और
पगड़ी था।

15अंधों के लिए मैं आँखें, लंगड़ों के लिए
पाँओ बना रहता था। 16मैं ग़रीबों का बाप
था, और जब कभी अजनबी को मुक़द्दमा
लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से उस के मुआमले का
मुआइना करता था ताकि उस का हक़ मारा न
जाए। 17मैं ने बेदीन का जबड़ा तोड़ कर उस
के दाँतों में से शिकार छुड़ाया।

18उस वक़्त मेरा ख़याल था, 'मैं अपने
ही घर में वफ़ात पाऊँगा, सीमुर्ग़ की तरह
अपनी ज़िन्दगी के दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा।
19मेरी जड़ें पानी तक फैली और मेरी शाख़ें
ओस से तर रहेंगी। 20मेरी इज़्ज़त हर वक़्त
ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई
तक़वियत मिलती रहेगी।'

21लोग मेरी सुन कर ख़ामोशी से मेरे मश्वरों
के इन्तिज़ार में रहते थे। 22मेरे बात करने
पर वह जवाब में कुछ न कहते बल्कि मेरे
अल्फ़ाज़ हल्की सी बूँदा-बाँदी की तरह उन
पर टपकते रहते। 23जिस तरह इन्सान शिद्दत
से बारिश के इन्तिज़ार में रहता है उसी तरह
वह मेरे इन्तिज़ार में रहते थे। वह मुँह पसार
कर बहार की बारिश की तरह मेरे अल्फ़ाज़
को जज़ब कर लेते थे। 24जब मैं उन से बात
करते वक़्त मुस्कुराता तो उन्हें यक़ीन नहीं
आता था, मेरी उन पर मेहरबानी उन के
नज़दीक निहायत क़ीमती थी। 25मैं उन की
राह उन के लिए चुन कर उन की क़ियादत
करता, उन के दरमियान यूँ बसता था जिस
तरह बादशाह अपने दस्तों के दरमियान। मैं
उस की मानिन्द था जो मातम करने वालों को
तसल्ली देता है।

मुझे रद्द किया गया है

30 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते
हैं, हालाँकि उन की उम्र मुझ से
कम है और मैं उन के बापों को अपनी भेड़-
बकरियों की देख-भाल करने वाले कुत्तों के
साथ काम पर लगाने के भी लाइक़ नहीं
समझता था। 2मेरे लिए उन के हाथों की मदद
का क्या फ़ाइदा था? उन की पूरी ताक़त तो
जाती रही थी। 3ख़ुराक की कमी और शदीद
भूक के मारे वह ख़ुश्क ज़मीन की थोड़ी बहुत
पैदावार कतर कतर कर खाते हैं। हर वक़्त
वह तबाही और वीरानी के दामन में रहते हैं।
4वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल तोड़ कर
खाते, झाड़ियों[a] की जड़ें आग तापने के लिए
इकट्ठी करते हैं। 5उन्हें आबादियों से ख़ारिज
किया गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्ला
कर उन्हें भगा देते हैं। 6उन्हें घाटियों की ढलानों
पर बसना पड़ता, वह ज़मीन के ग़ारों में और
पत्थरों के दरमियान ही रहते हैं। 7झाड़ियों
के दरमियान वह आवाज़ें देते और मिल कर
ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं। 8इन कमीने
और बेनाम लोगों को मार मार कर मुल्क से
भगा दिया गया है।

[a]यानी झाड़ी बनाम broom, सींक क़िस्म की झाड़ी जिस के फूल ज़र्द होते हैं।

9और अब मैं इन ही का निशाना बन गया हूँ।
अपने गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी
बुरी हालत उन के लिए मज़हकाख़ेज़ मिसाल
बन गई है। 10वह घिन खा कर मुझ से दूर
रहते और मेरे मुँह पर थूकने से नहीं रुकते।
11चूँकि अल्लाह ने मेरी कमान की ताँत खोल
कर मेरी रुस्वाई की है, इस लिए वह मेरी
मौजूदगी में बेलगाम हो गए हैं। 12मेरे दहने
हाथ हुजूम खड़े हो कर मुझे ठोकर खिलाते
और मेरी फ़सील के साथ मिट्टी के ढेर लगाते हैं
ताकि उस में रख़ना डाल कर मुझे तबाह करें।
13वह मेरी क़िलाबन्दियाँ ढा कर मुझे ख़ाक में
मिलाने में कामयाब हो जाते हैं। किसी और की
मदद दरकार ही नहीं। 14वह रख़ने में दाख़िल
होते और जौक़-दर-जौक़ तबाहशुदा फ़सील
में से गुज़र कर आगे बढ़ते हैं। 15हौलनाक
वाक़िआत मेरे ख़िलाफ़ खड़े हो गए हैं, और
वह तेज़ हवा की तरह मेरे वक़ार को उड़ा
ले जा रहे हैं। मेरी सलामती बादल की तरह
ओझल हो गई है।

16और अब मेरी जान निकल रही है, मैं
मुसीबत के दिनों के क़ाबू में आ गया हूँ। 17रात
को मेरी हड्डियों को छेदा जाता है, कतरने
वाला दर्द मुझे कभी नहीं छोड़ता। 18अल्लाह
बड़े ज़ोर से मेरा कपड़ा पकड़ कर गरेबान की
तरह मुझे अपनी सख़्त गिरिफ़्त में रखता है।
19उस ने मुझे कीचड़ में फैंक दिया है, और
देखने में मैं ख़ाक और मिट्टी ही बन गया हूँ।
20मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू जवाब नहीं देता।
मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे घूरता ही
रहता है। 21तू मेरे साथ अपना सुलूक बदल
कर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ
के पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है। 22तू मुझे
उड़ा कर हवा पर सवार होने देता, गरजते
तूफ़ान में घुलने देता है। 23हाँ, अब मैं जानता
हूँ कि तू मुझे मौत के हवाले करेगा, उस घर
में पहुँचाएगा जहाँ एक दिन तमाम जानदार
जमा हो जाते हैं।

24यक़ीनन मैं ने कभी भी अपना हाथ किसी
ज़रूरतमन्द के ख़िलाफ़ नहीं उठाया जब उस
ने अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25बल्कि
जब किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी
से रोने लगा, ग़रीबों की हालत देख कर
मेरा दिल ग़म खाने लगा। 26ताहम मुझ पर
मुसीबत आई, अगरचे मैं भलाई की उम्मीद
रख सकता था। मुझ पर घना अंधेरा छा गया,
हालाँकि मैं रौशनी की तवक़्क़ो कर सकता
था। 27मेरे अन्दर सब कुछ मुज़्तरिब है और
कभी आराम नहीं कर सकता, मेरा वास्ता
तक्लीफ़दिह दिनों से पड़ता है। 28मैं मातमी
लिबास में फिरता हूँ और कोई मुझे तसल्ली
नहीं देता, हालाँकि मैं जमाअत में खड़े हो कर
मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29मैं गीदड़ों का
भाई और उक़ाबी उल्लूओं का साथी बन गया
हूँ। 30मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ
तपती गर्मी के सबब से झुलस गई हैं। 31अब
मेरा सरोद सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी
सिर्फ़ रोने वालों के लिए इस्तेमाल होती है।

मेरी आख़िरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

31 मैं ने अपनी आँखों से अह्द बांधा
है। तो फिर मैं किस तरह किसी
कुंवारी पर नज़र डाल सकता हूँ? 2क्यूँकि
इन्सान को आसमान पर रहने वाले ख़ुदा की
तरफ़ से क्या नसीब है, उसे बुलन्दियों पर
बसने वाले क़ादिर-ए-मुतलक़ से क्या विरासत
पाना है? 3क्या ऐसा नहीं है कि नारास्त शख़्स
के लिए आफ़त और बदकार के लिए तबाही
मुक़र्रर है? 4मेरी राहें तो अल्लाह को नज़र
आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन लेता है।

5न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँओ ने
कभी फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इस
में ज़रा भी शक हो 6तो अल्लाह मुझे इन्साफ़
के तराज़ू में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइल्ज़ाम
हालत मालूम करे। 7अगर मेरे क़दम सहीह
राह से हट गए, मेरी आँखें मेरे दिल को ग़लत
राह पर ले गईं या मेरे हाथ दाग़दार हुए 8तो

फिर जो बीज मैं ने बोया उस की पैदावार कोई
और खाए, जो फ़सलें मैं ने लगाईं उन्हें उखाड़ा
जाए।
9अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजाइज़
ताल्लुक़ात रखने पर उकसाया गया और मैं
इस मक़्सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर
ताक लगाए बैठा 10तो फिर अल्लाह करे कि
मेरी बीवी किसी और आदमी की गन्दुम पीसे,
कि कोई और उस पर झुक जाए। 11क्यूँकि
ऐसी हरकत शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के
लाइक़ होता है। 12ऐसे गुनाह की आग पाताल
तक सब कुछ भस्म कर देती है। अगर वह मुझ
से सरज़द होता तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों
तक राख कर देता।
13अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ
झगड़ा था और मैं ने उन का हक़ मारा 14तो मैं
क्या करूँ जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो
जाए? जब वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे
क्या जवाब दूँ? 15क्यूँकि जिस ने मुझे मेरी माँ
के पेट में बनाया उस ने उन्हें भी बनाया। एक
ही ने उन्हें भी और मुझे भी रहम में तश्कील
दिया।
16क्या मैं ने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी
करने से इन्कार किया या बेवा की आँखों
को बुझने दिया? हरगिज़ नहीं! 17क्या मैं
ने अपनी रोटी अकेले ही खाई और यतीम
को उस में शरीक न किया? 18हरगिज़ नहीं,
बल्कि अपनी जवानी से ले कर मैं ने उस का
बाप बन कर उस की परवरिश की, अपनी
पैदाइश से ही बेवा की राहनुमाई की। 19जब
कभी मैं ने देखा कि कोई कपड़ों की कमी के
बाइस हलाक हो रहा है, कि किसी ग़रीब के
पास कम्बल तक नहीं 20तो मैं ने उसे अपनी
भेड़ों की कुछ ऊन दी ताकि वह गर्म हो सके।
ऐसे लोग मुझे दुआ देते थे। 21मैं ने कभी भी
यतीमों के ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस
वक़्त भी नहीं जब शहर के दरवाज़े में बैठे
बुज़ुर्ग मेरे हक़ में थे। 22अगर ऐसा न था तो
अल्लाह करे कि मेरा शाना कंधे से निकल कर
गिर जाए, कि मेरा बाज़ू जोड़ से फाड़ा जाए!
23ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन थीं, क्यूँकि
अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से दह्शत
खाता रहता, मैं उस से डर के मारे क़ाइम न
रह सकता।
24क्या मैं ने सोने पर अपना पूरा भरोसा
रखा या ख़ालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही
मेरा एतिमाद है'? हरगिज़ नहीं! 25क्या मैं इस
लिए ख़ुश था कि मेरी दौलत ज़्यादा है और मेरे
हाथ ने बहुत कुछ हासिल किया है? हरगिज़
नहीं! 26क्या सूरज की चमक-दमक और चाँद
की पुरवक़ार रविश देख कर 27मेरे दिल को
कभी चुपके से ग़लत राह पर लाया गया?
क्या मैं ने कभी उन का एहतिराम किया?[a]
28हरगिज़ नहीं, क्यूँकि यह भी सज़ा के लाइक़
जुर्म है। अगर मैं ऐसा करता तो बुलन्दियों पर
रहने वाले ख़ुदा का इन्कार करता।
29क्या मैं कभी ख़ुश हुआ जब मुझ से
नफ़रत करने वाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़
बाग़ हुआ जब उस पर मुसीबत आई? हरगिज़
नहीं! 30मैं ने अपने मुँह को इजाज़त न दी कि
गुनाह करके उस की जान पर लानत भेजे।
31बल्कि मेरे ख़ैमे के आदमियों को तस्लीम
करना पड़ा, 'कोई नहीं है जो अय्यूब के गोश्त
से सेर न हुआ।' 32अजनबी को बाहर गली
में रात गुज़ारनी नहीं पड़ती थी बल्कि मेरा
दरवाज़ा मुसाफ़िरों के लिए खुला रहता था।
33क्या मैं ने कभी आदम की तरह अपना गुनाह
छुपा कर अपना क़ुसूर दिल में पोशीदा रखा,
34इस लिए कि हुजूम से डरता और अपने
रिश्तेदारों से दह्शत खाता था? हरगिज़ नहीं!
मैं ने कभी भी ऐसा काम न किया जिस के
बाइस मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और
घर से निकल नहीं सकता था।
35काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात
पर मेरे दस्तख़त हैं, अब क़ादिर-ए-मुतलक़
मुझे जवाब दे। काश मेरे मुख़ालिफ़ लिख कर

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

मुझे वह इल्ज़ामात बताएँ जो उन्हों ने मुझ
पर लगाए हैं! 36अगर इल्ज़ामात का काग़ज़
मिलता तो मैं उसे उठा कर अपने कंधे पर
रखता, उसे पगड़ी की तरह अपने सर पर बांध
लेता। 37मैं अल्लाह को अपने क़दमों का पूरा
हिसाब-किताब दे कर रईस की तरह उस के
क़रीब पहुँचता।

38क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकार
कर मुझ पर इल्ज़ाम लगाया है? क्या उस
की रेघारयाँ मेरे सबब से मिल कर रो पड़ी
हैं? 39क्या मैं ने उस की पैदावार अज्र दिए
बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-मशक़्क़त करने
वालों के लिए आहें भरने का बाइस बन गया?
हरगिज़ नहीं! 40अगर मैं इस में क़ुसूरवार
ठहरूँ तो गन्दुम के बजाए ख़ारदार झाड़ियाँ
और जौ के बजाए धतूरा[a] उगे।" यूँ अय्यूब
की बातें इख़तिताम को पहुँच गईं।

चौथे साथी इलीहू की तक़रीर

32 तब मज़कूरा तीनों आदमी अय्यूब
को जवाब देने से बाज़ आए,
क्यूँकि वह अब तक समझता था कि मैं
रास्तबाज़ हूँ। 2यह देख कर इलीहू बिन
बरकेल ग़ुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहने
वाले इस आदमी का ख़ानदान राम था। एक
तरफ़ तो वह अय्यूब से ख़फ़ा था, क्यूँकि यह
अपने आप को अल्लाह के सामने रास्तबाज़
ठहराता था। 3दूसरी तरफ़ वह तीनों दोस्तों
से भी नाराज़ था, क्यूँकि न वह अय्यूब को
सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके कि
मुजरिम है। 4इलीहू ने अब तक अय्यूब से बात
नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं
की थी वह ख़ामोश रहा, क्यूँकि वह बुज़ुर्ग
थे। 5लेकिन अब जब उस ने देखा कि तीनों
आदमी मज़ीद कोई जवाब नहीं दे सकते तो
वह भड़क उठा 6और जवाब में कहा,

"मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्ररसीदा
हैं, इस लिए मैं कुछ शर्मीला था, मैं आप
को अपनी राय बताने से डरता था। 7मैं ने
सोचा, चलो वह बोलें जिन के ज़्यादा दिन
गुज़रे हैं, वह तालीम दें जिन्हें मुतअद्दिद सालों
का तजरिबा हासिल है।

8लेकिन जो रूह इन्सान में है यानी जो दम
क़ादिर-ए-मुतलक़ ने उस में फूँक दिया वही
इन्सान को समझ अता करता है। 9न सिर्फ़
बूढ़े लोग दानिशमन्द हैं, न सिर्फ़ वह इन्साफ़
समझते हैं जिन के बाल सफ़ेद हैं। 10चुनाँचे मैं
गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें, मुझे
भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

11मैं आप के अल्फ़ाज़ के इन्तिज़ार में रहा।
जब आप मौज़ूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो
मैं आप की दानिशमन्द बातों पर ग़ौर करता
रहा। 12मैं ने आप पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन
आप में से कोई अय्यूब को ग़लत साबित न
कर सका, कोई उस के दलाइल का मुनासिब
जवाब न दे पाया। 13अब ऐसा न हो कि आप
कहें, 'हम ने अय्यूब में हिक्मत पाई है, इन्सान
उसे शिकस्त दे कर भगा नहीं सकता बल्कि
सिर्फ़ अल्लाह ही।' 14क्यूँकि अय्यूब ने अपने
दलाइल की तरतीब से मेरा मुक़ाबला नहीं
किया, और जब मैं जवाब दूँगा तो आप की
बातें नहीं दोहराऊँगा।

15आप घबरा कर जवाब देने से बाज़ आए
हैं, अब आप कुछ नहीं कह सकते। 16क्या मैं
मज़ीद इन्तिज़ार करूँ, गो आप ख़ामोश हो
गए हैं, आप रुक कर मज़ीद जवाब नहीं दे
सकते? 17मैं भी जवाब देने में हिस्सा लेना
चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश करूँगा।
18क्यूँकि मेरे अन्दर से अल्फ़ाज़ छलक रहे हैं,
मेरी रूह मेरे अन्दर मुझे मज्बूर कर रही है।

19हक़ीक़त में मैं अन्दर से उस नई मै की
मानिन्द हूँ जो बन्द रखी गई हो, मैं नई मै
से भरी हुई नई मश्कों की तरह फटने को
हूँ। 20मुझे बोलना है ताकि आराम पाऊँ,
लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोल
कर जवाब दूँ। 21यक़ीनन न मैं किसी की

[a]एक बदबूदार पौदा।

जानिबदारी, न किसी की चापलूसी करूँगा।
22क्यूँकि मैं ख़ुशामद कर ही नहीं सकता, वर्ना
मेरा ख़ालिक़ मुझे जल्द ही उड़ा ले जाएगा।

अल्लाह कई तरीक़ों से इन्सान से हमकलाम होता है

33 ऐ अय्यूब, मेरी तक़रीर सुनें, मेरी
तमाम बातों पर कान धरें! 2अब मैं
अपना मुँह खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती
है। 3मेरे अल्फ़ाज़ सीधी राह पर चलने वाले
दिल से उभर आते हैं, मेरे होंट दियानतदारी
से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं जानता हूँ।
4अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, क़ादिर-ए-
मुतलक़ के दम ने मुझे ज़िन्दगी बख़्शी।
5अगर आप इस क़ाबिल हों तो मुझे जवाब
दें और अपनी बातें तरतीब से पेश करके मेरा
मुक़ाबला करें। 6अल्लाह की नज़र में मैं तो
आप के बराबर हूँ, मुझे भी मिट्टी से ले कर
तश्कील दिया गया है। 7चुनाँचे मुझे आप के
लिए दह्शत का बाइस नहीं होना चाहिए, मेरी
तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।
8आप ने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आप
के अल्फ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे
हैं, 9'मैं पाक हूँ, मुझ से जुर्म सरज़द नहीं
हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा कोई क़ुसूर नहीं। 10तो
भी अल्लाह मुझ से झगड़ने के मवाक़े ढूँडता
और मुझे अपना दुश्मन समझता है। 11वह मेरे
पाँओ को काठ में डाल कर मेरी तमाम राहों
की पहरादारी करता है।'
12लेकिन आप की यह बात दुरुस्त नहीं,
क्यूँकि अल्लाह इन्सान से आला है। 13आप
उस से झगड़ कर क्यूँ कहते हैं, 'वह मेरी किसी
भी बात का जवाब नहीं देता'? 14शायद
इन्सान को अल्लाह नज़र न आए, लेकिन वह
ज़रूर कभी इस तरीक़े, कभी उस तरीक़े से
उस से हमकलाम होता है।
15कभी वह ख़्वाब या रात की रोया में उस
से बात करता है। जब लोग बिस्तर पर लेट
कर गहरी नींद सो जाते हैं 16तो अल्लाह उन
के कान खोल कर अपनी नसीहतों से उन्हें
दह्शतज़दा कर देता है। 17यूँ वह इन्सान को
ग़लत काम करने और मग़रूर होने से बाज़
रख कर 18उस की जान गढ़े में उतरने और
दरया-ए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।
19कभी अल्लाह इन्सान की बिस्तर पर दर्द
के ज़रीए तर्बियत करता है। तब उस की
हड्डियों में लगातार जंग होती है। 20उस की
जान को ख़ुराक से घिन आती बल्कि उसे
लज़ीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है।
21उस का गोश्त-पोस्त सुकड़ कर ग़ाइब हो
जाता है जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं
वह नुमायाँ तौर पर नज़र आती हैं। 22उस की
जान गढ़े के क़रीब, उस की ज़िन्दगी हलाक
करने वालों के नज़्दीक पहुँचती है।
23लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से
कोई सालिस उस के पास हो जो इन्सान को
सीधी राह दिखाए 24और उस पर तरस खा कर
कहे, 'उसे गढ़े में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या
मिल गया है, 25अब उस का जिस्म जवानी की
निस्बत ज़्यादा तर-ओ-ताज़ा हो जाए और वह
दुबारा जवानी की सी ताक़त पाए' 26तो फिर
वह शख़्स अल्लाह से इल्तिजा करेगा, और
अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी
ख़ुशी से अल्लाह का चेहरा तकता रहेगा। इसी
तरह अल्लाह इन्सान की रास्तबाज़ी बहाल
करता है।
27ऐसा शख़्स लोगों के सामने गाएगा और
कहेगा, 'मैं ने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-
मेढ़ी कर दी, और मुझे कोई फ़ाइदा न हुआ।
28लेकिन उस ने फ़िद्या दे कर मेरी जान को
मौत के गढ़े में उतरने से छुड़ाया। अब मेरी
ज़िन्दगी नूर से लुत्फ़अन्दोज़ होगी।'
29अल्लाह इन्सान के साथ यह सब कुछ दो
चार मर्तबा करता है 30ताकि उस की जान गढ़े
से वापस आए और वह ज़िन्दगी के नूर से
रौशन हो जाए।
31ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, ख़ामोश
हो जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32अगर आप

जवाब में कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें,
क्यूँकि मैं आप को रास्तबाज़ ठहराने की आर्ज़ू
रखता हूँ। 33लेकिन अगर आप कुछ बयान
नहीं कर सकते तो मेरी सुनें, चुप रहें ताकि
मैं आप को हिक्मत की तालीम दूँ।"

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज्र देता है

34 फिर इलीहू ने बात जारी रख कर
कहा,
2"ऐ दानिशमन्दो, मेरे अल्फ़ाज़ सुनें! ऐ
आलिमो, मुझ पर कान धरें! 3क्यूँकि कान
यूँ अल्फ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस
तरह ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। 4आएँ,
हम अपने लिए वह कुछ चुन लें जो दुरुस्त है,
आपस में जान लें कि क्या कुछ अच्छा है।
5अय्यूब ने कहा है, 'गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी
अल्लाह ने मुझे मेरे हुक़ूक़ से महरूम कर रखा
है। 6जो फ़ैसला मेरे बारे में किया गया है उसे
मैं झूट क़रार देता हूँ। गो मैं बेक़ुसूर हूँ तो भी
तीर ने मुझे यूँ ज़ख़्मी कर दिया कि उस का
इलाज मुमकिन ही नहीं।' 7अब मुझे बताएँ,
क्या कोई अय्यूब जैसा बुरा है? वह तो कुफ़्र
की बातें पानी की तरह पीते, 8बदकारों की
सोह्बत में चलते और बेदीनों के साथ अपना
वक़्त गुज़ारते हैं। 9क्यूँकि वह दावा करते हैं
कि अल्लाह से लुत्फ़अन्दोज़ होना इन्सान के
लिए बेफ़ाइदा है।
10चुनाँचे ऐ समझदार मर्दो, मेरी बात सुनें!
यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम
करे? यह तो मुमकिन ही नहीं कि क़ादिर-
ए-मुतलक़ नाइन्साफ़ी करे। 11यक़ीनन वह
इन्सान को उस के आमाल का मुनासिब
अज्र दे कर उस पर वह कुछ लाता है
जिस का तक़ाज़ा उस का चाल-चलन करता
है। 12यक़ीनन अल्लाह बेदीन हरकतें नहीं
करता, क़ादिर-ए-मुतलक़ इन्साफ़ का ख़ून
नहीं करता। 13किस ने ज़मीन को अल्लाह के
हवाले किया? किस ने उसे पूरी दुनिया पर
इख़तियार दिया? कोई नहीं! 14अगर वह
कभी इरादा करे कि अपनी रूह और अपना
दम इन्सान से वापस ले 15तो तमाम लोग दम
छोड़ कर दुबारा ख़ाक हो जाएंगे।
16ऐ अय्यूब, अगर आप को समझ है तो
सुनें, मेरी बातों पर ध्यान दें। 17जो इन्साफ़
से नफ़रत करे क्या वह हुकूमत कर सकता
है? क्या आप उसे मुजरिम ठहराना चाहते हैं
जो रास्तबाज़ और क़ादिर-ए-मुतलक़ है, 18जो
बादशाह से कह सकता है, 'ऐ बदमआश!'
और शुरफ़ा से, 'ऐ बेदीनो!'? 19वह तो न
रईसों की जानिबदारी करता, न उह्देदारों को
पस्तहालों पर तर्जीह देता है, क्यूँकि सब ही को
उस के हाथों ने बनाया है। 20वह पल भर में,
आधी रात ही मर जाते हैं। शुरफ़ा को हिलाया
जाता है तो वह कूच कर जाते हैं, ताक़तवरों
को बग़ैर किसी तग-ओ-दौ के हटाया जाता
है।
21क्यूँकि अल्लाह की आँखें इन्सान की राहों
पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम
उसे नज़र आता है। 22कहीं इतनी तारीकी या
घना अंधेरा नहीं होता कि बदकार उस में छुप
सके। 23और अल्लाह किसी भी इन्सान को
उस वक़्त से आगाह नहीं करता जब उसे
इलाही तख़्त-ए-अदालत के सामने आना है।
24उसे तहक़ीक़ात की ज़रूरत ही नहीं बल्कि
वह ज़ोर-आवरों को पाश पाश करके दूसरों
को उन की जगह खड़ा कर देता है। 25वह
तो उन की हरकतों से वाक़िफ़ है और उन्हें
रात के वक़्त यूँ तह-ओ-बाला कर सकता है
कि चूर चूर हो जाएँ। 26उन की बेदीनी के
जवाब में वह उन्हें सब की नज़रों के सामने
पटख़ देता है। 27उस की पैरवी से हटने और
उस की राहों का लिहाज़ न करने का यही
नतीजा है। 28क्यूँकि उन की हरकतों के बाइस
पस्तहालों की चीख़ें अल्लाह के सामने और
मुसीबतज़दों की इल्तिजाएँ उस के कान तक
पहुँचीं। 29लेकिन अगर वह ख़ामोश भी रहे
तो कौन उसे मुजरिम क़रार दे सकता है?

अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन
उसे देख सकता है? वह तो क़ौम पर बल्कि
हर फ़र्द पर हुकूमत करता है 30ताकि शरीर
हुकूमत न करें और क़ौम फंस न जाए।
31बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, 'मुझे
ग़लत राह पर लाया गया है, आइन्दा मैं
दुबारा बुरा काम नहीं करूँगा। 32जो कुछ
मुझे नज़र नहीं आता वह मुझे सिखा, अगर
मुझ से नाइन्साफ़ी हुई है तो आइन्दा ऐसा
नहीं करूँगा।' 33क्या अल्लाह को आप को
वह अज्र देना चाहिए जो आप की नज़र में
मुनासिब है, गो आप ने उसे रद्द कर दिया
है? लाज़िम है कि आप ख़ुद ही फ़ैसला
करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें
जो कुछ आप सहीह समझते हैं। 34समझदार
लोग बल्कि हर दानिशमन्द जो मेरी बात सुने
फ़रमाएगा, 35'अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं
कर रहा, उस के अल्फ़ाज़ फ़हम से ख़ाली
हैं। 36काश अय्यूब की पूरी जाँच-पड़ताल की
जाए, क्यूँकि वह शरीरों के से जवाब पेश
करता, 37वह अपने गुनाह में इज़ाफ़ा करके
हमारे रू-ब-रू अपने जुर्म पर शक डालता
और अल्लाह पर मुतअद्दिद इल्ज़ामात लगाता
है'।"

अपने आप को रास्तबाज़ मत ठहराना

35 फिर इलीहू ने अपनी बात जारी
रखी,
2"आप कहते हैं, 'मैं अल्लाह से ज़्यादा
रास्तबाज़ हूँ।' क्या आप यह बात दुरुस्त
समझते हैं 3या यह कि 'मुझे क्या फ़ाइदा है,
गुनाह न करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?' 4मैं
आप को और साथी दोस्तों को इस का जवाब
बताता हूँ।
5अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ,
बुलन्दियों के बादलों पर ग़ौर करें। 6अगर आप
ने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़्सान
पहुँचा है? गो आप से मुतअद्दिद जराइम
भी सरज़द हुए हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं
होगा। 7रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने से आप
उसे क्या दे सकते हैं? आप के हाथों से
अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है? कुछ
भी नहीं! 8आप के हमजिन्स इन्सान ही
आप की बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और
आदमज़ाद ही आप की रास्तबाज़ी से फ़ाइदा
उठाते हैं।
9जब लोगों पर सख़्त ज़ुल्म होता है तो वह
चीख़ते चिल्लाते और बड़ों की ज़ियादती के
बाइस मदद के लिए आवाज़ देते हैं। 10लेकिन
कोई नहीं कहता, 'अल्लाह, मेरा ख़ालिक़
कहाँ है? वह कहाँ है जो रात के दौरान
नग़मे अता करता, 11जो हमें ज़मीन पर चलने
वाले जानवरों की निस्बत ज़्यादा तालीम देता,
हमें परिन्दों से ज़्यादा दानिशमन्द बनाता है?'
12उन की चीख़ों के बावुजूद अल्लाह जवाब
नहीं देता, क्यूँकि वह घमंडी और बुरे हैं।
13यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़र्याद
नहीं सुनता, क़ादिर-ए-मुतलक़ उस पर ध्यान
ही नहीं देता। 14तो फिर वह आप पर क्यूँ
तवज्जुह दे जब आप दावा करते हैं, 'मैं उसे
नहीं देख सकता,' और 'मेरा मुआमला उस
के सामने ही है, मैं अब तक उस का इन्तिज़ार
कर रहा हूँ'? 15वह आप की क्यूँ सुने जब
आप कहते हैं, 'अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा
नहीं देता, उसे बुराई की परवा ही नहीं'?
16जब अय्यूब मुँह खोलता है तो बेमानी बातें
निकलती हैं। जो मुतअद्दिद अल्फ़ाज़ वह पेश
करता है वह इल्म से ख़ाली हैं।"

अल्लाह कितना अज़ीम है

36 इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,
2"थोड़ी देर के लिए सब्र करके
मुझे इस की तश्रीह करने दें, क्यूँकि मज़ीद
बहुत कुछ है जो अल्लाह के हक़ में कहना
है। 3मैं दूर दूर तक फिरूँगा ताकि वह इल्म
हासिल करूँ जिस से मेरे ख़ालिक़ की रास्ती
साबित हो जाए। 4यक़ीनन जो कुछ मैं कहूँगा
वह फ़रेबदिह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी

आप के सामने खड़ा है जिस ने ख़ुलूसदिली से अपना इल्म हासिल किया है।

5गो अल्लाह अज़ीम क़ुदरत का मालिक है
ताहम वह ख़ुलूसदिलों को रद्द नहीं करता।
6वह बेदीन को ज़्यादा देर तक जीने नहीं
देता, लेकिन मुसीबतज़दों का इन्साफ़ करता
है। 7वह अपनी आँखों को रास्तबाज़ों से
नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ
तख़्तनशीन करके बुलन्दियों पर सरफ़राज़
करता है।

8फिर अगर उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ा जाए,
उन्हें मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया
जाए 9तो वह उन पर ज़ाहिर करता है कि
उन से क्या कुछ सरज़द हुआ है, वह उन्हें
उन के जराइम पेश करके उन्हें दिखाता है
कि उन का तकब्बुर का रवय्या है। 10वह उन
के कानों को तर्बियत के लिए खोल कर उन्हें
हुक्म देता है कि अपनी नाइन्साफ़ी से बाज़
आ कर वापस आओ। 11अगर वह मान कर
उस की ख़िदमत करने लगें तो फिर वह जीते
जी अपने दिन ख़ुशहाली में और अपने साल
सुकून से गुज़ारेंगे। 12लेकिन अगर न मानें तो
उन्हें दरया-ए-मौत को उबूर करना पड़ेगा, वह
इल्म से महरूम रह कर मर जाएंगे।

13बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर
इलाही ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बांध भी
ले, लेकिन वह मदद के लिए नहीं पुकारते।
14जवानी में ही उन की जान निकल जाती, उन
की ज़िन्दगी मुक़द्दस फ़रिश्तों के हाथों ख़त्म
हो जाती है। 15लेकिन अल्लाह मुसीबतज़दा
को उस की मुसीबत के ज़रीए नजात देता,
उस पर होने वाले ज़ुल्म की मारिफ़त उस का
कान खोल देता है।

16वह आप को भी मुसीबत के मुँह से
निकलने की तरग़ीब दिला कर एक ऐसी खुली
जगह पर लाना चाहता है जहाँ रुकावट नहीं
है, जहाँ आप की मेज़ उम्दा खानों से भरी
रहेगी। 17लेकिन इस वक़्त आप अदालत का
वह प्याला पी कर सेर हो गए हैं जो बेदीनों के
नसीब में है, इस वक़्त अदालत और इन्साफ़ ने
आप को अपनी सख़्त गिरिफ़्त में ले लिया है।
18ख़बरदार कि यह बात आप को कुफ़्र बकने
पर न उकसाए, ऐसा न हो कि तावान की बड़ी
रक़म आप को ग़लत राह पर ले जाए। 19क्या
आप की दौलत आप का दिफ़ा करके आप
को मुसीबत से बचाएगी? या क्या आप की
सिरतोड़ कोशिशें यह सरअन्जाम दे सकती
हैं? हरगिज़ नहीं! 20रात की आर्ज़ू न करें,
उस वक़्त की जब क़ौमें जहाँ भी हों नेस्त-
ओ-नाबूद हो जाती हैं। 21ख़बरदार रहें कि
नाइन्साफ़ी की तरफ़ रुजू न करें, क्यूँकि आप
को इसी लिए मुसीबत से आज़माया जा रहा
है।

22अल्लाह अपनी क़ुदरत में सरफ़राज़ है।
कौन उस जैसा उस्ताद है? 23किस ने मुक़र्रर
किया कि उसे किस राह पर चलना है? कौन
कह सकता है, 'तू ने ग़लत काम किया'?
कोई नहीं! 24उस के काम की तम्जीद करना
न भूलें, उस सारे काम की जिस की लोगों
ने अपने गीतों में हम्द-ओ-सना की है। 25हर
शख़्स ने यह काम देख लिया, इन्सान ने दूर
दूर से उस का मुलाहज़ा किया है।

26अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं
जानते, उस के सालों की तादाद मालूम नहीं
कर सकते। 27क्यूँकि वह पानी के क़तरे ऊपर
खैंच कर धुन्द से बारिश निकाल लेता है, 28वह
बारिश जो बादल ज़मीन पर बरसा देते और
जिस की बौछाड़ें इन्सान पर पड़ती हैं। 29कौन
समझ सकता है कि बादल किस तरह छा
जाते, कि अल्लाह के मस्कन से बिजलियाँ
किस तरह कड़कती हैं? 30वह अपने इर्दगिर्द
रौशनी फैला कर समुन्दर की जड़ों तक सब
कुछ रौशन करता है। 31यूँ वह बादलों से क़ौमों
की परवरिश करता, उन्हें कस्रत की ख़ुराक
मुहय्या करता है। 32वह अपनी मुट्ठियों को
बादल की बिजलियों से भर कर हुक्म देता
है कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। 33उस
के बादलों की गरजती आवाज़ उस के ग़ज़ब

का एलान करती, नाइन्साफ़ी पर उस के शदीद क़हर को ज़ाहिर करती है।

37 यह सोच कर मेरा दिल लरज़ कर
अपनी जगह से उछल पड़ता है।
2सुनें और उस की ग़ज़बनाक आवाज़ पर
ग़ौर करें, उस ग़ुर्राती आवाज़ पर जो उस
के मुँह से निकलती है। 3आसमान तले हर
मक़ाम पर बल्कि ज़मीन की इन्तिहा तक वह
अपनी बिजली चमकने देता है। 4इस के बाद
कड़कती आवाज़ सुनाई देती, अल्लाह की
रोबदार आवाज़ गरज उठती है। और जब उस
की आवाज़ सुनाई देती है तो वह बिजलियों
को नहीं रोकता।

5अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़
गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम
काम करता है जो हमारी समझ से बाहर हैं।
6क्यूँकि वह बर्फ़ को फ़रमाता है, 'ज़मीन पर
पड़ जा' और मूसलाधार बारिश को, 'अपना
पूरा ज़ोर दिखा।' 7यूँ वह हर इन्सान को उस
के घर में रहने पर मज्बूर करता है ताकि सब
जान लें कि अल्लाह काम में मसरूफ़ है। 8तब
जंगली जानवर भी अपने भटों में छुप जाते,
अपने घरों में पनाह लेते हैं।

9तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता,
शिमाली हवा मुल्क में ठंड फैला देती है।
10अल्लाह फूँक मारता तो पानी जम जाता,
उस की सतह दूर दूर तक मुन्जमिद हो जाती
है। 11अल्लाह बादलों को नमी से बोझल
करके उन के ज़रीए दूर तक अपनी बिजली
चमकाता है। 12उस की हिदायत पर वह
मंडलाते हुए उस का हर हुक्म तक्मील तक
पहुँचाते हैं। 13यूँ वह उन्हें लोगों की तर्बियत
करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी
शफ़्क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें, रुक
कर अल्लाह के अज़ीम कामों पर ग़ौर करें।
15क्या आप को मालूम है कि अल्लाह अपने
कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने
बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता
है? 16क्या आप बादलों की नक़ल-ओ-हरकत
जानते हैं? क्या आप को उस के अनोखे कामों
की समझ आती है जो कामिल इल्म रखता
है? 17जब ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आ कर
चुप हो जाती और आप के कपड़े तपने लगते
हैं 18तो क्या आप अल्लाह के साथ मिल कर
आसमान को ठोंक ठोंक कर पीतल के आईने
की मानिन्द सख़्त बना सकते हैं? हरगिज़
नहीं!

19हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें!
अफ़्सोस, अंधेरे के बाइस हम अपने ख़यालात
को तरतीब नहीं दे सकते। 20अगर मैं अपनी
बात पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो
जाएगा जिस का पहले इल्म न था? क्या कोई
भी कुछ बयान कर सकता है जो उसे पहले
मालूम न हो? कभी नहीं! 21एक वक़्त धूप
नज़र नहीं आती और बादल ज़मीन पर साया
डालते हैं, फिर हवा चलने लगती और मौसम
साफ़ हो जाता है। 22शिमाल से सुनहरी चमक
क़रीब आती और अल्लाह रोबदार शान-ओ-
शौकत से घिरा हुआ आ पहुँचता है। 23हम तो
क़ादिर-ए-मुतलक़ तक नहीं पहुँच सकते। उस
की क़ुदरत आला और रास्ती ज़ोर-आवर है,
वह कभी इन्साफ़ का ख़ून नहीं करता। 24इस
लिए आदमज़ाद उस से डरते और दिल के
दानिशमन्द उस का ख़ौफ़ मानते हैं।"

अल्लाह का जवाब

38 फिर अल्लाह ख़ुद अय्यूब से
हमकलाम हुआ। तूफ़ान में से उस
ने उसे जवाब दिया,

2"यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें
करने से मेरे मन्सूबे के सहीह मतलब पर पर्दा
डालता है? 3मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा!
मैं तुझ से सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम
दे।

4तू कहाँ था जब मैं ने ज़मीन की बुन्याद
रखी? अगर तुझे इस का इल्म हो तो मुझे
बता! 5किस ने उस की लम्बाई और चौड़ाई

मुक़र्रर की? क्या तुझे मालूम है? किस ने
नाप कर उस की पैमाइश की? 6उस के सतून
किस चीज़ पर लगाए गए? किस ने उस के
कोने का बुन्यादी पत्थर रखा, 7उस वक़्त जब
सुब्ह के सितारे मिल कर शादियाना बजा रहे,
तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?
8जब समुन्दर रहम से फूट निकला तो किस
ने दरवाज़े बन्द करके उस पर क़ाबू पाया?
9उस वक़्त मैं ने बादलों को उस का लिबास
बनाया और उसे घने अंधेरे में यूँ लपेटा जिस
तरह नौज़ाद को पोतड़ों में लपेटा जाता है।
10उस की हुदूद मुक़र्रर करके मैं ने उसे रोकने
के दरवाज़े और कुंडे लगाए। 11मैं बोला, 'तुझे
यहाँ तक आना है, इस से आगे न बढ़ना, तेरी
रोबदार लहरों को यहीं रुकना है।'
12क्या तू ने कभी सुब्ह को हुक्म दिया या
उसे तुलू होने की जगह दिखाई 13ताकि वह
ज़मीन के किनारों को पकड़ कर बेदीनों को
उस से झाड़ दे? 14उस की रौशनी में ज़मीन
यूँ तश्कील पाती है जिस तरह मिट्टी जिस पर
मुहर लगाई जाए। सब कुछ रंगदार लिबास
पहने नज़र आता है। 15तब बेदीनों की रौशनी
रोकी जाती, उन का उठाया हुआ बाज़ू तोड़ा
जाता है।
16क्या तू समुन्दर के सरचश्मों तक पहुँच
कर उस की गहराइयों में से गुज़रा है? 17क्या
मौत के दरवाज़े तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने
अंधेरे के दरवाज़े नज़र आए हैं? 18क्या तुझे
ज़मीन के वसी मैदानों की पूरी समझ आई है?
मुझे बता अगर यह सब कुछ जानता है!
19रौशनी के मम्बा तक ले जाने वाला रास्ता
कहाँ है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है?
20क्या तू उन्हें उन के मक़ामों तक पहुँचा
सकता है? क्या तू उन के घरों तक ले जाने
वाली राहों से वाक़िफ़ है? 21बेशक तू इस का
इल्म रखता है, क्यूँकि तू उस वक़्त जन्म ले
चुका था जब यह पैदा हुए। तू तो क़दीम ज़माने
से ही ज़िन्दा है!
22क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़
के ज़ख़ीरे जमा होते हैं? क्या तू ने ओलों के
गोदामों को देख लिया है? 23मैं उन्हें मुसीबत
के वक़्त के लिए महफ़ूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों
के लिए जब लड़ाई और जंग छिड़ जाए।
24मुझे बता, उस जगह तक किस तरह पहुँचना
है जहाँ रौशनी तक़्सीम होती है, या उस जगह
जहाँ से मशरिक़ी हवा निकल कर ज़मीन पर
बिखर जाती है?
25किस ने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता
और गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26ताकि
इन्सान से ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद
रेगिस्तान की आबपाशी हो जाए, 27ताकि
वीरान-ओ-सुन्सान बयाबान की प्यास बुझ
जाए और उस से हरियाली फूट निकले?
28क्या बारिश का बाप है? कौन शबनम के
क़तरों का वालिद है?
29बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो
पाला आसमान से आ कर ज़मीन पर पड़ता
है किस ने उसे जन्म दिया? 30जब पानी
पत्थर की तरह सख़्त हो जाए बल्कि गहरे
समुन्दर की सतह भी जम जाए तो कौन यह
सरअन्जाम देता है? 31क्या तू ख़ोशा-ए-पर्वीन
को बांध सकता या जौज़े की ज़न्जीरों को
खोल सकता है? 32क्या तू करवा सकता
है कि सितारों के मुख़्तलिफ़ झुर्मट उन के
मुक़र्ररा औक़ात के मुताबिक़ निकल आएँ?
क्या तू दुब्ब-ए-अक्बर की उस के बच्चों समेत
क़ियादत करने के क़ाबिल है? 33क्या तू
आसमान के क़वानीन जानता या उस की
ज़मीन पर हुकूमत मुतअय्यिन करता है?
34क्या जब तू बुलन्द आवाज़ से बादलों को
हुक्म दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश
बरसाते हैं? 35क्या तू बादल की बिजली
ज़मीन पर भेज सकता है? क्या वह तेरे पास
आ कर कहती है, 'मैं ख़िदमत के लिए हाज़िर
हूँ'? 36किस ने मिस्र के लक़्लक़ को हिक्मत
दी, मुर्ग़ को समझ अता की? 37किस को
इतनी दानाई हासिल है कि वह बादलों को

गिन सके? कौन आसमान के इन घड़ों को
उस वक़्त उंडेल सकता है 38जब मिट्टी ढाले
हुए लोहे की तरह सख़्त हो जाए और ढेले
एक दूसरे के साथ चिपक जाएँ? कोई नहीं!
39क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या
शेरों को सेर करता है 40जब वह अपनी छुपने
की जगहों में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में
कहीं ताक लगाए बैठे हों? 41कौन कव्वे को
ख़ुराक मुहय्या करता है जब उस के बच्चे भूक
के बाइस अल्लाह को आवाज़ दें और मारे मारे
फिरें?

39 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी
बकरियों के बच्चे कब पैदा होते
हैं? जब हिरनी अपना बच्चा जन्म देती है तो
क्या तू इस को मुलाहज़ा करता है? 2क्या तू
वह महीने गिनता रहता है जब बच्चे हिरनियों
के पेट में हों? क्या तू जानता है कि किस
वक़्त बच्चे जन्म देती हैं? 3उस दिन वह
दबक जाती, बच्चे निकल आते और दर्द-ए-
ज़ह ख़त्म हो जाता है। 4उन के बच्चे ताक़तवर
हो कर खुले मैदान में फलते फूलते, फिर एक
दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के पास
वापस नहीं आते।
5किस ने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया?
किस ने उस के रस्से खोल दिए? 6मैं ही ने
बयाबान उस का घर बना दिया, मैं ही ने मुक़र्रर
किया कि बंजर ज़मीन उस की रिहाइशगाह
हो। 7वह शहर का शोर-शराबा देख कर हंस
उठता, और उसे हाँकने वाले की आवाज़
सुननी नहीं पड़ती। 8वह चरने के लिए पहाड़ी
इलाक़े में इधर उधर घूमता और हरियाली का
खोज लगाता रहता है।
9क्या जंगली बैल तेरी ख़िदमत करने के
लिए तय्यार होगा? क्या वह कभी रात को
तेरी चरनी के पास गुज़ारेगा? 10क्या तू उसे
बांध कर हल चला सकता है? क्या वह वादी
में तेरे पीछे चल कर सुहागा फेरेगा? 11क्या तू
उस की बड़ी ताक़त देख कर उस पर एतिमाद
करेगा? क्या तू अपना सख़्त काम उस के
सपुर्द करेगा? 12क्या तू भरोसा कर सकता
है कि वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की
जगह पर ले आए? हरगिज़ नहीं!
13शुतुरमुर्ग़ ख़ुशी से अपने परों को
फड़फड़ाता है। लेकिन क्या उस का शाहपर
लक़्लक़ या बाज़ के शाहपर की मानिन्द है?
14वह तो अपने अंडे ज़मीन पर अकेले छोड़ता
है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं। 15शुतुरमुर्ग़
को ख़याल तक नहीं आता कि कोई उन्हें पाँओ
तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर
उन्हें रौंद सकता है। 16लगता नहीं कि उस के
अपने बच्चे हैं, क्यूँकि उस का उन के साथ
सुलूक इतना सख़्त है। अगर उस की मेहनत
नाकाम निकले तो उसे परवा ही नहीं, 17क्यूँकि
अल्लाह ने उसे हिक्मत से महरूम रख कर
उसे समझ से न नवाज़ा। 18तो भी वह इतनी
तेज़ी से उछल कर भाग जाता है कि घोड़े और
घुड़सवार की दौड़ देख कर हँसने लगता है।
19क्या तू घोड़े को उस की ताक़त दे कर
उस की गर्दन को अयाल से आरास्ता करता
है? 20क्या तू ही उसे टिड्डी की तरह फलाँगने
देता है? जब वह ज़ोर से अपने नथनों को
फुला कर आवाज़ निकालता है तो कितना
रोबदार लगता है! 21वह वादी में सुम मार
मार कर अपनी ताक़त की ख़ुशी मनाता, फिर
भाग कर मैदान-ए-जंग में आ जाता है। 22वह
ख़ौफ़ का मज़ाक़ उड़ाता और किसी से भी
नहीं डरता, तलवार के रू-ब-रू भी पीछे नहीं
हटता। 23उस के ऊपर तर्कश खड़खड़ाता,
नेज़ा और शम्शीर चमकती है। 24वह बड़ा शोर
मचा कर इतनी तेज़ी और जोश-ओ-ख़ुरोश से
दुश्मन पर हम्ला करता है कि बिगुल बजते
वक़्त भी रोका नहीं जाता। 25जब भी बिगुल
बजे वह ज़ोर से हिनहिनाता और दूर ही से
मैदान-ए-जंग, कमाँडरों का शोर और जंग के
नारे सूँघ लेता है।
26क्या बाज़ तेरी ही हिक्मत के ज़रीए हवा
में उड़ कर अपने परों को जुनूब की जानिब
फैला देता है? 27क्या उक़ाब तेरे ही हुक्म

पर बुलन्दियों पर मंडलाता और ऊँची ऊँची
जगहों पर अपना घोंसला बना लेता है? 28वह
चटान पर रहता, उस के टूटे-फूटे किनारों और
क़िलाबन्द जगहों पर बसेरा करता है। 29वहाँ
से वह अपने शिकार का खोज लगाता है, उस
की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। 30उस के बच्चे
ख़ून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो
वहाँ वह हाज़िर होता है।"

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

40 रब ने अय्यूब से पूछा,
2"क्या मलामत करने वाला
अदालत में क़ादिर-ए-मुतलक़ से झगड़ना
चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करने
वाला उसे जवाब दे!"
3तब अय्यूब ने जवाब दे कर रब से कहा,
4"मैं तो नालाइक़ हूँ, मैं किस तरह तुझे
जवाब दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रख कर
ख़ामोश रहूँगा। 5एक बार मैं ने बात की और
इस के बाद मज़ीद एक दफ़ा, लेकिन अब से
मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।"

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी क़ुदरत हासिल है?

6तब अल्लाह तूफ़ान में से अय्यूब से
हमकलाम हुआ,
7"मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं
तुझ से सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे।
8क्या तू वाक़ई मेरा इन्साफ़ मन्सूख़ करके
मुझे मुजरिम ठहराना चाहता है ताकि ख़ुद
रास्तबाज़ ठहरे? 9क्या तेरा बाज़ू अल्लाह के
बाज़ू जैसा ज़ोर-आवर है? क्या तेरी आवाज़
उस की आवाज़ की तरह कड़कती है। 10आ,
अपने आप को शान-ओ-शौकत से आरास्ता
कर, इज़्ज़त-ओ-जलाल से मुलब्बस हो जा!
11ब-यक-वक़्त अपना शदीद क़हर मुख़्तलिफ़
जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़रूर को अपना
निशाना बना कर उसे ख़ाक में मिला दे। 12हर
मुतकब्बिर पर ग़ौर करके उसे पस्त कर। जहाँ
भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। 13उन सब
को मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़ कर
किसी ख़ुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। 14तब
ही मैं तेरी तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा
दहना हाथ तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की क़ुदरत और हिक्मत की दो मिसालें

15बहेमोत[a] पर ग़ौर कर जिसे मैं ने तुझे
ख़ल्क़ करते वक़्त बनाया और जो बैल की
तरह घास खाता है। 16उस की कमर में कितनी
ताक़त, उस के पेट के पट्ठों में कितनी क़ुव्वत
है। 17वह अपनी दुम को देवदार के दरख़्त
की तरह लटकने देता है, उस की रानों की
नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई हैं।
18उस की हड्डियाँ पीतल के से पाइप, लोहे
के से सरीए हैं। 19वह अल्लाह के कामों में से
अव्वल है, उस के ख़ालिक़ ही ने उसे उस की
तलवार दी। 20पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार
पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर वहाँ
खेलते कूदते हैं। 21वह काँटेदार झाड़ियों के
नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में
छुपा रहता है। 22ख़ारदार झाड़ियाँ उस पर
साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त
उसे घेरे रखते हैं। 23जब दरया सैलाब की सूरत
इख़्तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरया-
ए-यर्दन उस के मुँह पर फूट पड़े तो भी वह
अपने आप को महफ़ूज़ समझता है। 24क्या
कोई उस की आँखों में उंगलियाँ डाल कर उसे
पकड़ सकता है? अगर उसे फंदे में पकड़ा
भी जाए तो क्या कोई उस की नाक को छेद
सकता है? हरगिज़ नहीं!

41 क्या तू लिवियातान[b] अज़दहे को
मछली के काँटे से पकड़ सकता
या उस की ज़बान को रस्से से बांध सकता

[a] साईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

[b] साईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

है? 2क्या तू उस की नाक छेद कर उस में से
रस्सा गुज़ार सकता या उस के जबड़े को काँटे
से चीर सकता है? 3क्या वह कभी तुझ से बार
बार रहम माँगेगा या नर्म नर्म अल्फ़ाज़ से तेरी
ख़ुशामद करेगा? 4क्या वह कभी तेरे साथ
अह्द करेगा कि तू उसे अपना ग़ुलाम बनाए
रखे? हरगिज़ नहीं! 5क्या तू परिन्दे की तरह
उस के साथ खेल सकता या उसे बांध कर
अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि वह
उस के साथ खेलें? 6क्या सौदागर कभी उस
का सौदा करेंगे या उसे ताजिरों में तक़्सीम
करेंगे? कभी नहीं! 7क्या तू उस की खाल
को भालों से या उस के सर को हार्पूनों से भर
सकता है? 8एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह
लड़ाई तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइन्दा
ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा!

9यक़ीनन उस पर क़ाबू पाने की हर उम्मीद
फ़रेबदिह साबित होगी, क्यूँकि उसे देखते ही
इन्सान गिर जाता है। 10कोई इतना बेधड़क
नहीं है कि उसे मुश्तइल करे। तो फिर कौन
मेरा सामना कर सकता है? 11किस ने मुझे
कुछ दिया है कि मैं उस का मुआवज़ा दूँ।
आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12मैं तुझे उस के आज़ा के बयान से महरूम
नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर
और ख़ूबसूरत है। 13कौन उस की खाल[a]
उतार सकता, कौन उस के ज़िराबक्तर की दो
तहों के अन्दर तक पहुँच सकता है? 14कौन
उस के मुँह का दरवाज़ा खोलने की जुरअत
करे? उस के हौलनाक दाँत देख कर इन्सान
के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15उस की पीठ पर
एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई ढालों की क़तारें
होती हैं। 16वह इतनी मज़बूती से एक दूसरी
से लगी होती हैं कि उन के दरमियान से हवा
भी नहीं गुज़र सकती, 17बल्कि यूँ एक दूसरी
से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक
दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।

18जब छींकें मारे तो बिजली चमक उठती
है। उस की आँखें तुलू-ए-सुब्ह की पलकों की
मानिन्द हैं। 19उस के मुँह से मशअलें और
चिंगारियाँ ख़ारिज होती हैं, 20उस के नथनों
से धुआँ यूँ निकलता है जिस तरह भड़कती
और दहकती आग पर रखी गई देग से। 21जब
फूँक मारे तो कोएले दहक उठते और उस के
मुँह से शोले निकलते हैं।

22उस की गर्दन में इतनी ताक़त है कि जहाँ
भी जाए वहाँ उस के आगे आगे मायूसी फैल
जाती है। 23उस के गोश्त-पोस्त की तहें एक
दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे
की तरह मज़बूत और बेलचक हैं। 24उस का
दिल पत्थर जैसा सख़्त, चक्की के निचले पाट
जैसा मुस्तह्कम है।

25जब उठे तो ज़ोर-आवर डर जाते और
दह्शत खा कर पीछे हट जाते हैं। 26हथियारों
का उस पर कोई असर नहीं होता, ख़्वाह कोई
तलवार, नेज़े, बरछी या तीर से उस पर हम्ला
क्यूँ न करे। 27वह लोहे को भूसा और पीतल
को गली सड़ी लकड़ी समझता है। 28तीर उसे
नहीं भगा सकते, और अगर ग़ुलेल के पत्थर
उस पर चलाओ तो उन का असर भूसे के
बराबर है। 29डंडा उसे तिनका सा लगता है,
और वह शम्शीर का शोर-शराबा सुन कर हंस
उठता है। 30उस के पेट पर तेज़ ठीकरे से लगे
हैं, और जिस तरह अनाज पर गाहने का आला
चलाया जाता है उसी तरह वह कीचड़ पर
चलता है। 31जब समुन्दर की गहराइयों में से
गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने
लगता है। वह मर्हम के मुख़्तलिफ़ अजज़ा को
मिला मिला कर तय्यार करने वाले अत्तार की
तरह समुन्दर को हरकत में लाता है। 32अपने
पीछे वह चमकता दमकता रास्ता छोड़ता है।
तब लगता है कि समुन्दर की गहराइयों के
सफ़ेद बाल हैं। 33दुनिया में उस जैसा कोई
मख़्लूक़ नहीं, ऐसा बनाया गया है कि कभी न
डरे। 34जो भी आला हो उस पर वह हिक़ारत

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बैरूनी लिबास।

की निगाह से देखता है, वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।"

अय्यूब की आख़िरी बात

42 तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,

2 "मैं ने जान लिया है कि तू सब कुछ कर
पाता है, कि तेरा कोई भी मन्सूबा रोका नहीं
जा सकता। 3 तू ने फ़रमाया, 'यह कौन है जो
समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे मन्सूबे के
सहीह मतलब पर पर्दा डालता है?' यक़ीनन
मैं ने ऐसी बातें बयान कीं जो मेरी समझ से
बाहर हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि
मैं उन का इल्म रख ही नहीं सकता। 4 तू ने
फ़रमाया, 'सुन मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं
तुझ से सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम
दे।' 5 पहले मैं ने तेरे बारे में सिर्फ़ सुना था,
लेकिन अब मेरी अपनी आँखों ने तुझे देखा
है। 6 इस लिए मैं अपनी बातें मुस्तरद करता,
अपने आप पर ख़ाक और राख डाल कर तौबा
करता हूँ।"

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

7 अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद
रब इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, "मैं
तुझ से और तेरे दो दोस्तों से ग़ुस्से हूँ, क्यूँकि
गो मेरे बन्दे अय्यूब ने मेरे बारे में दुरुस्त बातें
कीं मगर तुम ने ऐसा नहीं किया। 8 चुनाँचे अब
सात जवान बैल और सात मेंढे ले कर मेरे
बन्दे अय्यूब के पास जाओ और अपनी ख़ातिर
भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश करो। लाज़िम है
कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत करे, वर्ना मैं तुम्हें
तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज्र दूँगा। लेकिन
उस की शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़ करूँगा,
क्यूँकि मेरे बन्दे अय्यूब ने मेरे बारे में वह कुछ
बयान किया जो सहीह है जबकि तुम ने ऐसा
नहीं किया।"

9 इलीफ़ज़ तेमानी, बिल्दद सूख़ी और ज़ूफ़र
नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने
को कहा था तो रब ने अय्यूब की सुनी।

10 और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत
की तो रब ने उसे इतनी बरकत दी कि
आख़िरकार उसे पहले की निस्बत दुगनी
दौलत हासिल हुई। 11 तब उस के तमाम भाई-
बहनें और पुराने जानने वाले उस के पास आए
और घर में उस के साथ खाना खा कर उस
आफ़त पर अफ़्सोस किया जो रब अय्यूब पर
लाया था। हर एक ने उसे तसल्ली दे कर उसे
एक सिक्का और सोने का एक छल्ला दे दिया।

12 अब से रब ने अय्यूब को पहले की
निस्बत कहीं ज़्यादा बरकत दी। उसे 14,000
बकरियाँ, 6,000 ऊँट, बैलों की 1,000
जोड़ियाँ और 1,000 गधियाँ हासिल हुईं।
13 नीज़, उस के मज़ीद सात बेटे और तीन
बेटियाँ पैदा हुईं। 14 उस ने बेटियों के यह
नाम रखे : पहली का नाम यमीमा, दूसरी
का क़सीअह और तीसरी का क़रन-हप्पूक।
15 तमाम मुल्क में अय्यूब की बेटियों जैसी
ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती थीं।
अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत
दी, ऐसी मिलकियत जो उन के भाइयों के
दरमियान ही थी।

16 अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िन्दा रहा,
इस लिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त
तक देख सका। 17 फिर वह दराज़ ज़िन्दगी से
आसूदा हो कर इन्तिक़ाल कर गया।

ज़बूर

पहली किताब 1-41

दो राहें

1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मश्वरे पर
चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम
रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है
2 बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़
होता और दिन रात उसी पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़
करता रहता है।
3 वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की
मानिन्द है। वक़्त पर वह फल लाता, और उस
के पत्ते नहीं मुरझाते। जो कुछ भी करे उस में
वह कामयाब है।

4 बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे
की मानिन्द हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
5 इस लिए बेदीन अदालत में क़ाइम नहीं
रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की
मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।
6 क्यूँकि रब रास्तबाज़ों की राह की
पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह
तबाह हो जाएगी।

अल्लाह का मसीह

2 अक़्वाम क्यूँ तैश में आ गई हैं? उम्मतें
क्यूँ बेकार साज़िशें कर रही हैं?
2 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान
रब और उस के मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो
गए हैं।
3 वह कहते हैं, "आओ, हम उन की ज़न्जीरों
को तोड़ कर आज़ाद हो जाएँ, उन के रस्सों को
दूर तक फैंक दें।"
4 लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है
वह हँसता है, रब उन का मज़ाक़ उड़ाता है।
5 फिर वह ग़ुस्से से उन्हें डाँटता, अपना
शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें
डराता है।
6 वह फ़रमाता है, "मैं ने ख़ुद अपने बादशाह
को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर
किया है!"

7 आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उस ने
मुझ से कहा, "तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा
बाप बन गया हूँ।
8 मुझ से माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम
अक़्वाम अता करूँगा, दुनिया की इन्तिहा तक
सब कुछ बख़्श दूँगा।
9 तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश
करेगा, उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह चकनाचूर
करेगा।"
10 चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो!
ऐ दुनिया के हुक्मरानो, तर्बियत क़बूल करो!

11ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो,
लरज़ते हुए ख़ुशी मनाओ।
12बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह
ग़ुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो
जाओ। क्यूँकि वह एक दम तैश में आ जाता
है। मुबारक हैं वह सब जो उस में पनाह लेते
हैं।

सुब्ह को मदद के लिए दुआ

3 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।

ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने
लोग मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!
2मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, "अल्लाह इसे
छुटकारा नहीं देगा।" (सिलाह)[a]

3लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त
करने वाली ढाल है। तू मेरी इज़्ज़त है जो मेरे
सर को उठाए रखता है।
4मैं बुलन्द आवाज़ से रब को पुकारता हूँ,
और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता
है। (सिलाह)
5मैं आराम से लेट कर सो गया, फिर जाग
उठा, क्यूँकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।
6उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे
रखते हैं।
7ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर!
क्यूँकि तू ने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर
थप्पड़ मारा, तू ने बेदीनों के दाँतों को तोड़
दिया है।
8रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी
क़ौम पर आए। (सिलाह)

शाम को मदद के लिए दुआ

4 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे
पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़्लसी
रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा
सुन!

2ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़्ज़त कब तक
ख़ाक में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक
बातिल चीज़ों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट
की तलाश में रहोगे? (सिलाह)
3जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने
लिए अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब
मैं उसे पुकारूँगा।
4ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना।
अपने बिस्तर पर लेट कर मुआमले पर सोच-
बिचार करो, लेकिन दिल में, ख़ामोशी से।
(सिलाह)
5रास्ती की क़ुर्बानियाँ पेश करो, और रब पर
भरोसा रखो।
6बहुतेरे शक कर रहे हैं, "कौन हमारे
हालात ठीक करेगा?" ऐ रब, अपने चेहरे का
नूर हम पर चमका!

7तू ने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है,
ऐसी ख़ुशी से जो उन के पास भी नहीं होती
जिन के पास कस्रत का अनाज और अंगूर है।
8मैं आराम से लेट कर सो जाता हूँ, क्यूँकि
तू ही ऐ रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

5 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान
दे!
2ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए
मेरी चीख़ें सुन, क्यूँकि मैं तुझ ही से दुआ
करता हूँ।

[a]सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इस के मतलब के बारे में इत्तिफ़ाक़-ए-राय नहीं होती।

3ऐ रब, सुब्ह को तू मेरी आवाज़ सुनता है,
सुब्ह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके
जवाब का इन्तिज़ार करने लगता हूँ।

4क्यूँकि तू ऐसा ख़ुदा नहीं है जो बेदीनी से
ख़ुश हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर
सकता।
5मग़रूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते,
बदकार से तू नफ़रत करता है।
6झूट बोलने वालों को तू तबाह करता,
ख़ूँख़ार और धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

7लेकिन मुझ पर तू ने बड़ी मेहरबानी की है,
इस लिए मैं तेरे घर में दाख़िल हो सकता, मैं
तेरा ख़ौफ़ मान कर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह
के सामने सिज्दा करता हूँ।
8ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई
कर ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ।
अपनी राह को मेरे आगे हमवार कर।

9क्यूँकि उन के मुँह से एक भी क़ाबिल-
ए-एतिमाद बात नहीं निकलती। उन का दिल
तबाही से भरा रहता, उन का गला खुली क़ब्र
है, और उन की ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें
उगलती रहती है।
10ऐ रब, उन्हें उन के ग़लत काम का अज्र
दे। उन की साज़िशें उन की अपनी तबाही का
बाइस बनें। उन्हें उन के मुतअद्दिद गुनाहों के
बाइस निकाल कर मुन्तशिर कर दे, क्यूँकि वह
तुझ से सरकश हो गए हैं।

11लेकिन जो तुझ में पनाह लेते हैं वह सब
ख़ुश हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ,
क्यूँकि तू उन्हें मह्फ़ूज़ रखता है। तेरे नाम को
प्यार करने वाले तेरा जश्न मनाएँ।
12क्यूँकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत
देता है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस
की चारों तरफ़ हिफ़ाज़त करता है।

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

6 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ रब, ग़ुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे
तम्बीह न कर।
2ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्यूँकि मैं निढाल
हूँ। ऐ रब, मुझे शिफ़ा दे, क्यूँकि मेरे आज़ा
दह्शतज़दा हैं।
3मेरी जान निहायत ख़ौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू
कब तक देर करेगा?
4ऐ रब, वापस आ कर मेरी जान को बचा।
अपनी शफ़क़त की ख़ातिर मुझे छुटकारा दे।
5क्यूँकि मुर्दा तुझे याद नहीं करता। पाताल
में कौन तेरी सताइश करेगा?

6मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात
रोने से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसूओं से
पलंग गल गया है।
7ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे
मुख़ालिफ़ों के हम्लों से वह ज़ाए होती जा रही
हैं।
8ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्यूँकि
रब ने मेरी आह-ओ-बुका सुनी है।
9रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है,
मेरी दुआ रब को क़बूल है।
10मेरे तमाम दुश्मनों की रुस्वाई हो जाएगी,
और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़ कर
अचानक ही शर्मिन्दा हो जाएंगे।

इन्साफ़ के लिए दुआ

7 दाऊद का वह मातमी गीत जो उस ने कूश
बिनयमीनी की बातों पर रब की तम्जीद में
गाया।

ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझ में पनाह लेता हूँ।
मुझे उन सब से बचा कर छुटकारा दे जो मेरा
ताक़्क़ुब कर रहे हैं,
2वर्ना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़ कर
टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचाने वाला कोई
नहीं होगा।

3ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझ से यह कुछ
सरज़द हुआ और मेरे हाथ क़ुसूरवार हों,
4अगर मैं ने उस से बुरा सुलूक किया जिस
का मेरे साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन
को ख़्वाह-म-ख़्वाह लूट लिया हो
5तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़ कर मुझे
पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे,
मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाए। (सिलाह)

6ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे
दुश्मनों के तैश के ख़िलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी
मदद करने के लिए जाग उठ! तू ने ख़ुद
अदालत का हुक्म दिया है।
7अक़्वाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब
तू उन के ऊपर बुलन्दियों पर तख़्तनशीन हो
जाए।
8रब अक़्वाम की अदालत करता है। ऐ
रब, मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़
करके मेरा इन्साफ़ कर।
9ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को
तह तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें
ख़त्म कर और रास्तबाज़ को क़ाइम रख।

10अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी
राह पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।
11अल्लाह आदिल मुन्सिफ़ है, ऐसा ख़ुदा
जो रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

12यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी
तलवार को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को
तान कर निशाना बांध रहा है।
13लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते
हुए तीर उस ने तय्यार कर रखे हैं उन की ज़द
में वह ख़ुद ही आ जाएगा।

14देख, बुराई का बीज उस में उग आया
है। अब वह शरारत से हामिला हो कर फिरता
और झूट के बच्चे जन्म देता है।
15लेकिन जो गढ़ा उस ने दूसरों को फंसाने
के लिए खोद खोद कर तय्यार किया उस में
ख़ुद गिर पड़ा है।
16वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में
आएगा, उस का ज़ुल्म उस के अपने सर पर
नाज़िल होगा।

17मैं रब की सताइश करूँगा, क्यूँकि वह
रास्त है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़
में गीत गाऊँगा।

मख़्लूक़ात का ताज

8 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : गित्तीत।

ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया
में कितना शानदार है! तू ने आसमान पर ही
अपना जलाल ज़ाहिर कर दिया है।
2अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तू ने छोटे
बच्चों और शीरख़्वारों की ज़बान को तय्यार
किया है ताकि वह तेरी क़ुव्वत से दुश्मन और
कीनापर्वर को ख़त्म करें।

3जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता
हूँ जो तेरी उंगलियों का काम है, चाँद और
सितारों पर ग़ौर करता हूँ जिन को तू ने अपनी
अपनी जगह पर क़ाइम किया
4तो इन्सान कौन है कि तू उसे याद करे या
आदमज़ाद कि तू उस का ख़याल रखे?
5तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया,[a]
तू ने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज
पहनाया।

[a]एक और मुमकिना तर्जुमा : तू ने उसे थोड़ी देर
के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इब्रानियों
2:7,9)।

6तू ने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर
किया, सब कुछ उस के पाँओ के नीचे कर
दिया,
7ख़्वाह भेड़-बकरियाँ हों ख़्वाह गाय-बैल,
जंगली जानवर,
8परिन्दे, मछलियाँ या समुन्दरी राहों पर
चलने वाले बाक़ी तमाम जानवर।

9ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम
कितना शानदार है!

अल्लाह की क़ुदरत और इन्साफ़

9 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
तर्ज़ : अलामूत-लब्बीन।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा,
तेरे तमाम मोजिज़ात का बयान करूँगा।
2मैं शादमान हो कर तेरी ख़ुशी मनाऊँगा।
ऐ अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तम्जीद में
गीत गाऊँगा।
3जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह
ठोकर खा कर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।
4क्यूँकि तू ने मेरा इन्साफ़ किया है, तू तख़्त
पर बैठ कर रास्त मुन्सिफ़ साबित हुआ है।
5तू ने अक़्वाम को मलामत करके बेदीनों
को हलाक कर दिया, उन का नाम-ओ-निशान
हमेशा के लिए मिटा दिया है।
6दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मल्बे का
ढेर बन गया है। तू ने शहरों को जड़ से उखाड़
दिया है, और उन की याद तक बाक़ी नहीं
रहेगी।

7लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा,
और उस ने अपने तख़्त को अदालत करने के
लिए खड़ा किया है।
8वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा,
इन्साफ़ से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।
9रब मज़्लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला
जिस में वह मुसीबत के वक़्त महफ़ूज़ रहते
हैं।

10ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर
भरोसा रखते हैं। क्यूँकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें
तू ने कभी तर्क नहीं किया।
11रब की तम्जीद में गीत गाओ जो सिय्यून
पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ
सुनाओ जो उस ने किया है।
12क्यूँकि जो मक़्तूलों का इन्तिक़ाम लेता है
वह मुसीबतज़दों की चीख़ें नज़रअन्दाज़ नहीं
करता।

13ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस
तक्लीफ़ पर ग़ौर कर जो नफ़रत करने वाले
मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से
निकाल कर उठा ले
14ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी
सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तू ने मेरे
लिए किया है, ताकि मैं तेरी नजात की ख़ुशी
मनाऊँ।

15अक़्वाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई हैं जो
उन्हों ने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था।
उन के अपने पाँओ उस जाल में फंस गए हैं
जो उन्हों ने दूसरों को फंसाने के लिए बिछा
दिया था।
16रब ने इन्साफ़ करके अपना इज़हार किया
तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया।
(हिग्गायून का तर्ज़। सिलाह)
17बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें
अल्लाह को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।
18क्यूँकि वह ज़रूरतमन्दों को हमेशा तक
नहीं भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद
तक जाती नहीं रहेगी।

19ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इन्सान ग़ालिब
न आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़्वाम की
अदालत की जाए।
20ऐ रब, उन्हें दह्शतज़दा कर ताकि
अक़्वाम जान लें कि इन्सान ही हैं। (सिलाह)

इन्साफ़ के लिए दुआ

10 ऐ रब, तू इतना दूर क्यूँ खड़ा है?
मुसीबत के वक़्त तू अपने आप
को पोशीदा क्यूँ रखता है?

2बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे
लग गए हैं, और अब बेचारे उन के जालों में
उलझने लगे हैं।
3क्यूँकि बेदीन अपनी दिली आर्ज़ूओं पर
शेख़ी मारता है, और नाजाइज़ नफ़ा कमाने
वाला लानत करके रब को हक़ीर जानता है।
4बेदीन ग़ुरूर से फूल कर कहता है,
“अल्लाह मुझ से जवाबतलबी नहीं करेगा।”
उस के तमाम ख़यालात इस बात पर मब्नी हैं
कि कोई ख़ुदा नहीं है।
5जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है।
तेरी अदालतें उसे बुलन्दियों में कहीं दूर लगती
हैं जबकि वह अपने तमाम मुख़ालिफ़ों के
ख़िलाफ़ फुंकारता है।
6दिल में वह सोचता है, “मैं कभी नहीं
डगमगाऊँगा, नस्ल-दर-नस्ल मुसीबत के पंजों
से बचा रहूँगा।”
7उस का मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म
से भरा रहता, उस की ज़बान नुक़्सान और
आफ़त पहुँचाने के लिए तय्यार रहती है।
8वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठ कर
चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की
आँखें बदक़िस्मतों की घात में रहती हैं।
9जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में
रह कर वह मुसीबतज़दा पर हम्ला करने का
मौक़ा ढूँडता है। जब उसे पकड़ ले तो उसे
अपने जाल में घसीट कर ले जाता है।
10उस के शिकार पाश पाश हो कर झुक
जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की
ज़द में आ कर गिर जाते हैं।
11तब वह दिल में कहता है, “अल्लाह भूल
गया है, उस ने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे
यह कभी नज़र नहीं आएगा।”
12ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठा
कर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।
13बेदीन अल्लाह की तह्क़ीर क्यूँ करे, वह
दिल में क्यूँ कहे, “अल्लाह मुझ से जवाब
तलब नहीं करेगा”?
14ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ
देखता है। तू हमारी तक्लीफ़ और परेशानी
पर ध्यान दे कर मुनासिब जवाब देगा। नाचार
अपना मुआमला तुझ पर छोड़ देता है, क्यूँकि
तू यतीमों का मददगार है।
15शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़
दे! उस से उस की शरारतों की जवाबतलबी
कर ताकि उस का पूरा असर मिट जाए।

16रब अबद तक बादशाह है। उस के मुल्क
से दीगर अक़्वाम ग़ाइब हो गई हैं।
17ऐ रब, तू ने नाचारों की आर्ज़ू सुन ली है।
तू उन के दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर
ध्यान दे कर
18यतीमों और मज़्लूमों का इन्साफ़ करेगा
ताकि आइन्दा कोई भी इन्सान मुल्क में दह्शत
न फैलाए।

रब पर भरोसा

11 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मैं ने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस
तरह मुझ से कहते हो, “चल, परिन्दे की तरह
फड़फड़ा कर पहाड़ों में भाग जा”?
2क्यूँकि देखो, बेदीन कमान तान कर तीर
को ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में
बैठ कर इस इन्तिज़ार में हैं कि दिल से सीधी
राह पर चलने वालों पर चलाएँ।
3रास्तबाज़ क्या करे? उन्हों ने तो बुन्याद
को ही तबाह कर दिया है।

4लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में
है, रब का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह

देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।

5रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।

6बेदीनों पर वह जलते हुए कोएले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसने वाली आँधी उन का हिस्सा होगी।

7क्यूँकि रब रास्त है, और उसे इन्साफ़ प्यारा है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलने वाले उस का चेहरा देखेंगे।

मदद के लिए दुआ

12 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्यूँकि ईमानदार ख़त्म हो गए हैं। दियानतदार इन्सानों में से मिट गए हैं।

2आपस में सब झूट बोलते हैं। उन की ज़बान पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और ही होता है।

3रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेख़ीबाज़ ज़बानों को काट डाले!

4वह उन सब को मिटा दे जो कहते हैं, "हम अपनी लाइक़ ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं। हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई नहीं!"

5लेकिन रब फ़रमाता है, "नाचारों पर तुम्हारे ज़ुल्म की ख़बर और ज़रूरतमन्दों की कराहती आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठ कर उन्हें उन से छुटकारा दूँगा जो उन के ख़िलाफ़ फुंकारते हैं।"

6रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिन्द ख़ालिस हैं।

7ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद तक इस नस्ल से बचाए रखेगा,

8गो बेदीन आज़ादी से इधर उधर फिरते हैं, और इन्सानों के दरमियान कमीनापन का राज है।

मदद के लिए दुआ

13 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझ से छुपाए रखेगा?

2मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे, मेरा दिल कब तक रोज़-ब-रोज़ दुख उठाता रहे? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?

3ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डाल कर मेरी सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वर्ना मैं मौत की नींद सो जाऊँगा।

4तब मेरा दुश्मन कहेगा, "मैं उस पर ग़ालिब आ गया हूँ!" और मेरे मुख़ालिफ़ शादियाना बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।

5लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देख कर ख़ुशी मनाएगा।

6मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्यूँकि उस ने मुझ पर एहसान किया है।

बेदीन की हमाक़त

14 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।

2रब ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?

3अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सब के सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई
करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की
तरह खा लेते हैं उन में से एक को भी समझ
नहीं आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

5तब उन पर सख़्त दह्शत छा गई, क्यूँकि
अल्लाह रास्तबाज़ की नस्ल के साथ है।
6तुम नाचार के मन्सूबों को ख़ाक में मिलाना
चाहते हो, लेकिन रब ख़ुद उस की पनाहगाह
है।

7काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की
नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम
को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे
लगाएगा, इस्राईल बाग़ बाग़ होगा।

कौन अल्लाह के हुज़ूर क़ाइम रह सकता है?

15 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर
सकता है? किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर
रहने की इजाज़त है?
2वह जिस का चाल-चलन बेगुनाह है, जो
रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ार कर दिल से सच
बोलता है।
3ऐसा शख़्स अपनी ज़बान से किसी पर
तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर
ज़ियादती करता, न उस की बेइज़्ज़ती करता
है।
4वह मर्दूद को हक़ीर जानता लेकिन
ख़ुदातरस की इज़्ज़त करता है। जो वादा उस
ने क़सम खा कर किया उसे पूरा करता है,
ख़्वाह उसे कितना ही नुक़्सान क्यूँ न पहुँचे।
5वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और
उस की रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह
का हक़ मारना चाहता है। ऐसा शख़्स कभी
डाँवाँडोल नहीं होगा।

एतिमाद की दुआ

16 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।
ऐ अल्लाह, मुझे मह्फ़ूज़ रख,
क्यूँकि तुझ में मैं पनाह लेता हूँ।
2मैं ने रब से कहा, “तू मेरा आक़ा है, तू ही
मेरी ख़ुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।”
3मुल्क में जो मुक़द्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं,
उन ही को मैं पसन्द करता हूँ।
4लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते
हैं उन की तक्लीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उन की
ख़ून की क़ुर्बानियों को पेश करूँगा, न उन के
नामों का ज़िक्र तक करूँगा।

5ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है।
मेरा नसीब तेरे हाथ में है।
6जब क़ुरआ डाला गया तो मुझे ख़ुशगवार
ज़मीन मिल गई। यक़ीनन मेरी मीरास मुझे
बहुत पसन्द है।
7मैं रब की सताइश करूँगा जिस ने मुझे
मश्वरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी
हिदायत करता है।
8रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता
है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इस लिए मैं
नहीं डगमगाऊँगा।
9इस लिए मेरा दिल शादमान है, मेरी
जान ख़ुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन
पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारेगा।
10क्यूँकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं
छोड़ेगा, और न अपने मुक़द्दस को गलने सड़ने
की नौबत तक पहुँचने देगा।
11तू मुझे ज़िन्दगी की राह से आगाह करता
है। तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ
से अबदी मसर्रतें हासिल होती हैं।

बेगुनाह शख़्स की दुआ

17 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, इन्साफ़ के लिए मेरी फ़र्याद
सुन, मेरी आह-ओ-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी
दुआ पर ग़ौर कर, क्यूँकि वह फ़रेबदिह होंटों
से नहीं निकलती।
2तेरे हुज़ूर मेरा इन्साफ़ किया जाए, तेरी
आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।
3तू ने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा
मुआइना किया है। तू ने मुझे भट्टी में डाल
दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी
कोई चीज़ नहीं मिली। क्यूँकि मैं ने पूरा इरादा
कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं
निकलेगी।
4जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैं ने ख़ुद तेरे
मुँह के फ़रमान के ताबे रह कर अपने आप
को ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।
5मैं क़दम-ब-क़दम तेरी राहों में रहा, मेरे
पाँओ कभी न डगमगाए।
6ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि तू
मेरी सुनेगा। कान लगा कर मेरी दुआ को सुन।
7तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता
है जो अपने मुख़ालिफ़ों से तुझ में पनाह लेते
हैं, मोजिज़ाना तौर पर अपनी शफ़क़त का
इज़हार कर।
8आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त
कर, अपने परों के साय में मुझे छुपा ले।
9उन बेदीनों से मुझे महफ़ूज़ रख जो मुझ
पर तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से
जो मुझे घेर कर मार डालने की कोशिश कर
रहे हैं।
10वह सरकश हो गए हैं, उन के मुँह घमंड
की बातें करते हैं।
11जिधर भी हम क़दम उठाएँ वहाँ वह भी
पहुँच जाते हैं। अब उन्हों ने हमें घेर लिया है,
वह घूर घूर कर हमें ज़मीन पर पटख़ने का
मौक़ा ढूँड रहे हैं।
12वह उस शेरबबर की मानिन्द हैं जो
शिकार को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस
जवान शेर की मानिन्द जो ताक में बैठा है।
13ऐ रब, उठ और उन का सामना कर, उन्हें
ज़मीन पर पटख़ दे! अपनी तलवार से मेरी
जान को बेदीनों से बचा।
14ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इन से छुटकारा
दे। उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल
चुका है। क्यूँकि तू ने उन के पेट को अपने माल
से भर दिया, बल्कि उन के बेटे भी सेर हो गए
हैं और इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद
के लिए भी काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।
15लेकिन मैं ख़ुद रास्तबाज़ साबित हो कर
तेरे चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जाग कर
तेरी सूरत से सेर हो जाऊँगा।

दाऊद का फ़त्ह का गीत

18 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के
लिए यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और
साऊल से बचाया। वह बोला,
ऐ रब मेरी क़ुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।
2रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा
नजातदहिन्दा है। मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिस
में मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात
का पहाड़, मेरा बुलन्द हिसार है।
3मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तम्जीद हो!
तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
4मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत
के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
5पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत
ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
6जब मैं मुसीबत में फंस गया तो मैं ने रब
को पुकारा। मैं ने मदद के लिए अपने ख़ुदा
से फ़र्याद की तो उस ने अपनी सुकूनतगाह से
मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीख़ें उस के कान तक
पहुँच गईं।

7तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी,
पहाड़ों की बुन्यादें रब के ग़ज़ब के सामने
काँपने और झूलने लगीं।
8उस की नाक से धुआँ निकल आया, उस
के मुँह से भस्म करने वाले शोले और दहकते
कोएले भड़क उठे।
9आसमान को झुका कर वह नाज़िल हुआ।
जब उतर आया तो उस के पाँओ के नीचे
अंधेरा ही अंधेरा था।
10वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और
उड़ कर हवा के परों पर मंडलाने लगा।
11उस ने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह
बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे
की तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।
12उस के हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उस के
बादल ओले और शोलाज़न कोएले ले कर
निकल आए।
13रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह
तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और
शोलाज़न कोएले बरसने लगे।
14उस ने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-
बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर
गिरती गई तो उन में हलचल मच गई।
15ऐ रब, तू ने डाँटा तो समुन्दर की वादियाँ
ज़ाहिर हुईं, जब तू ग़ुस्से में गरजा तो तेरे दम
के झोंकों से ज़मीन की बुन्यादें नज़र आईं।

16बुलन्दियों पर से अपना हाथ बढ़ा कर उस
ने मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खैंच
कर निकाल लाया।
17उस ने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से
बचाया, उन से जो मुझ से नफ़रत करते हैं,
जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।
18जिस दिन मैं मुसीबत में फंस गया उस
दिन उन्हों ने मुझ पर हम्ला किया, लेकिन रब
मेरा सहारा बना रहा।
19उस ने मुझे तंग जगह से निकाल कर
छुटकारा दिया, क्यूँकि वह मुझ से ख़ुश था।

20रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है।
मेरे हाथ साफ़ हैं, इस लिए वह मुझे बरकत
देता है।
21क्यूँकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ,
मैं बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
22उस के तमाम अह्काम मेरे सामने रहे हैं,
मैं ने उस के फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
23उस के सामने ही मैं बेइल्ज़ाम रहा, गुनाह
करने से बाज़ रहा हूँ।
24इस लिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का
अज्र दिया, क्यूँकि उस की आँखों के सामने
ही में पाक-साफ़ साबित हुआ।

25ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उस के साथ
तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइल्ज़ाम है
उस के साथ तेरा सुलूक बेइल्ज़ाम है।
26जो पाक है उस के साथ तेरा सुलूक पाक
है। लेकिन जो कजरौ है उस के साथ तेरा
सुलूक भी कजरवी का है।
27क्यूँकि तू पस्तहालों को नजात देता और
मग़रूर आँखों को पस्त करता है।

28ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा ख़ुदा
ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
29क्यूँकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हम्ला
कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को
फलाँग सकता हूँ।
30अल्लाह की राह कामिल है, रब का
फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उस में पनाह ले
उस की वह ढाल है।
31क्यूँकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे
ख़ुदा के सिवा कौन चटान है?
32अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता
करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
33वह मेरे पाँओ को हिरन की सी फुरती
अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलन्दियों
पर खड़ा करता है।

34वह मेरे हाथों को जंग करने की तर्बियत
देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को
भी तान लेते हैं।

35ऐ रब, तू ने मुझे अपनी नजात की ढाल
बख़्श दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क़ाइम रखा,
तेरी नर्मी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
36तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है,
इस लिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
37मैं ने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके
उन्हें पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक
वह ख़त्म न हो गए।
38मैं ने उन्हें यूँ पाश पाश कर दिया कि
दुबारा उठ न सके बल्कि गिर कर मेरे पाँओ
तले पड़े रहे।
39क्यूँकि तू ने मुझे जंग करने के लिए
क़ुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तू ने मेरे
मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।
40तू ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा
दिया, और मैं ने नफ़रत करने वालों को तबाह
कर दिया।
41वह मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते रहे,
लेकिन बचाने वाला कोई नहीं था। वह रब को
पुकारते रहे, लेकिन उस ने जवाब न दिया।
42मैं ने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा
में उड़ा दिया। मैं ने उन्हें कचरे की तरह गली
में फैंक दिया।

43तू ने मुझे क़ौम के झगड़ों से बचा कर
अक़्वाम का सरदार बना दिया है। जिस क़ौम
से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती
है।
44जूँ ही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते
हैं। परदेसी दबक कर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
45वह हिम्मत हार कर काँपते हुए अपने
क़िलों से निकल आते हैं।

46रब ज़िन्दा है! मेरी चटान की तम्जीद हो!
मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!

47वही ख़ुदा है जो मेरा इन्तिक़ाम लेता,
अक़्वाम को मेरे ताबे कर देता
48और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़
करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
49ऐ रब, इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-
ओ-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत
गाऊँगा।
50क्यूँकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात
देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह
दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक
मेहरबान रहेगा।

मख़्लूक़ात में अल्लाह का जलाल

19 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
आसमान अल्लाह के जलाल का एलान
करते हैं, आसमानी गुम्बद उस के हाथों का
काम बयान करता है।
2एक दिन दूसरे को इत्तिला देता, एक रात
दूसरी को ख़बर पहुँचाती है,
3लेकिन ज़बान से नहीं। गो उन की आवाज़
सुनाई नहीं देती,
4तो भी उन की आवाज़ निकल कर पूरी
दुनिया में सुनाई देती, उन के अल्फ़ाज़ दुनिया
की इन्तिहा तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह
ने आफ़्ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।
5जिस तरह दूल्हा अपनी ख़्वाबगाह से
निकलता है उसी तरह सूरज निकल कर
पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने पर
ख़ुशी मनाता है।
6आसमान के एक सिरे से चढ़ कर उस
का चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की
तपती गर्मी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं
रहती।

7रब की शरीअत कामिल है, उस से जान में
जान आ जाती है। रब के अह्काम क़ाबिल-

ए-एतिमाद हैं, उन से सादालौह दानिशमन्द हो जाता है।

8रब की हिदायात बा-इन्साफ़ हैं, उन से दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अह्काम पाक हैं, उन से आँखें चमक उठती हैं।

9रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ाइम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सब के सब रास्त हैं।

10वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मर्ग़ूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

11उन से तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज्र मिलता है।

12जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!

13अपने ख़ादिम को गुस्ताख़ों से मह्फ़ूज़ रख ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइल्ज़ाम हो कर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।

14ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसन्द आए। तू ही मेरी चटान और मेरा छुड़ाने वाला है।

फ़त्ह के लिए दुआ

20 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा का नाम तुझे मह्फ़ूज़ रखे।

2वह मक़्दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा सहारा बने।

3वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)

4वह तेरे दिल की आर्ज़ू पूरी करे, तेरे तमाम मन्सूबों को कामयाबी बख़्शे।

5तब हम तेरी नजात की ख़ुशी मनाएँगे, हम अपने ख़ुदा के नाम में फ़त्ह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम गुज़ारिशें पूरी करे।

6अब मैं ने जान लिया है कि रब अपने मसह किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस आसमान से उस की सुन कर अपने दहने हाथ की क़ुदरत से उसे छुटकारा देगा।

7बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के नाम पर फ़ख़र करेंगे।

8हमारे दुश्मन झुक कर गिर जाएंगे, लेकिन हम उठ कर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

21 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, बादशाह तेरी क़ुव्वत देख कर शादमान है, वह तेरी नजात की कितनी बड़ी ख़ुशी मनाता है।

2तू ने उस की दिली ख़्वाहिश पूरी की और इन्कार न किया जब उस की आर्ज़ू ने होंटों पर अल्फ़ाज़ का रूप धारा। (सिलाह)

3क्यूँकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ ले कर उस से मिलने आया, तू ने उसे ख़ालिस सोने का ताज पहनाया।

4उस ने तुझ से ज़िन्दगी पाने की आर्ज़ू की तो तू ने उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन कि उन की इन्तिहा नहीं।

5तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई, तू ने उसे शान-ओ-शौकत से आरास्ता किया।

6क्यूँकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने चेहरे के हुज़ूर ला कर निहायत ख़ुश कर देता है।

7क्यूँकि बादशाह रब पर एतिमाद करता है,
अल्लाह तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से
बचाएगी।

8तेरे दुश्मन तेरे क़ब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझ
से नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़
लेगा।
9जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह
भड़कती भट्टी की सी मुसीबत में फंस जाएंगे।
रब अपने ग़ज़ब में उन्हें हड़प कर लेगा, और
आग उन्हें खा जाएगी।
10तू उन की औलाद को रू-ए-ज़मीन पर
से मिटा डालेगा, इन्सानों में उन का नाम-ओ-
निशान तक नहीं रहेगा।
11गो वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं तो
भी उन के बुरे मन्सूबे नाकाम रहेंगे।
12क्यूँकि तू उन्हें भगा कर उन के चेहरों को
अपने तीरों का निशाना बना देगा।
13ऐ रब, उठ और अपनी क़ुदरत का इज़हार
कर ताकि हम तेरी क़ुदरत की तम्जीद में साज़
बजा कर गीत गाएँ।

रास्तबाज़ का दुख

22 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तुलू-ए-सुब्ह की हिरनी।
ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क
कर दिया है? मैं चीख़ रहा हूँ, लेकिन मेरी
नजात नज़र नहीं आती।
2ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ,
लेकिन तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता
हूँ, लेकिन आराम नहीं पाता।

3लेकिन तू क़ुद्दूस है, तू जो इस्राईल की
मद्हसराई पर तख़्तनशीन होता है।
4तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा,
और जब भरोसा रखा तो तू ने उन्हें रिहाई दी।
5जब उन्हों ने मदद के लिए तुझे पुकारा तो
बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्हों ने तुझ
पर एतिमाद किया तो शर्मिन्दा न हुए।

6लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इन्सान नहीं
समझा जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे
हक़ीर जानते हैं।
7सब मुझे देख कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं।
वह मुँह बना कर तौबा तौबा करते और कहते
हैं,
8"उस ने अपना मुआमला रब के सपुर्द
किया है। अब रब ही उसे बचाए। वही उसे
छुटकारा दे, क्यूँकि वही उस से ख़ुश है।"

9यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल
लाया। मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तू
ने मेरे दिल में भरोसा पैदा किया।
10जूँ ही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया
गया। माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।
11मुझ से दूर न रह। क्यूँकि मुसीबत ने मेरा
दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी
मदद करे।
12मुतअद्दिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन
के ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।
13मेरे ख़िलाफ़ उन्हों ने अपने मुँह खोल
दिए हैं, उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो
शिकार को फाड़ने के जोश में आ गया है।
14मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया
है, मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं,
जिस्म के अन्दर मेरा दिल मोम की तरह पिघल
गया है।
15मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क हो गई,
मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तू ने मुझे
मौत की ख़ाक में लिटा दिया है।
16कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जथ्थे ने
मेरा इहाता किया है। उन्हों ने मेरे हाथों और
पाँओ को छेद डाला है।
17मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग
घूर घूर कर मेरी मुसीबत से ख़ुश होते हैं।
18वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे
लिबास पर क़ुरआ डालते हैं।

19लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी क़ुव्वत,
मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!
20मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी
ज़िन्दगी को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।
21शेर के मुँह से मुझे मख़्लसी दे, जंगली
बैलों के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तू ने मेरी सुनी है!
22मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का
एलान करूँगा, जमाअत के दरमियान तेरी
मद्हसराई करूँगा।
23तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की
तम्जीद करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद,
उस का एहतिराम कर! ऐ इस्राईल के तमाम
फ़र्ज़न्दो, उस से ख़ौफ़ खाओ!
24क्यूँकि न उस ने मुसीबतज़दा का दुख
हक़ीर जाना, न उस की तक्लीफ़ से घिन खाई।
उस ने अपना मुँह उस से न छुपाया बल्कि
उस की सुनी जब वह मदद के लिए चीख़ने-
चिल्लाने लगा।
25ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश
करूँगा, ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत
पूरी करूँगा।
26नाचार जी भर कर खाएँगे, रब के तालिब
उस की हम्द-ओ-सना करेंगे। तुम्हारे दिल
अबद तक ज़िन्दा रहें!
27लोग दुनिया की इन्तिहा तक रब को याद
करके उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक़्वाम
के तमाम ख़ानदान उसे सिज्दा करेंगे।
28क्यूँकि रब को ही बादशाही का इख़तियार
हासिल है, वही अक़्वाम पर हुकूमत करता है।

29दुनिया के तमाम बड़े लोग उस के हुज़ूर
खाएँगे और सिज्दा करेंगे। ख़ाक में उतरने
वाले सब उस के सामने झुक जाएंगे, वह सब
जो अपनी ज़िन्दगी को ख़ुद क़ाइम नहीं रख
सकते।
30उस के फ़र्ज़न्द उस की ख़िदमत करेंगे।
एक आने वाली नस्ल को रब के बारे में सुनाया
जाएगा।
31हाँ, वह आ कर उस की रास्ती एक क़ौम
को सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्यूँकि
उस ने यह कुछ किया है।

अच्छा चरवाहा

23 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न
होगी।
2वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और
पुरसुकून चश्मों के पास ले जाता है।
3वह मेरी जान को ताज़ादम करता और
अपने नाम की ख़ातिर रास्ती की राहों पर मेरी
क़ियादत करता है।
4गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं
मुसीबत से नहीं डरूँगा, क्यूँकि तू मेरे साथ
है, तेरी लाठी और तेरा असा मुझे तसल्ली देते
हैं।

5तू मेरे दुश्मनों के रू-ब-रू मेरे सामने मेज़
बिछा कर मेरे सर को तेल से तर-ओ-ताज़ा
करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक
उठता है।
6यक़ीनन भलाई और शफ़्क़त उम्र भर मेरे
साथ साथ रहेंगी, और मैं जीते जी रब के घर
में सुकूनत करूँगा।

बादशाह का इस्तिक़्बाल

24 दाऊद का ज़बूर।
ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब
का है, दुनिया और उस के बाशिन्दे उसी के हैं।
2क्यूँकि उस ने ज़मीन की बुन्याद समुन्दरों पर
रखी और उसे दरयाओं पर क़ाइम किया।

3किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की
इजाज़त है? कौन उस के मुक़द्दस मक़ाम में
खड़ा हो सकता है?

4वह जिस के हाथ पाक और दिल साफ़ हैं,
जो न फ़रेब का इरादा रखता, न क़सम खा
कर झूट बोलता है।
5वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी
नजात के ख़ुदा से रास्ती मिलेगी।
6यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह
की मर्ज़ी दरयाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के
तालिब होते हैं, ऐ याक़ूब के ख़ुदा। (सिलाह)

7ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम
दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि
जलाल का बादशाह दाख़िल हो जाए।
8जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी
और क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोर-आवर है।
9ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम
दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि
जलाल का बादशाह दाख़िल हो जाए।
10जलाल का बादशाह कौन है? रब्ब-
उल-अफ़्वाज, वही जलाल का बादशाह है।
(सिलाह)

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

25 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमन्द हूँ।
2ऐ मेरे ख़ुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ।
मुझे शर्मिन्दा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर
शादियाना बजाएँ।
3क्यूँकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह
शर्मिन्दा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह
बेवफ़ा होते हैं वही शर्मिन्दा हो जाएंगे।

4ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने
रास्तों की तालीम दे।
5अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई
कर, मुझे तालीम दे। क्यूँकि तू मेरी नजात का
ख़ुदा है। दिन भर मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
6ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद
कर जो तू क़दीम ज़माने से करता आया है।

7ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी
बेवफ़ा हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी
भलाई की ख़ातिर और अपनी शफ़्क़त के
मुताबिक़ मेरा ख़याल रख।

8रब भला और आदिल है, इस लिए वह
गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की
तल्क़ीन करता है।
9वह फ़रोतनों की इन्साफ़ की राह पर
राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की
तालीम देता है।
10जो रब के अह्द और अह्काम के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी
और वफ़ादारी की राहों पर ले चलता है।
11ऐ रब, मेरा क़ुसूर संगीन है, लेकिन अपने
नाम की ख़ातिर उसे मुआफ़ कर।
12रब का ख़ौफ़ मानने वाला कहाँ है? रब
ख़ुद उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे
चुनना है।
13तब वह ख़ुशहाल रहेगा, और उस की
औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।
14जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने
हमराज़ बना कर अपने अह्द की तालीम देता
है।

15मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्यूँकि
वही मेरे पाँओ को जाल से निकाल लेता है।
16मेरी तरफ़ माइल हो जा, मुझ पर मेहर-
बानी कर! क्यूँकि मैं तन्हा और मुसीबतज़दा
हूँ।
17मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी
तकालीफ़ से रिहाई दे।
18मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डाल कर
मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।
19देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह
कितना ज़ुल्म करके मुझ से नफ़रत करते हैं।
20मेरी जान को महफ़ूज़ रख, मुझे बचा!
मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्यूँकि मैं तुझ में पनाह
लेता हूँ।

21बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरा-
दारी करें, क्यूँकि मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
22ऐ अल्लाह, फ़िद्या दे कर इस्राईल को उस
की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

बेगुनाह का इक़्रार और इल्तिजा

26 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इन्साफ़ कर, क्यूँकि
मेरा चाल-चलन बेक़ुसूर है। मैं ने रब पर
भरोसा रखा है, और मैं डाँवाँडोल नहीं हो
जाऊँगा।

2ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़मा कर दिल
की तह तक मेरा मुआइना कर।
3क्यूँकि तेरी शफ़्क़त मेरी आँखों के सामने
रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
4न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न
चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
5मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है,
बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।
6ऐ रब, मैं अपने हाथ धो कर अपनी
बेगुनाही का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी
क़ुर्बानगाह के गिर्द फिर कर
7बुलन्द आवाज़ से तेरी हम्द-ओ-सना
करता, तेरे तमाम मोजिज़ात का एलान करता
हूँ।
8ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस
जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़
है।

9मेरी जान को मुझ से छीन कर मुझे
गुनाहगारों में शामिल न कर! मेरी ज़िन्दगी
को मिटा कर मुझे ख़ूँख़्वारों में शुमार न कर,
10ऐसे लोगों में जिन के हाथ शर्मनाक
हरकतों से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत
खाते हैं।
11क्यूँकि मैं बेगुनाह ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ।
फ़िद्या दे कर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर
मेहरबानी कर!

12मेरे पाँओ हमवार ज़मीन पर क़ाइम हो
गए हैं, और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश
करूँगा।

अल्लाह से रिफ़ाक़त

27 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है,
मैं किस से डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह
है, मैं किस से दह्शत खाऊँ?
2जब शरीर मुझ पर हम्ला करें ताकि मुझे
हड़प कर लें, जब मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन
मुझ पर टूट पड़ें तो वह ठोकर खा कर गिर
जाएंगे।
3गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं
खाएगा, गो मेरे ख़िलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा
भरोसा क़ाइम रहेगा।

4रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात
चाहता हूँ। यह कि जीते जी रब के घर में रह
कर उस की शफ़्क़त से लुत्फ़अन्दोज़ हो सकूँ,
कि उस की सुकूनतगाह में ठहर कर महव-ए-
ख़याल रह सकूँ।
5क्यूँकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी
सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे
में छुपा लेगा, मुझे उठा कर ऊँची चटान पर
रखेगा।
6अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलन्द हूँगा,
अगरचे उन्हों ने मुझे घेर रखा है। मैं उस के
ख़ैमे में ख़ुशी के नारे लगा कर क़ुर्बानियाँ पेश
करूँगा, साज़ बजा कर रब की मद्हसराई
करूँगा।

7ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे
पुकारूँ, मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।
8मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तू ने ख़ुद
फ़रमाया, "मेरे चेहरे के तालिब रहो!" ऐ रब,
मैं तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।
9अपने चेहरे को मुझ से छुपाए न रख,
अपने ख़ादिम को ग़ुस्से से अपने हुज़ूर से न

निकाल। क्यूँकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ
मेरी नजात के ख़ुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न
कर।
10क्यूँकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया
है, लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में
लाएगा।
11ऐ रब, मुझे अपनी राह की तर्बियत दे,
हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि
अपने दुश्मनों से महफ़ूज़ रहूँ।
12मुझे मुख़ालिफ़ों के लालच में न आने दे,
क्यूँकि झूटे गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं
जो तशद्दुद करने के लिए तय्यार हैं।
13लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िन्दों
के मुल्क में रह कर रब की भलाई देखूँगा।

14रब के इन्तिज़ार में रह! मज़बूत और
दिलेर हो, और रब के इन्तिज़ार में रह!

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

28 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी
चटान, ख़ामोशी से अपना मुँह मुझ से न फेर।
क्यूँकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में
उतरने वालों की मानिन्द हो जाऊँगा।
2मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीख़ते
चिल्लाते तुझ से मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने
हाथ तेरी सुकूनतगाह के मुक़द्दसतरीन कमरे
की तरफ़ उठाता हूँ।
3मुझे उन बेदीनों के साथ घसीट कर सज़ा न
दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों
से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल
में उन के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधते हैं।
4उन्हें उन की हरकतों और बुरे कामों का
बदला दे। जो कुछ उन के हाथों से सरज़द
हुआ है उस की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही
नुक़्सान पहुँचा दे जितना उन्हों ने दूसरों को
पहुँचाया है।
5क्यूँकि न वह रब के आमाल पर, न उस के
हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह
उन्हें ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं
करेगा।

6रब की तम्जीद हो, क्यूँकि उस ने मेरी
इल्तिजा सुन ली।
7रब मेरी क़ुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर
मेरे दिल ने भरोसा रखा, उस से मुझे मदद
मिली है। मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं
गीत गा कर उस की सताइश करता हूँ।
8रब अपनी क़ौम की क़ुव्वत और अपने
मसह किए हुए ख़ादिम का नजातबख़्श क़िला
है।
9ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी
मीरास को बरकत दे! उन की गल्लाबानी
करके उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

रब के जलाल की तम्जीद

29 दाऊद का ज़बूर।
ऐ अल्लाह के फ़र्ज़न्दो, रब की
तम्जीद करो! रब के जलाल और क़ुदरत की
सताइश करो!
2रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस
लिबास से आरास्ता हो कर रब को सिज्दा
करो।
3रब की आवाज़ समुन्दर के ऊपर गूँजती
है। जलाल का ख़ुदा गरजता है, रब गहरे पानी
के ऊपर गरजता है।
4रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़
पुरजलाल है।
5रब की आवाज़ देवदार के दरख़्तों को तोड़
डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख़्तों
को टुकड़े टुकड़े कर देता है।
6वह लुबनान को बछड़े और कोह-ए-
सिर्यून[a] को जंगली बैल के बच्चे की तरह
कूदने फाँदने देता है।

[a]सिर्यून हर्मून का दूसरा नाम है।

7रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती
है।
8रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती
है, रब दश्त-ए-क़ादिस को काँपने देता है।
9रब की आवाज़ सुन कर हिरनी दर्द-ए-ज़ह
में मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़
जाते हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब
पुकारते हैं, "जलाल!"
10रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है,
रब बादशाह की हैसियत से अबद तक
तख़्तनशीन है।
11रब अपनी क़ौम को तक़वियत देगा, रब
अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

30 दाऊद का ज़बूर। रब के घर की
मख़्सूसियत के मौक़े पर गीत।
ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्यूँकि तू
ने मुझे गहराइयों में से खैंच निकाला। तू ने मेरे
दुश्मनों को मुझ पर बग़लें बजाने का मौक़ा
नहीं दिया।
2ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं ने चीख़ते चिल्लाते हुए
तुझ से मदद माँगी, और तू ने मुझे शिफ़ा दी।
3ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल
लाया, तू ने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने
से बचाया है।
4ऐ ईमानदारो, साज़ बजा कर रब की
तारीफ़ में गीत गाओ। उस के मुक़द्दस नाम
की हम्द-ओ-सना करो।
5क्यूँकि वह लम्हा भर के लिए ग़ुस्से होता,
लेकिन ज़िन्दगी भर के लिए मेहरबानी करता
है। गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुब्ह को हम
ख़ुशी मनाएँगे।

6जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, "मैं
कभी नहीं डगमगाऊँगा।"
7ऐ रब, जब तू मुझ से ख़ुश था तो तू ने मुझे
मज़बूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तू ने
अपना चेहरा मुझ से छुपा लिया तो मैं सख़्त
घबरा गया।
8ऐ रब, मैं ने तुझे पुकारा, हाँ ख़ुदावन्द से मैं
ने इल्तिजा की,
9"क्या फ़ाइदा है अगर मैं हलाक हो कर
मौत के गढ़े में उतर जाऊँ? क्या ख़ाक तेरी
सताइश करेगी? क्या वह लोगों को तेरी
वफ़ादारी के बारे में बताएगी?
10ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर।
ऐ रब, मेरी मदद करने के लिए आ!"

11तू ने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल
दिया, तू ने मेरे मातमी कपड़े उतार कर मुझे
शादमानी से मुलब्बस किया।
12क्यूँकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश
न हो बल्कि गीत गा कर तेरी तम्जीद करती
रहे। ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्द-
ओ-सना करूँगा।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

31 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी
शर्मिन्दा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के
मुताबिक़ मुझे बचा!
2अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही
मुझे छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो,
पहाड़ का क़िला जिस में मैं पनाह ले कर
नजात पा सकूँ।

3क्यूँकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने
नाम की ख़ातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क़ियादत
कर।
4मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे
पकड़ने के लिए चुपके से बिछाया गया है।
क्यूँकि तू ही मेरी पनाहगाह है।
5मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ
रब, ऐ वफ़ादार ख़ुदा, तू ने फ़िद्या दे कर मुझे
छुड़ाया है!

6मैं उन से नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों
से लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता
हूँ।
7मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़्क़त की
ख़ुशी मनाऊँगा, क्यूँकि तू ने मेरी मुसीबत देख
कर मेरी जान की परेशानी का ख़याल किया
है।
8तू ने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया
बल्कि मेरे पाँओ को खुले मैदान में क़ाइम कर
दिया है।

9ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्यूँकि मैं
मुसीबत में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई
हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।
10मेरी ज़िन्दगी दुख की चक्की में पिस रही
है, मेरे साल आहें भरते भरते ज़ाए हो रहे हैं।
मेरे क़ुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे
गई, मेरी हड्डियाँ गलने सड़ने लगी हैं।
11मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाय भी
मुझे लान-तान करते, मेरे जानने वाले मुझ से
दह्शत खाते हैं। गली में जो भी मुझे देखे मुझ
से भाग जाता है।
12मैं मुर्दों की मानिन्द उन की याददाश्त से
मिट गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फैंक दिया
गया है।
13बहुतों की अफ़्वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं,
चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह
मिल कर मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे
क़त्ल करने के मन्सूबे बांध रहे हैं।

14लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता
हूँ। मैं कहता हूँ, "तू मेरा ख़ुदा है!"
15मेरी तक़्दीर[a] तेरे हाथ में है। मुझे मेरे
दुश्मनों के हाथ से बचा, उन से जो मेरे पीछे
पड़ गए हैं।
16अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर
चमका, अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।

17ऐ रब, मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्यूँकि मैं
ने तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह
काले हो जाएँ, वह पाताल में उतर कर चुप हो
जाएँ।
18उन के फ़रेबदिह होंट बन्द हो जाएँ,
क्यूँकि वह तकब्बुर और हिक़ारत से रास्तबाज़
के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकते हैं।

19तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उन
के लिए तय्यार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते
हैं, उसे उन्हें दिखाता है जो इन्सानों के सामने
से तुझ में पनाह लेते हैं।
20तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों
के हम्लों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में ला कर
इल्ज़ामतराश ज़बानों से महफ़ूज़ रखता है।
21रब की तम्जीद हो, क्यूँकि जब शहर का
मुहासरा हो रहा था तो उस ने मोजिज़ाना तौर
पर मुझ पर मेहरबानी की।
22उस वक़्त मैं घबरा कर बोला, "हाय, मैं
तेरे हुज़ूर से मुन्क़ते हो गया हूँ!" लेकिन जब
मैं ने चीख़ते चिल्लाते हुए तुझ से मदद माँगी
तो तू ने मेरी इल्तिजा सुन ली।

23ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उस से
मुहब्बत रखो! रब वफ़ादारों को महफ़ूज़
रखता, लेकिन मग़रूरों को उन के रवय्ये का
पूरा अज्र देगा।
24चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब
जो रब के इन्तिज़ार में हो।

मुआफ़ी की बरकत
(तौबा का दूसरा ज़बूर)

32 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
मुबारक है वह जिस के जराइम
मुआफ़ किए गए, जिस के गुनाह ढाँपे गए हैं।
2मुबारक है वह जिस का गुनाह रब हिसाब
में नहीं लाएगा और जिस की रूह में फ़रेब नहीं
है।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरे औक़ात।

3जब मैं चुप रहा तो दिन भर आहें भरने से
मेरी हड्डियाँ गलने लगीं।
4क्यूँकि दिन रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले
पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसम-ए-गर्मा
की झुलसती तपिश में जाती रही। (सिलाह)
5तब मैं ने तेरे सामने अपना गुनाह तस्लीम
किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया।
मैं बोला, "मैं रब के सामने अपने जराइम
का इक़्रार करूँगा।" तब तू ने मेरे गुनाह को
मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

6इस लिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझ
से दुआ करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन
जब बड़ा सैलाब आए तो उन तक नहीं
पहुँचेगा।

7तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी
से महफ़ूज़ रखता, मुझे नजात के नग़मों से घेर
लेता है। (सिलाह)
8"मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह
दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे
मश्वरा दे कर तेरी देख-भाल करूँगा।
9नासमझ घोड़े या ख़च्चर की मानिन्द न हो,
जिन पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने
की ज़रूरत है, वर्ना वह तेरे पास नहीं आएँगे।"

10बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं,
लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी
शफ़्क़त से घेरे रखता है।
11ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी में जश्न
मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के
नारे लगाओ!

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़

33 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि मुनासिब है कि
सीधी राह पर चलने वाले उस की सताइश
करें।

2सरोद बजा कर रब की हम्द-ओ-सना
करो। उस की तम्जीद में दस तारों वाला साज़
बजाओ।
3उस की तम्जीद में नया गीत गाओ, महारत
से साज़ बजा कर ख़ुशी के नारे लगाओ।
4क्यूँकि रब का कलाम सच्चा है, और वह
हर काम वफ़ादारी से करता है।
5उसे रास्तबाज़ी और इन्साफ़ प्यारे हैं,
दुनिया रब की शफ़्क़त से भरी हुई है।
6रब के कहने पर आसमान ख़ल्क़ हुआ,
उस के मुँह के दम से सितारों का पूरा लश्कर
वुजूद में आया।
7वह समुन्दर के पानी का बड़ा ढेर जमा
करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में
महफ़ूज़ रखता है।
8कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के
तमाम बाशिन्दे उस से दहशत खाएँ।
9क्यूँकि उस ने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में
आया, उस ने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ाइम
हुआ।
10रब अक़्वाम का मन्सूबा नाकाम होने
देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता
है।
11लेकिन रब का मन्सूबा हमेशा तक
कामयाब रहता, उस के दिल के इरादे पुश्त-
दर-पुश्त क़ाइम रहते हैं।

12मुबारक है वह क़ौम जिस का ख़ुदा रब है,
वह क़ौम जिसे उस ने चुन कर अपनी मीरास
बना लिया है।

13रब आसमान से नज़र डाल कर तमाम
इन्सानों का मुलाहज़ा करता है।
14अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम
बाशिन्दों का मुआइना करता है।
15जिस ने उन सब के दिलों को तश्कील
दिया वह उन के तमाम कामों पर ध्यान देता
है।

16बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती,
और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
17घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस
पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की
बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।
18यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती
है जो उस का ख़ौफ़ मानते और उस की
मेहरबानी के इन्तिज़ार में रहते हैं,
19कि वह उन की जान मौत से बचाए और
काल में मह्फ़ूज़ रखे।

20हमारी जान रब के इन्तिज़ार में है। वही
हमारा सहारा, हमारी ढाल है।
21हमारा दिल उस में ख़ुश है, क्यूँकि हम
उस के मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्यूँकि
हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

34 दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब उस ने फ़िलिस्ती
बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप
भर लिया। यह देख कर बादशाह ने उसे भगा दिया।
चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।

हर वक़्त मैं रब की तम्जीद करूँगा, उस की
हम्द-ओ-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
2मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी।
मुसीबतज़दा यह सुन कर ख़ुश हो जाएँ।
3आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो।
आओ, हम मिल कर उस का नाम सरबुलन्द
करें।

4मैं ने रब को तलाश किया तो उस ने मेरी
सुनी। जिन चीज़ों से मैं दह्शत खा रहा था उन
सब से उस ने मुझे रिहाई दी।
5जिन की आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी
से चमकेंगे, और उन के मुँह शर्मिन्दा नहीं होंगे।

6इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की
सुनी, उस ने उसे उस की तमाम मुसीबतों से
नजात दी।

7जो रब का ख़ौफ़ मानें उन के इर्दगिर्द उस
का फ़रिश्ता ख़ैमाज़न हो कर उन को बचाए
रखता है।
8रब की भलाई का तजरिबा करो। मुबारक
है वह जो उस में पनाह ले।
9ऐ रब के मुक़द्दसीन, उस का ख़ौफ़ मानो,
क्यूँकि जो उस का ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।
10जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमन्द और
भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी
भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।
11ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें
रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।
12कौन मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारना और अच्छे
दिन देखना चाहता है?
13वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से
रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।
14वह बुराई से मुँह फेर कर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब हो कर उस के
पीछे लगा रहे।
15रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती
हैं, और उस के कान उन की इल्तिजाओं की
तरफ़ माइल हैं।
16लेकिन रब का चेहरा उन के ख़िलाफ़ है
जो ग़लत काम करते हैं। उन का ज़मीन पर
नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।
17जब रास्तबाज़ फ़र्याद करें तो रब उन की
सुनता, वह उन्हें उन की तमाम मुसीबत से
छुटकारा देता है।
18रब शिकस्तादिलों के क़रीब होता है, वह
उन्हें रिहाई देता है जिन की रूह को ख़ाक में
कुचला गया हो।
19रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ होती
हैं, लेकिन रब उसे उन सब से बचा लेता है।
20वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त
करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।

21बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो
रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज्र
मिलेगा।
22लेकिन रब अपने ख़ादिमों की जान का
फ़िद्या देगा। जो भी उस में पनाह ले उसे सज़ा
नहीं मिलेगी।

शरीरों के हम्लों से रिहाई के लिए दुआ

35 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उन से झगड़ जो मेरे साथ
झगड़ते हैं, उन से लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।
2लम्बी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठ
कर मेरी मदद करने आ।
3नेज़े और बरछी को निकाल कर उन्हें रोक
दे जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से
फ़रमा, "मैं तेरी नजात हूँ!"
4जो मेरी जान के लिए कोशाँ हैं उन का मुँह
काला हो जाए, वह रुसवा हो जाएँ। जो मुझे
मुसीबत में डालने के मन्सूबे बांध रहे हैं वह
पीछे हट कर शर्मिन्दा हों।
5वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब
का फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।
6उन का रास्ता तारीक और फिसलना हो
जब रब का फ़रिश्ता उन के पीछे पड़ जाए।
7क्यूँकि उन्हों ने बेसबब और चुपके से
मेरे रास्ते में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे
पकड़ने का गढ़ा खोदा है।
8इस लिए तबाही अचानक ही उन पर आ
पड़े, पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्हों
ने चुपके से बिछाया उस में वह ख़ुद उलझ
जाएँ, जिस गढ़े को उन्हों ने खोदा उस में वह
ख़ुद गिर कर तबाह हो जाएँ।

9तब मेरी जान रब की ख़ुशी मनाएगी और
उस की नजात के बाइस शादमान होगी।
10मेरे तमाम आज़ा कह उठेंगे, "ऐ रब,
कौन तेरी मानिन्द है? कोई भी नहीं! क्यूँकि
तू ही मुसीबतज़दा को ज़बरदस्त आदमी से
छुटकारा देता, तू ही नाचार और ग़रीब को
लूटने वाले के हाथ से बचा लेता है।"

11ज़ालिम गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हो
रहे हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ
कर रहे हैं जिन से मैं वाक़िफ़ ही नहीं।
12वह मेरी नेकी के इवज़ मुझे नुक़्सान
पहुँचा रहे हैं। अब मेरी जान तन-ए-तनहा है।
13जब वह बीमार हुए तो मैं ने टाट ओढ़ कर
और रोज़ा रख कर अपनी जान को दुख दिया।
काश मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!
14मैं ने यूँ मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त
या भाई हो। मैं मातमी लिबास पहन कर यूँ
ख़ाक में झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा
हो।

15लेकिन जब मैं ख़ुद ठोकर खाने लगा तो
वह ख़ुश हो कर मेरे ख़िलाफ़ जमा हुए। वह
मुझ पर हम्ला करने के लिए इकट्ठे हुए, और
मुझे मालूम ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे
और बाज़ न आए।
16मुसलसल कुफ़्र बक बक कर वह मेरा
मज़ाक़ उड़ाते, मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीसते थे।
17ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता
रहेगा? मेरी जान को उन की तबाहकुन
हरकतों से बचा, मेरी ज़िन्दगी को जवान शेरों
से छुटकारा दे।
18तब मैं बड़ी जमाअत में तेरी सताइश और
बड़े हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।
19उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब
मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न
दे जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं।
20क्यूँकि वह ख़ैर और सलामती की बातें
नहीं करते बल्कि उन के ख़िलाफ़ फ़रेबदिह
मन्सूबे बांधते हैं जो अम्न और सुकून से मुल्क
में रहते हैं।
21वह मुँह फाड़ कर कहते हैं, "लो जी, हम
ने अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!"

22ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है।
ख़ामोश न रह! ऐ रब, मुझ से दूर न हो।
23ऐ रब मेरे ख़ुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में
उठ कर उन से लड़!
24ऐ रब मेरे ख़ुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़
मेरा इन्साफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने
न दे।
25वह दिल में न सोचें, “लो जी, हमारा
इरादा पूरा हुआ है!” वह न बोलें, “हम ने
उसे हड़प कर लिया है।”
26जो मेरा नुक़्सान देख कर ख़ुश हुए उन
सब का मुँह काला हो जाए, वह शर्मिन्दा हो
जाएँ। जो मुझे दबा कर अपने आप पर फ़ख़र
करते हैं वह शर्मिन्दगी और रुस्वाई से मुलब्बस
हो जाएँ।

27लेकिन जो मेरे इन्साफ़ के आरज़ूमन्द हैं
वह ख़ुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें,
“रब की बड़ी तारीफ़ हो, जो अपने ख़ादिम
की ख़ैरियत चाहता है।”
28तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी,
वह सारा दिन तेरी तम्जीद करती रहेगी।

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

36 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए।
बदकारी बेदीन के दिल ही में उस से बात
करती है। उस की आँखों के सामने अल्लाह
का ख़ौफ़ नहीं होता,
2क्यूँकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का
बाइस है कि उसे क़ुसूरवार पाया गया, कि वह
नफ़रत करता है।
3उस के मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता
है, वह समझदार होने और नेक काम करने से
बाज़ आया है।
4अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मन्सूबे
बांधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा
रहता और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।

5ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी
वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
6तेरी रास्ती बुलन्दतरीन पहाड़ों की
मानिन्द, तेरा इन्साफ़ समुन्दर की गहराइयों
जैसा है। ऐ रब, तू इन्सान-ओ-हैवान की मदद
करता है।
7ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेश-
क़ीमत है! आदमज़ाद तेरे परों के साय में
पनाह लेते हैं।
8वह तेरे घर के उम्दा खाने से तर-ओ-ताज़ा
हो जाते हैं, और तू उन्हें अपनी ख़ुशियों की
नदी में से पिलाता है।
9क्यूँकि ज़िन्दगी का सरचश्मा तेरे ही पास
है, और हम तेरे नूर में रह कर नूर का मुशाहदा
करते हैं।
10अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो
तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल
से दियानतदार हैं।
11मग़रूरों का पाँओ मुझ तक न पहुँचे,
बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।
12देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन
पर पटख़ दिया गया है, और वह दुबारा कभी
नहीं उठेंगे।

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

37 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा,
बदकारों पर रश्क न कर।
2क्यूँकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा
जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख
जाएंगे।
3रब पर भरोसा रख कर भलाई कर, मुल्क
में रह कर वफ़ादारी की परवरिश कर।
4रब से लुत्फ़अन्दोज़ हो तो जो तेरा दिल
चाहे वह तुझे देगा।
5अपनी राह रब के सपुर्द कर। उस पर
भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।

6तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू
होने देगा और तेरा इन्साफ़ दोपहर की रौशनी
की तरह चमकने देगा।
7रब के हुज़ूर चुप हो कर सब्र से उस का
इन्तिज़ार कर। बेक़रार न हो अगर साज़िशें
करने वाला कामयाब हो।
8ख़फ़ा होने से बाज़ आ, ग़ुस्से को छोड़ दे।
रंजीदा न हो, वर्ना बुरा ही नतीजा निकलेगा।

9क्यूँकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से
उम्मीद रखने वाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
10मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का
नाम-ओ-निशान मिट जाएगा। तू उस का
खोज लगाएगा, लेकिन कहीं नहीं पाएगा।
11लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पा कर
बड़े अम्न और सुकून से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे।
12बेशक बेदीन दाँत पीस पीस कर
रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहे।
13लेकिन रब उस पर हँसता है, क्यूँकि वह
जानता है कि उस का अन्जाम क़रीब ही है।
14बेदीनों ने तलवार को खैंचा और कमान
को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरत-
मन्दों को गिरा दें और सीधी राह पर चलने
वालों को क़त्ल करें।
15लेकिन उन की तलवार उन के अपने दिल
में घोंपी जाएगी, उन की कमान टूट जाएगी।

16रास्तबाज़ को जो थोड़ा बहुत हासिल है
वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
17क्यूँकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा
जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।
18रब बेइल्ज़ामों के दिन जानता है, और उन
की मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क़ाइम
रहेगी।
19मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे,
काल भी पड़े तो सेर होंगे।
20लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब
के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो
जाएंगे, धुएँ की तरह ग़ाइब हो जाएंगे।

21बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता,
लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़य्याज़ी
से देता है।
22क्यूँकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को
मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत
भेजे उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।
23अगर किसी के पाँओ जम जाएँ तो यह
रब की तरफ़ से है। ऐसे शख़्स की राह को वह
पसन्द करता है।
24अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा,
क्यूँकि रब उस के हाथ का सहारा बना रहेगा।

25मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ।
लेकिन मैं ने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को
तर्क किया गया या उस के बच्चों को भीक
माँगनी पड़ी।
26वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के
लिए तय्यार है। उस की औलाद बरकत का
बाइस होगी।

27बुराई से बाज़ आ कर भलाई कर। तब तू
हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,
28क्यूँकि रब को इन्साफ़ प्यारा है, और वह
अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा।
वह अबद तक महफ़ूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों
की औलाद का नाम-ओ-निशान तक नहीं
रहेगा।
29रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पा कर उस
में हमेशा बसेंगे।
30रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत बयान करता
और उस की ज़बान से इन्साफ़ निकलता है।
31अल्लाह की शरीअत उस के दिल में है,
और उस के क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।
32बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठ कर उसे
मार डालने का मौक़ा ढूँडता है।
33लेकिन रब रास्तबाज़ को उस के हाथ में
नहीं छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं
ठहरने देगा।

34रब के इन्तिज़ार में रह और उस की राह
पर चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके
मुल्क का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की
हलाकत देखेगा।

35मैं ने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को
देखा जो फलते फूलते देवदार के दरख़्त की
तरह आसमान से बातें करने लगा।
36लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा
वहाँ से गुज़रा तो वह था नहीं। मैं ने उस का
खोज लगाया, लेकिन कहीं न मिला।
37बेइल्ज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार
पर ग़ौर कर, क्यूँकि आख़िरकार उसे अम्न
और सुकून हासिल होगा।
38लेकिन मुजरिम मिल कर तबाह हो
जाएंगे, और बेदीनों को आख़िरकार रू-ए-
ज़मीन पर से मिटाया जाएगा।
39रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है,
मुसीबत के वक़्त वही उन का क़िला है।
40रब ही उन की मदद करके उन्हें छुटकारा
देगा, वही उन्हें बेदीनों से बचा कर नजात देगा।
क्यूँकि उन्हों ने उस में पनाह ली है।

सज़ा से बचने की इल्तिजा
(तौबा का तीसरा ज़बूर)

38 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न
दे, क़हर में मुझे तम्बीह न कर!
2क्यूँकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं,
तेरा हाथ मुझ पर भारी है।
3तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म
बीमार है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम
हड्डियाँ गलने लगी हैं।
4क्यूँकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब
गया हूँ, वह नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त बोझ बन गए
हैं।
5मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़्मों से बदबू
आने लगी, वह गलने लगे हैं।
6मैं कुबड़ा बन कर ख़ाक में दब गया हूँ, पूरा
दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।
7मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म
बीमार है।
8मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल
के अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता चिल्लाता हूँ।

9ऐ रब, मेरी तमाम आर्ज़ू तेरे सामने है, मेरी
आहें तुझ से पोशीदा नहीं रहतीं।
10मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त
जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी
जाती रही है।
11मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देख
कर मुझ से गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार
दूर खड़े रहते हैं।
12मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे
नुक़्सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे
और सारा सारा दिन फ़रेबदिह मन्सूबे बांध रहे
हैं।
13और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं
सुनता। मैं गूँगे की मानिन्द हूँ जो अपना मुँह
नहीं खोलता।
14मैं ऐसा शख़्स बन गया हूँ जो न सुनता,
न जवाब में एतिराज़ करता है।

15क्यूँकि ऐ रब, मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ। ऐ रब
मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
16मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़्सान
देख कर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँओ के
डगमगाने पर मुझे दबा कर अपने आप पर
फ़ख़र करें।"
17क्यूँकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत
मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
18चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तस्लीम करता हूँ,
मैं अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।
19मेरे दुश्मन ज़िन्दा और ताक़तवर हैं, और
जो बिलावजह मुझ से नफ़रत करते हैं वह
बहुत हैं।

20वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इस
लिए मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा
रहता हूँ।

21ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझ
से दूर न रह!
22ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में
जल्दी कर!

इन्सान के फ़ानी होने के पेश-ए-नज़र इल्तिजा

39 दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा
ताकि अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब
तक बेदीन मेरे सामने रहे उस वक़्त तक अपने
मुँह को लगाम दिए रहूँगा।"
2मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से
दूर रह कर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत
बढ़ गई।
3मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे
कराहते कराहते मेरे अन्दर बेचैनी की आग सी
भड़क उठी। तब बात ज़बान पर आ गई,
4"ऐ रब, मुझे मेरा अन्जाम और मेरी उम्र
की हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना
फ़ानी हूँ।
5देख, मेरी ज़िन्दगी का दौरानिया तेरे सामने
लम्हा भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक
कुछ भी नहीं है। हर इन्सान दम भर का ही है,
ख़्वाह वह कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यूँ न
हो। (सिलाह)
6जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही
है। उस का शोर-शराबा बातिल है, और गो
वह दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे तो भी
उसे मालूम नहीं कि बाद में किस के क़ब्ज़े में
आएगी।"

7चुनाँचे ऐ रब, मैं किस के इन्तिज़ार में रहूँ?
तू ही मेरी वाहिद उम्मीद है!

8मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे।
अहमक़ को मेरी रुस्वाई करने न दे।
9मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना
मुँह नहीं खोलता, क्यूँकि यह सब कुछ तेरे ही
हाथ से हुआ है।
10अपना अज़ाब मुझ से दूर कर! तेरे हाथ
की ज़र्बों से मैं हलाक हो रहा हूँ।
11जब तू इन्सान को उस के क़ुसूर की
मुनासिब सज़ा दे कर उस को तम्बीह करता
है तो उस की ख़ूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की
तरह जाती रहती है। हर इन्सान दम भर का
ही है। (सिलाह)

12ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए
मेरी आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसूओं को
देख कर ख़ामोश न रह। क्यूँकि मैं तेरे हुज़ूर
रहने वाला परदेसी, अपने तमाम बापदादा की
तरह तेरे हुज़ूर बसने वाला ग़ैरशहरी हूँ।
13मुझ से बाज़ आ ताकि मैं कूच करके
नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-
बश्शाश हो जाऊँ।

शुक्र और दरख़्वास्त

40 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मैं सब्र से रब के इन्तिज़ार में रहा तो वह
मेरी तरफ़ माइल हुआ और मदद के लिए मेरी
चीख़ों पर तवज्जुह दी।
2वह मुझे तबाही के गढ़े से खैंच लाया,
दलदल और कीचड़ से निकाल लाया। उस ने
मेरे पाँओ को चटान पर रख दिया, और अब
मैं मज़बूती से चल फिर सकता हूँ।
3उस ने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया,
हमारे ख़ुदा की हम्द-ओ-सना का गीत उभरने
दिया। बहुत से लोग यह देखेंगे और ख़ौफ़ खा
कर रब पर भरोसा रखेंगे।
4मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा
रखता है, जो तंग करने वालों और फ़रेब में
उलझे हुओं की तरफ़ रुख़ नहीं करता।

5ऐ रब मेरे ख़ुदा, बार बार तू ने हमें अपने
मोजिज़े दिखाए, जगह-ब-जगह अपने मन्सूबे
वुजूद में ला कर हमारी मदद की। तुझ जैसा
कोई नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं
उन की पूरी फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।

6तू क़ुर्बानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था,
लेकिन तू ने मेरे कानों को खोल दिया। तू
ने भस्म होने वाली क़ुर्बानियों और गुनाह की
क़ुर्बानियों का तक़ाज़ा न किया।
7फिर मैं बोल उठा, "मैं हाज़िर हूँ जिस तरह
मेरे बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस[a] में लिखा है।
8ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मर्ज़ी पूरी
करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई
है।"
9मैं ने बड़े इजतिमा में रास्ती की ख़ुशख़बरी
सुनाई है। ऐ रब, यक़ीनन तू जानता है कि मैं
ने अपने होंटों को बन्द न रखा।
10मैं ने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न
रखी बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान
की। मैं ने बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और
सदाक़त की एक बात भी पोशीदा न रखी।

11ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम
नहीं रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी
मुसलसल मेरी निगहबानी करेंगी।
12क्यूँकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा
है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा
है। अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे
सर के बालों से ज़्यादा हैं, इस लिए मैं हिम्मत
हार गया हूँ।

13ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब,
मेरी मदद करने में जल्दी कर!
14मेरे जानी दुश्मन सब शर्मिन्दा हो जाएँ,
उन की सख़्त रुस्वाई हो जाए। जो मेरी
मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट
जाएँ, उन का मुँह काला हो जाए।

15जो मेरी मुसीबत देख कर क़ह्क़हा लगाते
हैं वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी
ख़ुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह
हमेशा कहें, "रब अज़ीम है!"
17मैं नाचार और ज़रूरतमन्द हूँ, लेकिन रब
मेरा ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और
मेरा नजातदहिन्दा है। ऐ मेरे ख़ुदा, देर न कर!

मरीज़ की दुआ

41 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल
रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा
देगा।
2रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की
ज़िन्दगी को महफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे
बरकत दे कर उसे उस के दुश्मनों के लालच
के हवाले नहीं करेगा।
3बीमारी के वक़्त रब उस को बिस्तर पर
सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल
करेगा।

4मैं बोला, "ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे
शिफ़ा दे, क्यूँकि मैं ने तेरा ही गुनाह किया है।"
5मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके
कहते हैं, "वह कब मरेगा? उस का नाम-ओ-
निशान कब मिटेगा?"
6जब कभी कोई मुझ से मिलने आए तो उस
का दिल झूट बोलता है। पस-ए-पर्दा वह ऐसी
नुक़सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद
में बाहर जा कर गलियों में फैला सके।
7मुझ से नफ़रत करने वाले सब आपस में
मेरे ख़िलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे ख़िलाफ़
बुरे मन्सूबे बांध कर कहते हैं,
8"उसे मोहलक मर्ज़ लग गया है। वह कभी
अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।"

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : किताब के तूमार में।

9मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ
है। जिस पर मैं एतिमाद करता था और जो
मेरी रोटी खाता था, उस ने मुझ पर लात उठाई
है।

10लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर!
मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उन के
सुलूक का बदला दे सकूँ।
11इस से मैं जानता हूँ कि तू मुझ से ख़ुश
है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़त्ह के नारे नहीं
लगाता।
12तू ने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस
क़ाइम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर
खड़ा किया है।

13रब की हम्द हो जो इस्राईल का ख़ुदा
है। अज़ल से अबद तक उस की तम्जीद हो।
आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमन्द

42 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के
ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी
जान तेरे लिए तड़पती है।
2मेरी जान ख़ुदा, हाँ ज़िन्दा ख़ुदा की प्यासी
है। मैं कब जा कर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?

3दिन रात मेरे आँसू मेरी ग़िज़ा रहे हैं। क्यूँकि
पूरा दिन मुझ से कहा जाता है, "तेरा ख़ुदा
कहाँ है?"
4पहले हालात याद करके मैं अपने सामने
अपने दिल की आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता हूँ।[a]
कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस
निकलता था, जब मैं हुजूम के बीच में ख़ुशी
और शुक्रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह
की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था।
कितना शोर मच जाता था जब हम जश्न मनाते
हुए घूमते फिरते थे।

5ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी
से क्यूँ तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में
रह, क्यूँकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा
जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे
नजात देता है।

6मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है।
इस लिए मैं तुझे यर्दन के मुल्क, हर्मून के
पहाड़ी सिलसिले और कोह-ए-मिसआर से
याद करता हूँ।
7जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलन्द
हुई तो एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है।
तेरी तमाम मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र
गई हैं।
8दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा,
और रात के वक़्त उस का गीत मेरे साथ होगा,
मैं अपनी हयात के ख़ुदा से दुआ करूँगा।
9मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, "तू
मुझे क्यूँ भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के
ज़ुल्म के बाइस क्यूँ मातमी लिबास पहने
फिरूँ?"
10मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ
टूट रही हैं, क्यूँकि पूरा दिन वह कहते हैं, "तेरा
ख़ुदा कहाँ है?"

11ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी
से क्यूँ तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में
रह, क्यूँकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा
जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे
नजात देता है।

43 ऐ अल्लाह, मेरा इन्साफ़ कर! मेरे
लिए ग़ैरईमानदार क़ौम से लड़,
मुझे धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

2क्यूँकि तू मेरी पनाह का ख़ुदा है। तू ने मुझे
क्यूँ रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के
बाइस क्यूँ मातमी लिबास पहने फिरूँ?
3अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि
वह मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस
पहाड़ और तेरी सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।
4तब मैं अल्लाह की क़ुर्बानगाह के पास
आऊँगा, उस ख़ुदा के पास जो मेरी ख़ुशी और
फ़र्हत है। ऐ अल्लाह मेरे ख़ुदा, वहाँ मैं सरोद
बजा कर तेरी सताइश करूँगा।

5ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी
से क्यूँ तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में
रह, क्यूँकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा
जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे
नजात देता है।

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

44 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जो कुछ तू ने हमारे बापदादा
के अय्याम में यानी क़दीम ज़माने में किया वह
हम ने अपने कानों से उन से सुना है।
2तू ने ख़ुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को
निकाल कर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे
की तरह लगा दिया। तू ने ख़ुद दीगर उम्मतों
को शिकस्त दे कर हमारे बापदादा को मुल्क
में फलने फूलने दिया।
3उन्हों ने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क
पर क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाज़ू से फ़त्ह
नहीं पाई बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाज़ू और
तेरे चेहरे के नूर ने यह सब कुछ किया। क्यूँकि
वह तुझे पसन्द थे।
4तू मेरा बादशाह, मेरा ख़ुदा है। तेरे ही हुक्म
पर याक़ूब को मदद हासिल होती है।
5तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन
पर पटख़ देते, तेरा नाम ले कर अपने
मुख़ालिफ़ों को कुचल देते हैं।
6क्यूँकि मैं अपनी कमान पर एतिमाद नहीं
करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
7बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही
उन्हें शर्मिन्दा होने देता है जो हम से नफ़रत
करते हैं।
8पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते
हैं, और हम हमेशा तक तेरे नाम की तम्जीद
करेंगे। (सिलाह)

9लेकिन अब तू ने हमें रद्द कर दिया, हमें
शर्मिन्दा होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने
के लिए निकलती हैं तो तू उन का साथ नहीं
देता।
10तू ने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने
दिया, और जो हम से नफ़रत करते हैं उन्हों
ने हमें लूट लिया है।
11तू ने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब
के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख़्तलिफ़ क़ौमों
में मुन्तशिर कर दिया है।
12तू ने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़ सी रक़म
के लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा
हासिल न हुआ।
13यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी
हमें रुसवा करते, गिर्द-ओ-नवाह के लोग हमें
लान-तान करते हैं।
14हम अक़्वाम में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन
गए हैं। लोग हमें देख कर तौबा तौबा कहते
हैं।
15दिन भर मेरी रुस्वाई मेरी आँखों के सामने
रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,
16क्यूँकि मुझे उन की गालियाँ और कुफ़्र
सुनना पड़ता है, दुश्मन और इन्तिक़ाम लेने
पर तुले हुए को बर्दाश्त करना पड़ता है।

17यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि
न हम तुझे भूल गए और न तेरे अह्द से बेवफ़ा
हुए हैं।
18न हमारा दिल बाग़ी हो गया, न हमारे
क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।

19ताहम तू ने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के
दरमियान छोड़ दिया, तू ने हमें गहरी तारीकी
में डूबने दिया है।
20अगर हम अपने ख़ुदा का नाम भूल कर
अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते
21तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न
हो जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से
वाक़िफ़ होता है।
22लेकिन तेरी ख़ातिर हमें दिन भर मौत का
सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होने
वाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।

23ऐ रब, जाग उठ! तू क्यूँ सोया हुआ है?
हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी
मदद करने के लिए खड़ा हो जा।
24तू अपना चेहरा हम से पोशीदा क्यूँ रखता
है, हमारी मुसीबत और हम पर होने वाले
ज़ुल्म को नज़रअन्दाज़ क्यूँ करता है?
25हमारी जान ख़ाक में दब गई, हमारा बदन
मिट्टी से चिमट गया है।
26उठ कर हमारी मदद कर! अपनी
शफ़्क़त की ख़ातिर फ़िद्या दे कर हमें छुड़ा!

बादशाह की शादी

45 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत
और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के
फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है,
मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान
माहिर कातिब के क़लम की मानिन्द हो!

2तू आदमियों में सब से ख़ूबसूरत है! तेरे
होंट शफ़्क़त से मसह किए हुए हैं, इस लिए
अल्लाह ने तुझे अबदी बरकत दी है।
3ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो,
अपनी शान-ओ-शौकत से मुलब्बस हो जा!
4ग़ल्बा और कामयाबी हासिल कर।
सच्चाई, इनकिसारी और रास्ती की ख़ातिर
लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ
तुझे हैरतअंगेज़ काम दिखाए।
5तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों
को छेद डालें। क़ौमें तेरे पाँओ में गिर जाएँ।
6ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद
तक क़ाइम-ओ-दाइम रहेगा, और इन्साफ़ का
शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।
7तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से
नफ़रत की, इस लिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे
ख़ुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों
से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।
8मुर, ऊद और अमलतास की बेशक़ीमत
ख़ुश्बू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है।
हाथीदाँत के महलों में तारदार मौसीक़ी तेरा
दिल बहलाती है।
9बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी
फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए
तेरे दहने हाथ खड़ी है।

10ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान
लगा। अपनी क़ौम और अपने बाप का घर
भूल जा।
11बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमन्द है,
क्यूँकि वह तेरा आक़ा है। चुनाँचे झुक कर उस
का एहतिराम कर।
12सूर की बेटी तोह्फ़ा ले कर आएगी, क़ौम
के अमीर तेरी नज़र-ए-करम हासिल करने की
कोशिश करेंगे।
13बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों
से आरास्ता है। उस का लिबास सोने के धागों
से बुना हुआ है।
14उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह
के पास लाया जाता है। जो कुंवारी सहेलियाँ
उस के पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया
जाता है।
15लोग शादमान हो कर और ख़ुशी मनाते
हुए उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल
में दाख़िल होती हैं।

16ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की
जगह खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बना
कर पूरी दुनिया में ज़िम्मादारियाँ देगा।
17पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तम्जीद
करूँगा, इस लिए क़ौमें हमेशा तक तेरी
सताइश करेंगी।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है

46 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ :
कुंवारियाँ।
अल्लाह हमारी पनाहगाह और क़ुव्वत है।
मुसीबत के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा
साबित हुआ है।
2इस लिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन
लरज़ उठे और पहाड़ झूम कर समुन्दर की
गहराइयों में गिर जाएँ,
3गो समुन्दर शोर मचा कर ठाठें मारे और
पहाड़ उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

4दरया की शाख़ें अल्लाह के शहर को ख़ुश
करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला
की मुक़द्दस सुकूनतगाह है।
5अल्लाह उस के बीच में है, इस लिए शहर
नहीं डगमगाएगा। सुब्ह-सवेरे ही अल्लाह उस
की मदद करेगा।
6क़ौमें शोर मचाने, सल्तनतें लड़खड़ाने
लगीं। अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़
उठी।

7रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे साथ है, याक़ूब
का ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

8आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र
डालो! उसी ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही
नाज़िल की है।
9वही दुनिया की इन्तिहा तक जंगें रोक
देता, वही कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े
टुकड़े करता और ढाल को जला देता है।

10वह फ़रमाता है, "अपनी हरकतों से बाज़
आओ! जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़्वाम
में सरबुलन्द और दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।"

11रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे साथ है। याक़ूब
का ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

47 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! ख़ुशी के
नारे लगा कर अल्लाह की मद्हसराई करो!
2क्यूँकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी
दुनिया का अज़ीम बादशाह है।
3उस ने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया,
उम्मतों को हमारे पाँओ तले रख दिया।
4उस ने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन
लिया, उसी को जो उस के प्यारे बन्दे याक़ूब
के लिए फ़ख़र का बाइस था। (सिलाह)

5अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ
ख़ुशी का नारा बुलन्द हुआ, रब बुलन्दी पर
चढ़ गया तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।
6मद्हसराई करो, अल्लाह की मद्हसराई
करो! मद्हसराई करो, हमारे बादशाह की
मद्हसराई करो!
7क्यूँकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह
है। हिक्मत का गीत गा कर उस की सताइश
करो।
8अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है,
अल्लाह अपने मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।
9दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा
की क़ौम के साथ जमा हो गए हैं, क्यूँकि
वह दुनिया के हुक्मरानों का मालिक है। वह
निहायत ही सरबुलन्द है।

अल्लाह का शहर यरूशलम

48 गीत। क़ोरह की औलाद का ज़बूर।
रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के

लाइक़ है। उस का मुक़द्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के शहर में है।

2कोह-ए-सिय्यून की बुलन्दी ख़ूबसूरत है, पूरी दुनिया उस से ख़ुश होती है। कोह-ए-सिय्यून दूरतरीन शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।

3अल्लाह उस के महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।

4क्यूँकि देखो, बादशाह जमा हो कर यरूशलम से लड़ने आए।

5लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दह्शत खा कर भाग गए।

6वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाने लगे।

7जिस तरह मशरिक़ी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तू ने उन्हें तबाह कर दिया।

8जो कुछ हम ने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक़ आया है, अल्लाह उसे अबद तक क़ाइम रखेगा। (सिलाह)

9ऐ अल्लाह, हम ने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ किया है।

10ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लाइक़ है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इन्तिहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा रहता है।

11कोह-ए-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की बेटियाँ[a] तेरे मुन्सिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस ख़ुशी मनाएँ।

12सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फिरो, उस की फ़सील के साथ साथ चल कर उस के बुर्ज गिन लो।

13उस की क़िलाबन्दी पर ख़ूब ध्यान दो, उस के महलों का मुआइना करो ताकि आने वाली नस्ल को सब कुछ सुना सको।

14यक़ीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

अमीरों की शान सराब ही है

49 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिन्दो, ध्यान दो!

2छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह दें।

3मेरा मुँह हिक्मत बयान करेगा और मेरे दिल का ग़ौर-ओ-ख़ौज़ समझ अता करेगा।

4मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजा कर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

5मैं ख़ौफ़ क्यूँ खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?

6ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतिमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।

7कोई भी फ़िद्या दे कर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का तावान नहीं दे सकता।

8क्यूँकि इतनी बड़ी रक़म देना उस के बस की बात नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।

9चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रह सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में उतरेगा।

10क्यूँकि हर एक देख सकता है कि दानिशमन्द भी वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी मिल कर हलाक हो जाते हैं। सब

[a] यहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उस के शहर भी हो सकते हैं।

को अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।

11उन की क़ब्रें अबद तक उन के घर बनी रहेंगी, पुश्त-दर-पुश्त वह उन में बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें हासिल थीं जो उन के नाम पर थीं।

12इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद क़ाइम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

13यह उन सब की तक़्दीर है जो अपने आप पर एतिमाद रखते हैं, और उन सब का अन्जाम जो उन की बातें पसन्द करते हैं। (सिलाह)

14उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्यूँकि सुब्ह के वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब उन की शक्ल-ओ-सूरत घिसे फटे कपड़े की तरह गल सड़ जाएगी, पाताल ही उन की रिहाइशगाह होगा।

15लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा, वह मुझे पकड़ कर पाताल की गिरिफ़्त से छुड़ाएगा। (सिलाह)

16मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उस के घर की शान-ओ-शौकत बढ़ती जाए।

17मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उस की शान-ओ-शौकत उस के साथ पाताल में नहीं उतरेगी।

18बेशक वह जीते जी अपने आप को मुबारक कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की तारीफ़ करेंगे।

19फिर भी वह आख़िरकार अपने बापदादा की नस्ल के पास उतरेगा, उन के पास जो दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।

20जो इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

सहीह इबादत

50 आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा बोल उठा है, उस ने तुलू-ए-सुब्ह से ले कर ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब तक पूरी दुनिया को बुलाया है।

2अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है।

3हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं रहेगा। उस के आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उस के इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।

4वह आसमान-ओ-ज़मीन को आवाज़ देता है, "अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।

5मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्हों ने क़ुर्बानियाँ पेश करके मेरे साथ अह्द बांधा है।"

6आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्यूँकि अल्लाह ख़ुद इन्साफ़ करने वाला है। (सिलाह)

7"ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इस्राईल, मैं तेरे ख़िलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा ख़ुदा हूँ।

8मैं तुझे तेरी ज़बह की क़ुर्बानियों के बाइस मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ तो मुसलसल मेरे सामने हैं।

9न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।

10क्यूँकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों पहाड़ियों पर बसने वाले जानवर मेरे ही हैं।

11मैं पहाड़ों के हर परिन्दे को जानता हूँ, और जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।

12अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्यूँकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।

13क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त खाना या बकरों का ख़ून पीना चाहता हूँ?

14अल्लाह को शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश
कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तू ने अल्लाह
तआला के हुज़ूर मानी है।
15मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे
नजात दूँगा और तू मेरी तम्जीद करेगा।”

16लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है,
“मेरे अह्काम सुनाने और मेरे अह्द का ज़िक्र
करने का तेरा क्या हक़ है?
17तू तो तर्बियत से नफ़रत करता और मेरे
फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फैंक देता
है।
18किसी चोर को देखते ही तू उस का साथ
देता है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।
19तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए
इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने
के लिए तय्यार रखता है।
20तू दूसरों के पास बैठ कर अपने भाई के
ख़िलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर
तोहमत लगाता है।

21यह कुछ तू ने किया है, और मैं ख़ामोश
रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा
हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने
ही मुआमला तरतीब से सुनाऊँगा।
22तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात
समझ लो, वर्ना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस
वक़्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23जो शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश करे वह
मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से
ऐसी राह पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात
दिखाऊँगा।”

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर! (तौबा का चौथा ज़बूर)

51 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़
है जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद
नातन नबी उस के पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़्क़त के मुताबिक़
मुझ पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के
मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे।
2मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए,
जो गुनाह मुझ से सरज़द हुआ है उस से मुझे
पाक कर।
3क्यूँकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ,
और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।
4मैं ने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह
किया, मैं ने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में
बुरा है। क्यूँकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त
रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा
साबित हो जाए।

5यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा
हुआ। जूँ ही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया
तो गुनाहगार था।
6यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसन्द
करता और पोशीदगी में मुझे हिक्मत की
तालीम देता है।
7ज़ूफ़ा ले कर मुझ से गुनाह दूर कर ताकि
पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से
ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।
8मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे
ताकि जिन हड्डियों को तू ने कुचल दिया वह
शादियाना बजाएँ।
9अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा
तमाम क़ुसूर मिटा दे।
10ऐ अल्लाह, मेरे अन्दर पाक दिल पैदा
कर, मुझ में नए सिरे से साबितक़दम रूह
क़ाइम कर।
11मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर, न
अपने मुक़द्दस रूह को मुझ से दूर कर।
12मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला,
मुझे मुस्तइद रूह अता करके सँभाले रख।

13तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो
तुझ से बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे
पास वापस आएँगे।

14ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल
का क़ुसूर मुझ से दूर करके मुझे बचा। तब मेरी
ज़बान तेरी रास्ती की हम्द-ओ-सना करेगी।
15ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह
तेरी सताइश करे।
16क्यूँकि तू ज़बह की क़ुर्बानी नहीं चाहता,
वर्ना मैं वह पेश करता। भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ तुझे पसन्द नहीं।
17अल्लाह को मन्ज़ूर क़ुर्बानी शिकस्ता रूह
है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए
दिल को हक़ीर नहीं जानेगा।

18अपनी मेहरबानी का इज़हार करके
सिय्यून को ख़ुशहाली बख़्श, यरूशलम की
फ़सील तामीर कर।
19तब तुझे हमारी सहीह क़ुर्बानियाँ, हमारी
भस्म होने वाली और मुकम्मल क़ुर्बानियाँ
पसन्द आएँगी। तब तेरी क़ुर्बानगाह पर बैल
चढ़ाए जाएंगे।

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

52 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिक्मत का यह गीत उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के
पास गया और उसे बताया, "दाऊद अख़ीमलिक इमाम
के घर में गया है।"

ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यूँ फ़ख़र करता
है? अल्लाह की शफ़क़त दिन भर क़ाइम रहती
है।
2ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की
तरह चलती हुई तबाही के मन्सूबे बांधती है।
3तुझे भलाई की निस्बत बुराई ज़्यादा प्यारी
है, सच बोलने की निस्बत झूट ज़्यादा पसन्द
है। (सिलाह)

4ऐ फ़रेबदिह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात
से प्यार करती है।
5लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक
में मिलाएगा। वह तुझे मार मार कर तेरे ख़ैमे से
निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़ कर ज़िन्दों
के मुल्क से ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6रास्तबाज़ यह देख कर ख़ौफ़ खाएँगे। वह
उस पर हंस कर कहेंगे,
7"लो, यह वह आदमी है जिस ने अल्लाह
में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर
एतिमाद किया, जो अपने तबाहकुन मन्सूबों
से ताक़तवर हो गया था।"

8लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के
फलते फूलते दरख़्त की मानिन्द हूँ। मैं हमेशा
के लिए अल्लाह की शफ़क़त पर भरोसा
रखूँगा।
9मैं अबद तक उस के लिए तेरी सताइश
करूँगा जो तू ने किया है। मैं तेरे ईमानदारों
के सामने ही तेरे नाम के इन्तिज़ार में रहूँगा,
क्यूँकि वह भला है।

बेदीन की हमाक़त

53 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिक्मत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही
नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें
क़ाबिल-ए-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा
काम करे।
2अल्लाह ने आसमान से इन्सान पर नज़र
डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है?
क्या कोई अल्लाह का तालिब है?
3अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सब के सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई
करता हो, एक भी नहीं।

4क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की
तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह
तो अल्लाह को पुकारते ही नहीं।
5तब उन पर सख़्त दह्शत वहाँ छा गई जहाँ
पहले दह्शत का सबब नहीं था। जिन्हों ने तुझे
घेर रखा था अल्लाह ने उन की हड्डियाँ बिखेर
दीं। तू ने उन को रुसवा किया, क्यूँकि अल्लाह
ने उन्हें रद्द किया है।

6काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की
नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम
को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे
लगाएगा, इस्राईल बाग़ बाग़ होगा।

ख़तरे में फंसे हुए शख़्स की इल्तिजा

54 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का यह गीत
तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस
वक़्त से मुताल्लिक़ है जब ज़ीफ़ के बाशिन्दों ने साऊल
के पास जा कर कहा, "दाऊद हमारे पास छुपा हुआ
है।"
ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे
छुटकारा दे! अपनी क़ुदरत के ज़रीए से मेरा
इन्साफ़ कर!
2ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के
अल्फ़ाज़ पर ध्यान दे।
3क्यूँकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए
हैं, ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते
मेरी जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)

4लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी
ज़िन्दगी क़ाइम रखता है।
5वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस
लाएगा। चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखा कर
उन्हें तबाह कर दे!
6मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुर्बानी पेश करूँगा।
ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्यूँकि
वह भला है।
7क्यूँकि उस ने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई
दी, और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त
देख कर ख़ुश हूँगा।

झूटे भाइयों पर शिकायत

55 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। हिक्मत का यह गीत तारदार साज़ों
के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने
आप को मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
2मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से
इधर उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
3क्यूँकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे
तंग कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर
तुले हुए हैं, ग़ुस्से में मेरी मुख़ालफ़त कर रहे
हैं।
4मेरा दिल मेरे अन्दर तड़प रहा है, मौत की
दह्शत मुझ पर छा गई है।
5ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई,
हैबत मुझ पर ग़ालिब आ गई है।

6मैं बोला, "काश मेरे कबूतर के से पर हों
ताकि उड़ कर आराम-ओ-सुकून पा सकूँ!
7तब मैं दूर तक भाग कर रेगिस्तान में बसेरा
करता,
8मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़
आँधी और तूफ़ान से महफ़ूज़ रहता।" (सिलाह)

9ऐ रब, उन में अब्तरी पैदा कर, उन की
ज़बान में इख़तिलाफ़ डाल! क्यूँकि मुझे शहर
में हर तरफ़ ज़ुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।
10दिन रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं,
और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता
है।
11उस के बीच में तबाही की हुकूमत है, और
ज़ुल्म और फ़रेब उस के चौक को नहीं छोड़ते।

12अगर कोई दुश्मन मेरी रुस्वाई करता तो
क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होता। अगर मुझ से नफ़रत

करने वाला मुझे दबा कर अपने आप को
सरफ़राज़ करता तो मैं उस से छुप जाता।
13लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ
जैसा है, जो मेरा क़रीबी दोस्त और हमराज़
है।
14मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी
जब हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की
तरफ़ चलते गए!

15मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में
ले ले। ज़िन्दा ही वह पाताल में उतर जाएँ,
क्यूँकि बुराई ने उन में अपना घर बना लिया
है।
16लेकिन मैं पुकार कर अल्लाह से मदद
माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।
17मैं हर वक़्त आह-ओ-ज़ारी करता और
कराहता रहता हूँ, ख़्वाह सुब्ह हो, ख़्वाह
दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।
18वह फ़िद्या दे कर मेरी जान को उन से
छुड़ाएगा जो मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उन
की तादाद बड़ी है वह मुझे आराम-ओ-सुकून
देगा।
19अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी
सुन कर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह)
क्यूँकि न वह तब्दील हो जाएंगे, न कभी
अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

20उस शख़्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों
के ख़िलाफ़ उठाया, उस ने अपना अह्द तोड़
लिया है।
21उस की ज़बान पर मक्खन की सी
चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उस
के तेल से ज़्यादा नर्म अल्फ़ाज़ हक़ीक़त में
खैंची हुई तलवारें हैं।

22अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे
सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने
नहीं देगा।

23लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े
में उतरने देगा। ख़ूँख़ार और धोकेबाज़ आधी
उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन
मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

मुसीबत में भरोसा

56 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : दूरदराज़ जज़ीरों का
कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है
जब फ़िलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्यूँकि
लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़ने वाला दिन भर
मुझे सता रहा है।
2दिन भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्यूँकि
वह बहुत हैं और ग़रूर से मुझ से लड़ रहे हैं।
3लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में
ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है,
अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं,
क्यूँकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा
सकता है?

5दिन भर वह मेरे अल्फ़ाज़ को तोड़-
मरोड़ कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम
मन्सूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।
6वह हम्लाआवर हो कर ताक में बैठ जाते
और मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्यूँकि
वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।
7जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें
बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह,
अक़्वाम को ग़ुस्से में ख़ाक में मिला दे।
8जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उन का तू
ने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू
अपने मश्कीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से
तेरी किताब में क़लमबन्द नहीं हैं? ज़रूर!
9फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन
मुझ से बाज़ आएँगे। यह मैं ने जान लिया है
कि अल्लाह मेरे साथ है!

10अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब
के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।
11अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा
नहीं, क्यूँकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़्सान
पहुँचा सकता है?

12ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैं ने मन्नतें मानी
हैं, और अब मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ
पेश करूँगा।
13क्यूँकि तू ने मेरी जान को मौत से बचाया
और मेरे पाँओ को ठोकर खाने से महफ़ूज़
रखा ताकि ज़िन्दगी की रौशनी में अल्लाह के
हुज़ूर चलूँ।

आज़माइश में अल्लाह पर एतिमाद

57 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा
गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह साऊल से भाग
कर ग़ार में छुप गया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर
मेहरबानी कर! क्यूँकि मेरी जान तुझ में पनाह
लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न
जाए मैं तेरे परों के साय में पनाह लूँगा।
2मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ,
अल्लाह से जो मेरा मुआमला ठीक करेगा।
3वह आसमान से मदद भेज कर मुझे
छुटकारा देगा और उन की रुस्वाई करेगा जो
मुझे तंग कर रहे हैं। (सिलाह) अल्लाह अपना
करम और वफ़ादारी भेजेगा।
4मैं इन्सान को हड़प करने वाले शेरबबरों के
बीच में लेटा हुआ हूँ, उन के दरमियान जिन
के दाँत नेज़े और तीर हैं और जिन की ज़बान
तेज़ तलवार है।

5ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलन्द हो
जा! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6उन्हों ने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा
दिया, और मेरी जान ख़ाक में दब गई है। उन्हों
ने मेरे सामने गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह ख़ुद
उस में गिर गए हैं। (सिलाह)

7ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल
साबितक़दम है। मैं साज़ बजा कर तेरी
मद्हसराई करूँगा।
8ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और
सरोद, जाग उठो! आओ, मैं तुलू-ए-सुब्ह को
जगाऊँ।
9ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में
तेरी मद्हसराई करूँगा।
10क्यूँकि तेरी अज़ीम शफ़्क़त आसमान
जितनी बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक
पहुँचती है।
11ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो!
तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

इन्तिक़ाम की दुआ

58 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुन्सिफ़ाना
फ़ैसला करते, क्या दियानतदारी से
आदमज़ादों की अदालत करते हो?
2हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और
मुल्क में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता
बनाते हो।
3बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो
गए हैं, झूट बोलने वाले माँ के पेट से ही भटक
गए हैं।
4वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस
बहरे नाग की तरह जो अपने कानों को बन्द
कर रखता है
5ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न
माहिर सपेरे के मंत्र।

6ऐ अल्लाह, उन के मुँह के दाँत तोड़ डाल!
ऐ रब, जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश
कर!

7वह उस पानी की तरह ज़ाए हो जाएँ जो
बह कर ग़ाइब हो जाता है। उन के चलाए हुए
तीर बेअसर रहें।
8वह धूप में घोंगे की मानिन्द हों जो चलता
चलता पिघल जाता है। उन का अन्जाम उस
बच्चे का सा हो जो माँ के पेट में ज़ाए हो कर
कभी सूरज नहीं देखेगा।
9इस से पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार
टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन
सब को आँधी में उड़ा कर ले जाएगा।

10आख़िरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह
देख कर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने
पाँओ को बेदीनों के ख़ून में धो लेगा।
11तब लोग कहेंगे, "वाक़ई रास्तबाज़ को
अज्र मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया
में लोगों की अदालत करता है!"

दुश्मन के दरमियान दुआ

59 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा
गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब साऊल ने अपने
आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए
भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल करें।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उन
से मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे ख़िलाफ़ उठे हैं।
2मुझे बदकारों से छुटकारा दे, ख़ूँख़्वारों से
रिहा कर।
3देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब,
ज़बरदस्त आदमी मुझ पर हम्लाआवर हैं,
हालाँकि मुझ से न ख़ता हुई न गुनाह।
4मैं बेक़ुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़ कर मुझ
से लड़ने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग
उठ, मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है
उस पर नज़र डाल।
5ऐ रब, लश्करों और इस्राईल के ख़ुदा,
दीगर तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग
उठ! उन सब पर करम न फ़रमा जो शरीर
और ग़द्दार हैं। (सिलाह)

6हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों
की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते
फिरते हैं।
7देख, उन के मुँह से राल टपक रही है, उन
के होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्यूँकि वह
समझते हैं, "कौन सुनेगा?"

8लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम
क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।
9ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी
रहेंगी, क्यूँकि अल्लाह मेरा क़िला है।
10मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझ
से मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं
अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा।

11ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न
कर, वर्ना मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी।
अपनी क़ुदरत का इज़हार यूँ कर कि वह इधर
उधर लड़खड़ा कर गिर जाएँ।
12जो कुछ भी उन के मुँह से निकलता है
वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते
हैं। चुनाँचे उन्हें उन के तकब्बुर के जाल में
फंसने दे।
13ग़ुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यूँ तबाह
कर कि उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे।
तब लोग दुनिया की इन्तिहा तक जान लेंगे कि
अल्लाह याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता
है। (सिलाह)

14हर शाम को वह वापस आ जाते और
कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों
में घूमते फिरते हैं।
15वह इधर उधर गश्त लगा कर खाने की
चीज़ें ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो ग़ुर्राते रहते
हैं।

16लेकिन मैं तेरी क़ुदरत की मद्हसराई
करूँगा, सुब्ह को ख़ुशी के नारे लगा कर तेरी
शफ़क़त की सताइश करूँगा। क्यूँकि तू मेरा

क़िला और मुसीबत के वक़्त मेरी पनाहगाह है।

17ऐ मेरी क़ुव्वत, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा,
क्यूँकि अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान ख़ुदा है।

मर्दूद क़ौम की दुआ

60 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अह्द का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तू ने हमें रद्द किया, हमारी
क़िलाबन्दी में रख़ना डाल दिया है। लेकिन
अब अपने ग़ज़ब से बाज़ आ कर हमें बहाल
कर।

2तू ने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उस में
दराड़ें पड़ गईं। अब उस के शिगाफ़ों को शिफ़ा
दे, क्यूँकि वह अभी तक थरथरा रही है।

3तू ने अपनी क़ौम को तल्ख़ तजरिबों से
दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी
कि हम डगमगाने लगे हैं।

4लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उन के लिए
तू ने झंडा गाड़ दिया जिस के इर्दगिर्द वह जमा
हो कर तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)

5अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन
ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6अल्लाह ने अपने मक़्दिस में फ़रमाया
है, "मैं फ़त्ह मनाते हुए सिकम को तक़्सीम
करूँगा और वादी-ए-सुक्कात को नाप कर
बाँट दूँगा।

7जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है।
इफ़्राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही
असा है।

8मोआब मेरा ग़ुसल का बर्तन है, और
अदोम पर मैं अपना जूता फैंक दूँगा। ऐ
फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे देख कर ज़ोरदार नारे
लगा!"

9कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा?
कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक
पहुँचाएगा?

10ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो
तू ने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी
फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के
लिए निकलती हैं।

11मुसीबत में हमें सहारा दे, क्यूँकि इस
वक़्त इन्सानी मदद बेकार है।

12अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम
करेंगे, क्यूँकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल
देगा।

दूर से दरख़्वास्त

61 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी आह-ओ-ज़ारी सुन, मेरी
दुआ पर तवज्जुह दे।

2मैं तुझे दुनिया की इन्तिहा से पुकार रहा
हूँ, क्यूँकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी
राहनुमाई करके मुझे उस चटान पर पहुँचा दे
जो मुझ से बुलन्द है।

3क्यूँकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक
मज़बूत बुर्ज जिस में मैं दुश्मन से महफ़ूज़ हूँ।

4मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे
परों तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने मेरी मन्नतों पर
ध्यान दिया, तू ने मुझे वह मीरास बख़्शी जो
उन सब को मिलती है जो तेरा ख़ौफ़ मानते
हैं।

6बादशाह को उम्र की दराज़ी बख़्श दे। वह
पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।

7वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्त-
नशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की
हिफ़ाज़त करें।
8तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्हसराई
करूँगा, रोज़-ब-रोज़ अपनी मन्नतें पूरी
करूँगा।

ख़ामोशी से अल्लाह का इन्तिज़ार कर

62 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यदूतून के लिए।
मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के
इन्तिज़ार में है। उसी से मुझे मदद मिलती है।
2वही मेरी चटान, मेरी नजात और
मेरा क़िला है, इस लिए मैं ज़्यादा नहीं
डगमगाऊँगा।

3तुम कब तक उस पर हम्ला करोगे जो
पहले ही झुकी हुई दीवार की मानिन्द है? तुम
सब कब तक उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे
जो पहले ही गिरने वाली चारदीवारी जैसा है?
4उन के मन्सूबों का एक ही मक़्सद है, कि
उसे उस के ऊँचे उह्दे से उतारें। उन्हें झूट से
मज़ा आता है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन
अन्दर ही अन्दर लानत करते हैं। (सिलाह)

5लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से
अल्लाह ही के इन्तिज़ार में रह। क्यूँकि उसी
से मुझे उम्मीद है।
6सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी
नजात और मेरा क़िला है, इस लिए मैं नहीं
डगमगाऊँगा।

7मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मब्नी
है, वही मेरी मह्फ़ूज़ चटान है। अल्लाह में मैं
पनाह लेता हूँ।
8ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख!
उस के हुज़ूर अपने दिल का रंज-ओ-अलम
पानी की तरह उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी
पनाहगाह है। (सिलाह)

9इन्सान दम भर का ही है, और बड़े लोग
फ़रेब ही हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए
तो मिल कर उन का वज़न एक फूँक से भी
कम है।
10ज़ुल्म पर एतिमाद न करो, चोरी करने पर
फ़ुज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़
जाए तो तुम्हारा दिल उस से लिपट न जाए।
11अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो
बार मैं ने सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।
12ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्यूँकि तू
हर एक को उस के आमाल का बदला देता है।

अल्लाह के लिए आर्ज़ू

63 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब वह यहूदाह के
रेगिस्तान में था।
ऐ अल्लाह, तू मेरा ख़ुदा है जिसे मैं ढूँडता
हूँ। मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म
तेरे लिए तरसता है। मैं उस ख़ुश्क और निढाल
मुल्क की मानिन्द हूँ जिस में पानी नहीं है।
2चुनाँचे मैं मक़्दिस में तुझे देखने के
इन्तिज़ार में रहा ताकि तेरी क़ुदरत और
जलाल का मुशाहदा करूँ।
3क्यूँकि तेरी शफ़क़त ज़िन्दगी से कहीं
बेहतर है, मेरे होंट तेरी मद्हसराई करेंगे।
4चुनाँचे मैं जीते जी तेरी सताइश करूँगा,
तेरा नाम ले कर अपने हाथ उठाऊँगा।
5मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी,
मेरा मुँह ख़ुशी के नारे लगा कर तेरी हम्द-ओ-
सना करेगा।
6बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के
दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
7क्यूँकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं
तेरे परों के साय में ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
8मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा
दहना हाथ मुझे सँभालता है।

9लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं
वह तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों
में उतर जाएंगे।
10उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा,
और वह गीदड़ों की ख़ुराक बन जाएंगे।

11लेकिन बादशाह अल्लाह की ख़ुशी
मनाएगा। जो भी अल्लाह की क़सम खाता
है वह फ़ख़र करेगा, क्यूँकि झूट बोलने वालों
के मुँह बन्द हो जाएंगे।

शरीअत के पोशीदा हम्लों से हिफ़ाज़त की दुआ

64 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आह-ओ-
ज़ारी पेश करता हूँ। मेरी ज़िन्दगी दुश्मन की
दह्शत से महफ़ूज़ रख।
2मुझे बदमआशों की साज़िशों से छुपाए
रख, उन की हलचल से जो ग़लत काम करते
हैं।
3वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह
तेज़ करते और अपने ज़हरीले अल्फ़ाज़ को
तीरों की तरह तय्यार रखते हैं
4ताकि ताक में बैठ कर उन्हें बेक़ुसूर पर
चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस
पर बरसा देते हैं।
5वह बुरा काम करने में एक दूसरे की
हौसलाअफ़ज़ाई करते, एक दूसरे से मश्वरा
लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपा
कर लगाएँ? वह कहते हैं, "यह किसी को
भी नज़र नहीं आएँगे।"
6वह बड़ी बारीकी से बुरे मन्सूबों की
तय्यारियाँ करते, फिर कहते हैं, "चलो, बात
बन गई है, मन्सूबा सोच-बिचार के बाद तय्यार
हुआ है।" यक़ीनन इन्सान के बातिन और दिल
की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।
7लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा,
और अचानक ही वह ज़ख़्मी हो जाएंगे।
8वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खा कर गिर
जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह "तौबा तौबा"
कहेगा।
9तब तमाम लोग ख़ौफ़ खा कर कहेंगे,
"अल्लाह ही ने यह किया!" उन्हें समझ
आएगी कि यह उसी का काम है।

10रास्तबाज़ अल्लाह की ख़ुशी मना कर
उस में पनाह लेगा, और जो दिल से
दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

65 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए गीत।
ऐ अल्लाह, तू ही इस लाइक़ है कि इन्सान
कोह-ए-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इन्तिज़ार
में रहे, तेरी तम्जीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी
मन्नतें पूरी करे।
2तू दुआओं को सुनता है, इस लिए तमाम
इन्सान तेरे हुज़ूर आते हैं।
3गुनाह मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं, तू ही
हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।
4मुबारक है वह जिसे तू चुन कर क़रीब
आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता
है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस
सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों
से अपनी रास्ती क़ाइम करके हमारी सुन!
क्यूँकि तू ज़मीन की तमाम हुदूद और दूरदराज़
समुन्दरों तक सब की उम्मीद है।
6तू अपनी क़ुदरत से पहाड़ों की मज़बूत
बुन्यादें डालता और क़ुव्वत से कमरबस्ता
रहता है।

7तू मुतलातिम समुन्दरों को थमा देता है, तू
उन की गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-
शराबा ख़त्म कर देता है।
8दुनिया की इन्तिहा के बाशिन्दे तेरे
निशानात से ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलू-ए-
सुब्ह और ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब को ख़ुशी मनाने
देता है।

9तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी
की कस्रत और ज़रख़ेज़ी से नवाज़ता है,
चुनाँचे अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती
है। ज़मीन को यूँ तय्यार करके तू इन्सान को
अनाज की अच्छी फ़सल मुहय्या करता है।
10तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके
उस के ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश
की बौछाड़ों से ज़मीन को नर्म करके उस की
फ़सलों को बरकत देता है।
11तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना
देता है, और तेरे नक़्श-ए-क़दम तेल की
फ़रावानी से टपकते हैं।
12बयाबान की चरागाहें तेल[a] की कस्रत से
टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर ख़ुशी से
मुलब्बस हो जाती हैं।
13सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं,
वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब ख़ुशी के
नारे लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं!

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

66 मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। ज़बूर।
गीत।
ऐ सारी ज़मीन, ख़ुशी के नारे लगा कर
अल्लाह की मद्हसराई कर!
2उस के नाम के जलाल की तम्जीद करो,
उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!
3अल्लाह से कहो, "तेरे काम कितने
पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी क़ुदरत के सामने तेरे
दुश्मन दबक कर तेरी ख़ुशामद करने लगते हैं।
4तमाम दुनिया तुझे सिज्दा करे! वह तेरी
तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश
करे।" (सिलाह)

5आओ, अल्लाह के काम देखो!
आदमज़ाद की ख़ातिर उस ने कितने
पुरजलाल मोजिज़े किए हैं!
6उस ने समुन्दर को ख़ुश्क ज़मीन में बदल
दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाओ था
वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ,
हम उस की ख़ुशी मनाएँ।
7अपनी क़ुदरत से वह अबद तक हुकूमत
करता है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती
हैं ताकि सरकश उस के ख़िलाफ़ न उठें।
(सिलाह)

8ऐ उम्मतो, हमारे ख़ुदा की हम्द करो। उस
की सताइश दूर तक सुनाई दे।
9क्यूँकि वह हमारी ज़िन्दगी क़ाइम रखता,
हमारे पाँओ को डगमगाने नहीं देता।

10क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने हमें आज़माया।
जिस तरह चाँदी को पिघला कर साफ़ किया
जाता है उसी तरह तू ने हमें पाक-साफ़ कर
दिया है।
11तू ने हमें जाल में फंसा दिया, हमारी कमर
पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।
12तू ने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से
गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की
ज़द में आ गए। लेकिन फिर तू ने हमें मुसीबत
से निकाल कर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13मैं भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ले कर तेरे
घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी
करूँगा,
14वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त
मानी थीं।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'चर्बी,' जो फ़रावानी का निशान
था।

15भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर मैं
तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ
पेश करूँगा, साथ साथ बैल और बकरे भी
चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

16ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ मानने वालो, आओ
और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के
लिए किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।
17मैं ने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी
ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तय्यार
थी।
18अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता
तो रब मेरी न सुनता।
19लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उस ने
मेरी इल्तिजा पर तवज्जुह दी।
20अल्लाह की हम्द हो, जिस ने न मेरी दुआ
रद्द की, न अपनी शफ़क़त मुझ से बाज़ रखी।

तमाम क़ौमें अल्लाह की तारीफ़ करें

67 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें
बरकत दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर
चमकाए (सिलाह)
2ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम
क़ौमों में तेरी नजात मालूम हो जाए।

3ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम
क़ौमें तेरी सताइश करें।

4उम्मतें शादमान हो कर ख़ुशी के नारे
लगाएँ, क्यूँकि तू इन्साफ़ से क़ौमों की
अदालत करेगा और ज़मीन पर उम्मतों की
क़ियादत करेगा। (सिलाह)

5ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम
क़ौमें तेरी सताइश करें।

6ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह
हमारा ख़ुदा हमें बरकत दे!
7अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की
इन्तिहाएँ सब उस का ख़ौफ़ मानें।

अल्लाह की फ़त्ह

68 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए गीत।
अल्लाह उठे तो उस के दुश्मन तित्तर-बित्तर
हो जाएंगे, उस से नफ़रत करने वाले उस के
सामने से भाग जाएंगे।
2वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह
मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह
बेदीन अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।
3लेकिन रास्तबाज़ ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम होंगे,
वह अल्लाह के हुज़ूर जश्न मना कर फूले न
समाएँगे।

4अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उस के
नाम की मद्हसराई करो! जो रथ पर सवार
बयाबान में से गुज़र रहा है उस के लिए रास्ता
तय्यार करो। रब उस का नाम है, उस के हुज़ूर
ख़ुशी मनाओ!
5अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में
यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।
6अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और
क़ैदियों को क़ैद से निकाल कर ख़ुशहाली
अता करता है। लेकिन जो सरकश हैं वह
झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।

7ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क़ौम के आगे
आगे निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम-ब-
क़दम आगे बढ़ा (सिलाह)
8तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से
बारिश टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो
कोह-ए-सीना और इस्राईल का ख़ुदा है ऐसा
ही हुआ।

9ऐ अल्लाह, तू ने कस्रत की बारिश बरसने
दी। जब कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ
तो तू ने उसे ताज़ादम किया।
10यूँ तेरी क़ौम उस में आबाद हुई।
ऐ अल्लाह, अपनी भलाई से तू ने उसे
ज़रूरतमन्दों के लिए तय्यार किया।

11रब फ़रमान सादिर करता है तो ख़ुश-
ख़बरी सुनाने वाली औरतों का बड़ा लश्कर
निकलता है,
12"फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग
रहे हैं और औरतें लूट का माल तक़्सीम कर
रही हैं।
13तुम क्यूँ अपने ज़ीन के दो बोरों के
दरमियान बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परों
पर चाँदी और उस के शाहपरों पर पीला सोना
चढ़ाया गया है।"
14जब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने वहाँ के
बादशाहों को मुन्तशिर कर दिया तो कोह-
ए-ज़ल्मोन पर बर्फ़ पड़ी।

15कोह-ए-बसन इलाही पहाड़ है, कोह-ए-
बसन की मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
16ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस
पहाड़ को क्यूँ रश्क की निगाह से देखती हो
जिसे अल्लाह ने अपनी सुकूनतगाह के लिए
पसन्द किया है? यक़ीनन रब वहाँ हमेशा के
लिए सुकूनत करेगा।
17अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत
फ़ौजी हैं। ख़ुदावन्द उन के दरमियान है, सीना
का ख़ुदा मक़्दिस में है।
18तू ने बुलन्दी पर चढ़ कर क़ैदियों का हुजूम
गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इन्सानों से तोह्फ़े
मिले, उन से भी जो सरकश हो गए थे। यूँ ही
रब ख़ुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।

19रब की तम्जीद हो जो रोज़-ब-रोज़ हमारा
बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात
है। (सिलाह)

20हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो हमें बार बार
नजात देता है, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हमें बार
बार मौत से बचने के रास्ते मुहय्या करता है।
21यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों
को कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं
आता उस की खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।
22रब ने फ़रमाया, "मैं उन्हें बसन से वापस
लाऊँगा, समुन्दर की गहराइयों से वापस
पहुँचाऊँगा।
23तब तू अपने पाँओ को दुश्मन के ख़ून में
धो लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।"

24ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं,
मेरे ख़ुदा और बादशाह के जुलूस मक़्दिस में
दाख़िल होते हुए नज़र आ गए हैं।
25आगे गुलूकार, फिर साज़ बजाने वाले
चल रहे हैं। उन के आस-पास कुंवारियाँ दफ़
बजाते हुए फिर रही हैं।
26"जमाअतों में अल्लाह की सताइश करो!
जितने भी इस्राईल के सरचश्मे से निकले हुए
हो रब की तम्जीद करो!"
27वहाँ सब से छोटा भाई बिनयमीन आगे
चल रहा है, फिर यहूदाह के बुज़ुर्गों का पुरशोर
हुजूम ज़बूलून और नफ़्ताली के बुज़ुर्गों के
साथ चल रहा है।

28ऐ अल्लाह, अपनी क़ुदरत ब-रू-ए कार
ला! ऐ अल्लाह, जो क़ुदरत तू ने पहले भी
हमारी ख़ातिर दिखाई उसे दुबारा दिखा!
29उसे यरूशलम के ऊपर अपनी
सुकूनतगाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर
तोह्फ़े लाएँगे।
30सरकंडों में छुपे हुए दरिन्दे को मलामत
कर! साँडों का जो ग़ोल बछड़ों जैसी क़ौमों
में रहता है उसे डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी
को प्यार करते हैं। उन क़ौमों को मुन्तशिर कर
जो जंग करने से लुत्फ़अन्दोज़ होती हैं।
31मिस्र से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने
हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

32ऐ दुनिया की सल्तनतो, अल्लाह की
ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मद्हसराई करो
(सिलाह)
33जो अपने रथ पर सवार हो कर क़दीम
ज़माने के बुलन्दतरीन आसमानों में से गुज़रता
है। सुनो उस की आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा
है।
34अल्लाह की क़ुदरत को तस्लीम करो!
उस की अज़मत इस्राईल पर छाई रहती और
उस की क़ुदरत आसमान पर है।
35ऐ अल्लाह, तू अपने मक़्दिस से ज़ाहिर
होते वक़्त कितना महीब है। इस्राईल का ख़ुदा
ही क़ौम को क़ुव्वत और ताक़त अता करता
है। अल्लाह की तम्जीद हो!

आज़माइश से नजात की दुआ

69 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्यूँकि पानी मेरे गले
तक पहुँच गया है।
2मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं
पाँओ जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी
की गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर
ग़ालिब आ गया है।
3मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा
गला बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इन्तिज़ार
करते करते मेरी आँखें धुन्दला गईं।
4जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं वह
मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे
दुश्मन हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह
ताक़तवर हैं। जो कुछ मैं ने नहीं लूटा उसे मुझ
से तलब किया जाता है।

5ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाक़िफ़ है,
मेरा क़ुसूर तुझ से पोशीदा नहीं है।
6ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज,
जो तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस
शर्मिन्दा न हों। ऐ इस्राईल के ख़ुदा, मेरे बाइस
तेरे तालिब की रुस्वाई न हो।

7क्यूँकि तेरी ख़ातिर मैं शर्मिन्दगी बर्दाश्त
कर रहा हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चेहरा शर्मसार
ही रहता है।
8मैं अपने सगे भाइयों के नज़्दीक अजनबी
और अपनी माँ के बेटों के नज़्दीक परदेसी बन
गया हूँ।
9क्यूँकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो
तुझे गालियाँ देते हैं उन की गालियाँ मुझ पर
आ गई हैं।
10जब मैं रोज़ा रख कर रोता था तो लोग
मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे।
11जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो
उन के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गया।
12जो बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह
मेरे बारे में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने
तन्ज़ भरे गीतों का निशाना बनाते हैं।

13लेकिन ऐ रब, मेरी तुझ से दुआ है कि
मैं तुझे दुबारा मन्ज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह,
अपनी अज़ीम शफ़्क़त के मुताबिक़ मेरी सुन,
अपनी यक़ीनी नजात के मुताबिक़ मुझे बचा।
14मुझे दलदल से निकाल ताकि ग़र्क़ न हो
जाऊँ। मुझे उन से छुटकारा दे जो मुझ से
नफ़रत करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे
बचा।
15सैलाब मुझ पर ग़ालिब न आए, समुन्दर
की गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर
अपना मुँह बन्द न कर ले।
16ऐ रब, मेरी सुन, क्यूँकि तेरी शफ़्क़त भली
है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़
रुजू कर।
17अपना चेहरा अपने ख़ादिम से छुपाए न
रख, क्यूँकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी
सुन!
18क़रीब आ कर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे
दुश्मनों के सबब से इवज़ाना दे कर मुझे छुड़ा।

19तू मेरी रुस्वाई, मेरी शर्मिन्दगी और
तज़लील से वाक़िफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम
दुश्मनों पर लगी रहती हैं।
20उन के तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं
बीमार पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इन्तिज़ार में
रहा, लेकिन बेफ़ाइदा। मैं ने तवक़्क़ो की कि
कोई मुझे दिलासा दे, लेकिन एक भी न मिला।
21उन्हों ने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर
मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22उन की मेज़ उन के लिए फंदा और उन
के साथियों के लिए जाल बन जाए।
23उन की आँखें तारीक हो जाएँ ताकि
वह देख न सकें। उन की कमर हमेशा तक
डगमगाती रहे।
24अपना पूरा ग़ुस्सा उन पर उतार, तेरा
सख़्त ग़ज़ब उन पर आ पड़े।
25उन की रिहाइशगाह सुन्सान हो जाए और
कोई उन के ख़ैमों में आबाद न हो,
26क्यूँकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह
सताते हैं, जिसे तू ही ने ज़ख़्मी किया उस का
दुख दूसरों को सुना कर ख़ुश होते हैं।
27उन के क़ुसूर का सख़्ती से हिसाब-
किताब कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।
28उन्हें किताब-ए-हयात से मिटाया जाए,
उन का नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज
न हो।

29हाय, मैं मुसीबत में फंसा हुआ हूँ, मुझे
बहुत दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे
महफ़ूज़ रखे।
30मैं अल्लाह के नाम की मदहसराई
करूँगा, शुक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम
करूँगा।
31यह रब को बैल या सींग और खुर रखने
वाले साँड से कहीं ज़्यादा पसन्द आएगा।
32हलीम अल्लाह का काम देख कर ख़ुश
हो जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली
पाओ!

33क्यूँकि रब मुह्ताजों की सुनता और अपने
क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

34आसमान-ओ-ज़मीन उस की तम्जीद
करें, समुन्दर और जो कुछ उस में हरकत
करता है उस की सताइश करे।
35क्यूँकि अल्लाह सिय्यून को नजात दे कर
यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उस
के ख़ादिम उन पर क़ब्ज़ा करके उन में आबाद
हो जाएंगे।
36उन की औलाद मुल्क को मीरास में
पाएगी, और उस के नाम से मुहब्बत रखने
वाले उस में बसे रहेंगे।

दुश्मन से नजात की दुआ

70 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। याददाश्त के लिए।
ऐ अल्लाह, जल्दी से आ कर मुझे बचा! ऐ
रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!
2मेरे जानी दुश्मन शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की
सख़्त रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने
से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का
मुँह काला हो जाए।
3जो मेरी मुसीबत देख कर क़ह्क़हा लगाते
हैं वह शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
4लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी
ख़ुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह
हमेशा कहें, "अल्लाह अज़ीम है!"
5लेकिन मैं नाचार और मुह्ताज हूँ। ऐ
अल्लाह, जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा
सहारा और मेरा नजातदहिन्दा है। ऐ रब, देर
न कर!

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

71 ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है।
मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे।
2अपनी रास्ती से मुझे बचा कर छुटकारा दे।
अपना कान मेरी तरफ़ झुका कर मुझे नजात
दे।

3मेरे लिए चटान पर मह्फ़ूज़ घर हो जिस में
मैं हर वक़्त पनाह ले सकूँ। तू ने फ़रमाया है
कि मुझे नजात देगा, क्यूँकि तू ही मेरी चटान
और मेरा क़िला है।

4ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा,
उस के क़ब्ज़े से जो बेइन्साफ़ और ज़ालिम
है।

5क्यूँकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिर-
ए-मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा
रहा है।
6पैदाइश से ही मैं ने तुझ पर तकिया किया
है, माँ के पेट से तू ने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा
तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा।

7बहुतों के नज़दीक मैं बदशुगूनी हूँ, लेकिन
तू मेरी मज़बूत पनाहगाह है।
8दिन भर मेरा मुँह तेरी तम्जीद और ताज़ीम
से लबरेज़ रहता है।

9बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म
होने पर मुझे तर्क न कर।
10क्यूँकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे
हैं, जो मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह
एक दूसरे से सलाह-मश्वरा कर रहे हैं।
11वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर
दिया है। उस के पीछे पड़ कर उसे पकड़ो,
क्यूँकि कोई नहीं जो उसे बचाए।”

12ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा,
मेरी मदद करने में जल्दी कर।
13मेरे हरीफ़ शर्मिन्दा हो कर फ़ना हो जाएँ,
जो मुझे नुक़्सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-
तान और रुस्वाई तले दब जाएँ।
14लेकिन मैं हमेशा तेरे इन्तिज़ार में रहूँगा,
हमेशा तेरी सताइश करता रहूँगा।
15मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा
दिन तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता
रहेगा, गो मैं उन की पूरी तादाद गिन भी नहीं
सकता।
16मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के अज़ीम काम
सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही
रास्ती याद करूँगा।

17ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम
देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिज़ात
का एलान करता आया हूँ।
18ऐ अल्लाह, ख़्वाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और
मेरे बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब
तक मैं आने वाली पुश्त के तमाम लोगों को
तेरी क़ुव्वत और क़ुदरत के बारे में बता न लूँ।

19ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें
करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिस
ने इतने अज़ीम काम किए हैं?
20तू ने मुझे मुतअद्दिद तल्ख़ तजरिबों में से
गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िन्दा
भी करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से
वापस लाएगा।
21मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली
दे।
22ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजा कर तेरी
सताइश और तेरी वफ़ादारी की तम्जीद
करूँगा। ऐ इस्राईल के क़ुद्दूस, मैं सरोद बजा
कर तेरी तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
23जब मैं तेरी मद्हसराई करूँगा तो मेरे
होंट ख़ुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान
जिसे तू ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है शादियाना
बजाएगी।
24मेरी ज़बान भी दिन भर तेरी रास्ती बयान
करेगी, क्यूँकि जो मुझे नुक़्सान पहुँचाना
चाहते थे वह शर्मसार और रुसवा हो गए हैं।

सलामती का बादशाह

72 सुलैमान का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना

इन्साफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी
रास्ती बख़्श दे
2ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इन्साफ़
से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।
3पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ
रास्ती पहुँचाएँ।
4वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इन्साफ़ करे
और मुह्ताजों की मदद करके ज़ालिमों को
कुचल दे।
5तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे
जब तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।
6वह कटी हुई घास के खेत पर बरसने
वाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को
तर करने वाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो
जाए।
7उस के दौर-ए-हुकूमत में रास्तबाज़ फले
फूलेगा, और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए
सलामती का ग़ल्बा होगा।
8वह एक समुन्दर से दूसरे समुन्दर तक और
दरया-ए-फ़ुरात से दुनिया की इन्तिहा तक
हुकूमत करे।
9रेगिस्तान के बाशिन्दे उस के सामने झुक
जाएँ, उस के दुश्मन ख़ाक चाटें।
10तरसीस और साहिली इलाक़ों के
बादशाह उसे ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा
उसे बाज पेश करें।
11तमाम बादशाह उसे सिज्दा करें, सब
अक़्वाम उस की ख़िदमत करें।

12क्यूँकि जो ज़रूरतमन्द मदद के लिए
पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में
है और जिस की मदद कोई नहीं करता उसे
वह रिहाई देगा।
13वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस
खाएगा, मुह्ताजों की जान को बचाएगा।
14वह इवज़ाना दे कर उन्हें ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद से छुड़ाएगा, क्यूँकि उन का ख़ून उस
की नज़र में क़ीमती है।

15बादशाह ज़िन्दाबाद! सबा का सोना उसे
दिया जाए। लोग हमेशा उस के लिए दुआ करें,
दिन भर उस के लिए बरकत चाहें।
16मुल्क में अनाज की कस्रत हो, पहाड़ों की
चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ। उस
का फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों
के बाशिन्दे हरियाली की तरह फलें फूलें।
17बादशाह का नाम अबद तक क़ाइम रहे,
जब तक सूरज चमके उस का नाम फले फूले।
तमाम अक़्वाम उस से बरकत पाएँ, और वह
उसे मुबारक कहें।

18रब ख़ुदा की तम्जीद हो जो इस्राईल का
ख़ुदा है। सिर्फ़ वही मोजिज़े करता है!
19उस के जलाली नाम की अबद तक
तम्जीद हो, पूरी दुनिया उस के जलाल से भर
जाए। आमीन, फिर आमीन।

20यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म
होती हैं।

तीसरी किताब 73-89

बेदीनों की कामयाबी के बावुजूद तसल्ली

73 आसफ़ का ज़बूर।
यक़ीनन अल्लाह इस्राईल पर
मेहरबान है, उन पर जिन के दिल पाक हैं।
2लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम
लग़्ज़िश खाने को थे।
3क्यूँकि शेख़ीबाज़ों को देख कर मैं बेचैन हो
गया, इस लिए कि बेदीन इतने ख़ुशहाल हैं।
4मरते वक़्त उन को कोई तक्लीफ़ नहीं
होती, और उन के जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।
5आम लोगों के मसाइल से उन का वास्ता
नहीं पड़ता। जिस दर्द-ओ-करब में दूसरे
मुब्तला रहते हैं उस से वह आज़ाद होते हैं।
6इस लिए उन के गले में तकब्बुर का हार
है, वह ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।

7चर्बी के बाइस उन की आँखें उभर आई
हैं। उन के दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में
रहते हैं।
8वह मज़ाक़ उड़ा कर बुरी बातें करते हैं,
अपने ग़ुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।
9वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह
से निकलता है वह आसमान से है, जो बात
हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन
के लिए अहमियत रखती है।
10चुनाँचे अवाम उन की तरफ़ रुजू होते हैं,
क्यूँकि उन के हाँ कस्रत का पानी पिया जाता
है।
11वह कहते हैं, "अल्लाह को क्या पता है?
अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।"
12देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा
सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा
करते हैं।
13यक़ीनन मैं ने बेफ़ाइदा अपना दिल पाक
रखा और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने
से बाज़ रखे।
14क्यूँकि दिन भर मैं दर्द-ओ-करब में
मुब्तला रहता हूँ, हर सुब्ह मुझे सज़ा दी जाती
है।

15अगर मैं कहता, "मैं भी उन की तरह
बोलूँगा," तो तेरे फ़र्ज़न्दों की नस्ल से ग़द्दारी
करता।
16मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात
समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया,
अज़ियत में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17तब मैं अल्लाह के मक़्दिस में दाख़िल
हो कर समझ गया कि उन का अन्जाम क्या
होगा।
18यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर
रखेगा, उन्हें फ़रेब में फंसा कर ज़मीन पर
पटख़ देगा।
19अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे,
दह्शतनाक मुसीबत में फंस कर मुकम्मल तौर
पर फ़ना हो जाएंगे।
20ऐ रब, जिस तरह ख़्वाब जाग उठते वक़्त
ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते
वक़्त उन्हें वहम क़रार दे कर हक़ीर जानेगा।

21जब मेरे दिल में तल्ख़ी पैदा हुई और मेरे
बातिन में सख़्त दर्द था
22तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता
था बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिन्द था।
23तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा,
क्यूँकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।
24तू अपने मश्वरे से मेरी क़ियादत करके
आख़िर में इज़्ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़्दम
करेगा।
25जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर
क्या कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं
ज़मीन की कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।
26ख़्वाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब
दे जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल
की चटान और मेरी मीरास है।

27यक़ीनन जो तुझ से दूर हैं वह हलाक हो
जाएंगे, जो तुझ से बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर
देगा।
28लेकिन मेरे लिए अल्लाह की क़ुर्बत सब
कुछ है। मैं ने रब क़ादिर-ए-मुतलक़ को अपनी
पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तेरे
तमाम काम सुनाऊँगा।

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़्सोस

74 आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ अल्लाह, तू ने हमें हमेशा के
लिए क्यूँ रद्द किया है? अपनी चरागाह की
भेड़ों पर तेरा क़हर क्यूँ भड़कता रहता है?
2अपनी जमाअत को याद कर जिसे तू
ने क़दीम ज़माने में ख़रीदा और इवज़ाना दे
कर छुड़ाया ताकि तेरी मीरास का क़बीला

हो। कोह-ए-सिय्यून को याद कर जिस पर तू
सुकूनतपज़ीर रहा है।
3अपने क़दम इन दाइमी खंडरात की तरफ़
बढ़ा। दुश्मन ने मक़्दिस में सब कुछ तबाह कर
दिया है।
4तेरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी
जल्सागाह में अपने निशान गाड़ दिए हैं।
5उन्हों ने गुंजान जंगल में लक्कड़हारों की
तरह अपने कुल्हाड़े चलाए,
6अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की
तमाम कन्दाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया
है।
7उन्हों ने तेरे मक़्दिस को भस्म कर दिया,
फ़र्श तक तेरे नाम की सुकूनतगाह की
बेहुरमती की है।
8अपने दिल में वह बोले, "आओ, हम उन
सब को ख़ाक में मिलाएँ!" उन्हों ने मुल्क में
अल्लाह की हर इबादतगाह नज़र-ए-आतिश
कर दी है।
9अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर
नहीं होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया,
न कोई और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे
हालात कब तक रहेंगे।
10ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान
करेगा, दुश्मन कब तक तेरे नाम की तक्फ़ीर
करेगा?
11तू अपना हाथ क्यूँ हटाता, अपना दहना
हाथ दूर क्यूँ रखता है? उसे अपनी चादर से
निकाल कर उन्हें तबाह कर दे!

12अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह
है, वही दुनिया में नजातबख़्श काम अन्जाम
देता है।
13तू ही ने अपनी क़ुदरत से समुन्दर को
चीर कर पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़
डाला।
14तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर
करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।
15एक जगह तू ने चश्मे और नदियाँ फूटने
दीं, दूसरी जगह कभी न सूखने वाले दरया
सूखने दिए।
16दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद
और सूरज तेरे ही हाथ से क़ाइम हुए।
17तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुक़र्रर कीं, तू ही
ने गर्मियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

18ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर।
ख़याल कर कि अहमक़ क़ौम तेरे नाम पर
कुफ़्र बकती है।
19अपने कबूतर की जान को वहशी
जानवरों के हवाले न कर, हमेशा तक अपने
मुसीबतज़दों की ज़िन्दगी को न भूल।
20अपने अह्द का लिहाज़ कर, क्यूँकि
मुल्क के तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर
गए हैं।
21होने न दे कि मज़्लूमों को शर्मिन्दा हो
कर पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि
मुसीबतज़दा और ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र
कर सकें।
22ऐ अल्लाह, उठ कर अदालत में अपने
मुआमले का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़
दिन भर तुझे लान-तान करता है।
23अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने
मुख़ालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-
शराबा याद कर।

अल्लाह मग़रूरों की अदालत करता है

75 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा
नाम उन के क़रीब है जो तेरे मोजिज़े बयान
करते हैं।

2अल्लाह फ़रमाता है, "जब मेरा वक़्त
आएगा तो मैं इन्साफ़ से अदालत करूँगा।

3गो ज़मीन अपने बाशिन्दों समेत डगमगाने
लगे, लेकिन मैं ही ने उस के सतूनों को मज़बूत
कर दिया है। (सिलाह)
4शेख़ीबाज़ों से मैं ने कहा, 'डींगें मत मारो,'
और बेदीनों से, 'अपने आप पर फ़ख़र मत
करो।[a]
5न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो,[b] न अकड़
कर कुफ़्र बको'।"
6क्यूँकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न
मग़रिब से और न बयाबान से आती है
7बल्कि अल्लाह से जो मुन्सिफ़ है। वही एक
को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।
8क्यूँकि रब के हाथ में झागदार और
मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों
को पिला देता है। यक़ीनन दुनिया के तमाम
बेदीनों को इसे आख़िरी क़तरे तक पीना है।

9लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम
काम सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की
मद्हसराई करूँगा।

10अल्लाह फ़रमाता है, "मैं तमाम बेदीनों
की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़
सरफ़राज़ होगा।"[c]

अल्लाह मुन्सिफ़ है

76 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
अल्लाह यहूदाह में मश्हूर है, उस का नाम
इस्राईल में अज़ीम है।
2उस ने अपनी मान्द सालिम[d] में और
अपना भट कोह-ए-सिय्यून पर बना लिया है।
3वहाँ उस ने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला
और ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को
चूर चूर कर दिया है। (सिलाह)
4ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के
पहाड़ों से आया हुआ अज़ीमु-श्शान सूरमा है।

5बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की
नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ
नहीं उठा सकता।
6ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और
रथबान बेहिस्स-ओ-हरकत हो गए हैं।
7तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे
हुज़ूर क़ाइम रहेगा?
8तू ने आसमान से फ़ैसले का एलान किया।
ज़मीन सहम कर चुप हो गई
9जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा,
जब वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के
लिए आया। (सिलाह)
10क्यूँकि इन्सान का तैश भी तेरी तम्जीद
का बाइस है। उस के तैश का आख़िरी नतीजा
तेरा जलाल ही है।[e]

11रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मान कर
उन्हें पूरा करो। जितने भी उस के इर्दगिर्द हैं
वह पुरजलाल ख़ुदा के हुज़ूर हदिए लाएँ।
12वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता
है, उसी से दुनिया के बादशाह दह्शत खाते
हैं।

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

77 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। यदूतून के लिए।

[a] लफ़्ज़ी तर्जुमा : सींग मत उठाओ।
[b] लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।
[c] लफ़्ज़ी तर्जुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा।
[d] सालिम से मुराद यरूशलम है।
[e] लफ़्ज़ी तर्जुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

मैं अल्लाह से फ़र्याद करके मदद के लिए
चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि
मुझ पर ध्यान दे।
2अपनी मुसीबत में मैं ने रब को तलाश
किया। रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानाग़ा उस
की तरफ़ उठे रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने
से इन्कार किया।

3मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने
लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो
रूह निढाल हो जाती है। (सिलाह)
4तू मेरी आँखों को बन्द होने नहीं देता। मैं
इतना बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन
सालों पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।
6रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ।
मेरा दिल महव-ए-ख़याल रहता और मेरी रूह
तफ़्तीश करती रहती है।
7"क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या
आइन्दा हमें कभी पसन्द नहीं करेगा?
8क्या उस की शफ़्क़त हमेशा के लिए जाती
रही है? क्या उस के वादे अब से जवाब दे गए
हैं?
9क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया
है? क्या उस ने ग़ुस्से में अपना रहम बाज़
रखा है?" (सिलाह)
10मैं बोला, "इस से मुझे दुख है कि अल्लाह
तआला का दहना हाथ बदल गया है।"

11मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम
ज़माने के तेरे मोजिज़े याद करूँगा।
12जो कुछ तू ने किया उस के हर पहलू पर
ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में
महव-ए-ख़याल रहूँगा।
13ऐ अल्लाह, तेरी राह क़ुद्दूस है। कौन सा
माबूद हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?

14तू ही मोजिज़े करने वाला ख़ुदा है।
अक़्वाम के दरमियान तू ने अपनी क़ुदरत का
इज़हार किया है।
15बड़ी क़ुव्वत से तू ने इवज़ाना दे कर
अपनी क़ौम, याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद
को रिहा कर दिया है। (सिलाह)
16ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने
तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक
लरज़ने लगा।
17मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज
उठे और तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।
18आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही,
दुनिया बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती
काँपती उछल पड़ी।
19तेरी राह समुन्दर में से, तेरा रास्ता गहरे
पानी में से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्श-ए-क़दम
किसी को नज़र न आए।
20मूसा और हारून के हाथ से तू ने रेवड़ की
तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

इस्राईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम

78 आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर
ध्यान दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।
2मैं तम्सीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने
के मुअम्मे बयान करूँगा।
3जो कुछ हम ने सुन लिया और हमें मालूम
हुआ है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया
है
4उसे हम उन की औलाद से नहीं छुपाएँगे।
हम आने वाली पुश्त को रब के क़ाबिल-ए-
तारीफ़ काम बताएँगे, उस की क़ुदरत और
मोजिज़ात बयान करेंगे।
5क्यूँकि उस ने याक़ूब की औलाद को
शरीअत दी, इस्राईल में अह्काम क़ाइम किए।
उस ने फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह
अह्काम अपनी औलाद को सिखाएँ

6ताकि आने वाली पुश्त भी उन्हें अपनाए,
वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें
भी अपने बच्चों को सुनाना था।
7क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है कि इस तरह
हर पुश्त अल्लाह पर एतिमाद रख कर उस के
अज़ीम काम न भूले बल्कि उस के अह्काम
पर अमल करे।
8वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा
की मानिन्द हों जो ज़िद्दी और सरकश नस्ल
थे, ऐसी नस्ल जिस का दिल साबितक़दम नहीं
था और जिस की रूह वफ़ादारी से अल्लाह से
लिपटी न रही।

9चुनाँचे इफ़्राईम के मर्द गो कमानों से लेस
थे जंग के वक़्त फ़रार हुए।
10वह अल्लाह के अह्द के वफ़ादार न रहे,
उस की शरीअत पर अमल करने के लिए
तय्यार नहीं थे।
11जो कुछ उस ने किया था, जो मोजिज़े
उस ने उन्हें दिखाए थे, इफ़्राईमी वह सब कुछ
भूल गए।
12मुल्क-ए-मिस्र के इलाक़े ज़ुअन में उस ने
उन के बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए
थे।
13समुन्दर को चीर कर उस ने उन्हें उस में
से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत
दीवार की तरह खड़ा रहा।
14दिन को उस ने बादल के ज़रीए और रात
भर चमकदार आग से उन की क़ियादत की।
15रेगिस्तान में उस ने पत्थरों को चाक करके
उन्हें समुन्दर की सी कस्रत का पानी पिलाया।
16उस ने होने दिया कि चटान से नदियाँ
फूट निकलें और पानी दरयाओं की तरह बहने
लगे।

17लेकिन वह उस का गुनाह करने से बाज़
न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला
से सरकश रहे।
18जान-बूझ कर उन्हों ने अल्लाह को
आज़मा कर वह ख़ुराक माँगी जिस का लालच
करते थे।
19अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़्र बक कर वह
बोले, “क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए
मेज़ बिछा सकता है?
20बेशक जब उस ने चटान को मारा तो पानी
फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन
क्या वह रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम
को गोश्त भी मुहय्या कर सकता है? यह तो
नामुमकिन है।”
21यह सुन कर रब तैश में आ गया। याक़ूब
के ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उस का
ग़ज़ब इस्राईल पर नाज़िल हुआ।
22क्यूँ? इस लिए कि उन्हें अल्लाह पर
यक़ीन नहीं था, वह उस की नजात पर भरोसा
नहीं रखते थे।

23इस के बावुजूद अल्लाह ने उन के ऊपर
बादलों को हुक्म दे कर आसमान के दरवाज़े
खोल दिए।
24उस ने खाने के लिए उन पर मन बरसाया,
उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।
25हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई
बल्कि अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उन
के पेट भर गए।
26फिर उस ने आसमान पर मशरिक़ी हवा
चलाई और अपनी क़ुदरत से जुनूबी हवा
पहुँचाई।
27उस ने गर्द की तरह उन पर गोश्त
बरसाया, समुन्दर की रेत जैसे बेशुमार परिन्दे
उन पर गिरने दिए।
28ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उन
के घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
29तब वह खा खा कर ख़ूब सेर हो गए,
क्यूँकि जिस का लालच वह करते थे वह
अल्लाह ने उन्हें मुहय्या किया था।
30लेकिन उन का लालच अभी पूरा नहीं
हुआ था और गोश्त अभी उन के मुँह में था

31कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल
हुआ। क़ौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए,
इस्राईल के जवान ख़ाक में मिल गए।

32इन तमाम बातों के बावुजूद वह अपने
गुनाहों में इज़ाफ़ा करते गए और उस के
मोजिज़ात पर ईमान न लाए।
33इस लिए उस ने उन के दिन नाकामी में
गुज़रने दिए, और उन के साल दह्शत की
हालत में इख़तितामपज़ीर हुए।
34जब कभी अल्लाह ने उन में क़त्ल-ओ-
ग़ारत होने दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़
कर अल्लाह को तलाश करने लगे।
35तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी
चटान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ाने वाला
है।
36लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान
से उसे झूट पेश करते थे।
37न उन के दिल साबितक़दमी से उस के
साथ लिपटे रहे, न वह उस के अह्द के
वफ़ादार रहे।

38तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उस ने उन्हें
तबाह न किया बल्कि उन का क़ुसूर मुआफ़
करता रहा। बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़
आया, बार बार अपना पूरा क़हर उन पर
उतारने से गुरेज़ किया।
39क्यूँकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इन्सान
हैं, हवा का एक झोंका जो गुज़र कर कभी
वापस नहीं आता।

40रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उस
से सरकश हुए, कितनी मर्तबा उसे दुख
पहुँचाया।
41बार बार उन्हों ने अल्लाह को आज़माया,
बार बार इस्राईल के क़ुद्दूस को रंजीदा किया।
42उन्हें उस की क़ुदरत याद न रही, वह
दिन जब उस ने फ़िद्या दे कर उन्हें दुश्मन से
छुड़ाया,

43वह दिन जब उस ने मिस्र में अपने इलाही
निशान दिखाए, ज़ुअन के इलाक़े में अपने
मोजिज़े किए।
44उस ने उन की नहरों का पानी ख़ून में
बदल दिया, और वह अपनी नदियों का पानी
पी न सके।
45उस ने उन के दरमियान जूओं के ग़ोल
भेजे जो उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही
लाए।
46उन की पैदावार उस ने जवान टिड्डियों के
हवाले की, उन की मेहनत का फल बालिग़
टिड्डियों के सपुर्द किया।
47उन की अंगूर की बेलें उस ने ओलों से, उन
के अन्जीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर
दिए।
48उन के मवेशी उस ने ओलों के हवाले
किए, उन के रेवड़ बिजली के सपुर्द किए।
49उस ने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब
नाज़िल किया। क़हर, ख़फ़गी और मुसीबत
यानी तबाही लाने वाले फ़रिश्तों का पूरा दस्ता
उन पर हम्लाआवर हुआ।
50उस ने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तय्यार
करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक
वबा की ज़द में आने दिया।
51मिस्र में उस ने तमाम पहलौठों को मार
डाला और हाम के ख़ैमों में मर्दानगी का पहला
फल तमाम कर दिया।
52फिर वह अपनी क़ौम को भेड़-बकरियों
की तरह मिस्र से बाहर ला कर रेगिस्तान में
रेवड़ की तरह लिए फिरा।
53वह हिफ़ाज़त से उन की क़ियादत करता
रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उन के
दुश्मन समुन्दर में डूब गए।
54यूँ अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक
पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उस के दहने
हाथ ने हासिल किया था।
55उन के आगे आगे वह दीगर क़ौमें
निकालता गया। उन की ज़मीन उस ने
तक़्सीम करके इस्राईलियों को मीरास में दी,

और उन के ख़ैमों में उस ने इस्राईली क़बीले बसाए।

56इस के बावुजूद वह अल्लाह तआला को आज़माने से बाज़ न आए बल्कि उस से सरकश हुए और उस के अह्काम के ताबे न रहे।

57अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बन कर बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो गए।

58उन्हों ने ऊँची जगहों की ग़लत क़ुर्बानगाहों से अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।

59जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह ग़ज़बनाक हुआ और इस्राईल को मुकम्मल तौर पर मुस्तरद कर दिया।

60उस ने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह ख़ैमा जिस में वह इन्सान के दरमियान सुकूनत करता था।

61अह्द का सन्दूक़ उस की क़ुदरत और जलाल का निशान था, लेकिन उस ने उसे दुश्मन के हवाले करके जिलावतनी में जाने दिया।

62अपनी क़ौम को उस ने तलवार की ज़द में आने दिया, क्यूँकि वह अपनी मौरूसी मिलकियत से निहायत नाराज़ था।

63क़ौम के जवान नज़र-ए-आतिश हुए, और उस की कुंवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।

64उस के इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस की बेवाओं ने मातम न किया।

65तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिस की नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिन्द जिस से नशे का असर उतर गया हो।

66उस ने अपने दुश्मनों को मार मार कर भगा दिया और उन्हें हमेशा के लिए शर्मिन्दा कर दिया।

67उस वक़्त उस ने यूसुफ़ का ख़ैमा रद्द किया और इफ़्राईम के क़बीले को न चुना

68बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोह-ए-सिय्यून को चुन लिया जो उसे प्यारा था।

69उस ने अपना मक़्दिस बुलन्दियों की मानिन्द बनाया, ज़मीन की मानिन्द जिसे उस ने हमेशा के लिए क़ाइम किया है।

70उस ने अपने ख़ादिम दाऊद को चुन कर भेड़-बकरियों के बाड़ों से बुलाया।

71हाँ, उस ने उसे भेड़ों[a] की देख-भाल से बुलाया ताकि वह उस की क़ौम याक़ूब, उस की मीरास इस्राईल की गल्लाबानी करे।

72दाऊद ने ख़ुलूसदिली से उन की गल्लाबानी की, बड़ी महारत से उस ने उन की राहनुमाई की।

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

79 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमें तेरी मौरूसी ज़मीन में घुस आई हैं। उन्हों ने तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को मल्बे का ढेर बना दिया है।

2उन्हों ने तेरे ख़ादिमों की लाशें परिन्दों को और तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को खिला दिया है।

3यरूशलम के चारों तरफ़ उन्हों ने ख़ून की नदियाँ बहाईं, और कोई बाक़ी न रहा जो मुर्दों को दफ़नाता।

4हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमें हमारी हंसी उड़ाती और लान-तान करती हैं।

[a] इब्रानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

5ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक ग़ुस्से
होगा? तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह
भड़कती रहेगी?
6अपना ग़ज़ब उन अक़्वाम पर नाज़िल कर
जो तुझे तस्लीम नहीं करतीं, उन सल्तनतों पर
जो तेरे नाम को नहीं पुकारतीं।
7क्यूँकि उन्हों ने याक़ूब को हड़प करके उस
की रिहाइशगाह तबाह कर दी है।
8हमें उन गुनाहों के क़ुसूरवार न ठहरा जो
हमारे बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम
करने में जल्दी कर, क्यूँकि हम बहुत पस्तहाल
हो गए हैं।
9ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमारी मदद
कर ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें
बचा, अपने नाम की ख़ातिर हमारे गुनाहों को
मुआफ़ कर।
10दीगर अक़्वाम क्यूँ कहें, "उन का ख़ुदा
कहाँ है?" हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि
तू अपने ख़ादिमों के ख़ून का बदला लेता है।
11क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो
मरने को हैं उन्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से
महफ़ूज़ रख।
12ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने
तुझ पर बरसाई है उसे सात गुना उन के सरों
पर वापस ला।
13तब हम जो तेरी क़ौम और तेरी चरागाह
की भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे,
पुश्त-दर-पुश्त तेरी हम्द-ओ-सना करेंगे।

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

80 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : अह्द के सोसन।
ऐ इस्राईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे!
तू जो यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई
करता है, हम पर तवज्जुह कर! तू जो करूबी
फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, अपना
नूर चमका!
2इफ़्राईम, बिनयमीन और मनस्सी के
सामने अपनी क़ुदरत को हरकत में ला। हमें
बचाने आ!

3ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे
का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

4ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा, तेरा ग़ज़ब कब
तक भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क़ौम तुझ
से इल्तिजा कर रही है?
5तू ने उन्हें आँसूओं की रोटी खिलाई और
आँसूओं का प्याला ख़ूब पिलाया।
6तू ने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना
बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7ऐ लश्करों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने
चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8अंगूर की जो बेल मिस्र में उग रही थी उसे
तू उखाड़ कर मुल्क-ए-कनआन लाया। तू ने
वहाँ की अक़्वाम को भगा कर यह बेल उन
की जगह लगाई।
9तू ने उस के लिए ज़मीन तय्यार की तो वह
जड़ पकड़ कर पूरे मुल्क में फैल गई।
10उस का साया पहाड़ों पर छा गया, और
उस की शाख़ों ने देवदार के अज़ीम दरख़्तों
को ढाँक लिया।
11उस की टहनियाँ मग़रिब में समुन्दर तक
फैल गईं, उस की डालियाँ मशरिक़ में दरया-
ए-फ़ुरात तक पहुँच गईं।
12तू ने उस की चारदीवारी क्यूँ गिरा दी?
अब हर गुज़रने वाला उस के अंगूर तोड़ लेता
है।
13जंगल के सूअर उसे खा खा कर तबाह
करते, खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14ऐ लश्करों के ख़ुदा, हमारी तरफ़ दुबारा
रुजू फ़रमा! आसमान से नज़र डाल कर

हालात पर ध्यान दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15उसे मह्फ़ूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने
ज़मीन में लगाया, उस बेटे को जिसे तू ने अपने
लिए पाला है।
16इस वक़्त वह कट कर नज़र-ए-आतिश
हुआ है। तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग
हलाक हो जाते हैं।
17तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बन्दे को
पनाह दे, उस आदमज़ाद को जिसे तू ने अपने
लिए पाला था।
18तब हम तुझ से दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श
दे कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा
नाम पुकारेंगे।

19ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा, हमें बहाल कर।
अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात
पाएँगे।

हक़ीक़ी इबादत क्या है?

81 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
अल्लाह हमारी क़ुव्वत है। उस की ख़ुशी
में शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की
ताज़ीम में ख़ुशी के नारे लगाओ।
2गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद
और सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।
3नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद
के जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।
4क्यूँकि यह इस्राईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब
के ख़ुदा का फ़रमान है।
5जब यूसुफ़ मिस्र के ख़िलाफ़ निकला तो
अल्लाह ने ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैं ने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं
जानता था,
6"मैं ने उस के कंधे पर से बोझ उतारा और
उस के हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद
किए।
7मुसीबत में तू ने आवाज़ दी तो मैं ने तुझे
बचाया। गरजते बादल में से मैं ने तुझे जवाब
दिया और तुझे मरीबा के पानी पर आज़माया।
(सिलाह)
8ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह
करूँगा। ऐ इस्राईल, काश तू मेरी सुने!
9तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी
अजनबी माबूद को सिज्दा न कर।
10मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-
मिस्र से निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल
तो मैं उसे भर दूँगा।

11लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इस्राईल
मेरी बात मानने के लिए तय्यार न था।
12चुनाँचे मैं ने उन्हें उन के दिलों की ज़िद के
हवाले कर दिया, और वह अपने ज़ाती मश्वरों
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।
13काश मेरी क़ौम सुने, इस्राईल मेरी राहों
पर चले!
14तब मैं जल्दी से उस के दुश्मनों को ज़ेर
करता, अपना हाथ उस के मुख़ालिफ़ों के
ख़िलाफ़ उठाता।
15तब रब से नफ़रत करने वाले दबक कर
उस की ख़ुशामद करते, उन की शिकस्त
अबदी होती।
16लेकिन इस्राईल को मैं बेहतरीन गन्दुम
खिलाता, मैं चटान में से शहद निकाल कर
उसे सेर करता।"

सब से आला मुन्सिफ़

82 आसफ़ का ज़बूर।
अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा
है, माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,
2"तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैसले
करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे?
(सिलाह)

3पस्तहालों और यतीमों का इन्साफ़ करो,
मुसीबतज़दों और ज़रूरतमन्दों के हुक़ूक़
क़ाइम रखो।
4पस्तहालों और ग़रीबों को बचा कर बेदीनों
के हाथ से छुड़ाओ।"

5लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ
ही नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोल
कर घूमते फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम
बुन्यादें झूमने लगी हैं।
6बेशक मैं ने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब
अल्लाह तआला के फ़र्ज़न्द हो।
7लेकिन तुम फ़ानी इन्सान की तरह मर
जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर
जाओगे।"

8ऐ अल्लाह, उठ कर ज़मीन की अदालत
कर! क्यूँकि तमाम अक़्वाम तेरी ही मौरूसी
मिलकियत हैं।

क़ौम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ

83 गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ
अल्लाह, चुप न रह!
2देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझ से
नफ़रत करने वाले अपना सर तेरे ख़िलाफ़
उठा रहे हैं।
3तेरी क़ौम के ख़िलाफ़ वह चालाक मन्सूबे
बांध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उन के
ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं।
4वह कहते हैं, "आओ, हम उन्हें मिटा दें
ताकि क़ौम नेस्त हो जाए और इस्राईल का
नाम-ओ-निशान बाक़ी न रहे।"
5क्यूँकि वह आपस में सलाह-मश्वरा करने
के बाद दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्हों
ने तेरे ही ख़िलाफ़ अह्द बांधा है।
6उन में अदोम के ख़ैमे, इस्माईली, मोआब,
हाजिरी,
7जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फ़िलिस्तिया
और सूर के बाशिन्दे शामिल हो गए हैं।
8असूर भी उन में शरीक हो कर लूत की
औलाद को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9उन के साथ वही सुलूक कर जो तू ने
मिदियानियों से यानी क़ैसोन नदी पर सीसरा
और याबीन से किया।
10क्यूँकि वह ऐन-दोर के पास हलाक हो
कर खेत में गोबर बन गए।
11उन के शुरफ़ा के साथ वही बरताओ कर
जो तू ने ओरेब और ज़एब से किया। उन
के तमाम सरदार ज़िबह और ज़ल्मुन्ना की
मानिन्द बन जाएँ,
12जिन्हों ने कहा, "आओ, हम अल्लाह की
चरागाहों पर क़ब्ज़ा करें।"
13ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में
उड़ते हुए भूसे की मानिन्द बना दे।
14जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती
और एक ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,
15उसी तरह अपनी आँधी से उन का
ताक़्क़ुब कर, अपने तूफ़ान से उन को
दह्शतज़दा कर दे।
16ऐ रब, उन का मुँह काला कर ताकि वह
तेरा नाम तलाश करें।
17वह हमेशा तक शर्मिन्दा और हवास=
बाख़्ता रहें, वह शर्मसार हो कर हलाक हो
जाएँ।
18तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिस का
नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया
का मालिक है।

रब के घर पर ख़ुशी

84 क़ोरह ख़ानदान का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तेरी सुकूनतगाह
कितनी प्यारी है!

2मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती
हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म
ज़िन्दा ख़ुदा को ज़ोर से पुकार रहा है।
3ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, ऐ मेरे बादशाह और
ख़ुदा, तेरी क़ुर्बानगाहों के पास परिन्दे को भी
घर मिल गया, अबाबील को भी अपने बच्चों
को पालने का घोंसला मिल गया है।

4मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह
हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)
5मुबारक हैं वह जो तुझ में अपनी ताक़त
पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।
6वह बुका की ख़ुश्क वादी[a] में से गुज़रते हुए
उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे
बरकतों से ढाँप देती हैं।
7वह क़दम-ब-क़दम तक़वियत पाते हुए
आगे बढ़ते, सब कोह-ए-सिय्यून पर अल्लाह
के सामने हाज़िर हो जाते हैं।
8ऐ रब, ऐ लश्करों के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन!
ऐ याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)
9ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की
निगाह डाल। अपने मसह किए हुए ख़ादिम
के चेहरे पर नज़र कर।

10तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और
जगह पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने
ख़ुदा के घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना
बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज़्यादा पसन्द
है।
11क्यूँकि रब ख़ुदा आफ़्ताब और ढाल है,
वही हमें फ़ज़्ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है।
जो दियानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी
अच्छी चीज़ से महरूम नहीं रखता।
12ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, मुबारक है वह जो
तुझ पर भरोसा रखता है!

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

85 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।

ऐ रब, पहले तू ने अपने मुल्क को पसन्द
किया, पहले याक़ूब को बहाल किया।
2पहले तू ने अपनी क़ौम का क़ुसूर मुआफ़
किया, उस का तमाम गुनाह ढाँप दिया।
(सिलाह)
3जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उस
का सिलसिला तू ने रोक दिया, जो क़हर हमारे
ख़िलाफ़ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

4ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें दुबारा बहाल
कर। हम से नाराज़ होने से बाज़ आ।
5क्या तू हमेशा तक हम से ग़ुस्से रहेगा?
क्या तू अपना क़हर पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम
रखेगा?
6क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम
नहीं करेगा ताकि तेरी क़ौम तुझ से ख़ुश हो
जाए?
7ऐ रब, अपनी शफ़्क़त हम पर ज़ाहिर कर,
अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

8मैं वह कुछ सुनूँगा जो ख़ुदा रब फ़रमाएगा।
क्यूँकि वह अपनी क़ौम और अपने ईमानदारों
से सलामती का वादा करेगा, अलबत्ता
लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ
न जाएँ।
9यक़ीनन उस की नजात उन के क़रीब है
जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे
मुल्क में सुकूनत करे।
10शफ़्क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले
लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे
को बोसा दिया है।
11सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और
रास्ती आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।

[a] या रोने वाली यानी आँसूओं की वादी।

12अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा
है, हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा
करेगी।
13रास्ती उस के आगे आगे चल कर उस के
क़दमों के लिए रास्ता तय्यार करेगी।

मुसीबत में दुआ

86 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुका कर मेरी
सुन, क्यूँकि मैं मुसीबतज़दा और मुह्ताज हूँ।
2मेरी जान को मह्फ़ूज़ रख, क्यूँकि मैं
ईमानदार हूँ। अपने ख़ादिम को बचा जो तुझ
पर भरोसा रखता है। तू ही मेरा ख़ुदा है!
3ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्यूँकि दिन
भर मैं तुझे पुकारता हूँ।
4अपने ख़ादिम की जान को ख़ुश कर,
क्यूँकि मैं तेरा आरज़ूमन्द हूँ।
5क्यूँकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने
के लिए तय्यार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन
पर तू बड़ी शफ़्क़त करता है।
6ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर
तवज्जुह कर।
7मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि
तू मेरी सुनता है।

8ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिन्द नहीं
है। जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर
सकता।
9ऐ रब, जितनी भी क़ौमें तू ने बनाईं वह आ
कर तेरे हुज़ूर सिज्दा करेंगी और तेरे नाम को
जलाल देंगी।
10क्यूँकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े
करता है। तू ही ख़ुदा है।

11ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी
वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से
तेरा ख़ौफ़ मानूँ।
12ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं पूरे दिल से तेरा
शुक्र करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम
करूँगा।
13क्यूँकि तेरी मुझ पर शफ़्क़त अज़ीम है,
तू ने मेरी जान को पाताल की गहराइयों से
छुड़ाया है।

14ऐ अल्लाह, मग़रूर मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े
हुए हैं, ज़ालिमों का जथ्था मेरी जान लेने के
दरपै है। यह लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।
15लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान
ख़ुदा है। तू तहम्मुल, शफ़्क़त और वफ़ा से
भरपूर है।
16मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी
कर! अपने ख़ादिम को अपनी क़ुव्वत अता
कर, अपनी ख़ादिमा के बेटे को बचा।
17मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान
दिखा। मुझ से नफ़रत करने वाले यह देख कर
शर्मिन्दा हो जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके
मुझे तसल्ली दी है।

सिय्यून अक़्वाम की माँ है

87 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
उस की बुन्याद मुक़द्दस पहाड़ों पर
रखी गई है।
2रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की
दीगर आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता
है।

3ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार
बातें सुनाई जाती हैं। (सिलाह)
4रब फ़रमाता है, "मैं मिस्र और बाबल को
उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।"
फिलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी
कहा जाएगा, "इन की पैदाइश यहीं हुई है।"

5लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा,
"हर एक बाशिन्दा उस में पैदा हुआ है।
अल्लाह तआला ख़ुद उसे क़ाइम रखेगा।"

6जब रब अक़्वाम को किताब में दर्ज करेगा
तो वह साथ साथ यह भी लिखेगा, "यह
सिय्यून में पैदा हुई हैं।" (सिलाह)
7और लोग नाचते हुए गाएँगे, "मेरे तमाम
चश्मे तुझ में हैं।"

तर्क किए गए शख़्स के लिए दुआ

88 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी
के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत
लअन्नोत। हैमान इज़्राही का हिक्मत का गीत।
ऐ रब, ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, दिन रात मैं
तेरे हुज़ूर चीख़ता चिल्लाता हूँ।
2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी
चीख़ों की तरफ़ झुका।
3क्यूँकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी
टाँगें क़ब्र में लटकी हुई हैं।
4मुझे उन में शुमार किया जाता है जो
पाताल में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिन्द
हूँ जिस की तमाम ताक़त जाती रही है।
5मुझे मुर्दों में तन्हा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन
मक़्तूलों की तरह जिन का तू अब ख़याल नहीं
रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुन्क़ते
हो गए हैं।
6तू ने मुझे सब से गहरे गढ़े में, तारीकतरीन
गहराइयों में डाल दिया है।
7तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा
है, तू ने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा
दिया है। (सिलाह)
8तू ने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझ से दूर कर
दिया है, और अब वह मुझ से घिन खाते हैं।
मैं फंसा हुआ हूँ और निकल नहीं सकता।
9मेरी आँखें ग़म के मारे पझमुर्दा हो गई हैं।
ऐ रब, दिन भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ
तेरी तरफ़ उठाए रखता हूँ।

10क्या तू मुर्दों के लिए मोजिज़े करेगा?
क्या पाताल के बाशिन्दे उठ कर तेरी तम्जीद
करेंगे? (सिलाह)
11क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़्क़त या पाताल
में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?
12क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्क-ए-
फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे
पुकारता हूँ, मेरी दुआ सुब्ह-सवेरे तेरे सामने
आ जाती है।
14ऐ रब, तू मेरी जान को क्यूँ रद्द करता,
अपने चेहरे को मुझ से पोशीदा क्यूँ रखता है?
15मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के
क़रीब रहा हूँ। तेरे दह्शतनाक हमले बर्दाश्त
करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।
16तेरा भड़कता क़हर मुझ पर से गुज़र गया,
तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
17दिन भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे
रखते हैं, हर तरफ़ से मुझ पर हम्लाआवर होते
हैं।
18तू ने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझ से
दूर कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त
बन गई है।

इस्राईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

89 ऐतान इज़्राही का हिक्मत का गीत।
मैं अबद तक रब की मेहरबानियों
की मद्हसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से
तेरी वफ़ा का एलान करूँगा।
2क्यूँकि मैं बोला, "तेरी शफ़्क़त हमेशा तक
क़ाइम है, तू ने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुन्याद
आसमान पर ही रखी है।"
3तू ने फ़रमाया, "मैं ने अपने चुने हुए बन्दे
से अह्द बांधा, अपने ख़ादिम दाऊद से क़सम
खा कर वादा किया है,
4'मैं तेरी नस्ल को हमेशा तक क़ाइम रखूँगा,
तेरा तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा'।"
(सिलाह)

5ऐ रब, आसमान तेरे मोजिज़ों की सताइश
करेंगे, मुक़द्दसीन की जमाअत में ही तेरी
वफ़ादारी की तम्जीद करेंगे।
6क्यूँकि बादलों में कौन रब की मानिन्द है?
इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिन्द है?
7जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल
हैं वह अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उस
के इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अज़मत और
रोब छाया रहता है।
8ऐ रब, ऐ लश्करों के ख़ुदा, कौन तेरी
मानिन्द है? ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा
से घिरा रहता है।
9तू ठाठें मारते हुए समुन्दर पर हुकूमत
करता है। जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा
देता है।
10तू ने समुन्दरी अज़दहे रहब को कुचल
दिया, और वह मक़्तूल की मानिन्द बन गया।
अपने क़वी बाज़ू से तू ने अपने दुश्मनों को
तित्तर-बित्तर कर दिया।
11आसमान-ओ-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया
और जो कुछ उस में है तू ने क़ाइम किया।
12तू ने शिमाल-ओ-जुनूब को ख़ल्क़ किया।
तबूर और हर्मून तेरे नाम की ख़ुशी में नारे
लगाते हैं।
13तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर
है। तेरा दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए
तय्यार है।
14रास्ती और इन्साफ़ तेरे तख़्त की बुन्याद
हैं। शफ़्क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती
हैं।

15मुबारक है वह क़ौम जो तेरी ख़ुशी के
नारे लगा सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर
में चलेंगे।
16रोज़ाना वह तेरे नाम की ख़ुशी मनाएँगे
और तेरी रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
17क्यूँकि तू ही उन की ताक़त की शान है,
और तू अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
18क्यूँकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा
बादशाह इस्राईल के क़ुद्दूस ही का है।

19माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से
हमकलाम हुआ। उस वक़्त तू ने फ़रमाया, "मैं
ने एक सूरमे को ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में
से एक को चुन कर सरफ़राज़ किया है।
20मैं ने अपने ख़ादिम दाऊद को पा लिया
और उसे अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया
है।
21मेरा हाथ उसे क़ाइम रखेगा, मेरा बाज़ू
उसे तक़वियत देगा।
22दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर
उसे ख़ाक में नहीं मिलाएँगे।
23उस के आगे आगे मैं उस के दुश्मनों को
पाश पाश करूँगा। जो उस से नफ़रत रखते हैं
उन्हें ज़मीन पर पटख़ दूँगा।
24मेरी वफ़ा और मेरी शफ़्क़त उस के साथ
रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
25मैं उस के हाथ को समुन्दर पर और उस
के दहने हाथ को दरयाओं पर हुकूमत करने
दूँगा।
26वह मुझे पुकार कर कहेगा, 'तू मेरा बाप,
मेरा ख़ुदा और मेरी नजात की चटान है।'
27मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का
सब से आला बादशाह बनाऊँगा।
28मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़्क़त से
नवाज़ता रहूँगा, मेरा उस के साथ अह्द कभी
तमाम नहीं होगा।
29मैं उस की नस्ल हमेशा तक क़ाइम रखूँगा,
जब तक आसमान क़ाइम है उस का तख़्त
क़ाइम रखूँगा।
30अगर उस के बेटे मेरी शरीअत तर्क करके
मेरे अह्काम पर अमल न करें,
31अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती
करके मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी न
गुज़ारें

32तो मैं लाठी ले कर उन की तादीब करूँगा
और मोहलक वबाओं से उन के गुनाहों की
सज़ा दूँगा।
33लेकिन मैं उसे अपनी शफ़्क़त से महरूम
नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इन्कार नहीं
करूँगा।
34न मैं अपने अह्द की बेहुरमती करूँगा, न
वह कुछ तब्दील करूँगा जो मैं ने फ़रमाया है।
35मैं ने एक बार सदा के लिए अपनी
क़ुद्दूसियत की क़सम खा कर वादा किया है,
और मैं दाऊद को कभी धोका नहीं दूँगा।
36उस की नस्ल अबद तक क़ाइम रहेगी,
उस का तख़्त आफ़्ताब की तरह मेरे सामने
खड़ा रहेगा।
37चाँद की तरह वह हमेशा तक बरक़रार
रहेगा, और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार
है।" (सिलाह)

38लेकिन अब तू ने अपने मसह किए हुए
ख़ादिम को ठुकरा कर रद्द किया, तू उस से
ग़ज़बनाक हो गया है।
39तू ने अपने ख़ादिम का अह्द नामन्ज़ूर
किया और उस का ताज ख़ाक में मिला कर
उस की बेहुरमती की है।
40तू ने उस की तमाम फ़सीलें ढा कर उस
के क़िलों को मल्बे के ढेर बना दिया है।
41जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता
है। वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया है।
42तू ने उस के मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ
सरफ़राज़ किया, उस के तमाम दुश्मनों को
ख़ुश कर दिया है।
43तू ने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर
करके उसे जंग में फ़त्ह पाने से रोक दिया है।
44तू ने उस की शान ख़त्म करके उस का
तख़्त ज़मीन पर पटख़ दिया है।
45तू ने उस की जवानी के दिन मुख़्तसर
करके उसे रुस्वाई की चादर में लपेटा है।
(सिलाह)

46ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आप
को हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर
अबद तक आग की तरह भड़कता रहेगा?
47याद रहे कि मेरी ज़िन्दगी कितनी
मुख़्तसर है, कि तू ने तमाम इन्सान कितने
फ़ानी ख़ल्क़ किए हैं।
48कौन है जिस का मौत से वास्ता न पड़े,
कौन है जो हमेशा ज़िन्दा रहे? कौन अपनी
जान को मौत के क़ब्ज़े से बचाए रख सकता
है? (सिलाह)
49ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ
हैं जिन का वादा तू ने अपनी वफ़ा की क़सम
खा कर दाऊद से किया?
50ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद
कर। मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान
से दुखता है,
51क्यूँकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-
तान की, उन्हों ने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम
को हर क़दम पर लान-तान की है!

52अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर
आमीन।

चौथी किताब 90-106

फ़ानी इन्सान अल्लाह में पनाह ले

90 मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी
पनाहगाह रहा है।
2इस से पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू
ज़मीन और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही
था। ऐ अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।
3तू इन्सान को दुबारा ख़ाक होने देता है। तू
फ़रमाता है, 'ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक में
मिल जाओ!'
4क्यूँकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के
गुज़रे हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर
की मानिन्द हैं।

5तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता
है, वह नींद और उस घास की मानिन्द हैं जो
सुब्ह को फूट निकलती है।
6वह सुब्ह को फूट निकलती और उगती है,
लेकिन शाम को मुरझा कर सूख जाती है।

7क्यूँकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और
तेरे क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।
8तू ने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा,
हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में
लाया है।
9चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत
घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने
सालों के इख़तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िन्दगी
सर्द आह के बराबर ही होती है।
10हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा
ताक़त हो तो 80 साल तक पहुँचती है,
और जो दिन फ़ख़र का बाइस थे वह भी
तक्लीफ़दिह और बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र
जाते हैं, और हम परिन्दों की तरह उड़ कर चले
जाते हैं।
11कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता
है? कौन समझता है कि तेरा क़हर हमारी
ख़ुदातरसी की कमी के मुताबिक़ ही है?
12चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब
करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमन्द हो
जाएँ।

13ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू
कब तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस
खा!
14सुब्ह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर!
तब हम ज़िन्दगी भर बाग़ बाग़ होंगे और ख़ुशी
मनाएँगे।
15हमें उतने ही दिन ख़ुशी दिला जितने तू ने
हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें
दुख सहना पड़ा है।
16अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उन
की औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।

17रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी
दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर,
हाँ हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

अल्लाह की पनाह में

91 जो अल्लाह तआला की पनाह में
रहे वह क़ादिर-ए-मुतलक़ के साय
में सुकूनत करेगा।
2मैं कहूँगा, "ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा
क़िला है, मेरा ख़ुदा जिस पर मैं भरोसा रखता
हूँ।"

3क्यूँकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और
मोहलक मर्ज़ से छुड़ाएगा।
4वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढाँप लेगा,
और तू उस के परों तले पनाह ले सकेगा। उस
की वफ़ादारी तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।
5रात की दह्शतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस
तीर से जो दिन के वक़्त चले।
6उस मोहलक मर्ज़ से दह्शत मत खा जो
तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से
जो दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।
7गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो
जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ,
लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।
8तू अपनी आँखों से इस का मुलाहज़ा
करेगा, तू ख़ुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
9क्यूँकि तू ने कहा है, "रब मेरी पनाहगाह
है," तू अल्लाह तआला के साय में छुप गया
है।
10इस लिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं
पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब
फटकने नहीं पाएगी।

11क्यूँकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर
तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,
12और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे
ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे।

13तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम
रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को
कुचल देगा।
14रब फ़रमाता है, "चूँकि वह मुझ से लिपटा
रहता है इस लिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह
मेरा नाम जानता है इस लिए मैं उसे महफ़ूज़
रखूँगा।
15वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा।
मुसीबत में मैं उस के साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ा
कर उस की इज़्ज़त करूँगा।
16मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस
पर अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।"

अल्लाह की सताइश करने की ख़ुशी

92 ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ
अल्लाह तआला, तेरे नाम की मद्हसराई
करना भला है।
2सुब्ह को तेरी शफ़्क़त और रात को तेरी
वफ़ा का एलान करना भला है,
3ख़ासकर जब साथ साथ दस तारों वाला
साज़, सितार और सरोद बजते हैं।

4क्यूँकि ऐ रब, तू ने मुझे अपने कामों से
ख़ुश किया है, और तेरे हाथों के काम देख
कर मैं ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
5ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे
ख़यालात कितने गहरे हैं।
6नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इस
की समझ नहीं आती।
7गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते
और बदकार सब फलते फूलते हैं, लेकिन
आख़िरकार वह हमेशा के लिए हलाक हो
जाएंगे।
8मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलन्द
रहेगा।
9क्यूँकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन
यक़ीनन तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-
बित्तर हो जाएंगे।

10तू ने मुझे जंगली बैल की सी ताक़त दे कर
ताज़ा तेल से मसह किया है।
11मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त
से और मेरे कान उन शरीरों के अन्जाम से
लुत्फ़अन्दोज़ हुए हैं जो मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े
हुए हैं।

12रास्तबाज़ खजूर के दरख़्त की तरह फले
फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की
तरह बढ़ेगा।
13जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए
हैं वह हमारे ख़ुदा की बारगाहों में फलें फूलेंगे।
14वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तर-
ओ-ताज़ा और हरे-भरे रहेंगे।
15उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, "रब रास्त
है। वह मेरी चटान है, और उस में नारास्ती नहीं
होती।"

अल्लाह अबदी बादशाह है

93 रब बादशाह है, वह जलाल
से मुलब्बस है। रब जलाल से
मुलब्बस और क़ुदरत से कमरबस्ता है।
यक़ीनन दुनिया मज़बूत बुन्याद पर क़ाइम है,
और वह नहीं डगमगाएगी।

2तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क़ाइम है, तू
अज़ल से मौजूद है।
3ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचा
कर गरज उठे, सैलाब ठाठें मार कर गरज उठे।
4लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से
ज़्यादा ज़ोर-आवर, जो समुन्दर की ठाठों से
ज़्यादा ताक़तवर है। रब जो बुलन्दियों पर
रहता है कहीं ज़्यादा अज़ीम है।

5ऐ रब, तेरे अह्काम हर तरह से क़ाबिल-
ए-एतिमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक क़ुद्दूसियत
से आरास्ता रहेगा।

क़ौम पर ज़ुल्म करने वालों से रिहाई के लिए दुआ

94 ऐ रब, ऐ इन्तिक़ाम लेने वाले
ख़ुदा! ऐ इन्तिक़ाम लेने वाले
ख़ुदा, अपना नूर चमका।
2ऐ दुनिया के मुन्सिफ़, उठ कर मग़रूरों को
उन के आमाल की मुनासिब सज़ा दे।
3ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़त्ह
के नारे लगाएँगे?

4वह कुफ़्र की बातें उगलते रहते, तमाम
बदकार शेख़ी मारते रहते हैं।
5ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी
मौरूसी मिलकियत पर ज़ुल्म कर रहे हैं।
6बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के
घाट उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।
7वह कहते हैं, "यह रब को नज़र नहीं
आता, याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।"

8ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमक़ो,
तुम्हें कब समझ आएगी?
9जिस ने कान बनाया, क्या वह नहीं
सुनता? जिस ने आँख को तश्कील दिया क्या
वह नहीं देखता?
10जो अक़्वाम को तम्बीह करता और
इन्सान को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं
देता?
11रब इन्सान के ख़यालात जानता है, वह
जानता है कि वह दम भर के ही हैं।

12ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तर्बियत
देता है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम
देता है
13ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम
पाए और उस वक़्त तक सुकून से ज़िन्दगी
गुज़ारे जब तक बेदीनों के लिए गढ़ा तय्यार न
हो।
14क्यूँकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं
करेगा, वह अपनी मौरूसी मिलकियत को
तर्क नहीं करेगा।
15फ़ैसले दुबारा इन्साफ़ पर मब्नी होंगे,
और तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी
करेंगे।

16कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा?
कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
17अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान
जल्द ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।
18ऐ रब, जब मैं बोला, "मेरा पाँओ
डगमगाने लगा है" तो तेरी शफ़्क़त ने मुझे
सँभाला।
19जब तश्वीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन
करने लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को
ताज़ादम किया।

20ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे
साथ मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो
अपने फ़रमानों से ज़ुल्म करती है? हरगिज़
नहीं!
21वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए
आपस में मिल जाते और बेक़ुसूरों को क़ातिल
ठहराते हैं।
22लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और
मेरा ख़ुदा मेरी पनाह की चटान साबित हुआ
है।
23वह उन की नाइन्साफ़ी उन पर वापस
आने देगा और उन की शरीर हरकतों के जवाब
में उन्हें तबाह करेगा। रब हमारा ख़ुदा उन्हें
नेस्त करेगा।

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

95 आओ, हम शादियाना बजा कर
रब की मद्हसराई करें, ख़ुशी के

नारे लगा कर अपनी नजात की चटान की
तम्जीद करें!
2आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उस के
हुज़ूर आएँ, गीत गा कर उस की सताइश करें।
3क्यूँकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों
पर अज़ीम बादशाह है।
4उस के हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं,
और पहाड़ की बुलन्दियाँ भी उसी की हैं।
5समुन्दर उस का है, क्यूँकि उस ने उसे
ख़ल्क़ किया। ख़ुश्की उस की है, क्यूँकि उस
के हाथों ने उसे तश्कील दिया।
6आओ हम सिज्दा करें और रब अपने
ख़ालिक़ के सामने झुक कर घुटने टेकें।
7क्यूँकि वह हमारा ख़ुदा है और हम उस की
चरागाह की क़ौम और उस के हाथ की भेड़ें
हैं। अगर तुम आज उस की आवाज़ सुनो
8"तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस
तरह मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में
मस्सा में हुआ।
9वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आज़माया
और जाँचा, हालाँकि उन्हों ने मेरे काम देख
लिए थे।
10चालीस साल मैं उस नस्ल से घिन खाता
रहा। मैं बोला, 'उन के दिल हमेशा सहीह राह
से हट जाते हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।'
11अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई, 'यह
कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं
उन्हें सुकून देता'।"

दुनिया का ख़ालिक़ और मुन्सिफ़

96 रब की तम्जीद में नया गीत गाओ,
ऐ पूरी दुनिया, रब की मद्हसराई
करो।
2रब की तम्जीद में गीत गाओ, उस के नाम
की सताइश करो, रोज़-ब-रोज़ उस की नजात
की ख़ुशख़बरी सुनाओ।
3क़ौमों में उस का जलाल और तमाम
उम्मतों में उस के अजाइब बयान करो।
4क्यूँकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत
लाइक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
5क्यूँकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही
हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।
6उस के हुज़ूर शान-ओ-शौकत, उस के
मक़्दिस में क़ुदरत और जलाल है।
7ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तम्जीद करो,
रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
8रब के नाम को जलाल दो। क़ुर्बानी ले कर
उस की बारगाहों में दाख़िल हो जाओ।
9मुक़द्दस लिबास से आरास्ता हो कर रब को
सिज्दा करो। पूरी दुनिया उस के सामने लरज़
उठे।
10क़ौमों में एलान करो, "रब ही बादशाह
है! यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ाइम है और
नहीं डगमगाएगी। वह इन्साफ़ से क़ौमों की
अदालत करेगा।"

11आसमान ख़ुश हो, ज़मीन जश्न मनाए!
समुन्दर और जो कुछ उस में है ख़ुशी से गरज
उठे।
12मैदान और जो कुछ उस में है बाग़ बाग़
हो। फिर जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
13वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे,
क्यूँकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत
करने आ रहा है। वह इन्साफ़ से दुनिया
की अदालत करेगा और अपनी सदाक़त से
अक़्वाम का फ़ैसला करेगा।

अल्लाह की सल्तनत पर ख़ुशी

97 रब बादशाह है! ज़मीन जश्न
मनाए, साहिली इलाक़े दूर दूर तक
ख़ुश हों।
2वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता
है, रास्ती और इन्साफ़ उस के तख़्त की बुन्याद
हैं।
3आग उस के आगे आगे भड़क कर चारों
तरफ़ उस के दुश्मनों को भस्म कर देती है।

4उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को
रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देख कर पेच-
ओ-ताब खाने लगी।
5रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के
मालिक के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह
पिघल गए।
6आसमानों ने उस की रास्ती का एलान
किया, और तमाम क़ौमों ने उस का जलाल
देखा।

7तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर
फ़ख़र करते हैं शर्मिन्दा हों। ऐ तमाम माबूदो,
उसे सिज्दा करो!
8कोह-ए-सिय्यून सुन कर ख़ुश हुआ। ऐ
रब, तेरे फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ[a]
बाग़ बाग़ हुईं।
9क्यूँकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सब से
आला है, तू तमाम माबूदों से सरबुलन्द है।

10तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई
से नफ़रत करो! रब अपने ईमानदारों की
जान को महफ़ूज़ रखता है, वह उन्हें बेदीनों
के क़ब्ज़े से छुड़ाता है।
11रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के
दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया
गया है।
12ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उस के
मुक़द्दस नाम की सताइश करो।

पूरी दुनिया का शाही मुन्सिफ़

98 रब की तम्जीद में नया गीत गाओ,
क्यूँकि उस ने मोजिज़े किए हैं।
अपने दहने हाथ और मुक़द्दस बाज़ू से उस
ने नजात दी है।
2रब ने अपनी नजात का एलान किया और
अपनी रास्ती क़ौमों के रू-ब-रू ज़ाहिर की है।
3उस ने इस्राईल के लिए अपनी शफ़क़त
और वफ़ा याद की है। दुनिया की इन्तिहाओं
ने सब हमारे ख़ुदा की नजात देखी है।
4ऐ पूरी दुनिया, नारे लगा कर रब की
मद्हसराई करो! आपे में न समाओ और जश्न
मना कर हम्द के गीत गाओ!
5सरोद बजा कर रब की मद्हसराई करो,
सरोद और गीत से उस की सताइश करो।
6तुरम और नरसिंगा फूँक कर रब बादशाह
के हुज़ूर ख़ुशी के नारे लगाओ!
7समुन्दर और जो कुछ उस में है, दुनिया
और उस के बाशिन्दे ख़ुशी से गरज उठें।
8दरया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिल कर
ख़ुशी मनाएँ,
9वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्यूँकि
वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह
इन्साफ़ से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती
से क़ौमों का फ़ैसला करेगा।

क़ुद्दूस ख़ुदा

99 रब बादशाह है, अक़्वाम लरज़
उठें! वह करूबी फ़रिश्तों के
दरमियान तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!
2कोह-ए-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम
अक़्वाम पर सरबुलन्द है।
3वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की
सताइश करें, क्यूँकि वह क़ुद्दूस है।

4वह बादशाह की क़ुदरत की तम्जीद करें
जो इन्साफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू
ही ने अदल क़ाइम किया, तू ही ने याक़ूब में
इन्साफ़ और रास्ती पैदा की है।
5रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उस के
पाँओ की चौकी के सामने सिज्दा करो, क्यूँकि
वह क़ुद्दूस है।

[a]एक और मुमकिना तर्जुमा : यहूदाह की
आबादियाँ।

6मूसा और हारून उस के इमामों में से थे।
समूएल भी उन में से था जो उस का नाम
पुकारते थे। उन्हों ने रब को पुकारा, और उस
ने उन की सुनी।
7वह बादल के सतून में से उन से हमकलाम
हुआ, और वह उन अह्काम और फ़रमानों के
ताबे रहे जो उस ने उन्हें दिए थे।
8ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू ने उन की सुनी। तू जो
अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता
उन्हें उन की बुरी हरकतों की सज़ा भी देता
रहा।
9रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो और उस
के मुक़द्दस पहाड़ पर सिज्दा करो, क्यूँकि रब
हमारा ख़ुदा क़ुद्दूस है।

अल्लाह की सताइश करो!

100 शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी के लिए
ज़बूर।
ऐ पूरी दुनिया, ख़ुशी के नारे लगा कर रब
की मद्हसराई करो!
2ख़ुशी से रब की इबादत करो, जश्न मनाते
हुए उस के हुज़ूर आओ!
3जान लो कि रब ही ख़ुदा है। उसी ने हमें
ख़ल्क़ किया, और हम उस के हैं, उस की क़ौम
और उस की चरागाह की भेड़ें।

4शुक्र करते हुए उस के दरवाज़ों में दाख़िल
हो, सताइश करते हुए उस की बारगाहों में
हाज़िर हो। उस का शुक्र करो, उस के नाम
की तम्जीद करो!
5क्यूँकि रब भला है। उस की शफ़्क़त
अबदी है, और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-
पुश्त क़ाइम है।

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

101 दाऊद का ज़बूर।
मैं शफ़्क़त और इन्साफ़ का
गीत गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्हसराई
करूँगा।
2मैं बड़ी एहतियात से बेइल्ज़ाम राह पर
चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा?
मैं ख़ुलूसदिली से अपने घर में ज़िन्दगी
गुज़ारूँगा।
3मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं
रखता और बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ।
ऐसी चीज़ें मेरे साथ लिपट न जाएँ।
4झूटा दिल मुझ से दूर रहे। मैं बुराई को
जानना ही नहीं चाहता।
5जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत
लगाए उसे मैं ख़ामोश कराऊँगा, जिस की
आँखें मग़रूर और दिल मुतकब्बिर हो उसे
बर्दाश्त नहीं करूँगा।
6मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी
रहती हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइल्ज़ाम
राह पर चले वही मेरी ख़िदमत करे।
7धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलने
वाला मेरी मौजूदगी में क़ाइम न रहे।
8हर सुब्ह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को
ख़ामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को
रब के शहर में से मिटाया जाए।

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

102 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त
जब वह निढाल हो कर रब के
सामने अपनी आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता है।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी
आहें तेरे हुज़ूर पहुँचें।
2जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझ
से छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़
झुका। जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।
3क्यूँकि मेरे दिन धुएँ की तरह ग़ाइब हो रहे
हैं, मेरी हड्डियाँ कोएलों की तरह दहक रही हैं।
4मेरा दिल घास की तरह झुलस कर सूख
गया है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।
5आह-ओ-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म
सुकड़ गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई
हैं।

6मैं रेगिस्तान में दश्ती उल्लू और खंडरात में
छोटे उल्लू की मानिन्द हूँ।
7मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर
तन्हा परिन्दे की मानिन्द हूँ।
8दिन भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते
हैं। जो मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम ले
कर लानत करते हैं।
9राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ
उस में मेरे आँसू मिले होते हैं।
10क्यूँकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा
ग़ज़ब नाज़िल हुआ है। तू ने मुझे उठा कर
ज़मीन पर पटख़ दिया है।
11मेरे दिन शाम के ढलने वाले साय की
मानिन्द हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन
है, तेरा नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहता है।
13अब आ, कोह-ए-सिय्यून पर रहम कर।
क्यूँकि उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ
गया है, मुक़र्ररा वक़्त आ गया है।
14क्यूँकि तेरे ख़ादिमों को उस का एक एक
पत्थर प्यारा है, और वह उस के मल्बे पर तरस
खाते हैं।
15तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और
दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का
ख़ौफ़ खाएँगे।
16क्यूँकि रब सिय्यून को अज़ सर-ए-नौ
तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ
ज़ाहिर हो जाएगा।
17मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा
और उन की फ़र्यादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

18आने वाली नस्ल के लिए यह क़लमबन्द
हो जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई
वह रब की सताइश करे।
19क्यूँकि रब ने अपने मक़्दिस की बुलन्दियों
से झाँका है, उस ने आसमान से ज़मीन पर
नज़र डाली है
20ताकि क़ैदियों की आह-ओ-ज़ारी सुने
और मरने वालों की ज़न्जीरें खोले।
21क्यूँकि उस की मर्ज़ी है कि वह कोह-ए-
सिय्यून पर रब के नाम का एलान करें और
यरूशलम में उस की सताइश करें,
22कि क़ौमें और सल्तनतें मिल कर जमा हो
जाएँ और रब की इबादत करें।

23रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़
कर मेरे दिन मुख़्तसर कर दिए हैं।
24मैं बोला, "ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िन्दों के
मुल्क से दूर न कर, मेरी ज़िन्दगी तो अधूरी रह
गई है। लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम
रहते हैं।
25तू ने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुन्याद
रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को
बनाया।
26यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ाइम
रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस फट
जाएंगे। तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल
देगा, और वह जाते रहेंगे।
27लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी
ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होती।
28तेरे ख़ादिमों के फ़र्ज़न्द तेरे हुज़ूर बसते
रहेंगे, और उन की औलाद तेरे सामने क़ाइम
रहेगी।"

रब की शफ़क़त की सताइश

103 दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश
कर! मेरा रग-ओ-रेशा उस के क़ुद्दूस नाम की
हम्द करे!
2ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो
कुछ उस ने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।
3क्यूँकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़
करता, तुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा देता
है।

4वह इवज़ाना दे कर तेरी जान को मौत के
गढ़े से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़्क़त
और रहमत के ताज से आरास्ता करता है।
5वह तेरी ज़िन्दगी को अच्छी चीज़ों से सेर
करता है, और तू दुबारा जवान हो कर उक़ाब
की सी तक़वियत पाता है।

6रब तमाम मज़्लूमों के लिए रास्ती और
इन्साफ़ क़ाइम करता है।
7उस ने अपनी राहें मूसा पर और अपने
अज़ीम काम इस्राईलियों पर ज़ाहिर किए।
8रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मुल
और शफ़्क़त से भरपूर है।
9न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक
नाराज़ रहेगा।
10न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा
देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज्र देता
है।
11क्यूँकि जितना बुलन्द आसमान है, उतनी
ही अज़ीम उस की शफ़्क़त उन पर है जो उस
का ख़ौफ़ मानते हैं।
12जितनी दूर मशरिक़ मग़रिब से है उतना
ही उस ने हमारे क़ुसूर हम से दूर कर दिए हैं।
13जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस
खाता है उसी तरह रब उन पर तरस खाता
है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं।

14क्यूँकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे
याद है कि हम ख़ाक ही हैं।
15इन्सान के दिन घास की मानिन्द हैं, और
वह जंगली फूल की तरह ही फलता फूलता
है।
16जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं
रहता, और उस के नाम-ओ-निशान का भी
पता नहीं चलता।

17लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर
वह हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी
रास्ती उन के पोतों और नवासों पर भी ज़ाहिर
करेगा।
18शर्त यह है कि वह उस के अह्द के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें और ध्यान से उस के
अह्काम पर अमल करें।

19रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ाइम
किया है, और उस की बादशाही सब पर
हुकूमत करती है।
20ऐ रब के फ़रिश्तो, उस के ताक़तवर
सूरमाओ, जो उस के फ़रमान पूरे करते हो
ताकि उस का कलाम माना जाए, रब की
सताइश करो!
21ऐ तमाम लश्करो, तुम सब जो उस के
ख़ादिम हो और उस की मर्ज़ी पूरी करते हो,
रब की सताइश करो!
22तुम सब जिन्हें उस ने बनाया, रब की
सताइश करो! उस की सल्तनत की हर जगह
पर उस की तम्जीद करो। ऐ मेरी जान, रब की
सताइश कर!

ख़ालिक़ की हम्द-ओ-सना

104 ऐ मेरी जान, रब की सताइश
कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू
निहायत ही अज़ीम है, तू जाह-ओ-जलाल से
आरास्ता है।
2तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढ़े रहता है। तू
आसमान को ख़ैमे की तरह तान कर
3अपना बालाखाना उस के पानी के बीच
में तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू
हवा के परों पर सवार होता है।
4तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के
शोलों को अपने ख़ादिम बना देता है।

5तू ने ज़मीन को मज़बूत बुन्याद पर रखा
ताकि वह कभी न डगमगाए।
6सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया,
और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।

7लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ,
तेरी गरजती आवाज़ सुन कर वह एक दम
भाग गया।
8तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन
जगहों पर उतर आईं जो तू ने उन के लिए
मुक़र्रर की थीं।
9तू ने एक हद बांधी जिस से पानी बढ़ नहीं
सकता। आइन्दा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं
ढाँकने का।
10तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह
पहाड़ों में से बह निकलते हैं।
11बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम
जानवरों को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आ
कर अपनी प्यास बुझाते हैं।
12परिन्दे उन के किनारों पर बसेरा करते,
और उन की चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों
में से सुनाई देती हैं।
13तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर
करता है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर हो कर
हर तरह का फल लाती है।
14तू जानवरों के लिए घास फूटने और
इन्सान के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह
ज़मीन की काश्तकारी करके रोटी हासिल
करे।
15तेरी मै इन्सान का दिल ख़ुश करती, तेरा
तेल उस का चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी
उस का दिल मज़बूत करती है।
16रब के दरख़्त यानी लुबनान में उस के
लगाए हुए देवदार के दरख़्त सेराब रहते हैं।
17परिन्दे उन में अपने घोंसले बना लेते हैं,
और लक़्लक़ जूनीपर के दरख़्त में अपना
आशियाना।
18पहाड़ों की बुलन्दियों पर पहाड़ी बकरों
का राज है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
19तू ने साल को महीनों में तक़्सीम करने के
लिए चाँद बनाया, और सूरज को ग़ुरूब होने
के औक़ात मालूम हैं।
20तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता
है और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।
21जवान शेरबबर दहाड़ कर शिकार के
पीछे पड़ जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक
का मुतालबा करते हैं।
22फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह
खिसक कर अपने भटों में छुप जाते हैं।
23उस वक़्त इन्सान घर से निकल कर अपने
काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़
रहता है।

24ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम
हैं! तू ने हर एक को हिक्मत से बनाया, और
ज़मीन तेरी मख़्लूक़ात से भरी पड़ी है।

25समुन्दर को देखो, वह कितना बड़ा और
वसी है। उस में बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी
और छोटे भी।
26उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफ़र
करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान
फिरता है, वह अज़दहा जिसे तू ने उस में
उछलने कूदने के लिए तश्कील दिया था।
27सब तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें
वक़्त पर खाना मुहय्या करे।
28तू उन में ख़ुराक तक़्सीम करता है तो वह
उसे इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है
तो वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
29जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उन
के हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उन का दम
निकाल लेता है तो वह नेस्त हो कर दुबारा
ख़ाक में मिल जाते हैं।
30तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो
जाते हैं। तू ही रू-ए-ज़मीन को बहाल करता
है।

31रब का जलाल अबद तक क़ाइम रहे! रब
अपने काम की ख़ुशी मनाए!
32वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह
लरज़ उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो
वह धुआँ छोड़ते हैं।

33मैं उम्र भर रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा,
जब तक ज़िन्दा हूँ अपने ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।
34मेरी बात उसे पसन्द आए! मैं रब से
कितना ख़ुश हूँ!
35गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन
नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की
सताइश कर! रब की हम्द हो!

माज़ी में रब की नजात की हम्द

105 रब का शुक्र करो और उस का
नाम पुकारो! अक़्वाम में उस
के कामों का एलान करो।
2साज़ बजा कर उस की मद्हसराई करो।
उस के तमाम अजाइब के बारे में लोगों को
बताओ।
3उस के मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब
के तालिब दिल से ख़ुश हों।
4रब और उस की क़ुदरत की दरयाफ़्त करो,
हर वक़्त उस के चेहरे के तालिब रहो।
5जो मोजिज़े उस ने किए उन्हें याद करो।
उस के इलाही निशान और उस के मुँह के
फ़ैसले दोहराते रहो।
6तुम जो उस के ख़ादिम इब्राहीम की
औलाद और याक़ूब के फ़र्ज़न्द हो, जो उस
के बर्गुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!
7वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया
की अदालत करता है।
8वह हमेशा अपने अह्द का ख़याल रखता
है, उस कलाम का जो उस ने हज़ार पुश्तों के
लिए फ़रमाया था।
9यह वह अह्द है जो उस ने इब्राहीम से
बांधा, वह वादा जो उस ने क़सम खा कर
इस्हाक़ से किया था।
10उस ने उसे याक़ूब के लिए क़ाइम किया
ताकि वह उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे,
उस ने तस्दीक़ की कि यह मेरा इस्राईल से
अबदी अह्द है।
11साथ साथ उस ने फ़रमाया, "मैं तुझे
मुल्क-ए-कनआन दूँगा। यह तेरी मीरास का
हिस्सा होगा।"

12उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही
थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
13अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और
सल्तनतों में घूमते फिरते थे।
14लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को
ज़ुल्म करने न दिया, और उन की ख़ातिर उस
ने बादशाहों को डाँटा,
15"मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को
मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़्सान मत
पहुँचाना।"

16फिर अल्लाह ने मुल्क-ए-कनआन में
काल पड़ने दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा
ख़त्म किया।
17लेकिन उस ने उन के आगे आगे एक
आदमी को मिस्र भेजा यानी यूसुफ़ को जो
ग़ुलाम बन कर फ़रोख़्त हुआ।
18उस के पाँओ और गर्दन ज़न्जीरों में
जकड़े रहे
19जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिस की
पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के
फ़रमान ने उस की तस्दीक़ न की।
20तब मिस्री बादशाह ने अपने बन्दों को
भेज कर उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान
ने उसे आज़ाद किया।
21उस ने उसे अपने घराने पर निगरान और
अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुक़र्रर
किया।
22यूसुफ़ को फ़िरऔन के रईसों को अपनी
मर्ज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिस्री बुज़ुर्गों
को हिक्मत की तालीम देने की ज़िम्मादारी भी
दी गई।

23फिर याक़ूब का ख़ानदान मिस्र आया,
और इस्राईल हाम के मुल्क में अजनबी की
हैसियत से बसने लगा।
24वहाँ अल्लाह ने अपनी क़ौम को बहुत
फलने फूलने दिया, उस ने उसे उस के दुश्मनों
से ज़्यादा ताक़तवर बना दिया।
25साथ साथ उस ने मिस्रियों का रवय्या
बदल दिया, तो वह उस की क़ौम इस्राईल से
नफ़रत करके रब के ख़ादिमों से चालाकियाँ
करने लगे।

26तब अल्लाह ने अपने ख़ादिम मूसा और
अपने चुने हुए बन्दे हारून को मिस्र में भेजा।
27मुल्क-ए-हाम में आ कर उन्हों ने उन
के दरमियान अल्लाह के इलाही निशान और
मोजिज़े दिखाए।
28अल्लाह के हुक्म पर मिस्र पर तारीकी छा
गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्हों ने
उस के फ़रमान न माने।
29उस ने उन का पानी ख़ून में बदल कर उन
की मछलियों को मरवा दिया।
30मिस्र के मुल्क पर मेंढकों के ग़ोल छा गए
जो उन के हुक्मरानों के अन्दरूनी कमरों तक
पहुँच गए।
31अल्लाह के हुक्म पर मिस्र के पूरे इलाक़े
में मक्खियों और जूओं के ग़ोल फैल गए।
32बारिश की बजाए उस ने उन के मुल्क पर
ओले और दहकते शोले बरसाए।
33उस ने उन की अंगूर की बेलें और अन्जीर
के दरख़्त तबाह कर दिए, उन के इलाक़े के
दरख़्त तोड़ डाले।
34उस के हुक्म पर अनगिनत टिड्डियाँ अपने
बच्चों समेत मुल्क पर हम्लाआवर हुईं।
35वह उन के मुल्क की तमाम हरियाली और
उन के खेतों की तमाम पैदावार चट कर गईं।
36फिर अल्लाह ने मिस्र में तमाम पहलौठों
को मार डाला, उन की मर्दानगी का पहला
फल तमाम हुआ।

37इस के बाद वह इस्राईल को चाँदी और
सोने से नवाज़ कर मिस्र से निकाल लाया। उस
वक़्त उस के क़बीलों में ठोकर खाने वाला एक
भी नहीं था।
38मिस्र ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्यूँकि
उन पर इस्राईल की दह्शत छा गई थी।
39दिन को अल्लाह ने उन के ऊपर बादल
कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग
मुहय्या की ताकि रौशनी हो।
40जब उन्हों ने ख़ुराक माँगी तो उस ने उन्हें
बटेर पहुँचा कर आसमानी रोटी से सेर किया।
41उस ने चटान को चाक किया तो पानी फूट
निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ
बहने लगीं।

42क्यूँकि उस ने उस मुक़द्दस वादे का
ख़याल रखा जो उस ने अपने ख़ादिम इब्राहीम
से किया था।
43चुनाँचे वह अपनी चुनी हुई क़ौम को
मिस्र से निकाल लाया, और वह ख़ुशी और
शादमानी के नारे लगा कर निकल आए।
44उस ने उन्हें दीगर अक़्वाम के ममालिक
दिए, और उन्हों ने दीगर उम्मतों की मेहनत के
फल पर क़ब्ज़ा किया।
45क्यूँकि वह चाहता था कि वह उस के
अह्काम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारें। रब की हम्द हो।

अल्लाह का फ़ज़्ल और इस्राईल की सरकशी

106 रब की हम्द हो! रब का शुक्र
करो, क्यूँकि वह भला है, और
उस की शफ़्क़त अबदी है।
2कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना
सकता, कौन उस की मुनासिब तम्जीद कर
सकता है?

3मुबारक हैं वह जो इन्साफ़ क़ाइम रखते,
जो हर वक़्त रास्त काम करते हैं।

4ऐ रब, अपनी क़ौम पर मेहरबानी करते
वक़्त मेरा ख़याल रख, नजात देते वक़्त मेरी
भी मदद कर
5ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली
देख सकूँ और तेरी क़ौम की ख़ुशी में शरीक
हो कर तेरी मीरास के साथ सताइश कर सकूँ।

6हम ने अपने बापदादा की तरह गुनाह
किया है, हम से नाइन्साफ़ी और बेदीनी
सरज़द हुई है।
7जब हमारे बापदादा मिस्र में थे तो उन्हें
तेरे मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी
मुतअद्दिद मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह
समुन्दर यानी बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पर सरकश
हुए।

8तो भी उस ने उन्हें अपने नाम की ख़ातिर
बचाया, क्यूँकि वह अपनी क़ुदरत का इज़हार
करना चाहता था।
9उस ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम को झिड़का तो
वह ख़ुश्क हो गया। उस ने उन्हें समुन्दर की
गहराइयों में से यूँ गुज़रने दिया जिस तरह
रेगिस्तान में से।
10उस ने उन्हें नफ़रत करने वाले के हाथ से
छुड़ाया और इवज़ाना दे कर दुश्मन के हाथ से
रिहा किया।
11उन के मुख़ालिफ़ पानी में डूब गए। एक
भी न बचा।
12तब उन्हों ने अल्लाह के फ़रमानों पर
ईमान ला कर उस की मद्हसराई की।

13लेकिन जल्द ही वह उस के काम भूल
गए। वह उस की मर्ज़ी का इन्तिज़ार करने के
लिए तय्यार न थे।
14रेगिस्तान में शदीद लालच में आ कर उन्हों
ने वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़माया।
15तब उस ने उन की दरख़्वास्त पूरी की,
लेकिन साथ साथ मोहलक वबा भी उन में
फैला दी।

16ख़ैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस
इमाम हारून से हसद करने लगे।
17तब ज़मीन खुल गई, और उस ने दातन
को हड़प कर लिया, अबीराम के जथ्थे को
अपने अन्दर दफ़न कर लिया।
18आग उन के जथ्थे में भड़क उठी, और
बेदीन नज़र-ए-आतिश हुए।

19वह कोह-ए-होरिब यानी सीना के दामन
में बछड़े का बुत ढाल कर उस के सामने औंधे
मुँह हो गए।
20उन्हों ने अल्लाह को जलाल देने के बजाए
घास खाने वाले बैल की पूजा की।
21वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी
ने उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिस्र में अज़ीम
काम किए थे।
22जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो
जलाली वाक़िआत बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पर पेश
आए थे वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।
23चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें
नेस्त-ओ-नाबूद करूँगा। लेकिन उस का चुना
हुआ ख़ादिम मूसा रख़ने में खड़ा हो गया ताकि
उस के ग़ज़ब को इस्राईलियों को मिटाने से
रोके। सिर्फ़ इस वजह से अल्लाह अपने इरादे
से बाज़ आया।

24फिर उन्हों ने कनआन के ख़ुशगवार मुल्क
को हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि
अल्लाह अपना वादा पूरा करेगा।
25वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब
की आवाज़ सुनने के लिए तय्यार न हुए।
26तब उस ने अपना हाथ उन के ख़िलाफ़
उठाया ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे
27और उन की औलाद को दीगर अक़्वाम
में फैंक कर मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर
कर दे।

28वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और
मुर्दों के लिए पेश की गई क़ुर्बानियों का गोश्त
खाने लगे।
29उन्हों ने अपनी हरकतों से रब को तैश
दिलाया तो उन में मोहलक बीमारी फैल गई।
30लेकिन फ़ीन्हास ने उठ कर उन की
अदालत की। तब वबा रुक गई।
31इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-
पुश्त और अबद तक रास्तबाज़ क़रार दिया।

32मरीबा के चश्मे पर भी उन्हों ने रब को
ग़ुस्सा दिलाया। उन ही के बाइस मूसा का बुरा
हाल हुआ।
33क्यूँकि उन्हों ने उस के दिल में इतनी
तल्ख़ी पैदा की कि उस के मुँह से बेजा बातें
निकलीं।

34जो दीगर क़ौमें मुल्क में थीं उन्हें उन्हों ने
नेस्त न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने
को कहा था।
35न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता
बांध कर उन में घुल मिल गए और उन के रस्म-
ओ-रिवाज अपना लिए।
36वह उन के बुतों की पूजा करने में लग
गए, और यह उन के लिए फंदे का बाइस बन
गए।
37वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के
हुज़ूर क़ुर्बान करने से भी न कतराए।
38हाँ, उन्हों ने अपने बेटे-बेटियों को
कनआन के देवताओं के हुज़ूर पेश करके
उन का मासूम ख़ून बहाया। इस से मुल्क की
बेहुरमती हुई।
39वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक
और अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से
बेवफ़ा हुए।

40तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़
हुआ, और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से
घिन आने लगी।
41उस ने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया,
और जो उन से नफ़रत करते थे वह उन पर
हुकूमत करने लगे।
42उन के दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उन
को अपना मुती बना लिया।
43अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा,
हालाँकि वह अपने सरकश मन्सूबों पर तुले
रहे और अपने क़ुसूर में डूबते गए।
44लेकिन उस ने मदद के लिए उन की आहें
सुन कर उन की मुसीबत पर ध्यान दिया।
45उस ने उन के साथ अपना अह्द याद
किया, और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस
पछताया।
46उस ने होने दिया कि जिस ने भी उन्हें
गिरिफ़्तार किया उस ने उन पर तरस खाया।

47ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमें बचा! हमें दीगर
क़ौमों से निकाल कर जमा कर। तब ही हम
तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे
क़ाबिल-ए-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।
48अज़ल से अबद तक रब, इस्राईल के ख़ुदा
की हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, "आमीन! रब
की हम्द हो!"

पाँचवीं किताब 107-150

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

107 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह
भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।
2रब के नजातयाफ़्ता जिन को उस ने
इवज़ाना दे कर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया
है सब यह कहें।
3उस ने उन्हें मशरिक़ से मग़रिब तक और
शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से
इकट्ठा किया है।

4बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूल कर
वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी
आबादी न मिली।

5भूक और प्यास के मारे उन की जान
निढाल हो गई।
6तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को
पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम
परेशानियों से छुटकारा दिया।
7उस ने उन्हें सहीह राह पर ला कर ऐसी
आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।
8वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी
शफ़्क़त और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर
किए हैं।
9क्यूँकि वह प्यासी जान को आसूदा करता
और भूकी जान को कस्रत की अच्छी चीज़ों
से सेर करता है।

10दूसरे ज़न्जीरों और मुसीबत में जकड़े हुए
अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,
11क्यूँकि वह अल्लाह के फ़रमानों से
सरकश हुए थे, उन्हों ने अल्लाह तआला का
फ़ैसला हक़ीर जाना था।
12इस लिए अल्लाह ने उन के दिल को
तक्लीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब
वह ठोकर खा कर गिर गए और मदद करने
वाला कोई न रहा था
13तो उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को
पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम
परेशानियों से छुटकारा दिया।
14वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से
निकाल लाया और उन की ज़न्जीरें तोड़
डालीं।
15वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी
शफ़्क़त और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर
किए हैं।
16क्यूँकि उस ने पीतल के दरवाज़े तोड़
डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश
चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों
में मुब्तला हुए।
18उन्हें हर ख़ुराक से घिन आने लगी, और
वह मौत के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।
19तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को
पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम
परेशानियों से छुटकारा दिया।
20उस ने अपना कलाम भेज कर उन्हें शिफ़ा
दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।
21वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी
शफ़्क़त और मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए
हैं।
22वह शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पेश करें
और ख़ुशी के नारे लगा कर उस के कामों का
चर्चा करें।

23बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और
तिजारत के सिलसिले में समुन्दर पर सफ़र
करते करते दूरदराज़ इलाक़ों तक पहुँचे।
24उन्हों ने रब के अज़ीम काम और समुन्दर
की गहराइयों में उस के मोजिज़े देखे हैं।
25क्यूँकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली
जो समुन्दर की मौजें बुलन्दियों पर लाई।
26वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों
तक उतरीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की
हिम्मत जवाब दे गई।
27वह शराब में धुत आदमी की तरह
लड़खड़ाते और डगमगाते रहे। उन की तमाम
हिक्मत नाकाम साबित हुई।
28तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को
पुकारा, और उस ने उन्हें तमाम परेशानियों से
छुटकारा दिया।
29उस ने समुन्दर को थमा दिया और
ख़ामोशी फैल गई, लहरें साकित हो गईं।
30मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देख कर ख़ुश
हुए, और अल्लाह ने उन्हें मन्ज़िल-ए-मक़सूद
तक पहुँचाया।
31वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी
शफ़्क़त और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर
किए हैं।

32वह क़ौम की जमाअत में उस की ताज़ीम
करें, बुज़ुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33कई जगहों पर वह दरयाओं को रेगिस्तान
में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता
है।
34बाशिन्दों की बुराई देख कर वह ज़रख़ेज़
ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता
है।
35दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील
में और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता
है।
36वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि
आबादियाँ क़ाइम करें।
37तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं
जो ख़ूब फल लाते हैं।
38अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उन की
तादाद बहुत बढ़ जाती है। वह उन के रेवड़ों
को भी कम होने नहीं देता।
39जब कभी उन की तादाद कम हो जाती
और वह मुसीबत और दुख के बोझ तले ख़ाक
में दब जाते हैं
40तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल
देता और उन्हें रेगिस्तान में भगा कर सहीह
रास्ते से दूर फिरने देता है।
41लेकिन मुह्ताज को वह मुसीबत की
दलदल से निकाल कर सरफ़राज़ करता और
उस के ख़ानदानों को भेड़-बकरियों की तरह
बढ़ा देता है।

42सीधी राह पर चलने वाले यह देख कर
ख़ुश होंगे, लेकिन बेइन्साफ़ का मुँह बन्द
किया जाएगा।
43कौन दानिशमन्द है? वह इस पर ध्यान
दे, वह रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

जंग में रब पर उम्मीद

108 दाऊद का ज़बूर। गीत।
ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत
है। मैं साज़ बजा कर तेरी मद्हसराई करूँगा।
ऐ मेरी जान, जाग उठ!
2ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलू-
ए-सुब्ह को जगाऊँगा।
3ऐ रब, मैं क़ौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में
तेरी मद्हसराई करूँगा।
4क्यूँकि तेरी शफ़्क़त आसमान से कहीं
बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती
है।
5ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो!
तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।
6अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन
ताकि जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7अल्लाह ने अपने मक़्दिस में फ़रमाया
है, "मैं फ़त्ह मनाते हुए सिकम को तक़्सीम
करूँगा और वादी-ए-सुक्कात को नाप कर
बाँट दूँगा।
8जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है।
इफ़्राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही
असा है।
9मोआब मेरा ग़ुसल का बर्तन है, और
अदोम पर मैं अपना जूता फैंक दूँगा। मैं
फ़िलिस्ती मुल्क पर ज़ोरदार नारे लगाऊँगा!"

10कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा?
कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक
पहुँचाएगा?
11ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो
तू ने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी
फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के
लिए निकलती हैं।
12मुसीबत में हमें सहारा दे, क्यूँकि इस
वक़्त इन्सानी मदद बेकार है।
13अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम
करेंगे, क्यूँकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल
देगा।

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

109 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
2क्यूँकि उन्हों ने अपना बेदीन और
फ़रेबदिह मुँह मेरे ख़िलाफ़ खोल कर झूटी
ज़बान से मेरे साथ बात की है।
3वह मुझे नफ़रत के अल्फ़ाज़ से घेर कर
बिलावजह मुझ से लड़े हैं।
4मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर
अपनी दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन
दुआ ही मेरा सहारा है।
5मेरी नेकी के इवज़ वह मुझे नुक़्सान
पहुँचाते और मेरे प्यार के बदले मुझ से नफ़रत
करते हैं।

6ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर
जो मेरे दुश्मन के ख़िलाफ़ गवाही दे, कोई
मुख़ालिफ़ उस के दहने हाथ खड़ा हो जाए
जो उस पर इल्ज़ाम लगाए।
7मुक़द्दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस
की दुआएँ भी उस के गुनाहों में शुमार की
जाएँ।
8उस की ज़िन्दगी मुख़्तसर हो, कोई और
उस की ज़िम्मादारी उठाए।
9उस की औलाद यतीम और उस की बीवी
बेवा बन जाए।
10उस के बच्चे आवारा फिरें और भीक
माँगने पर मज्बूर हो जाएँ। उन्हें उन के
तबाहशुदा घरों से निकल कर इधर उधर रोटी
ढूँडनी पड़े।
11जिस से उस ने क़र्ज़ा लिया था वह उस
के तमाम माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी
उस की मेहनत का फल लूट लें।
12कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या
उस के यतीमों पर रहम करे।
13उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली
पुश्त में उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे।
14रब उस के बापदादा की नाइन्साफ़ी का
लिहाज़ करे, और वह उस की माँ की ख़ता
भी दरगुज़र न करे।
15उन का बुरा किरदार रब के सामने रहे,
और वह उन की याद रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
डाले।
16क्यूँकि उस को कभी मेहरबानी करने
का ख़याल न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा,
मुह्ताज और शिकस्तादिल का ताक़्क़ुब
करता रहा ताकि उसे मार डाले।
17उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे
लानत उसी पर आए! उसे बरकत देना पसन्द
नहीं था, चुनाँचे बरकत उस से दूर रहे।
18उस ने लानत चादर की तरह ओढ़ ली,
चुनाँचे लानत पानी की तरह उस के जिस्म में
और तेल की तरह उस की हड्डियों में सिरायत
कर जाए।
19वह कपड़े की तरह उस से लिपटी रहे,
पटके की तरह हमेशा उस से कमरबस्ता रहे।

20रब मेरे मुख़ालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे
ख़िलाफ़ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।
21लेकिन तू ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपने
नाम की ख़ातिर मेरे साथ मेहरबानी का
सुलूक कर। मुझे बचा, क्यूँकि तेरी ही शफ़क़त
तसल्लीबख़्श है।
22क्यूँकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द
हूँ। मेरा दिल मेरे अन्दर मजरूह है।
23शाम के ढलते साय की तरह मैं ख़त्म होने
वाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़ कर दूर कर
दिया गया है।
24रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे
और मेरा जिस्म सूख गया है।
25मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का
निशाना बन गया हूँ। मुझे देख कर वह सर
हिला कर “तौबा तौबा” कहते हैं।
26ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी
शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!

27उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश
आया है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया
है।
28जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे!
जब वह मेरे ख़िलाफ़ उठें तो बख़्श दे कि
शर्मिन्दा हो जाएँ जबकि तेरा ख़ादिम ख़ुश हो।
29मेरे मुख़ालिफ़ रुस्वाई से मुलब्बस हो
जाएँ, उन्हें शर्मिन्दगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों
के दरमियान उस की हम्द करूँगा।
31क्यूँकि वह मुह्ताज के दहने हाथ खड़ा
रहता है ताकि उसे उन से बचाए जो उसे
मुजरिम ठहराते हैं।

अबदी बादशाह और इमाम

110 दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, "मेरे
दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे
पाँओ की चौकी न बना दूँ।"
2रब सिय्यून से तेरी सल्तनत की सरहद्दें
बढ़ा कर कहेगा, "आस-पास के दुश्मनों पर
हुकूमत कर!"
3जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा
तेरी क़ौम ख़ुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू
मुक़द्दस शान-ओ-शौकत से आरास्ता हो कर
तुलू-ए-सुब्ह के बातिन से अपनी जवानी की
ओस पाएगा।

4रब ने क़सम खाई है और इस से पछताएगा
नहीं, "तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम
जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।"
5रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने
ग़ज़ब के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर
करेगा।
6वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को
लाशों से भर देगा और दूर तक सरों को पाश
पाश करेगा।
7रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इस लिए
अपना सर उठाए फिरेगा।

अल्लाह के फ़ज़्ल की तम्जीद

111 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल
से दियानतदारों की मजलिस
और जमाअत में रब का शुक्र करूँगा।
2रब के काम अज़ीम हैं। जो उन से
लुत्फ़अन्दोज़ होते हैं वह उन का ख़ूब
मुतालआ करते हैं।

3उस का काम शानदार और जलाली है,
उस की रास्ती अबद तक क़ाइम रहती है।
4वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब
मेहरबान और रहीम है।
5जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उस ने
ख़ुराक मुहय्या की है। वह हमेशा तक अपने
अह्द का ख़याल रखेगा।
6उस ने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त
कामों का एलान करके कहा, "मैं तुम्हें
ग़ैरक़ौमों की मीरास अता करूँगा।"
7जो भी काम उस के हाथ करें वह सच्चे
और रास्त हैं। उस के तमाम अह्काम क़ाबिल-
ए-एतिमाद हैं।
8वह अज़ल से अबद तक क़ाइम हैं, और
उन पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल
करना है।
9उस ने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेज कर
उसे छुड़ाया है। उस ने फ़रमाया, "मेरा क़ौम
के साथ अह्द अबद तक क़ाइम रहे।" उस का
नाम क़ुद्दूस और पुरजलाल है।
10हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब
का ख़ौफ़ मानें। जो भी उस के अह्काम पर
अमल करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी।
उस की हम्द हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

112 रब की हम्द हो! मुबारक
है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़

मानता और उस के अह्काम से बहुत लुत्फ़अन्दोज़ होता है।
2उस के फ़र्ज़न्द मुल्क में ताक़तवर होंगे,
और दियानतदार की नस्ल को बरकत मिलेगी।
3दौलत और ख़ुशहाली उस के घर में रहेगी,
और उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ाइम रहेगी।
4अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर
रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान
और रहीम है।

5मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बाबरकत
है। जो अपने मुआमलों को इन्साफ़ से हल करे
वह अच्छा करेगा,
6क्यूँकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा।
रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।
7वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उस
का दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा
रखता है।
8उस का दिल मुस्तह्कम है। वह सहमा
हुआ नहीं रहता, क्यूँकि वह जानता है कि एक
दिन मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर
ख़ुश हूँगा।
9वह फ़य्याज़ी से ज़रूरतमन्दों में ख़ैरात
बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा
क़ाइम रहेगी, और उसे इज़्ज़त के साथ
सरफ़राज़ किया जाएगा।
10बेदीन यह देख कर नाराज़ हो जाएगा, वह
दाँत पीस पीस कर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ
बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

113 रब की हम्द हो! ऐ रब
के ख़ादिमो, रब के नाम की
सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।
2रब के नाम की अब से अबद तक तम्जीद
हो।
3तुलू-ए-सुब्ह से ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब तक
रब के नाम की हम्द हो।
4रब तमाम अक़्वाम से सरबुलन्द है, उस
का जलाल आसमान से अज़ीम है।
5कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिन्द है जो
बुलन्दियों पर तख़्तनशीन है
6और आसमान-ओ-ज़मीन को देखने के
लिए नीचे झुकता है?
7पस्तहाल को वह ख़ाक में से उठा कर
पाँओ पर खड़ा करता, मुह्ताज को राख से
निकाल कर सरफ़राज़ करता है।
8वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के
शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।
9बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि
वह घर में ख़ुशी से ज़िन्दगी गुज़ार सके। रब
की हम्द हो!

मिस्र में अल्लाह के मोजिज़ात

114 जब इस्राईल मिस्र से रवाना
हुआ और याक़ूब का घराना
अजनबी ज़बान बोलने वाली क़ौम से निकल
आया
2तो यहूदाह अल्लाह का मक़्दिस बन गया
और इस्राईल उस की बादशाही।
3यह देख कर समुन्दर भाग गया और दरया-
ए-यर्दन पीछे हट गया।
4पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ
जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

5ऐ समुन्दर, क्या हुआ कि तू भाग गया है?
ऐ यर्दन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?
6ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह
कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि
तुम जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगी
हो?
7ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के ख़ुदा के
हुज़ूर लरज़ उठ,

8उस के सामने थरथरा जिस ने चटान को
जोहड़ में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल
दिया।

अल्लाह ही की हम्द हो

115 ऐ रब, हमारी ही इज़्ज़त की
ख़ातिर काम न कर बल्कि
इस लिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इस
लिए कि तू मेहरबान और वफ़ादार ख़ुदा है।
2दीगर अक़्वाम क्यूँ कहें, "उन का ख़ुदा
कहाँ है?"
3हमारा ख़ुदा तो आसमान पर है, और जो
जी चाहे करता है।

4उन के बुत सोने-चाँदी के हैं, इन्सान के
हाथ ने उन्हें बनाया है।
5उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते।
उन की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
6उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते,
उन की नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
7उन के हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते।
उन के पाँओ हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते।
उन के गले से आवाज़ नहीं निकलती।
8जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो
जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे
बेहिस्स-ओ-हरकत हो जाएँ।

9ऐ इस्राईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा
सहारा और तेरी ढाल है।
10ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख!
वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
11ऐ रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब पर
भरोसा रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी
ढाल है।

12रब ने हमारा ख़याल किया है, और वह
हमें बरकत देगा। वह इस्राईल के घराने को
बरकत देगा, वह हारून के घराने को बरकत
देगा।

13वह रब का ख़ौफ़ मानने वालों को बरकत
देगा, ख़्वाह छोटे हों या बड़े।
14रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी
भी और तुम्हारी औलाद की भी।
15रब जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़
है तुम्हें बरकत से मालामाल करे।
16आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को
उस ने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
17ऐ रब, मुर्दे तेरी सताइश नहीं करते,
ख़ामोशी के मुल्क में उतरने वालों में से कोई
भी तेरी तम्जीद नहीं करता।
18लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद
तक करेंगे। रब की हम्द हो!

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

116 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ,
क्यूँकि उस ने मेरी आवाज़
और मेरी इल्तिजा सुनी है।
2उस ने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है,
इस लिए मैं उम्र भर उसे पुकारूँगा।

3मौत ने मुझे अपनी ज़न्जीरों में जकड़
लिया, और पाताल की परेशानियाँ मुझ पर
ग़ालिब आईं। मैं मुसीबत और दुख में फंस
गया।
4तब मैं ने रब का नाम पुकारा, "ऐ रब,
मेहरबानी करके मुझे बचा!"
5रब मेहरबान और रास्त है, हमारा ख़ुदा
रहीम है।
6रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है।
जब मैं पस्तहाल था तो उस ने मुझे बचाया।
7ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास
वापस आ, क्यूँकि रब ने तेरे साथ भलाई की
है।
8क्यूँकि ऐ रब, तू ने मेरी जान को मौत से,
मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँओ
को फिसलने से बचाया है।
9अब मैं ज़िन्दों की ज़मीन में रह कर रब के
हुज़ूर चलूँगा।

10मैं ईमान लाया और इस लिए बोला, “मैं
शदीद मुसीबत में फंस गया हूँ।”
11मैं सख़्त घबरा गया और बोला, “तमाम
इन्सान दरोग़गो हैं।”
12जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन
सब के इवज़ मैं क्या दूँ?
13मैं नजात का प्याला उठा कर रब का नाम
पुकारूँगा।
14मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के
सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15रब की निगाह में उस के ईमानदारों की
मौत गिराँक़दर है।
16ऐ रब, यक़ीनन मैं तेरा ख़ादिम, हाँ तेरा
ख़ादिम और तेरी ख़ादिमा का बेटा हूँ। तू ने
मेरी ज़न्जीरों को तोड़ डाला है।
17मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश करके
तेरा नाम पुकारूँगा।
18मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के
सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
19मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम
तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द
हो।

तमाम अक़्वाम अल्लाह की हम्द करें

117 ऐ तमाम अक़्वाम, रब की
तम्जीद करो! ऐ तमाम
उम्मतो, उस की मद्हसराई करो!
2क्यूँकि उस की हम पर शफ़्क़त अज़ीम है,
और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द
हो!

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

118 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह
भला है, और उस की शफ़्क़त
अबदी है।
2इस्राईल कहे, “उस की शफ़्क़त अबदी
है।”
3हारून का घराना कहे, “उस की शफ़्क़त
अबदी है।”
4रब का ख़ौफ़ मानने वाले कहें, “उस की
शफ़्क़त अबदी है।”

5मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा तो रब
ने मेरी सुन कर मेरे पाँओ को खुले मैदान में
क़ाइम कर दिया है।
6रब मेरे हक़ में है, इस लिए मैं नहीं डरूँगा।
इन्सान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
7रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इस
लिए मैं उन की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा जो
मुझ से नफ़रत करते हैं।

8रब में पनाह लेना इन्सान पर एतिमाद
करने से कहीं बेहतर है।
9रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतिमाद करने
से कहीं बेहतर है।

10तमाम अक़्वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन
मैं ने अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा दिया।
11उन्हों ने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से
घेर लिया, लेकिन मैं ने अल्लाह का नाम ले
कर उन्हें भगा दिया।
12वह शहद की मक्खियों की तरह चारों
तरफ़ से मुझ पर हम्लाआवर हुए, लेकिन
काँटेदार झाड़ियों की आग की तरह जल्द ही
बुझ गए। मैं ने रब का नाम ले कर उन्हें भगा
दिया।
13दुश्मन ने मुझे धक्का दे कर गिराने की
कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
14रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी
नजात बन गया है।

15ख़ुशी और फ़त्ह के नारे रास्तबाज़ों के
ख़ैमों में गूँजते हैं, “रब का दहना हाथ
ज़बरदस्त काम करता है!
16रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है,
रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!”

17मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िन्दा रह कर रब
के काम बयान करूँगा।
18गो रब ने मेरी सख़्त तादीब की है, उस ने
मुझे मौत के हवाले नहीं किया।

19रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि
मैं उन में दाख़िल हो कर रब का शुक्र करूँ।
20यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़
दाख़िल होते हैं।

21मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्यूँकि तू ने मेरी
सुन कर मुझे बचाया है।
22जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द
किया वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।
23यह रब ने किया और देखने में कितना
हैरतअंगेज़ है।
24इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है।
आओ, हम शादियाना बजा कर उस की ख़ुशी
मनाएँ।
25ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब,
मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26मुबारक है वह जो रब के नाम से आता
है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते
हैं।
27रब ही ख़ुदा है, और उस ने हमें रौशनी
बख़्शी है। आओ, ईद की क़ुर्बानी रस्सियों से
क़ुर्बानगाह के सींगों के साथ बान्धो।

28तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता
हूँ। ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।
29रब की सताइश करो, क्यूँकि वह भला है
और उस की शफ़्क़त अबदी है।

अल्लाह के कलाम की शान

-1-

119 मुबारक हैं वह जिन का चाल-
चलन बेइल्ज़ाम है, जो रब
की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।
2मुबारक हैं वह जो उस के अह्काम पर
अमल करते और पूरे दिल से उस के तालिब
रहते हैं,
3जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर
चलते हैं।
4तू ने हमें अपने अह्काम दिए हैं, और तू
चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उन के ताबे
रहें।
5काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं
साबितक़दमी से तेरे अह्काम पर अमल करूँ!
6तब मैं शर्मिन्दा नहीं हूँगा, क्यूँकि मेरी आँखें
तेरे तमाम अह्काम पर लगी रहेंगी।
7जितना मैं तेरे बा-इन्साफ़ फ़ैसलों के बारे
में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी
सताइश करूँगा।
8तेरे अह्काम पर मैं हर वक़्त अमल
करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

-2-

9नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक
रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारे।
10मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे
अपने अह्काम से भटकने न दे।
11मैं ने तेरा कलाम अपने दिल में महफ़ूज़
रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।
12ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अह्काम
सिखा।
13अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की
तमाम हिदायात सुनाता हूँ।
14मैं तेरे अह्काम की राह से उतना
लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की
दौलत से।
15मैं तेरी हिदायात में महव-ए-ख़याल रहूँगा
और तेरी राहों को तकता रहूँगा।
16मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ
और तेरा कलाम नहीं भूलता।

-3-

17अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं
ज़िन्दा रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारूँ।
18मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत
के अजाइब देखूँ।
19दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अह्काम
मुझ से छुपाए न रख!
20मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की
आर्ज़ू करते करते निढाल हो रही है।
21तू मग़रूरों को डाँटता है। उन पर लानत
जो तेरे अह्काम से भटक जाते हैं!
22मुझे लोगों की तौहीन और तह्क़ीर से
रिहाई दे, क्यूँकि मैं तेरे अह्काम के ताबे रहा
हूँ।
23गो बुज़ुर्ग मेरे ख़िलाफ़ मन्सूबे बांधने के
लिए बैठ गए हैं, तेरा ख़ादिम तेरे अह्काम में
महव-ए-ख़याल रहता है।
24तेरे अह्काम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही
मेरे मुशीर हैं।

-4-

25मेरी जान ख़ाक में दब गई है। अपने
कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम
कर।
26मैं ने अपनी राहें बयान कीं तो तू ने मेरी
सुनी। मुझे अपने अह्काम सिखा।
27मुझे अपने अह्काम की राह समझने के
क़ाबिल बना ताकि तेरे अजाइब में महव-ए-
ख़याल रहूँ।
28मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है।
मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।
29फ़रेब की राह मुझ से दूर रख और मुझे
अपनी शरीअत से नवाज़।
30मैं ने वफ़ा की राह इख़तियार करके तेरे
आईन अपने सामने रखे हैं।
31मैं तेरे अह्काम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब,
मुझे शर्मिन्दा न होने दे।
32मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ,
क्यूँकि तू ने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

-5-

33ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा
तो मैं उम्र भर उन पर अमल करूँगा।
34मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से
उस के ताबे रहूँ।
35अपने अह्काम की राह पर मेरी राहनुमाई
कर, क्यूँकि यही मैं पसन्द करता हूँ।
36मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि
उसे अपने फ़रमानों की तरफ़ माइल कर।
37मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले,
और मुझे अपनी राहों पर सँभाल कर मेरी जान
को ताज़ादम कर।
38जो वादा तू ने अपने ख़ादिम से किया वह
पूरा कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
39जिस रुस्वाई से मुझे ख़ौफ़ है उस का
ख़तरा दूर कर, क्यूँकि तेरे अह्काम अच्छे हैं।
40मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमन्द हूँ,
अपनी रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

-6-

41ऐ रब, तेरी शफ़्क़त और वह नजात जिस
का वादा तू ने किया है मुझ तक पहुँचे
42ताकि मैं बेइज़्ज़ती करने वाले को जवाब
दे सकूँ। क्यूँकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा
रखता हूँ।
43मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन,
क्यूँकि मैं तेरे फ़रमानों के इन्तिज़ार में हूँ।
44मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी
करूँगा, अब से अबद तक उस में क़ाइम
रहूँगा।
45मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्यूँकि
तेरे आईन का तालिब रहता हूँ।
46मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे
अह्काम बयान करूँगा।

47मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ,
वह मुझे प्यारे हैं।
48मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़
उठाऊँगा, क्यूँकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी
हिदायात में महव-ए-ख़याल रहूँगा।

-7-

49उस बात का ख़याल रख जो तू ने अपने
ख़ादिम से की और जिस से तू ने मुझे उम्मीद
दिलाई है।
50मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है
कि तेरा कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता
है।
51मग़रूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते
हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
52ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता
हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है।
53बेदीनों को देख कर मैं आग-बगूला हो
जाता हूँ, क्यूँकि उन्हों ने तेरी शरीअत को तर्क
किया है।
54जिस घर में मैं परदेसी हूँ उस में मैं तेरे
अह्काम के गीत गाता रहता हूँ।
55ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ,
तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
56यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की
पैरवी करता हूँ।

-8-

57रब मेरी मीरास है। मैं ने तेरे फ़रमानों पर
अमल करने का वादा किया है।
58मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब
रहा हूँ। अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर
मेहरबानी कर।
59मैं ने अपनी राहों पर ध्यान दे कर तेरे
अह्काम की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
60मैं नहीं झिजकता बल्कि भाग कर तेरे
अह्काम पर अमल करने की कोशिश करता
हूँ।
61बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है,
लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
62आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे
रास्त फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
63मैं उन सब का साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़
मानते हैं, उन सब का दोस्त जो तेरी हिदायात
पर अमल करते हैं।
64ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है।
मुझे अपने अह्काम सिखा!

-9-

65ऐ रब, तू ने अपने कलाम के मुताबिक़
अपने ख़ादिम से भलाई की है।
66मुझे सहीह इम्तियाज़ और इर्फ़ान सिखा,
क्यूँकि मैं तेरे अह्काम पर ईमान रखता हूँ।
67इस से पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं
आवारा फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम
के ताबे रहता हूँ।
68तू भला है और भलाई करता है। मुझे
अपने आईन सिखा!
69मग़रूरों ने झूट बोल कर मुझ पर कीचड़
उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात
की फ़रमाँबरदारी करता हूँ।
70उन के दिल अकड़ कर बेहिस्स हो गए हैं,
लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता
हूँ।
71मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया
गया, क्यूँकि इस तरह मैं ने तेरे अह्काम सीख
लिए।
72जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह
मुझे सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा
पसन्द है।

-10-

73तेरे हाथों ने मुझे बना कर मज़बूत बुन्याद
पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि
तेरे अह्काम सीख लूँ।

74जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देख
कर ख़ुश हो जाएँ, क्यूँकि मैं तेरे कलाम के
इन्तिज़ार में रहता हूँ।
75ऐ रब, मैं ने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले
रास्त हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है
कि तू ने मुझे पस्त किया है।
76तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह
तू ने अपने ख़ादिम से वादा किया है।
77मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि
मेरी जान में जान आए, क्यूँकि मैं तेरी शरीअत
से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
78जो मग़रूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं
वह शर्मिन्दा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों
में महव-ए-ख़याल रहूँगा।
79काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे
अह्काम जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!
80मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में
बेइल्ज़ाम रहे ताकि मेरी रुस्वाई न हो जाए।

-11-

81मेरी जान तेरी नजात की आर्ज़ू करते
करते निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के
इन्तिज़ार में हूँ।
82मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते
धुन्दला रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
83मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मश्क की मानिन्द हूँ
लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
84तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर
इन्तिज़ार करना पड़ेगा? तू मेरा ताक़्क़ुब करने
वालों की अदालत कब करेगा?
85जो मग़रूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते
उन्हों ने मुझे फंसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।
86तेरे तमाम अह्काम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद
कर, क्यूँकि वह झूट का सहारा ले कर मेरा
ताक़्क़ुब कर रहे हैं।
87वह मुझे रू-ए-ज़मीन पर से मिटाने के
क़रीब ही हैं, लेकिन मैं ने तेरे आईन को तर्क
नहीं किया।
88अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी
जान को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के
फ़रमानों पर अमल करूँ।

-12-

89ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान
पर क़ाइम-ओ-दाइम है।
90तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तू
ने ज़मीन की बुन्याद रखी, और वह वहीं की
वहीं बरक़रार रहती है।
91आज तक आसमान-ओ-ज़मीन तेरे
फ़रमानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते
हैं, क्यूँकि तमाम चीज़ें तेरी ख़िदमत करने के
लिए बनाई गई हैं।
92अगर तेरी शरीअत मेरी ख़ुशी न होती तो
मैं अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।
93मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा,
क्यूँकि उन ही के ज़रीए तू मेरी जान को
ताज़ादम करता है।
94मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्यूँकि मैं तेरे
अह्काम का तालिब रहा हूँ।
95बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे
मार डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता
रहूँगा।
96मैं ने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद
होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं
होती।

-13-

97तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन
भर मैं उस में महव-ए-ख़याल रहता हूँ।
98तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा
दानिशमन्द बना देता है, क्यूँकि वह हमेशा
तक मेरा ख़ज़ाना है।
99मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा
समझ हासिल है, क्यूँकि मैं तेरे आईन में महव-
ए-ख़याल रहता हूँ।

100मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है,
क्यूँकि मैं वफ़ादारी से तेरे अह्काम की पैरवी
करता हूँ।
101मैं ने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़
किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
102मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्यूँकि
तू ही ने मुझे तालीम दी है।
103तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे
मुँह में शहद से ज़्यादा मीठा है।
104तेरे अह्काम से मुझे समझ हासिल होती
है, इस लिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत
करता हूँ।

-14-

105तेरा कलाम मेरे पाँओ के लिए चराग़ है
जो मेरी राह को रौशन करता है।
106मैं ने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों
की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी
करूँगा।
107मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब,
अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को
ताज़ादम कर।
108ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना क़ुर्बानियों
को पसन्द कर और मुझे अपने आईन सिखा!
109मेरी जान हमेशा ख़तरे में है, लेकिन मैं
तेरी शरीअत नहीं भूलता।
110बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तय्यार कर रखा
है, लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
111तेरे अह्काम मेरी अबदी मीरास बन गए
हैं, क्यूँकि उन से मेरा दिल ख़ुशी से उछलता
है।
112मैं ने अपना दिल तेरे अह्काम पर अमल
करने की तरफ़ माइल किया है, क्यूँकि इस का
अज्र अबदी है।

-15-

113मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी
शरीअत से मुहब्बत करता हूँ।
114तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं
तेरे कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।
115ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्यूँकि
मैं अपने ख़ुदा के अह्काम से लिपटा रहूँगा।
116अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल
ताकि ज़िन्दा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि
शर्मिन्दा न हो जाऊँ।
117मेरा सहारा बन ताकि बच कर हर वक़्त
तेरे आईन का लिहाज़ रखूँ।
118तू उन सब को रद्द करता है जो तेरे
अह्काम से भटके फिरते हैं, क्यूँकि उन की
धोकेबाज़ी फ़रेब ही है।
119तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक
चाँदी से ख़ारिज की हुई मैल की तरह फैंक
कर नेस्त कर देता है, इस लिए तेरे फ़रमान
मुझे प्यारे हैं।
120मेरा जिस्म तुझ से दह्शत खा कर
थरथराता है, और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

-16-

121मैं ने रास्त और बा-इन्साफ़ काम किया
है, चुनाँचे मुझे उन के हवाले न कर जो मुझ
पर ज़ुल्म करते हैं।
122अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ामिन
बन कर मग़रूरों को मुझ पर ज़ुल्म करने न
दे।
123मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे
की राह देखते देखते रह गई हैं।
124अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी
शफ़क़त के मुताबिक़ हो। मुझे अपने अह्काम
सिखा।
125मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता
फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
126अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम
उठाए, क्यूँकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़
डाला है।
127इस लिए मैं तेरे अह्काम को सोने बल्कि
ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।

128इस लिए मैं एहतियात से तेरे तमाम
आईन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। मैं
हर फ़रेबदिह राह से नफ़रत करता हूँ।

-17-

129तेरे अह्काम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इस लिए
मेरी जान उन पर अमल करती है।
130तेरे कलाम का इन्किशाफ़ रौशनी
बख़्शता और सादालौह को समझ अता करता
है।
131मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ
कि मुँह खोल कर हाँप रहा हूँ।
132मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझ पर वही
मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो
तेरे नाम से प्यार करते हैं।
133अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर,
किसी भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने
दे।
134फ़िद्या दे कर मुझे इन्सान के ज़ुल्म से
छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अह्काम के ताबे रहूँ।
135अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर
चमका और मुझे अपने अह्काम सिखा।
136मेरी आँखों से आँसूओं की नदियाँ बह
रही हैं, क्यूँकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं
रहते।

-18-

137ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त
हैं।
138तू ने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ
अपने फ़रमान जारी किए हैं।
139मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई
है, क्यूँकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।
140तेरा कलाम आज़मा कर पाक-साफ़
साबित हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता
है।
141मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है,
लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।
142तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत
सच्चाई है।
143मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब
आ गई हैं, लेकिन मैं तेरे अह्काम से
लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
144तेरे अह्काम अबद तक रास्त हैं। मुझे
समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

-19-

145मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, "ऐ रब, मेरी
सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारूँगा।"
146मैं पुकारता हूँ, "मुझे बचा! मैं तेरे
अह्काम की पैरवी करूँगा।"
147पौ फटने से पहले पहले मैं उठ कर मदद
के लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार
में हूँ।
148रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती
हैं ताकि तेरे कलाम पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँ।
149अपनी शफ़्क़त के मुताबिक़ मेरी
आवाज़ सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के
मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
150जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे
हैं वह क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी
शरीअत से इन्तिहाई दूर हैं।
151ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अह्काम
सच्चाई हैं।
152बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से
मालूम हुआ है कि तू ने उन्हें हमेशा के लिए
क़ाइम रखा है।

-20-

153मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे
बचा! क्यूँकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
154अदालत में मेरे हक़ में लड़ कर मेरा
इवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने
वादे के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
155नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्यूँकि वह
तेरे अह्काम के तालिब नहीं होते।

156ऐ रब, तू मुतअद्दिद तरीक़ों से अपने
रहम का इज़हार करता है। अपने आईन के
मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
157मेरा ताक़्क़ुब करने वालों और मेरे
दुश्मनों की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे
अह्काम से दूर नहीं हुआ।
158बेवफ़ाओं को देख कर मुझे घिन आती
है, क्यूँकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी
नहीं गुज़ारते।
159देख, मुझे तेरे अह्काम से प्यार है। ऐ
रब, अपनी शफ़्क़त के मुताबिक़ मेरी जान को
ताज़ादम कर।
160तेरे कलाम का लुब्ब-ए-लुबाब सच्चाई
है, तेरे तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ाइम
हैं।

-21-

161सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं,
लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।
162मैं तेरे कलाम की ख़ुशी उस की तरह
मनाता हूँ जिसे कस्रत का माल-ए-ग़नीमत
मिल गया हो।
163मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन
खाता हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।
164मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता
हूँ, क्यूँकि तेरे अह्काम रास्त हैं।
165जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून
हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खा
कर नहीं गिरेंगे।
166ऐ रब, मैं तेरी नजात के इन्तिज़ार में रहते
हुए तेरे अह्काम की पैरवी करता हूँ।
167मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती
है, वह उसे निहायत प्यारे हैं।
168मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी
करता हूँ, क्यूँकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने
हैं।

-22-

169ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
170मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
171मेरे होंटों से हम्द-ओ-सना फूट निकले,
क्यूँकि तू मुझे अपने अह्काम सिखाता है।
172मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्हसराई
करे, क्यूँकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
173तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तय्यार
रहे, क्यूँकि मैं ने तेरे अह्काम इख़तियार किए
हैं।
174ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमन्द हूँ,
तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
175मेरी जान ज़िन्दा रहे ताकि तेरी सताइश
कर सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
176मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर
रहा हूँ। अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्यूँकि
मैं तेरे अह्काम नहीं भूलता।

तोहमत लगाने वालों से रिहाई के लिए दुआ

120 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैं ने रब को
पुकारा, और उस ने मेरी सुनी।
2ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और
फ़रेबदिह ज़बान से बचा।
3ऐ फ़रेबदिह ज़बान, वह तेरे साथ किया
करे, मज़ीद तुझे क्या दे?
4वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और
दहकते कोएले बरसाए!

5मुझ पर अफ़्सोस! मुझे अजनबी मुल्क
मसक में, क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता
है।
6इतनी देर से अम्न के दुश्मनों के पास रहने
से मेरी जान तंग आ गई है।
7मैं तो अम्न चाहता हूँ, लेकिन जब कभी
बोलूँ तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

इन्सान का वफ़ादार मुहाफ़िज़

121 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों
की तरफ़ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती
है?
2मेरी मदद रब से आती है, जो आसमान-
ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

3वह तेरा पाँओ फिसलने नहीं देगा। तेरा
मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।
4यक़ीनन इस्राईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता
है, न सोता है।
5रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर
सायबान है।
6न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर
पहुँचाएगा।
7रब तुझे हर नुक़्सान से बचाएगा, वह तेरी
जान को महफ़ूज़ रखेगा।
8रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की
पहरादारी करेगा।

यरूशलम पर बरकत

122 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उन से ख़ुश हुआ जिन्हों ने
मुझ से कहा, "आओ, हम रब के घर चलें।"
2ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँओ तेरे
दरवाज़ों में खड़े हैं।
3यरूशलम शहर यूँ बनाया गया है कि उस
के तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ
जुड़े हुए हैं।
4वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते
हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस
तरह इस्राईल को फ़रमाया गया है।
5क्यूँकि वहाँ तख़्त-ए-अदालत करने के
लिए लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के
तख़्त हैं।
6यरूशलम के लिए सलामती माँगो! "जो
तुझ से प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।
7तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में
सुकून हो।"
8अपने भाइयों और हमसायों की ख़ातिर मैं
कहूँगा, "तेरे अन्दर सलामती हो!"
9रब हमारे ख़ुदा के घर की ख़ातिर मैं तेरी
ख़ुशहाली का तालिब रहूँगा।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

123 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी
तरफ़ उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर
तख़्तनशीन है।
2जिस तरह ग़ुलाम की आँखें अपने मालिक
के हाथ की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी
मालिकन के हाथ की तरफ़ लगी रहती हैं उसी
तरह हमारी आँखें रब अपने ख़ुदा पर लगी
रहती हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न
करे।
3ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर
मेहरबानी कर! क्यूँकि हम हद से ज़्यादा
हिक़ारत का निशाना बन गए हैं।
4सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की लान-
तान और मग़रूरों की तहक़ीर से हमारी जान
दूभर हो गई है।

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

124 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, "अगर रब
हमारे साथ न होता,
2अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग
हमारे ख़िलाफ़ उठे
3और आग-बगूला हो कर अपना पूरा ग़ुस्सा
हम पर उतारा, तो वह हमें ज़िन्दा हड़प कर
लेते।
4फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का
तेज़ धारा हम पर ग़ालिब आ जाता
5और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र
जाता।"

6रब की हम्द हो जिस ने हमें उन के दाँतों
के हवाले न किया, वर्ना वह हमें फाड़ खाते।
7हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई
है जो चिड़ीमार के फंदे से निकल कर उड़ गई
है। फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।
8रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा
सहारा है जो आसमान-ओ-ज़मीन का
ख़ालिक़ है।

चारों तरफ़ से क़ौम की हिफ़ाज़त

125 ज़ियारत का गीत।
जो रब पर भरोसा रखते हैं
वह कोह-ए-सिय्यून की मानिन्द हैं जो कभी
नहीं डगमगाता बल्कि अबद तक क़ाइम रहता
है।
2जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता
है उसी तरह रब अपनी क़ौम को अब से अबद
तक चारों तरफ़ से महफ़ूज़ रखता है।
3क्यूँकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास
पर हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि
रास्तबाज़ बदकारी करने की आज़माइश में
पड़ जाएँ।
4ऐ रब, उन से भलाई कर जो नेक हैं, जो
दिल से सीधी राह पर चलते हैं।
5लेकिन जो भटक कर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी
राहों पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ
ख़ारिज कर दे। इस्राईल की सलामती हो!

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

126 ज़ियारत का गीत।
जब रब ने सिय्यून को बहाल
किया तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़्वाब देख
रहे हैं।
2तब हमारा मुँह हंसी-ख़ुशी से भर गया,
और हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से
रुक न सकी। तब दीगर क़ौमों में कहा गया,
“रब ने उन के लिए ज़बरदस्त काम किया है।”
3रब ने वाक़ई हमारे लिए ज़बरदस्त काम
किया है। हम कितने ख़ुश थे, कितने ख़ुश!
4ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसम-
ए-बरसात में दश्त-ए-नजब के ख़ुश्क नाले
पानी से भर जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।
5जो आँसू बहा बहा कर बीज बोएँ वह ख़ुशी
के नारे लगा कर फ़सल काटेंगे।
6वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे,
लेकिन जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे
लगा कर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

127 सुलैमान का ज़ियारत का गीत।
अगर रब घर को तामीर न करे
तो उस पर काम करने वालों की मेहनत अबस
है। अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो
इन्सानी पहरेदारों की निगहबानी अबस है।
2यह भी अबस है कि तुम सुब्ह-सवेरे
उठो और पूरे दिन मेहनत-मशक़्क़त के साथ
रोज़ी कमा कर रात गए सो जाओ। क्यूँकि
जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें वह उन की
ज़रूरियात उन के सोते में पूरी कर देता है।

3बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब
से पाते हैं, औलाद एक अज्र है जो वही हमें
देता है।
4जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में
तीरों की मानिन्द हैं।
5मुबारक है वह आदमी जिस का तर्कश उन
से भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने
दुश्मनों से झगड़ेगा तो शर्मिन्दा नहीं होगा।

जिस ख़ानदान को अल्लाह बरकत देता है

128 ज़ियारत का गीत।
मुबारक है वह जो रब का
ख़ौफ़ मान कर उस की राहों पर चलता है।
2यक़ीनन तू अपनी मेहनत का फल
खाएगा। मुबारक हो, क्यूँकि तू कामयाब
होगा।

3घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की
मानिन्द होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठ
कर ज़ैतून की ताज़ा शाख़ों[a] की मानिन्द होंगे।
4जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही
बरकत मिलेगी।
5रब तुझे कोह-ए-सिय्यून से बरकत दे। वह
करे कि तू जीते जी यरूशलम की ख़ुशहाली
देखे,
6कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे।
इस्राईल की सलामती हो!

मदद के लिए इस्राईल की दुआ

129 ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, "मेरी जवानी से
ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हम्लाआवर हुए
हैं।
2मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर
हम्लाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब
न आए।"
3हल चलाने वालों ने मेरी पीठ पर हल चला
कर उस पर अपनी लम्बी लम्बी रेघारयाँ बनाई
हैं।
4रब रास्त है। उस ने बेदीनों के रस्से काट
कर मुझे आज़ाद कर दिया है।

5अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से
नफ़रत रखें वह शर्मिन्दा हो कर पीछे हट
जाएँ।
6वह छतों पर की घास की मानिन्द हों जो
सहीह तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती
है
7और जिस से न फ़सल काटने वाला अपना
हाथ, न पूले बांधने वाला अपना बाज़ू भर
सके।
8जो भी उन से गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें
बरकत दे।"
हम रब का नाम ले कर तुम्हें बरकत देते हैं!

[a]इस से मुराद है पैवन्दकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ।

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)

130 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से
पुकारता हूँ।
2ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगा कर
मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे!
3ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब
करे तो कौन क़ाइम रहेगा? कोई भी नहीं!
4लेकिन तुझ से मुआफ़ी हासिल होती है
ताकि तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

5मैं रब के इन्तिज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत
से इन्तिज़ार करती है। मैं उस के कलाम से
उम्मीद रखता हूँ।
6पहरेदार जिस शिद्दत से पौ फटने के
इन्तिज़ार में रहते हैं, मेरी जान उस से भी
ज़्यादा शिद्दत के साथ, हाँ ज़्यादा शिद्दत के
साथ रब की मुन्तज़िर रहती है।

7ऐ इस्राईल, रब की राह देखता रह! क्यूँकि
रब के पास शफ़्क़त और फ़िद्या का ठोस बन्द-
ओ-बस्त है।
8वह इस्राईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या दे
कर उसे नजात देगा।

बच्चे का सा ईमान

131 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है,
न मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम
और हैरानकुन हैं कि मैं उन से निपट नहीं
सकता उन्हें मैं नहीं छेड़ता।
2यक़ीनन मैं ने अपनी जान को राहत और
सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद
में बैठे छोटे बच्चे की मानिन्द है, हाँ मेरी जान
छोटे बच्चे[b] की मानिन्द है।

[b]जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

3ऐ इस्राईल, अब से अबद तक रब के
इन्तिज़ार में रह!

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़्दिस

132 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, दाऊद का ख़याल रख,
उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।
2उस ने क़सम खा कर रब से वादा किया
और याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत
मानी,
3"न मैं अपने घर में दाख़िल हूँगा, न बिस्तर
पर लेटूँगा,
4न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने
पपोटों को ऊँघने दूँगा
5जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब
के सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।"

6हम ने इफ़्राता में अह्द के सन्दूक़ की ख़बर
सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।
7आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाख़िल
हो कर उस के पाँओ की चौकी के सामने
सिज्दा करें।

8ऐ रब, उठ कर अपनी आरामगाह के पास
आ, तू और अह्द का सन्दूक़ जो तेरी क़ुदरत
का इज़हार है।
9तेरे इमाम रास्ती से मुलब्बस हो जाएँ, और
तेरे ईमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

10ऐ अल्लाह, अपने ख़ादिम दाऊद की
ख़ातिर अपने मसह किए हुए बन्दे के चेहरे
को रद्द न कर।
11रब ने क़सम खा कर दाऊद से वादा किया
है, और वह उस से कभी नहीं फिरेगा, "मैं तेरी
औलाद में से एक को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।
12अगर तेरे बेटे मेरे अह्द के वफ़ादार रहें
और उन अह्काम की पैरवी करें जो मैं उन्हें
सिखाऊँगा तो उन के बेटे भी हमेशा तक तेरे
तख़्त पर बैठेंगे।"

13क्यूँकि रब ने कोह-ए-सिय्यून को चुन
लिया है, और वही वहाँ सुकूनत करने का
आरज़ूमन्द था।
14उस ने फ़रमाया, "यह हमेशा तक मेरी
आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा,
क्यूँकि मैं इस का आरज़ूमन्द हूँ।
15मैं सिय्यून की ख़ुराक को कस्रत की
बरकत दे कर उस के ग़रीबों को रोटी से सेर
करूँगा।
16मैं उस के इमामों को नजात से मुलब्बस
करूँगा, और उस के ईमानदार ख़ुशी से
ज़ोरदार नारे लगाएँगे।
17यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा,[a] और
यहाँ मैं ने अपने मसह किए हुए ख़ादिम के
लिए चराग़ तय्यार कर रखा है।
18मैं उस के दुश्मनों को शर्मिन्दगी से
मुलब्बस करूँगा जबकि उस के सर का ताज
चमकता रहेगा।"

भाइयों की यगान्गत की बरकत

133 दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का
गीत।
जब भाई मिल कर और यगान्गत से रहते हैं
यह कितना अच्छा और प्यारा है।
2यह उस नफ़ीस तेल की मानिन्द है जो
हारून इमाम के सर पर उंडेला जाता है और
टपक टपक कर उस की दाढ़ी और लिबास के
गरेबान पर आ जाता है।
3यह उस ओस की मानिन्द है जो कोह-
ए-हर्मून से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है।
क्यूँकि रब ने फ़रमाया है, "वहीं हमेशा तक
बरकत और ज़िन्दगी मिलेगी।"

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

रब के घर में रात की सताइश

134 ज़ियारत का गीत।
आओ, रब की सताइश करो,
ऐ रब के तमाम ख़ादिमो जो रात के वक़्त रब
के घर में खड़े हो।
2मक़्दिस में अपने हाथ उठा कर रब की
तम्जीद करो!
3रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमान-
ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ तुझे बरकत दे।

अल्लाह की परस्तिश

135 रब की हम्द हो! रब के नाम
की सताइश करो! उस की
तम्जीद करो, ऐ रब के तमाम ख़ादिमो,
2जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों
में खड़े हो।
3रब की हम्द करो, क्यूँकि रब भला है। उस
के नाम की मद्हसराई करो, क्यूँकि वह प्यारा
है।
4क्यूँकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन
लिया, इस्राईल को अपनी मिलकियत बना
लिया है।

5हाँ, मैं ने जान लिया है कि रब अज़ीम है,
कि हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा
अज़ीम है।
6रब जो जी चाहे करता है, ख़्वाह आसमान
पर हो या ज़मीन पर, ख़्वाह समुन्दरों में हो या
गहराइयों में कहीं भी हो।
7वह ज़मीन की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता
और बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह
हवा अपने गोदामों से निकाल लाता है।
8मिस्र में उस ने इन्सान-ओ-हैवान के तमाम
पहलौठों को मार डाला।
9ऐ मिस्र, उस ने अपने इलाही निशान
और मोजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब
फ़िरऔन और उस के तमाम मुलाज़िम उन का
निशाना बन गए।

10उस ने मुतअद्दिद क़ौमों को शिकस्त दे
कर ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार
दिया।
11अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का
बादशाह ओज और मुल्क-ए-कनआन की
तमाम सल्तनतें न रहीं।
12उस ने उन का मुल्क इस्राईल को दे
कर फ़रमाया कि आइन्दा यह मेरी क़ौम की
मौरूसी मिलकियत होगा।

13ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे
पुश्त-दर-पुश्त याद किया जाएगा।
14क्यूँकि रब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करके
अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा।

15दीगर क़ौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं,
इन्सान के हाथ ने उन्हें बनाया।
16उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते,
उन की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
17उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं
सकते, उन के मुँह में साँस ही नहीं होती।
18जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो
जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे
बेहिस्स-ओ-हरकत हो जाएँ।

19ऐ इस्राईल के घराने, रब की सताइश कर।
ऐ हारून के घराने, रब की तम्जीद कर।
20ऐ लावी के घराने, रब की हम्द-ओ-सना
कर। ऐ रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब की
सताइश करो।
21सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द
हो जो यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की
हम्द हो!

तख़्लीक़ और क़ौम की तारीख़ में अल्लाह के मोजिज़े

136 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह
भला है, और उस की शफ़क़त
अबदी है।

2ख़ुदाओं के ख़ुदा का शुक्र करो, क्यूँकि उस
की शफ़्क़त अबदी है।
3मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।
4जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है
उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त
अबदी है।
5जिस ने हिक्मत के साथ आसमान बनाया
उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त
अबदी है।
6जिस ने ज़मीन को मज़बूती से पानी के
ऊपर लगा दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।
7जिस ने आसमान की रौशनियों को ख़ल्क़
किया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़्क़त अबदी है।
8जिस ने सूरज को दिन के वक़्त हुकूमत
करने के लिए बनाया उस का शुक्र करो,
क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी है।
9जिस ने चाँद और सितारों को रात के वक़्त
हुकूमत करने के लिए बनाया उस का शुक्र
करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी है।
10जिस ने मिस्र में पहलौठों को मार डाला
उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त
अबदी है।
11जो इस्राईल को मिस्रियों में से निकाल
लाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़्क़त अबदी है।
12जिस ने उस वक़्त बड़ी ताक़त और
क़ुदरत का इज़हार किया उस का शुक्र करो,
क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी है।
13जिस ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम को दो हिस्सों में
तक़्सीम कर दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।
14जिस ने इस्राईल को उस के बीच में से
गुज़रने दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस
की शफ़्क़त अबदी है।
15जिस ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज को
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में बहा कर ग़र्क़ कर दिया उस
का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी
है।
16जिस ने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की
क़ियादत की उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस
की शफ़्क़त अबदी है।
17जिस ने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उस
का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी
है।
18जिस ने ताक़तवर बादशाहों को मार
डाला उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़्क़त अबदी है।
19जिस ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को
मौत के घाट उतारा उस का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।
20जिस ने बसन के बादशाह ओज को
हलाक कर दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।
21जिस ने उन का मुल्क इस्राईल को मीरास
में दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़्क़त अबदी है।
22जिस ने उन का मुल्क अपने ख़ादिम
इस्राईल की मौरूसी मिलकियत बनाया उस
का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी
है।
23जिस ने हमारा ख़याल किया जब हम
ख़ाक में दब गए थे उस का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।
24जिस ने हमें उन के क़ब्ज़े से छुड़ाया जो
हम पर ज़ुल्म कर रहे थे उस का शुक्र करो,
क्यूँकि उस की शफ़्क़त अबदी है।
25जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहय्या
करता है उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़्क़त अबदी है।
26आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्यूँकि
उस की शफ़्क़त अबदी है।

बाबल में जिलावतनों की आह-ओ-ज़ारी

137 जब सिय्यून की याद आई
तो हम बाबल की नहरों के
किनारे ही बैठ कर रो पड़े।
2हम ने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने
सरोद लटका दिए,
3क्यूँकि जिन्हों ने हमें गिरिफ़्तार किया था
उन्हों ने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और
जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्हों ने ख़ुशी का
मुतालबा किया, "हमें सिय्यून का कोई गीत
सुनाओ!"
4लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह
रब का गीत गाएँ?
5ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो
मेरा दहना हाथ सूख जाए।
6अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम
को अपनी अज़ीमतरीन ख़ुशी से ज़्यादा
क़ीमती न समझूँ तो मेरी ज़बान तालू से चिपक
जाए।

7ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों
ने उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के
क़ब्ज़े में आया। उस वक़्त वह बोले, "उसे ढा
दो! बुन्यादों तक उसे गिरा दो!"
8ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई
है, मुबारक है वह जो तुझे उस का बदला दे जो
तू ने हमारे साथ किया है।
9मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़ कर
पत्थर पर पटख़ दे।

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

138 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी
सताइश करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी
तम्जीद करूँगा।
2मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख़
करके सिज्दा करूँगा, तेरी मेहरबानी और
वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक्र करूँगा। क्यूँकि
तू ने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों
पर सरफ़राज़ किया है।
3जिस दिन मैं ने तुझे पुकारा तू ने मेरी सुन
कर मेरी जान को बड़ी तक़वियत दी।

4ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह
के फ़रमान सुन कर तेरा शुक्र करें।
5वह रब की राहों की मद्हसराई करें, क्यूँकि
रब का जलाल अज़ीम है।
6क्यूँकि गो रब बुलन्दियों पर है वह
पस्तहाल का ख़याल करता और मग़रूरों को
दूर से ही पहचान लेता है।

7जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती
तो तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू
अपना दहना हाथ बढ़ा कर मुझे मेरे दुश्मनों
के तैश से बचाता है।
8रब मेरी ख़ातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी
शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिन को तेरे
हाथों ने बनाया है!

अल्लाह सब कुछ जानता
और हर जगह मौजूद है

139 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, तू मेरा मुआइना करता और मुझे ख़ूब
जानता है।
2मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू
दूर से ही मेरी सोच समझता है।
3तू मुझे जाँचता है, ख़्वाह मैं रास्ते में हूँ या
आराम करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाक़िफ़
है।
4क्यूँकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर
आए तू ऐ रब पहले ही उस का पूरा इल्म रखता
है।
5तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा
हाथ मेरे ऊपर ही रहता है।
6इस का इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम
है कि मैं इसे समझ नहीं सकता।

7मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे
से कहाँ फ़रार हो जाऊँ?
8अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ
मौजूद है, अगर उतर कर अपना बिस्तर
पाताल में बिछाऊँ तो तू वहाँ भी है।
9गो मैं तुलू-ए-सुब्ह के परों पर उड़ कर
समुन्दर की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
10वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क़ियादत करेगा,
वहाँ भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
11अगर मैं कहूँ, "तारीकी मुझे छुपा दे, और
मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए," तो
भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।
12तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती,
तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है
बल्कि रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

13क्यूँकि तू ने मेरा बातिन बनाया है, तू ने
मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।
14मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली
और मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे
काम हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब
जानती है।
15मेरा ढाँचा तुझ से छुपा नहीं था जब मुझे
पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की
गहराइयों में तश्कील दिया गया।
16तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब
मेरे जिस्म की शक्ल अभी नामुकम्मल थी।
जितने भी दिन मेरे लिए मुक़र्रर थे वह सब
तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी
नहीं गुज़रा था।

17ऐ अल्लाह, तेरे ख़यालात समझना मेरे
लिए कितना मुश्किल है! उन की कुल तादाद
कितनी अज़ीम है।
18अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से
ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ
होता हूँ।

19ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले,
कि ख़ूँख़ार मुझ से दूर हो जाएँ।
20वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे
मुख़ालिफ़ झूट बोलते हैं।
21ऐ रब, क्या मैं उन से नफ़रत न करूँ जो
तुझ से नफ़रत करते हैं? क्या मैं उन से घिन
न खाऊँ जो तेरे ख़िलाफ़ उठे हैं?
22यक़ीनन मैं उन से सख़्त नफ़रत करता
हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।

23ऐ अल्लाह, मेरा मुआइना करके मेरे दिल
का हाल जान ले, मुझे जाँच कर मेरे बेचैन
ख़यालात को जान ले।
24मैं नुक़्सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा?
अबदी राह पर मेरी क़ियादत कर!

दुश्मन से रिहाई की दुआ

140 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से
महफ़ूज़ रख।
2दिल में वह बुरे मन्सूबे बांधते, रोज़ाना जंग
छेड़ते हैं।
3उन की ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़
है, और उन के होंटों में साँप का ज़हर है।
(सिलाह)
4ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफ़ूज़ रख,
ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उन से जो मेरे
पाँओ को ठोकर खिलाने के मन्सूबे बांध रहे
हैं।
5मग़रूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से
छुपाए हैं, उन्हों ने जाल बिछा कर रास्ते के
किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं।
(सिलाह)

6मैं रब से कहता हूँ, "तू ही मेरा ख़ुदा है,
मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!"

7ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी
नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे
सर की हिफ़ाज़त करता है।
8ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उस
का इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि
यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)
9उन्हों ने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो
आफ़त उन के होंट मुझ पर लाना चाहते हैं
वह उन के अपने सरों पर आए!
10दहकते कोएले उन पर बरसें, और उन्हें
आग में, अथाह गढ़ों में फैंका जाए ताकि
आइन्दा कभी न उठें।
11तोहमत लगाने वाला मुल्क में क़ाइम न
रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मार कर उस
का पीछा करे।

12मैं जानता हूँ कि रब अदालत में
मुसीबतज़दा का दिफ़ा करेगा। वही
ज़रूरतमन्द का इन्साफ़ करेगा।
13यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश
करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

141 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ,
मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे
आवाज़ देता हूँ तो मेरी फ़र्याद पर ध्यान दे!
2मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की क़ुर्बानी की
तरह क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ
शाम की ग़ल्ला की नज़र की तरह मन्ज़ूर हों।
3ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों
के दरवाज़े की निगहबानी कर।
4मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ माइल
न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ
मिल कर बुरे काम में मुलव्वस हो जाऊँ और
उन के लज़ीज़ खानों में शिर्कत करूँ।

5रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे
तम्बीह करे। मेरा सर इस से इन्कार नहीं
करेगा, क्यूँकि यह उस के लिए शिफ़ाबख़्श
तेल की मानिन्द होगा। लेकिन मैं हर वक़्त
शरीरों की हरकतों के ख़िलाफ़ दुआ करता हूँ।
6जब वह गिर कर उस चटान के हाथ में
आएँगे जो उन का मुन्सिफ़ है तो वह मेरी बातों
पर ध्यान देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह
कितनी प्यारी हैं।

7ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की
मानिन्द हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से
हल चलाया है कि ढेले उड़ कर इधर उधर
बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह
तक बिखर गई हैं।
8ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ
पर लगी रहती हैं, और मैं तुझ में पनाह लेता
हूँ। मुझे मौत के हवाले न कर।
9मुझे उस जाल से महफ़ूज़ रख जो उन्हों ने
मुझे पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों
के फंदों से बचाए रख।
10बेदीन मिल कर उन के अपने जालों में
उलझ जाएँ जबकि मैं बच कर आगे निकलूँ।

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

142 हिक्मत का गीत। दुआ जो दाऊद
ने की जब वह ग़ार में था।
मैं मदद के लिए चीख़ता चिल्लाता रब को
पुकारता हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से
इल्तिजा करता हूँ।
2मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी उस के सामने
उंडेल देता, अपनी तमाम मुसीबत उस के
हुज़ूर पेश करता हूँ।
3जब मेरी रूह मेरे अन्दर निढाल हो जाती
है तो तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में
मैं चलता हूँ उस में लोगों ने फंदा छुपाया है।
4मैं दहनी तरफ़ नज़र डाल कर देखता हूँ,
लेकिन कोई नहीं है जो मेरा ख़याल करे। मैं
बच नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान
की फ़िक्र करे।

5ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं
कहता हूँ, "तू मेरी पनाहगाह और ज़िन्दों के
मुल्क में मेरा मौरूसी हिस्सा है।"
6मेरी चीख़ों पर ध्यान दे, क्यूँकि मैं बहुत
पस्त हो गया हूँ। मुझे उन से छुड़ा जो मेरा
पीछा कर रहे हैं, क्यूँकि मैं उन पर क़ाबू नहीं
पा सकता।
7मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला
ताकि तेरे नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे
साथ भलाई करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द
जमा हो जाएंगे।

बचाओ और क़ियादत की गुज़ारिश (तौबा का सातवाँ ज़बूर)

143 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी
और रास्ती की ख़ातिर मेरी सुन!
2अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में
न ला, क्यूँकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार
रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।
3क्यूँकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके
उसे ख़ाक में कुचल दिया है। उस ने मुझे उन
लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े
अर्से से मुर्दा हैं।
4मेरे अन्दर मेरी रूह निढाल है, मेरे अन्दर
मेरा दिल दह्शत के मारे बेहिस्स-ओ-हरकत
हो गया है।

5मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और
तेरे कामों पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता हूँ। जो
कुछ तेरे हाथों ने किया उस में मैं महव-ए-
ख़याल रहता हूँ।
6मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी
जान ख़ुश्क ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है।
(सिलाह)

7ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान
तो ख़त्म होने वाली है। अपना चेहरा मुझ से
छुपाए न रख, वर्ना मैं गढ़े में उतरने वालों की
मानिन्द हो जाऊँगा।
8सुब्ह के वक़्त मुझे अपनी शफ़्क़त की
ख़बर सुना, क्यूँकि मैं तुझ पर भरोसा रखता
हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है,
क्यूँकि मैं तेरा ही आरज़ूमन्द हूँ।
9ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्यूँकि मैं
तुझ में पनाह लेता हूँ।
10मुझे अपनी मर्ज़ी पूरी करना सिखा,
क्यूँकि तू मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार
ज़मीन पर मेरी राहनुमाई करे।
11ऐ रब, अपने नाम की ख़ातिर मेरी जान
को ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान
को मुसीबत से बचा।
12अपनी शफ़्क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक
कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह
कर! क्यूँकि मैं तेरा ख़ादिम हूँ।

नजात और ख़ुशहाली की दुआ

144 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी चटान की हम्द हो,
जो मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उंगलियों को
जंग करने की तर्बियत देता है।
2वह मेरी शफ़्क़त, मेरा क़िला, मेरा
नजातदहिन्दा और मेरी ढाल है। उसी में मैं
पनाह लेता हूँ, और वही दीगर अक़्वाम को
मेरे ताबे कर देता है।

3ऐ रब, इन्सान कौन है कि तू उस का
ख़याल रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उस
का लिहाज़ करे?
4इन्सान दम भर का ही है, उस के दिन तेज़ी
से गुज़रने वाले साय की मानिन्द हैं।

5ऐ रब, अपने आसमान को झुका कर उतर
आ! पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।
6बिजली भेज कर उन्हें मुन्तशिर कर, अपने
तीर चला कर उन्हें दर्हम-बर्हम कर।

7अपना हाथ बुलन्दियों से नीचे बढ़ा और
मुझे छुड़ा कर पानी की गहराइयों और
परदेसियों के हाथ से बचा,
8जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ
फ़रेब देता है।

9ऐ अल्लाह, मैं तेरी तम्जीद में नया गीत
गाऊँगा, दस तारों का सितार बजा कर तेरी
मद्हसराई करूँगा।
10क्यूँकि तू बादशाहों को नजात देता और
अपने ख़ादिम दाऊद को मोहलक तलवार से
बचाता है।

11मुझे छुड़ा कर परदेसियों के हाथ से बचा,
जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ
फ़रेब देता है।
12हमारे बेटे जवानी में फलने फूलने वाले
पौदों की मानिन्द हों, हमारी बेटियाँ महल को
सजाने के लिए तराशे हुए कोने के सतून की
मानिन्द हों।
13हमारे गोदाम भरे रहें और हर क़िस्म
की ख़ुराक मुहय्या करें। हमारी भेड़-बकरियाँ
हमारे मैदानों में हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे
जन्म दें।
14हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न
कोई ज़ाए हो जाए, न किसी को नुक़्सान
पहुँचे। हमारे चौकों में आह-ओ-ज़ारी की
आवाज़ सुनाई न दे।
15मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब
कुछ सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम
जिस का ख़ुदा रब है!

अल्लाह की अबदी शफ़्क़त

145 दाऊद का ज़बूर। हम्द-ओ-सना का
गीत।
ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करूँगा। ऐ
बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की सताइश
करूँगा।

2रोज़ाना मैं तेरी तम्जीद करूँगा, हमेशा तक
तेरे नाम की हम्द करूँगा।
3रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लाइक़ है।
उस की अज़मत इन्सान की समझ से बाहर है।
4एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ
सराहे जो तू ने किया है, वह दूसरों को तेरे
ज़बरदस्त काम सुनाएँ।
5मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और
तेरे मोजिज़ों में महव-ए-ख़याल रहूँगा।
6लोग तेरे हैबतनाक कामों की क़ुदरत पेश
करें, और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।
7वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें
और ख़ुशी से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।
8रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल
और शफ़्क़त से भरपूर है।
9रब सब के साथ भलाई करता है, वह
अपनी तमाम मख़्लूक़ात पर रहम करता है।

10ऐ रब, तेरी तमाम मख़्लूक़ात तेरा शुक्र
करें। तेरे ईमानदार तेरी तम्जीद करें।
11वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र
करें और तेरी क़ुदरत बयान करें
12ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और
तेरी बादशाही की जलाली शान-ओ-शौकत से
आगाह हो जाएँ।
13तेरी बादशाही की कोई इन्तिहा नहीं,
और तेरी सल्तनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक
क़ाइम रहेगी।

14रब तमाम गिरने वालों का सहारा है। जो
भी दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।
15सब की आँखें तेरे इन्तिज़ार में रहती हैं,
और तू हर एक को वक़्त पर उस का खाना
मुहय्या करता है।
16तू अपनी मुट्ठी खोल कर हर जानदार की
ख़्वाहिश पूरी करता है।
17रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने
तमाम कामों में वफ़ादार है।

18रब उन सब के क़रीब है जो उसे पुकारते
हैं, जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।
19जो उस का ख़ौफ़ मानें उन की आर्ज़ू वह
पूरी करता है। वह उन की फ़र्यादें सुन कर उन
की मदद करता है।
20रब उन सब को महफ़ूज़ रखता है जो उसे
प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक
करता है।

21मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम
मख़्लूक़ात हमेशा तक उस के मुक़द्दस नाम
की सताइश करें।

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

146 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान,
रब की हम्द कर।
2जीते जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र
भर अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

3शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद
पर जो नजात नहीं दे सकता।
4जब उस की रूह निकल जाए तो वह
दुबारा ख़ाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उस
के मन्सूबे अधूरे रह जाते हैं।

5मुबारक है वह जिस का सहारा याक़ूब का
ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इन्तिज़ार में
रहता है।
6क्यूँकि उस ने आसमान-ओ-ज़मीन,
समुन्दर और जो कुछ उन में है बनाया है।
वह हमेशा तक वफ़ादार है।
7वह मज़्लूमों का इन्साफ़ करता और भूकों
को रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद
करता है।
8रब अंधों की आँखें बहाल करता और
ख़ाक में दबे हुओं को उठा खड़ा करता है,
रब रास्तबाज़ को प्यार करता है।
9रब परदेसियों की देख-भाल करता,
यतीमों और बेवाओं को क़ाइम रखता है।
लेकिन वह बेदीनों की राह को टेढ़ा बना कर
कामयाब होने नहीं देता।

10रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून,
तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब
की हम्द हो।

काइनात और तारीख़ में रब का बन्द-ओ-बस्त

147 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा
की मद्हसराई करना कितना
भला है, उस की तम्जीद करना कितना प्यारा
और ख़ूबसूरत है।
2रब यरूशलम को तामीर करता और
इस्राईल के मुन्तशिर जिलावतनों को जमा
करता है।
3वह दिलशिकस्तों को शिफ़ा दे कर उन के
ज़ख़्मों पर मर्हम-पट्टी लगाता है।
4वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर
एक का नाम ले कर उन्हें बुलाता है।
5हमारा रब अज़ीम है, और उस की क़ुदरत
ज़बरदस्त है। उस की हिक्मत की कोई इन्तिहा
नहीं।
6रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता
लेकिन बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।

7रब की तम्जीद में शुक्र का गीत गाओ,
हमारे ख़ुदा की ख़ुशी में सरोद बजाओ।
8क्यूँकि वह आसमान पर बादल छाने देता,
ज़मीन को बारिश मुहय्या करता और पहाड़ों
पर घास फूटने देता है।
9वह मवेशी को चारा और कव्वे के बच्चों
को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचा कर
माँगते हैं।

10न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अन्दोज़
होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश
होता है।

11रब उन ही से ख़ुश होता है जो उस
का ख़ौफ़ मानते और उस की शफ़क़त के
इन्तिज़ार में रहते हैं।

12ऐ यरूशलम, रब की मद्हसराई कर! ऐ
सिय्यून, अपने ख़ुदा की हम्द कर!
13क्यूँकि उस ने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत
करके तेरे दरमियान बसने वाली औलाद को
बरकत दी है।
14वही तेरे इलाक़े में अम्न और सुकून क़ाइम
रखता और तुझे बेहतरीन गन्दुम से सेर करता
है।
15वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है
तो उस का कलाम तेज़ी से पहुँचता है।
16वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहय्या करता और
पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता
है।
17वह अपने ओले कंकरों की तरह ज़मीन
पर फैंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी
बर्दाश्त कर सकता है?
18वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता
है तो बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा
चलने देता है तो पानी टपकने लगता है।

19उस ने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया,
इस्राईल पर अपने अह्काम और आईन
ज़ाहिर किए हैं।
20ऐसा सुलूक उस ने किसी और क़ौम से
नहीं किया। दीगर अक़्वाम तो तेरे अह्काम
नहीं जानतीं। रब की हम्द हो!

आसमान-ओ-ज़मीन पर
अल्लाह की तम्जीद

148 रब की हम्द हो! आसमान
से रब की सताइश करो,
बुलन्दियों पर उस की तम्जीद करो!
2ऐ उस के तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द
करो! ऐ उस के तमाम लश्करो, उस की
तारीफ़ करो!
3ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो!
ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश
करो!
4ऐ बुलन्दतरीन आसमानो और आसमान
के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5वह रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि
उस ने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।
6उस ने नाक़ाबिल-ए-मन्सूख़ फ़रमान जारी
करके उन्हें हमेशा के लिए क़ाइम किया है।

7ऐ समुन्दर के अज़दहाओ और तमाम
गहराइयो, ज़मीन से रब की तम्जीद करो!
8ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुन्द और उस के
हुक्म पर चलने वाली आँधियो, उस की हम्द
करो!
9ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरख़तो
और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!
10ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगने वाली
मख़्लूक़ात और परिन्दो, उस की हम्द करो!
11ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो,
सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस
की तम्जीद करो!
12ऐ नौजवानो और कुंवारियो, बुज़ुर्गो और
बच्चो, उस की हम्द करो!

13सब रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि
सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की
अज़मत आसमान-ओ-ज़मीन से आला है।
14उस ने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके[a]
अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है,
यानी इस्राईलियों की शोहरत, उस क़ौम की
जो उस के क़रीब रहती है। रब की हम्द हो!

सिय्यून रब की हम्द करे!

149 रब की हम्द हो! रब की
तम्जीद में नया गीत गाओ,
ईमानदारों की जमाअत में उस की तारीफ़
करो।
2इस्राईल अपने ख़ालिक़ से ख़ुश हो,
सिय्यून के फ़र्ज़न्द अपने बादशाह की ख़ुशी
मनाएँ।
3वह नाच कर उस के नाम की सताइश करें,
दफ़ और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

4क्यूँकि रब अपनी क़ौम से ख़ुश है। वह
मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शान-ओ-
शौकत से आरास्ता करता है।
5ईमानदार इस शान-ओ-शौकत के बाइस
ख़ुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी
के नारे लगाएँ।
6उन के मुँह में अल्लाह की हम्द-ओ-सना
और उन के हाथों में दोधारी तलवार हो
7ताकि दीगर अक़्वाम से इन्तिक़ाम लें और
उम्मतों को सज़ा दें।
8वह उन के बादशाहों को ज़न्जीरों में और
उन के शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे
9ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिस का फ़ैसला
क़लमबन्द हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के
तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द
हो!

रब की हम्द-ओ-सना

150 रब की हम्द हो! अल्लाह के
मक़्दिस में उस की सताइश
करो। उस की क़ुदरत के बने हुए आसमानी
गुम्बद में उस की तम्जीद करो।
2उस के अज़ीम कामों के बाइस उस की
हम्द करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के
बाइस उस की सताइश करो।
3नरसिंगा फूँक कर उस की हम्द करो,
सितार और सरोद बजा कर उस की तम्जीद
करो।
4दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो।
तारदार साज़ और बाँसरी बजा कर उस की
सताइश करो।
5झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की
हम्द करो, गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़
करो।
6जिस में भी साँस है वह रब की सताइश
करे। रब की हम्द हो!।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलन्द
करके।

अम्साल

किताब का मक़्सद

1 ज़ैल में इस्राईल के बादशाह सुलैमान
बिन दाऊद की अम्साल क़लमबन्द हैं।
2इन से तू हिक्मत और तर्बियत हासिल
करेगा, बसीरत के अल्फ़ाज़ समझने के
क़ाबिल हो जाएगा, 3और दानाई दिलाने वाली
तर्बियत, रास्ती, इन्साफ़ और दियानतदारी
अपनाएगा। 4यह अम्साल सादालौह को
होश्यारी और नौजवान को इल्म और तमीज़
सिखाती हैं। 5जो दाना है वह सुन कर अपने
इल्म में इज़ाफ़ा करे, जो समझदार है वह
राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6तब वह
अम्साल और तम्सीलें, दानिशमन्दों की बातें
और उन के मुअम्मे समझ लेगा।

7हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब
का ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक़ हिक्मत और
तर्बियत को हक़ीर जानते हैं।

ग़लत साथियों से ख़बरदार

8मेरे बेटे, अपने बाप की तर्बियत के ताबे
रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न
कर। 9क्यूँकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा
और तेरे गले में गुलूबन्द हैं। 10मेरे बेटे, जब
ख़ताकार तुझे फुसलाने की कोशिश करें तो
उन के पीछे न हो ले। 11उन की बात न
मान जब वह कहें, "आ, हमारे साथ चल!
हम ताक में बैठ कर किसी को क़त्ल करें,
बिलावजह किसी बेक़ुसूर की घात लगाएँ।
12हम उन्हें पाताल की तरह ज़िन्दा निगल लें,
उन्हें मौत के गढ़े में उतरने वालों की तरह एक
दम हड़प कर लें। 13हम हर क़िस्म की क़ीमती
चीज़ हासिल करेंगे, अपने घरों को लूट के
माल से भर लेंगे। 14आ, जुरअत करके हम में
शरीक हो जा, हम लूट का तमाम माल बराबर
तक़्सीम करेंगे।"

15मेरे बेटे, उन के साथ मत जाना, अपना
पाँओ उन की राहों पर रखने से रोक लेना।
16क्यूँकि उन के पाँओ ग़लत काम के पीछे
दौड़ते, ख़ून बहाने के लिए भागते हैं। 17जब
चिड़ीमार अपना जाल लगा कर उस पर
परिन्दों को फाँसने के लिए रोटी के टुकड़े
बिखेर देता है तो परिन्दों की नज़र में यह
बेमक़्सद है। 18यह लोग भी एक दिन फंस
जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने
आप को तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात
लगाते हैं तो अपनी ही जान को नुक़्सान
पहुँचाते हैं। 19यही उन सब का अन्जाम है जो
नारवा नफ़ा के पीछे भागते हैं। नाजाइज़ नफ़ा
अपने मालिक की जान छीन लेता है।

हिक्मत की पुकार

20हिक्मत गली में ज़ोर से आवाज़ देती,
चौकों में बुलन्द आवाज़ से पुकारती है। 21जहाँ
सब से ज़्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला

चिल्ला कर बोलती, शहर के दरवाज़ों पर
ही अपनी तक़रीर करती है, 22"ऐ सादालौह
लोगो, तुम कब तक अपनी सादालौही से
मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़ उड़ाने वाले कब तक
अपने मज़ाक़ से लुत्फ़ उठाएँगे, अहमक़ कब
तक इल्म से नफ़रत करेंगे? 23आओ, मेरी
सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह
का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें
सुनाऊँगी।

24लेकिन जब मैं ने आवाज़ दी तो तुम ने
इन्कार किया, जब मैं ने अपना हाथ तुम्हारी
तरफ़ बढ़ाया तो किसी ने भी तवज्जुह न
दी। 25तुम ने मेरे किसी मश्वरे की परवा न
की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़दीक क़ाबिल-
ए-क़बूल नहीं थी। 26इस लिए जब तुम पर
आफ़त आएगी तो मैं क़हक़हा लगाऊँगी, जब
तुम हौलनाक मुसीबत में फंस जाओगे तो
तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाऊँगी। 27उस वक़्त तुम पर
दह्शतनाक आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान
की तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत
और तक्लीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। 28तब
वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उन की नहीं
सुनूँगी, वह मुझे ढूँडेंगे पर पाएँगे नहीं।

29क्यूँकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का
ख़ौफ़ मानने के लिए तय्यार नहीं थे। 30मेरा
मश्वरा उन्हें क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर
सरज़निश को हक़ीर जानते थे। 31चुनाँचे अब
वह अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने
मन्सूबों की फ़सल खा खा कर सेर हो जाएँ।

32क्यूँकि सहीह राह से दूर होने का अमल
सादालौह को मार डालता है, और अहमक़ों
की बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। 33लेकिन
जो मेरी सुने वह सुकून से बसेगा, हौलनाक
मुसीबत उसे परेशान नहीं करेगी।"

हिक्मत की अहमियत

2 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे
अह्काम अपने दिल में महफ़ूज़ रख।
2अपना कान हिक्मत पर धर, अपना दिल
समझ की तरफ़ माइल कर। 3बसीरत के
लिए आवाज़ दे, चिल्ला कर समझ माँग।
4उसे यूँ तलाश कर गोया चाँदी हो, उस का
यूँ खोज लगा गोया पोशीदा ख़ज़ाना हो।
5अगर तू ऐसा करे तो तुझे रब के ख़ौफ़
की समझ आएगी और अल्लाह का इर्फ़ान
हासिल होगा। 6क्यूँकि रब ही हिक्मत अता
करता, उसी के मुँह से इर्फ़ान और समझ
निकलती है। 7वह सीधी राह पर चलने वालों
को कामयाबी फ़राहम करता और बेइल्ज़ाम
ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की ढाल बना रहता
है। 8क्यूँकि वह इन्साफ़ पसन्दों की राहों की
पहरादारी करता है। जहाँ भी उस के ईमानदार
चलते हैं वहाँ वह उन की हिफ़ाज़त करता है।

9तब तुझे रास्ती, इन्साफ़, दियानतदारी
और हर अच्छी राह की समझ आएगी।
10क्यूँकि तेरे दिल में हिक्मत दाख़िल हो
जाएगी, और इल्म-ओ-इर्फ़ान तेरी जान को
प्यारा हो जाएगा। 11तमीज़ तेरी हिफ़ाज़त
और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। 12हिक्मत
तुझे ग़लत राह और कजरौ बातें करने वाले से
बचाए रखेगी। 13ऐसे लोग सीधी राह को छोड़
देते हैं ताकि तारीक रास्तों पर चलें, 14वह बुरी
हरकतें करने से ख़ुश हो जाते हैं, ग़लत काम
की कजरवी देख कर जश्न मनाते हैं। 15उन की
राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चलें आवारा
फिरते हैं।

16हिक्मत तुझे नाजाइज़ औरत से छुड़ाती
है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी
बातें करती, 17जो अपने जीवनसाथी को तर्क
करके अपने ख़ुदा का अह्द भूल जाती है।
18क्यूँकि उस के घर में दाख़िल होने का
अन्जाम मौत, उस की राहों की मन्ज़िल-ए-
मक़सूद पाताल है। 19जो भी उस के पास जाए

वह वापस नहीं आएगा, वह ज़िन्दगीबख़्श
राहों पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।
20चुनाँचे अच्छे लोगों की राह पर चल फिर,
ध्यान दे कि तेरे क़दम रास्तबाज़ों के रास्ते पर
रहें। 21क्यूँकि सीधी राह पर चलने वाले मुल्क
में आबाद होंगे, आख़िरकार बेइल्ज़ाम ही उस
में बाक़ी रहेंगे। 22लेकिन बेदीन मुल्क से मिट
जाएंगे, और बेवफ़ाओं को उखाड़ कर मुल्क
से ख़ारिज कर दिया जाएगा।

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिक्मत की बरकत

3 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना।
मेरे अह्काम तेरे दिल में महफ़ूज़ रहें।
2क्यूँकि इन ही से तेरी ज़िन्दगी के दिनों और
सालों में इज़ाफ़ा होगा और तेरी ख़ुशहाली
बढ़ेगी। 3शफ़्क़त और वफ़ा तेरा दामन न
छोड़ें। उन्हें अपने गले से बांधना, अपने
दिल की तख़्ती पर कन्दा करना। 4तब तुझे
अल्लाह और इन्सान के सामने मेहरबानी और
क़बूलियत हासिल होगी।
5पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और
अपनी अक़्ल पर तकिया न कर। 6जहाँ भी
तू चले सिर्फ़ उसी को जान ले, फिर वह ख़ुद
तेरी राहों को हमवार करेगा। 7अपने आप
को दानिशमन्द मत समझना बल्कि रब का
ख़ौफ़ मान कर बुराई से दूर रह। 8इस से तेरा
बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तर-ओ-
ताज़ा हो जाएँगी। 9अपनी मिलकियत और
अपनी तमाम पैदावार के पहले फल से रब का
एहतिराम कर, 10फिर तेरे गोदाम अनाज से
भर जाएंगे और तेरे बर्तन मै से छलक उठेंगे।
11मेरे बेटे, रब की तर्बियत को रद्द न कर,
जब वह तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। 12क्यूँकि
जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता
है, जिस तरह बाप उस बेटे को तम्बीह करता
है जो उसे पसन्द है।

हक़ीक़ी दौलत

13मुबारक है वह जो हिक्मत पाता है, जिसे
समझ हासिल होती है। 14क्यूँकि हिक्मत चाँदी
से कहीं ज़्यादा सूदमन्द है, और उस से सोने
से कहीं ज़्यादा क़ीमती चीज़ें हासिल होती
हैं। 15हिक्मत मोतियों से ज़्यादा नफ़ीस है,
तेरे तमाम ख़ज़ाने उस का मुक़ाबला नहीं कर
सकते। 16उस के दहने हाथ में उम्र की दराज़ी
और बाएँ हाथ में दौलत और इज़्ज़त है।
17उस की राहें ख़ुशगवार, उस के तमाम रास्ते
पुरअम्न हैं। 18जो उस का दामन पकड़ ले उस
के लिए वह ज़िन्दगी का दरख़्त है। मुबारक है
वह जो उस से लिपटा रहे। 19रब ने हिक्मत के
वसीले से ही ज़मीन की बुन्याद रखी, समझ
के ज़रीए ही आसमान को मज़बूती से लगाया।
20उस के इर्फ़ान से ही गहराइयों का पानी फूट
निकला और आसमान से शबनम टपक कर
ज़मीन पर पड़ती है।
21मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास
महफ़ूज़ रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न
होने दे। 22उन से तेरी जान तर-ओ-ताज़ा और
तेरा गला आरास्ता रहेगा। 23तब तू चलते वक़्त
महफ़ूज़ रहेगा, और तेरा पाँओ ठोकर नहीं
खाएगा। 24तू पाँओ फैला कर सो सकेगा, कोई
सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू लेट कर
गहरी नींद सोएगा। 25नागहाँ आफ़त से मत
डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर ग़ालिब
आती है, 26क्यूँकि रब पर तेरा एतिमाद है, वही
तेरे पाँओ को फंस जाने से महफ़ूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

27अगर कोई ज़रूरतमन्द हो और तू उस की
मदद कर सके तो उस के साथ भलाई करने से
इन्कार न कर। 28अगर तू आज कुछ दे सके
तो अपने पड़ोसी से मत कहना, “कल आना
तो मैं आप को कुछ दे दूँगा।” 29जो पड़ोसी
बेफ़िक्र तेरे साथ रहता है उस के ख़िलाफ़ बुरे
मन्सूबे मत बांधना। 30जिस ने तुझे नुक़्सान

नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुन्याद इल्ज़ाम न लगाना।

31न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई
राह इख़तियार कर। 32क्यूँकि बुरी राह पर
चलने वाले से रब घिन खाता है जबकि सीधी
राह पर चलने वालों को वह अपने राज़ों से
आगाह करता है। 33बेदीन के घर पर रब की
लानत आती जबकि रास्तबाज़ के घर को
वह बरकत देता है। 34मज़ाक़ उड़ाने वालों
का वह मज़ाक़ उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर
मेहरबानी करता है। 35दानिशमन्द मीरास में
इज़्ज़त पाएँगे जबकि अहमक़ के नसीब में
शर्मिन्दगी होगी।

बाप की नसीहत

4 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान
दो ताकि तुम सीख कर समझ हासिल
कर सको। 2मैं तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ,
इस लिए मेरी हिदायत को तर्क न करो। 3मैं
अभी अपने बाप के घर में नाज़ुक लड़का था,
अपनी माँ का वाहिद बच्चा, 4तो मेरे बाप ने
मुझे तालीम दे कर कहा,

"पूरे दिल से मेरे अल्फ़ाज़ अपना ले और
हर वक़्त मेरे अह्काम पर अमल कर तो तू
जीता रहेगा। 5हिक्मत हासिल कर, समझ
अपना ले! यह चीज़ें मत भूलना, मेरे मुँह
के अल्फ़ाज़ से दूर न होना। 6हिक्मत तर्क
न कर तो वह तुझे मह्फ़ूज़ रखेगी। उस से
मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी।
7हिक्मत इस से शुरू होती है कि तू हिक्मत
अपना ले। समझ हासिल करने के लिए बाक़ी
तमाम मिलकियत क़ुर्बान करने के लिए तय्यार
हो। 8उसे अज़ीज़ रख तो वह तुझे सरफ़राज़
करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे इज़्ज़त
बख़्शेगी। 9तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत सेहरे
से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज से
नवाज़ेगी।"

10मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले
तो तेरी उम्र दराज़ होगी। 11मैं तुझे हिक्मत
की राह पर चलने की हिदायत देता, तुझे
सीधी राहों पर फिरने देता हूँ। 12जब तू चलेगा
तो तेरे क़दमों को किसी भी चीज़ से रोका
नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं
खाएगा। 13तर्बियत का दामन थामे रह! उसे
न छोड़ बल्कि मह्फ़ूज़ रख, क्यूँकि वह तेरी
ज़िन्दगी है।

14बेदीनों की राह पर क़दम न रख, शरीरों
के रास्ते पर मत जा। 15उस से गुरेज़ कर, उस
पर सफ़र न कर बल्कि उस से कतरा कर
आगे निकल जा। 16क्यूँकि जब तक उन से
बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो ही नहीं
सकते, जब तक उन्हों ने किसी को ठोकर
खिला कर ख़ाक में मिला न दिया हो वह नींद
से महरूम रहते हैं। 17वह बेदीनी की रोटी खाते
और ज़ुल्म की मै पीते हैं। 18लेकिन रास्तबाज़
की राह तुलू-ए-सुब्ह की पहली रौशनी की
मानिन्द है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती
है। 19इस के मुक़ाबले में बेदीन का रास्ता
गहरी तारीकी की मानिन्द है, उन्हें पता ही नहीं
चलता कि किस चीज़ से ठोकर खा कर गिर
गए हैं।

20मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे
अल्फ़ाज़ पर कान धर। 21उन्हें अपनी नज़र
से ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में
मह्फ़ूज़ रख। 22क्यूँकि जो यह बातें अपनाएँ
वह ज़िन्दगी और पूरे जिस्म के लिए शिफ़ा
पाते हैं। 23तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल
की हिफ़ाज़त कर, क्यूँकि यही ज़िन्दगी का
सरचश्मा है। 24अपने मुँह से झूट और अपने
होंटों से कजगोई दूर कर। 25ध्यान दे कि तेरी
आँखें सीधा आगे की तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र
उस रास्ते पर लगी रहे जो सीधा है। 26अपने
पाँओ का रास्ता चलने के क़ाबिल बना दे,
ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। 27न दाईं, न
बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँओ को ग़लत
क़दम उठाने से बाज़ रख।

ज़िनाकारी से ख़बरदार

5 मेरे बेटे, मेरी हिक्मत पर ध्यान दे, मेरी
समझ की बातों पर कान धर। 2फिर
तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तेरे
होंट इल्म-ओ-इर्फ़ान महफ़ूज़ रखेंगे। 3क्यूँकि
ज़िनाकार औरत के होंटों से शहद टपकता
है, उस की बातें तेल की तरह चिकनी-चुपड़ी
होती हैं। 4लेकिन अन्जाम में वह ज़हर जैसी
कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़ साबित
होती है। 5उस के पाँओ मौत की तरफ़ उतरते,
उस के क़दम पाताल की जानिब बढ़ते जाते
हैं। 6उस के रास्ते कभी इधर कभी इधर फिरते
हैं ताकि तू ज़िन्दगी की राह पर तवज्जुह न दे
और उस की आवारगी को जान न ले।

7चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की
बातों से दूर न हो जाओ। 8अपने रास्ते उस
से दूर रख, उस के घर के दरवाज़े के क़रीब
भी न जा। 9ऐसा न हो कि तू अपनी ताक़त
किसी और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल
ज़ालिम के लिए ज़ाए करे। 10ऐसा न हो कि
परदेसी तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि
जो कुछ तू ने मेहनत-मशक़्क़त से हासिल
किया वह किसी और के घर में आए। 11तब
आख़िरकार तेरा बदन और गोश्त घुल जाएंगे,
और तू आहें भर भर कर 12कहेगा, "हाय, मैं
ने क्यूँ तर्बियत से नफ़रत की, मेरे दिल ने क्यूँ
सरज़निश को हक़ीर जाना? 13हिदायत करने
वालों की मैं ने न सुनी, अपने उस्तादों की बातों
पर कान न धरा। 14जमाअत के दरमियान ही
रहते हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई कि मैं
तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।"

15अपने ही हौज़ का पानी और अपने
ही कुएँ से फूटने वाला पानी पी ले। 16क्या
मुनासिब है कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी
नदियाँ चौकों में बह निकलें? 17जो पानी तेरा
अपना है वह तुझ तक महदूद रहे, अजनबी
उस में शरीक न हो जाए। 18तेरा चश्मा मुबारक
हो। हाँ, अपनी बीवी से ख़ुश रह। 19वही तेरी
मनमोहन हिरनी और दिलरुबा ग़ज़ाल[a] है।
उसी का प्यार तुझे तर-ओ-ताज़ा करे, उसी
की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

20मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यूँ मस्त
हो जाए, किसी दूसरे की बीवी से क्यूँ लिपट
जाए? 21ख़याल रख, इन्सान की राहें रब को
साफ़ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर
वह तवज्जुह देता है। 22बेदीन की अपनी ही
हरकतें उसे फंसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह
के रस्सों में जकड़ा रहता है। 23वह तर्बियत की
कमी के सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी
बड़ी हमाक़त के बाइस डगमगाते हुए अपने
अन्जाम को पहुँचेगा।

ज़मानत देने, काहिली और झूट से ख़बरदार

6 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का
ज़ामिन बना है? क्या तू ने हाथ मिला
कर वादा किया है कि मैं किसी दूसरे का
ज़िम्मादार ठहरूँगा? 2क्या तू अपने वादे से
बंधा हुआ, अपने मुँह के अल्फ़ाज़ से फंसा
हुआ है? 3ऐसा करने से तू अपने पड़ोसी के
हाथ में आ गया है, इस लिए अपनी जान को
छुड़ाने के लिए उस के सामने औंधे मुँह हो
कर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से तंग कर।
4अपनी आँखों को सोने न दे, अपने पपोटों
को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मादारी
से फ़ारिग़ न हो जाए। 5जिस तरह ग़ज़ाल
शिकारी के हाथ से और परिन्दा चिड़ीमार
के हाथ से छूट जाता है उसी तरह सिरतोड़
कोशिश कर ताकि तेरी जान छूट जाए।

6ऐ काहिल, चियूँटी के पास जा कर उस की
राहों पर ग़ौर कर! उस के नमूने से हिक्मत
सीख ले। 7उस पर न सरदार, न अफ़्सर या
हुक्मरान मुक़र्रर है, 8तो भी वह गर्मियों में
सर्दियों के लिए खाने का ज़ख़ीरा कर रखती,
फ़सल के दिनों में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी करती है।
9ऐ काहिल, तू मज़ीद कब तक सोया रहेगा,

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : पहाड़ी बकरी।

कब जाग उठेगा? 10तू कहता है, "मुझे थोड़ी
देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ
पर हाथ धरे बैठने दे ताकि आराम कर सकूँ।"
11लेकिन ख़बरदार, जल्द ही ग़ुर्बत राहज़न की
तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से
लेस डाकू की तरह तुझ पर टूट पड़ेगी।

12बदमआश और कमीना किस तरह
पहचाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता
है, 13अपनी आँखों, पाँओ और उंगलियों से
इशारा करके तुझे फ़रेब के जाल में फंसाने
की कोशिश करता है। 14उस के दिल में कजी
है, और वह हर वक़्त बुरे मन्सूबे बांधने में
लगा रहता है। जहाँ भी जाए वहाँ झगड़े छिड़
जाते हैं। 15लेकिन ऐसे शख़्स पर अचानक ही
आफ़त आएगी। एक ही लम्हे में वह पाश पाश
हो जाएगा। तब उस का इलाज नामुमकिन
होगा।

16रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों
से घिन खाता है,

17वह आँखें जो ग़ुरूर से देखती हैं, वह
ज़बान जो झूट बोलती है, वह हाथ जो
बेगुनाहों को क़त्ल करते हैं, 18वह दिल जो
बुरे मन्सूबे बांधता है, वह पाँओ जो दूसरों
को नुक़्सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, 19वह
गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो
भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से ख़बरदार

20मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा
रह, और अपनी माँ की हिदायत नज़रअन्दाज़
न कर। 21उन्हें यूँ अपने दिल के साथ बांधे
रख कि कभी दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की
तरह अपने गले में डाल ले। 22चलते वक़्त वह
तेरी राहनुमाई करें, आराम करते वक़्त तेरी
पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझ से हमकलाम
हों। 23क्यूँकि बाप का हुक्म चराग़ और माँ
की हिदायत रौशनी है, तर्बियत की डाँट-डपट
ज़िन्दगीबख़्श राह है। 24यूँ तू बदकार औरत
और दूसरे की ज़िनाकार बीवी की चिकनी-
चुपड़ी बातों से महफ़ूज़ रहेगा। 25दिल में उस
के हुस्न का लालच न कर, ऐसा न हो कि वह
पलक मार मार कर तुझे पकड़ ले। 26क्यूँकि
गो कस्बी आदमी को उस के पैसे से महरूम
करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार बीवी उस
की क़ीमती जान का शिकार करती है।

27क्या इन्सान अपनी झोली में भड़कती
आग यूँ उठा कर फिर सकता है कि उस
के कपड़े न जलें? 28या क्या कोई दहकते
कोएलों पर यूँ फिर सकता है कि उस के
पाँओ झुलस न जाएँ? 29इसी तरह जो किसी
दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उस का
अन्जाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को
छेड़े उसे सज़ा मिलेगी। 30जो भूक के मारे
अपना पेट भरने के लिए चोरी करे उसे लोग
हद से ज़्यादा हक़ीर नहीं जानते, 31हालाँकि
उसे चोरी किए हुए माल को सात गुना वापस
करना है और उस के घर की दौलत जाती
रहेगी। 32लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के
साथ ज़िना करे वह बेअक़ल है। जो अपनी
जान को तबाह करना चाहे वही ऐसा करता है।
33उस की पिटाई और बेइज़्ज़ती की जाएगी,
और उस की शर्मिन्दगी कभी नहीं मिटेगी।
34क्यूँकि शौहर ग़ैरत खा कर और तैश में आ
कर बेरहमी से बदला लेगा। 35न वह कोई
मुआवज़ा क़बूल करेगा, न रिश्वत लेगा, ख़्वाह
कितनी ज़्यादा क्यूँ न हो।

बेवफ़ा बीवी

7 मेरे बेटे, मेरे अल्फ़ाज़ की पैरवी कर,
मेरे अह्काम अपने अन्दर महफ़ूज़
रख। 2मेरे अह्काम के ताबे रह तो जीता
रहेगा। अपनी आँख की पुतली की तरह मेरी
हिदायत की हिफ़ाज़त कर। 3उन्हें अपनी
उंगली के साथ बांध, अपने दिल की तख़्ती
पर कन्दा कर। 4हिक्मत से कह, "तू मेरी
बहन है," और समझ से, "तू मेरी क़रीबी
रिश्तेदार है।" 5यही तुझे ज़िनाकार औरत से
महफ़ूज़ रखेंगी, दूसरे की उस बीवी से जो

अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से तुझे फ़ुसलाने
की कोशिश करती है।
6एक दिन मैं ने अपने घर की खिड़की[a] में
से बाहर झाँका 7तो क्या देखता हूँ कि वहाँ
कुछ सादालौह नौजवान खड़े हैं। उन में से एक
बेअक़्ल जवान नज़र आया। 8वह गली में से
गुज़र कर ज़िनाकार औरत के कोने की तरफ़
टहलने लगा। चलते चलते वह उस रास्ते पर
आ गया जो औरत के घर तक ले जाता है।
9शाम का धुन्दल्का था, दिन ढलने और रात
का अंधेरा छाने लगा था। 10तब एक औरत
कस्बी का लिबास पहने हुए चालाकी से उस
से मिलने आई। 11यह औरत इतनी बेलगाम
और ख़ुदसर है कि उस के पाँओ उस के घर में
नहीं टिकते। 12कभी वह गली में, कभी चौकों
में होती है, हर कोने पर वह ताक में बैठी रहती
है।
13अब उस ने नौजवान को पकड़ कर उसे
बोसा दिया। बेहया नज़र उस पर डाल कर उस
ने कहा, 14"मुझे सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश
करनी थीं, और आज ही मैं ने अपनी मन्नतें पूरी
कीं। 15इस लिए मैं निकल कर तुझ से मिलने
आई, मैं ने तेरा पता किया और अब तू मुझे
मिल गया है। 16मैं ने अपने बिस्तर पर मिस्र के
रंगीन कम्बल बिछाए, 17उस पर मुर, ऊद और
दारचीनी की ख़ुश्बू छिड़की है। 18आओ, हम
सुब्ह तक मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें,
हम इश्क़बाज़ी से लुत्फ़अन्दोज़ हों! 19क्यूँकि
मेरा ख़ावन्द घर में नहीं है, वह लम्बे सफ़र के
लिए रवाना हुआ है। 20वह बटवे में पैसे डाल
कर चला गया है और पूरे चाँद तक वापस नहीं
आएगा।"
21ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान
को तरग़ीब दे कर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों
से वरग़लाया। 22नौजवान सीधा उस के पीछे
यूँ हो लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए
जाता या हिरन उछल कर फंदे में फंस जाता
है। 23क्यूँकि एक वक़्त आएगा कि तीर उस
का दिल चीर डालेगा। लेकिन फ़िलहाल उस
की हालत उस चिड़िया की मानिन्द है जो उड़
कर जाल में आ जाती और ख़याल तक नहीं
करती कि मेरी जान ख़तरे में है।
24चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की
बातों पर ध्यान दो! 25तेरा दिल भटक कर
उस तरफ़ रुख़ न करे जहाँ ज़िनाकार औरत
फिरती है, ऐसा न हो कि तू आवारा हो कर
उस की राहों में उलझ जाए। 26क्यूँकि उन की
तादाद बड़ी है जिन्हें उस ने गिरा कर मौत के
घाट उतारा है, उस ने मुतअद्दिद लोगों को मार
डाला है। 27उस का घर पाताल का रास्ता है जो
लोगों को मौत की कोठड़ियों तक पहुँचाता है।

हिक्मत की दावत और वादा

8 सुनो! क्या हिक्मत आवाज़ नहीं देती?
हाँ, समझ ऊँची आवाज़ से एलान
करती है। 2वह बुलन्दियों पर खड़ी है, उस
जगह जहाँ तमाम रास्ते एक दूसरे से मिलते हैं।
3शहर के दरवाज़ों पर जहाँ लोग निकलते और
दाख़िल होते हैं वहाँ हिक्मत ज़ोरदार आवाज़
से पुकारती है,

4"ऐ मर्दो, मैं तुम ही को पुकारती हूँ, तमाम
इन्सानों को आवाज़ देती हूँ।
5ऐ सादालौहो, होश्यारी सीख लो! ऐ
अहमक़ो, समझ अपना लो!
6सुनो, क्यूँकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ,
और मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।
7मेरा मुँह सच बोलता है, क्यूँकि मेरे होंट
बेदीनी से घिन खाते हैं।
8जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है,
एक भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।
9समझदार जानता है कि मेरी बातें सब
दुरुस्त हैं, इल्म रखने वाले को मालूम है कि
वह सहीह हैं।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : घर की खिड़की के जंगले।

10चाँदी की जगह मेरी तर्बियत और
ख़ालिस सोने के बजाए इल्म-ओ-इर्फ़ान
अपना लो।
11क्यूँकि हिक्मत मोतियों से कहीं बेहतर है,
कोई भी ख़ज़ाना उस का मुक़ाबला नहीं कर
सकता।

12मैं जो हिक्मत हूँ होश्यारी के साथ बसती
हूँ, और मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।
13जो रब का ख़ौफ़ मानता है वह बुराई से
नफ़रत करता है। मुझे ग़ुरूर, तकब्बुर, ग़लत
चाल-चलन और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।
14मेरे पास अच्छा मश्वरा और कामयाबी है।
मेरा दूसरा नाम समझ है, और मुझे क़ुव्वत
हासिल है।
15मेरे वसीले से बादशाह सल्तनत और
हुक्मरान रास्त फ़ैसले करते हैं।
16मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम
आदिल मुन्सिफ़ हुकूमत करते हैं।
17जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती
हूँ, और जो मुझे ढूँडते हैं वह मुझे पा लेते हैं।
18मेरे पास इज़्ज़त-ओ-दौलत, शानदार
माल और रास्ती है।
19मेरा फल सोने बल्कि ख़ालिस सोने से
कहीं बेहतर है, मेरी पैदावार ख़ालिस चाँदी पर
सब्क़त रखती है।
20मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं
जहाँ इन्साफ़ है।
21जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं
मीरास में दौलत मुहय्या करती हूँ। उन के
गोदाम भरे रहते हैं।

हिक्मत का तख़्लीक़ में हिस्सा

22जब रब तख़्लीक़ का सिलसिला अमल में
लाया तो पहले उस ने मुझे ही बनाया। क़दीम
ज़माने में मैं उस के दीगर कामों से पहले ही
वुजूद में आई।
23मुझे अज़ल से मुक़र्रर किया गया, इब्तिदा
ही से जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।
24न समुन्दर की गहराइयाँ, न कस्रत से
फूटने वाले चश्मे थे जब मैं ने जन्म लिया।
25न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर क़ाइम
हुए थे, न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।
26उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उस के
मैदान, और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
27जब उस ने आसमान को उस की जगह
पर लगाया और समुन्दर की गहराइयों पर
ज़मीन का इलाक़ा मुक़र्रर किया तो मैं साथ
थी।
28जब उस ने आसमान पर बादलों और
गहराइयों में सरचश्मों का इन्तिज़ाम मज़बूत
किया तो मैं साथ थी।
29जब उस ने समुन्दर की हदें मुक़र्रर कीं
और हुक्म दिया कि पानी उन से तजावुज़
न करे, जब उस ने ज़मीन की बुन्यादें अपनी
अपनी जगह पर रखीं
30तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उस
के साथ थी। रोज़-ब-रोज़ मैं लुत्फ़ का बाइस
थी, हर वक़्त उस के हुज़ूर रंगरलियाँ मनाती
रही।
31मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंगरलियाँ
मनाती और इन्सान से लुत्फ़अन्दोज़ होती
रही।

32चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्यूँकि मुबारक
हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।
33मेरी तर्बियत मान कर दानिशमन्द बन
जाओ, उसे नज़रअन्दाज़ मत करना।
34मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़-ब-
रोज़ मेरे दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना
मेरी चौखट पर हाज़िर रहे।
35क्यूँकि जो मुझे पाए वह ज़िन्दगी और रब
की मन्ज़ूरी पाता है।
36लेकिन जो मुझे पाने से क़ासिर रहे वह
अपनी जान पर ज़ुल्म करता है, जो भी मुझ
से नफ़रत करे उसे मौत प्यारी है।”

हिक्मत की ज़ियाफ़त

9 हिक्मत ने अपना घर तामीर करके
अपने लिए सात सतून तराश लिए हैं।
2अपने जानवरों को ज़बह करने और
अपनी मै तय्यार करने के बाद उस ने
अपनी मेज़ बिछाई है। 3अब उस ने अपनी
नौकरानियों को भेजा है, और ख़ुद भी लोगों
को शहर की बुलन्दियों से ज़ियाफ़त करने की
दावत देती है,
4"जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।"
नासमझ लोगों से वह कहती है, 5"आओ, मेरी
रोटी खाओ, वह मै पियो जो मैं ने तय्यार कर
रखी है। 6अपनी सादालौह राहों से बाज़ आओ
तो जीते रहोगे, समझ की राह पर चल पड़ो।"

7जो लान-तान करने वाले को तालीम दे उस
की अपनी रुस्वाई हो जाएगी, और जो बेदीन
को डाँटे उसे नुक़्सान पहुँचेगा। 8लान-तान
करने वाले की मलामत न कर वर्ना वह तुझ से
नफ़रत करेगा। दानिशमन्द की मलामत कर
तो वह तुझ से मुहब्बत करेगा। 9दानिशमन्द
को हिदायत दे तो उस की हिक्मत मज़ीद
बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे तो वह अपने
इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।

10रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिक्मत शुरू
होती है, क़ुद्दूस ख़ुदा को जानने से ही समझ
हासिल होती है। 11मुझ से ही तेरी उम्र के
दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा। 12अगर तू
दानिशमन्द हो तो ख़ुद इस से फ़ाइदा उठाएगा,
अगर लान-तान करने वाला हो तो तुझे ही इस
का नुक़्सान झेलना पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है,
वह कुछ नहीं जानती। 14उस का घर शहर की
बुलन्दी पर वाक़े है। दरवाज़े के पास कुर्सी पर
बैठी 15वह गुज़रने वालों को जो सीधी राह पर
चलते हैं ऊँची आवाज़ से दावत देती है, 16"जो
सादालौह है वह मेरे पास आए।"

जो नासमझ हैं उन से वह कहती है,
17"चोरी का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई
गई रोटी लज़ीज़ होती है।"

18लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त
बीबी के घर में सिर्फ़ मुर्दों की रूहें बसती हैं,
कि उस के मेहमान पाताल की गहराइयों में
रहते हैं।

सुलैमान की हिक्मत भरी हिदायात

10 ज़ैल में सुलैमान की अम्साल
क़लमबन्द हैं।

ज़िन्दगीबख़्श बातें

दानिशमन्द बेटा अपने बाप को ख़ुशी
दिलाता जबकि अहमक़ बेटा अपनी माँ को
दुख पहुँचाता है।
2ख़ज़ानों का कोई फ़ाइदा नहीं अगर वह
बेदीन तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन
रास्तबाज़ी मौत से बचाए रखती है।
3रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता,
लेकिन बेदीनों का लालच रोक देता है।
4ढीले हाथ ग़ुर्बत और मेहनती हाथ दौलत
की तरफ़ ले जाते हैं।
5जो गर्मियों में फ़सल जमा करता है वह
दानिशमन्द बेटा है जबकि जो फ़सल की
कटाई के वक़्त सोया रहता है वह वालिदैन
के लिए शर्म का बाइस है।
6रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से
आरास्ता रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर
ज़ुल्म का पर्दा पड़ा रहता है।
7लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे
मुबारक कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़
कर मिट जाएगा।
8जो दिल से दानिशमन्द है वह अह्काम
क़बूल करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो
जाएगा।
9जिस का चाल-चलन बेइल्ज़ाम है वह
सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा
रास्ता इख़तियार करे उसे पकड़ा जाएगा।

10आँख मारने वाला दुख पहुँचाता है, और
बकवासी तबाह हो जाएगा।
11रास्तबाज़ का मुँह ज़िन्दगी का सरचश्मा
है, लेकिन बेदीन के मुँह पर ज़ुल्म का पर्दा
पड़ा रहता है।
12नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि
मुहब्बत तमाम ख़ताओं पर पर्दा डाल देती है।
13समझदार के होंटों पर हिक्मत पाई जाती
है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम
समझता है।
14दानिशमन्द अपना इल्म महफ़ूज़ रखते हैं,
लेकिन अहमक़ का मुँह जल्द ही तबाही की
तरफ़ ले जाता है।
15अमीर की दौलत क़िलाबन्द शहर है जिस
में वह महफ़ूज़ है जबकि ग़रीब की ग़ुर्बत उस
की तबाही का बाइस है।
16जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह
ज़िन्दगी का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी
रोज़ी गुनाह करने के लिए इस्तेमाल करता है।
17जो तर्बियत क़बूल करे वह दूसरों को
ज़िन्दगी की राह पर लाता है, जो नसीहत
नज़रअन्दाज़ करे वह दूसरों को सहीह राह से
दूर ले जाता है।
18जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट
बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें
फैलाए वह अहमक़ है।
19जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह
भी आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को
क़ाबू में रखे वह दानिशमन्द है।
20रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है
जबकि बेदीन के दिल की कोई क़दर नहीं।
21रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश
करती है,[a] लेकिन अहमक़ अपनी बेअक़्ली के
बाइस हलाक हो जाते हैं।
22रब की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी
अपनी मेहनत-मशक़्क़त इस में इज़ाफ़ा नहीं
करती।
23अहमक़ ग़लत काम से अपना दिल
बहलाता, लेकिन समझदार हिक्मत से
लुत्फ़अन्दोज़ होता है।
24जिस चीज़ से बेदीन दह्शत खाता है वही
उस पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आर्ज़ू
पूरी हो जाएगी।
25जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नाम-
ओ-निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़
हमेशा तक क़ाइम रहता है।
26जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुएँ
से तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता
है जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।
27जो रब का ख़ौफ़ माने उस की ज़िन्दगी
के दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की
ज़िन्दगी वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।
28रास्तबाज़ आख़िरकार ख़ुशी मनाएँगे,
क्यूँकि उन की उम्मीद बर आएगी। लेकिन
बेदीनों की उम्मीद जाती रहेगी।
29रब की राह बेइल्ज़ाम शख़्स के लिए
पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का
बाइस है।
30रास्तबाज़ कभी डाँवाँडोल नहीं होगा,
लेकिन बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।
31रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत का फल लाता
रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला
जाएगा।
32रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह
को क्या पसन्द है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी
बातें ही जानता है।

11 रब ग़लत तराज़ू से घिन खाता है,
वह सहीह तराज़ू ही से ख़ुश होता
है।
2जहाँ तकब्बुर है वहाँ बदनामी भी क़रीब ही
रहती है, लेकिन जो हलीम है उस के दामन में
हिक्मत रहती है।
3सीधी राह पर चलने वालों की
दियानतदारी उन की राहनुमाई करती जबकि

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराते
हैं।

बेवफ़ाओं की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।

4ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ाइदा नहीं जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।

5बेइल्ज़ाम की रास्तबाज़ी उस का रास्ता हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें उसे गिरा देती हैं।

6सीधी राह पर चलने वालों की रास्तबाज़ी उन्हें छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फंसा देता है।

7दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती रहती है, जिस दौलत की तवक़्क़ो उस ने की वह जाती रहती है।

8रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और उस की जगह बेदीन फंस जाता है।

9काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता है।

10जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जश्न मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो ख़ुशी के नारे बुलन्द हो जाते हैं।

11सीधी राह पर चलने वालों की बरकत से शहर तरक़्क़ी करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह मिस्मार हो जाता है।

12नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर जानता है जबकि समझदार आदमी ख़ामोश रहता है।

13तोहमत लगाने वाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता है, लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख़्स वह भेद पोशीदा रखता है जो उस के सपुर्द किया गया हो।

14जहाँ क़ियादत की कमी है वहाँ क़ौम का तनज़्ज़ुल यक़ीनी है, जहाँ मुशीरों की कस्रत है वहाँ क़ौम फ़त्हयाब रहेगी।

15जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे यक़ीनन नुक़्सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इन्कार करे वह मह्फ़ूज़ रहेगा।

16नेक औरत इज़्ज़त से और ज़ालिम आदमी दौलत से लिपटे रहते हैं।

17शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए फ़ाइदामन्द है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी के लिए नुक़्सानदेह है।

18जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदिह है, लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उस का अज्र यक़ीनी है।

19रास्तबाज़ी का फल ज़िन्दगी है जबकि बुराई के पीछे भागने वाले का अन्जाम मौत है।

20रब कजदिलों से घिन खाता है, वह बेइल्ज़ाम राह पर चलने वालों ही से ख़ुश होता है।

21यक़ीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि रास्तबाज़ों के फ़र्ज़न्द छूट जाएंगे।

22जिस तरह सूअर की थूथनी में सोने का छल्ला खटकता है उसी तरह ख़ूबसूरत औरत की बेतमीज़ी खटकती है।

23अल्लाह रास्तबाज़ों की आर्ज़ू अच्छी चीज़ों से पूरी करता है, लेकिन उस का ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद पर नाज़िल होता है।

24एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह फ़य्याज़दिली से तक़्सीम करता है। दूसरे की ग़ुर्बत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़्यादा कंजूस है।

25फ़य्याज़दिल ख़ुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तर-ओ-ताज़ा करे वह ख़ुद ताज़ादम रहेगा।

26लोग गन्दुम के ज़खीराअन्दोज़ पर लानत भेजते हैं, लेकिन जो गन्दुम को बाज़ार में आने देता है उस के सर पर बरकत आती है।

27जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की मन्ज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में रहे वह ख़ुद बुराई के फंदे में फंस जाएगा।

28जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फलें फूलेंगे।

29जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह
मीरास में हवा ही पाएगा। अहमक़ दानिशमन्द
का नौकर बनेगा।
30रास्तबाज़ का फल ज़िन्दगी का दरख़्त है,
और दानिशमन्द आदमी जानें जीतता है।
31रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज्र मिलता
है। तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यूँ न
पाएँ?

12 जिसे इल्म-ओ-इर्फ़ान प्यारा है
उसे तर्बियत भी प्यारी है, जिसे
नसीहत से नफ़रत है वह बेअक़्ल है।
2रब अच्छे आदमी से ख़ुश होता है जबकि
वह साज़िश करने वाले को क़ुसूरवार ठहराता
है।
3इन्सान बेदीनी की बुन्याद पर क़ाइम नहीं
रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी
नहीं जा सकतीं।
4सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है,
लेकिन जो शौहर की रुस्वाई का बाइस है वह
उस की हड्डियों में सड़ाहट की मानिन्द है।
5रास्तबाज़ के ख़यालात मुन्सिफ़ाना हैं
जबकि बेदीनों के मन्सूबे फ़रेबदिह हैं।
6बेदीनों के अल्फ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने
की ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलने
वालों की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।
7बेदीनों को ख़ाक में यूँ मिलाया जाता है
कि उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता,
लेकिन रास्तबाज़ का घर क़ाइम रहता है।
8किसी की जितनी अक़्ल-ओ-समझ है
उतना ही लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन
जिस के ज़हन में फ़ुतूर है उसे हक़ीर जाना
जाता है।
9निचले तब्क़े का जो आदमी अपनी
ज़िम्मादारियाँ अदा करता है वह उस आदमी
से कहीं बेहतर है जो नख़रा बघारता है गो उस
के पास रोटी भी नहीं है।
10रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी ख़याल
करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही
ज़ालिम है।
11जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उस
के पास कस्रत का खाना होगा, लेकिन जो
फ़ुज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ
है।
12बेदीन दूसरों को जाल में फंसाने से अपना
दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़
फलदार होती है।
13शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में
उलझ जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच
जाता है।
14इन्सान अपने मुँह के फल से ख़ूब सेर हो
जाता है, और जो काम उस के हाथों ने किया
उस का अज्र उसे ज़रूर मिलेगा।
15अहमक़ की नज़र में उस की अपनी राह
ठीक है, लेकिन दानिशमन्द दूसरों के मश्वरे पर
ध्यान देता है।
16अहमक़ एक दम अपनी नाराज़ी का
इज़हार करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी
छुपाए रखता है।
17दियानतदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई
बयान करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही
धोका पेश करता है।
18गप्पें हाँकने वाले की बातें तलवार की
तरह ज़ख़्मी कर देती हैं जबकि दानिशमन्द
की ज़बान शिफ़ा देती है।
19सच्चे होंट हमेशा तक क़ाइम रहते हैं
जबकि झूटी ज़बान एक ही लम्हे के बाद ख़त्म
हो जाती है।
20बुरे मन्सूबे बांधने वाले का दिल धोके से
भरा रहता जबकि सलामती के मश्वरे देने वाले
का दिल ख़ुशी से छलकता है।
21कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं
आएगी जबकि दुख तक्लीफ़ बेदीनों का दामन
कभी नहीं छोड़ेगी।
22रब फ़रेबदिह होंटों से घिन खाता है,
लेकिन जो वफ़ादारी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन
से वह ख़ुश होता है।

23समझदार अपना इल्म छुपाए रखता
जबकि अहमक़ अपने दिल की हमाक़त
बुलन्द आवाज़ से सब को पेश करता है।
24जिस के हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत
करेगा, लेकिन जिस के हाथ ढीले हैं उसे बेगार
में काम करना पड़ेगा।
25जिस के दिल में परेशानी है वह दबा रहता
है, लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे ख़ुशी
दिलाती है।
26रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर
लेता है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा
फिरने देती है।
27ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़
सकता जबकि मेहनती शख़्स कस्रत का माल
हासिल कर लेता है।
28रास्ती की राह में ज़िन्दगी है, लेकिन ग़लत
राह मौत तक पहुँचाती है।

13 दानिशमन्द बेटा अपने बाप की
तर्बियत क़बूल करता है, लेकिन
तानाज़न परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे
डाँटे।
2इन्सान अपने मुँह के अच्छे फल से ख़ूब
सेर हो जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में
ज़ुल्म का लालच रहता है।
3जो अपनी ज़बान क़ाबू में रखे वह अपनी
ज़िन्दगी महफ़ूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान
को बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।
4काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन
उसे कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख़्स
की आर्ज़ू पूरी हो जाती है।
5रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन
बेदीन शर्म और रुस्वाई का बाइस है।
6रास्ती बेइल्ज़ाम की हिफ़ाज़त करती
जबकि बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती
है।
7कुछ लोग अमीर का रूप भर कर फिरते
हैं गो ग़रीब हैं। दूसरे ग़रीब का रूप भर कर
फिरते हैं गो अमीरतरीन हैं।
8कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के
लिए ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम
दौलत जाती रहती है, लेकिन ग़रीब की जान
इस क़िस्म की धमकी से बची रहती है।
9रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती[a]
जबकि बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।
10मग़रूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि
दानिशमन्द सलाह-मश्वरे के मुताबिक़ ही
चलते हैं।
11जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द
ही ख़त्म हो जाती है जबकि जो रफ़्ता रफ़्ता
अपना माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।
12जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह
दिल को बीमार कर देती है, लेकिन जो आर्ज़ू
पूरी हो जाए वह ज़िन्दगी का दरख़्त है।
13जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे
नुक़्सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे
अज्र मिलेगा।
14दानिशमन्द की हिदायत ज़िन्दगी का
सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से
बचाए रखती है।
15अच्छी समझ मन्ज़ूरी अता करती है,
लेकिन बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का
बाइस है।
16ज़हीन हर काम सोच समझ कर करता,
लेकिन अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही
अपनी हमाक़त की नुमाइश करता है।
17बेदीन क़ासिद मुसीबत में फंस जाता
जबकि वफ़ादार क़ासिद शिफ़ा का बाइस है।
18जो तर्बियत की परवा न करे उसे ग़ुर्बत
और शर्मिन्दगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे
की नसीहत मान जाए उस का एहतिराम
किया जाएगा।
19जो आर्ज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तर-
ओ-ताज़ा करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से
दरेग़ करने से घिन खाता है।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : ख़ुशी मनाती।

20जो दानिशमन्दों के साथ चले वह ख़ुद
दानिशमन्द हो जाएगा, लेकिन जो अहमक़ों
के साथ चले उसे नुक़्सान पहुँचेगा।
21मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है
जबकि रास्तबाज़ों का अज्र ख़ुशहाली है।
22नेक आदमी के बेटे और पोते उस की
मीरास पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत
रास्तबाज़ के लिए महफ़ूज़ रखी जाएगी।
23ग़रीब का खेत कस्रत की फ़सलें मुहय्या
कर सकता है, लेकिन जहाँ इन्साफ़ नहीं वहाँ
सब कुछ छीन लिया जाता है।
24जो अपने बेटे को तम्बीह नहीं करता वह
उस से नफ़रत करता है। जो उस से मुहब्बत
रखे वह वक़्त पर उस की तर्बियत करता है।
25रास्तबाज़ जी भर कर खाना खाता है,
लेकिन बेदीन का पेट ख़ाली रहता है।

14 हिक्मत बीबी अपना घर तामीर
करती है, लेकिन हमाक़त बीबी
अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।
2जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह
का ख़ौफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर
चलता है वह उसे हक़ीर जानता है।
3अहमक़ की बातों से वह डंडा निकलता
है जो उसे उस के तकब्बुर की सज़ा देता है,
लेकिन दानिशमन्द के होंट उसे महफ़ूज़ रखते
हैं।
4जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी ख़ाली रहती है,
बैल की ताक़त ही से कस्रत की फ़सलें पैदा
होती हैं।
5वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन
झूटे गवाह के मुँह से झूट निकलता है।
6तानाज़न हिक्मत को ढूँडता है, लेकिन
बेफ़ाइदा। समझदार के इल्म में आसानी से
इज़ाफ़ा होता है।
7अहमक़ से दूर रह, क्यूँकि तू उस की बातों
में इल्म नहीं पाएगा।
8ज़हीन की हिक्मत इस में है कि वह
सोच समझ कर अपनी राह पर चले, लेकिन
अहमक़ की हमाक़त सरासर धोका ही है।
9अहमक़ अपने क़ुसूर का मज़ाक़ उड़ाते
हैं, लेकिन सीधी राह पर चलने वाले रब को
मन्ज़ूर हैं।
10हर दिल की अपनी ही तल्ख़ी होती है
जिस से सिर्फ़ वही वाक़िफ़ है, और उस की
ख़ुशी में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।
11बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन
सीधी राह पर चलने वाले का ख़ैमा फले
फूलेगा।
12ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक
तो लगती है गो उस का अन्जाम मौत है।
13दिल हंसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है,
और ख़ुशी के इख़्तिताम पर दुख ही बाक़ी रह
जाता है।
14जिस का दिल बेवफ़ा है वह जी भर कर
अपने चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा
जबकि नेक आदमी अपने आमाल के मीठे
फल से सेर हो जाएगा।
15सादालौह हर एक की बात मान लेता है
जबकि ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच
समझ कर उठाता है।
16दानिशमन्द डरते डरते ग़लत काम से
दरेग़ करता है, लेकिन अहमक़ ख़ुदएतिमाद
है और एक दम मुश्तइल हो जाता है।
17ग़ुसीला आदमी अहमक़ाना हरकतें
करता है, और लोग साज़िशी शख़्स से नफ़रत
करते हैं।
18सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है
जबकि ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज
से आरास्ता रहता है।
19शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा,
और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे
मुँह होना पड़ेगा।
20ग़रीब के हमसाय भी उस से नफ़रत करते
हैं जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।
21जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने
वह गुनाह करता है। मुबारक है वह जो
ज़रूरतमन्द पर तरस खाता है।

22बुरे मन्सूबे बांधने वाले सब आवारा फिरते
हैं। लेकिन अच्छे मन्सूबे बांधने वाले शफ़्क़त
और वफ़ा पाएँगे।
23मेहनत-मशक़्क़त करने में हमेशा फ़ाइदा
होता है, जबकि ख़ाली बातें करने से लोग
ग़रीब हो जाते हैं।
24दानिशमन्दों का अज्र दौलत का ताज है
जबकि अहमक़ों का अज्र हमाक़त ही है।
25सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा
गवाह फ़रेबदिह है।
26जो रब का ख़ौफ़ माने उस के पास
मह्फ़ूज़ क़िला है जिस में उस की औलाद भी
पनाह ले सकती है।
27रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का सरचश्मा है जो
इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।
28जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही
बादशाह की शान-ओ-शौकत है। रिआया की
कमी हुक्मरान के तनज़्ज़ुल का बाइस है।
29तहम्मुल करने वाला बड़ी समझदारी का
मालिक है, लेकिन ग़ुसीला आदमी अपनी
हमाक़त का इज़हार करता है।
30पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िन्दगी
दिलाता जबकि हसद हड्डियों को गलने देता
है।
31जो पस्तहाल पर ज़ुल्म करे वह उस के
ख़ालिक़ की तह्क़ीर करता है जबकि जो
ज़रूरतमन्द पर तरस खाए वह अल्लाह का
एहतिराम करता है।
32बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती
है, लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह
में पनाह लेता है।
33हिक्मत समझदार के दिल में आराम
करती है, और वह अहमक़ों के दरमियान भी
ज़ाहिर हो जाती है।
34रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है
जबकि गुनाह से उम्मतें रुसवा हो जाती हैं।
35बादशाह दानिशमन्द मुलाज़िम से ख़ुश
होता है, लेकिन शर्मनाक काम करने वाला
मुलाज़िम उस के ग़ुस्से का निशाना बन जाता
है।

15 नर्म जवाब ग़ुस्सा ठंडा करता,
लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।
2दानिशमन्दों की ज़बान इल्म-ओ-इर्फ़ान
फैलाती है जबकि अहमक़ का मुँह हमाक़त
का ज़ोर से उबलने वाला चश्मा है।
3रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे
और भले सब पर ध्यान देती हैं।
4नर्म ज़बान ज़िन्दगी का दरख़्त है जबकि
फ़रेबदिह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।
5अहमक़ अपने बाप की तर्बियत को हक़ीर
जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह
दानिशमन्द है।
6रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़ज़ाना होता है,
लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह
तबाही का बाइस है।
7दानिशमन्दों के होंट इल्म-ओ-इर्फ़ान का
बीज बिखेर देते हैं, लेकिन अहमक़ों का दिल
ऐसा नहीं करता।
8रब बेदीनों की क़ुर्बानी से घिन खाता,
लेकिन सीधी राह पर चलने वालों की दुआ
से ख़ुश होता है।
9रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन
रास्ती का पीछा करने वाले से प्यार करता है।
10जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त
तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे
वह मर जाएगा।
11पाताल और आलम-ए-अर्वाह रब को
साफ़ नज़र आते हैं। तो फिर इन्सानों के दिल
उसे क्यूँ न साफ़ दिखाई दें?
12तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसन्द
नहीं आती, इस लिए वह दानिशमन्दों के पास
नहीं जाता।
13जिस का दिल ख़ुश है उस का चेहरा खुला
रहता है, लेकिन जिस का दिल परेशान है उस
की रूह शिकस्ता रहती है।

14समझदार का दिल इल्म-ओ-इर्फ़ान की
तलाश में रहता, लेकिन अहमक़ हमाक़त की
चरागाह में चरता रहता है।
15मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन
जिस का दिल ख़ुश है वह रोज़ाना जश्न मनाता
है।
16जो ग़रीब रब का ख़ौफ़ मानता है उस का
हाल उस करोड़पती से कहीं बेहतर है जो बड़ी
बेचैनी से ज़िन्दगी गुज़ारता है।
17जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्ज़ी का सालन
बहुत है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े
की ज़ियाफ़त भी बेफ़ाइदा है।
18ग़ुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता
जबकि तहम्मुल करने वाला लोगों के ग़ुस्से को
ठंडा कर देता है।
19काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की
मानिन्द है, लेकिन दियानतदारों की राह
पक्की सड़क ही है।
20दानिशमन्द बेटा अपने बाप के लिए ख़ुशी
का बाइस है, लेकिन अहमक़ अपनी माँ को
हक़ीर जानता है।
21नासमझ आदमी हमाक़त से
लुत्फ़अन्दोज़ होता, लेकिन समझदार आदमी
सीधी राह पर चलता है।
22जहाँ सलाह-मश्वरा नहीं होता वहाँ मन्सूबे
नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत से मुशीर होते
हैं वहाँ कामयाबी होती है।
23इन्सान मौज़ूँ जवाब देने से ख़ुश हो जाता
है, वक़्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी
होती है।
24ज़िन्दगी की राह चढ़ती रहती है ताकि
समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने
से बच जाए।
25रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन
बेवा की ज़मीन की हुदूद मह्फ़ूज़ रखता है।
26रब बुरे मन्सूबों से घिन खाता है, और
मेहरबान अल्फ़ाज़ उस के नज़दीक पाक हैं।
27जो नाजाइज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर
पर आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से
नफ़रत रखे वह जीता रहेगा।
28रास्तबाज़ का दिल सोच समझ कर
जवाब देता है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर
से उबलने वाला चश्मा है जिस से बुरी बातें
निकलती रहती हैं।
29रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्तबाज़
की दुआ सुनता है।
30चमकती आँखें दिल को ख़ुशी दिलाती हैं,
अच्छी ख़बर पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर
देती है।
31जो ज़िन्दगीबख़्श नसीहत पर ध्यान दे
वह दानिशमन्दों के दरमियान ही सुकूनत
करेगा।
32जो तर्बियत की परवा न करे वह अपने
आप को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत
पर ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।
33रब का ख़ौफ़ ही वह तर्बियत है जिस से
इन्सान हिक्मत सीखता है। पहले फ़रोतनी
अपना ले, क्यूँकि यही इज़्ज़त पाने का पहला
क़दम है।

16 इन्सान दिल में मन्सूबे बांधता है,
लेकिन ज़बान का जवाब रब की
तरफ़ से आता है।
2इन्सान की नज़र में उस की तमाम राहें
पाक-साफ़ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-
पड़ताल करता है।
3जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सपुर्द
कर। तब ही तेरे मन्सूबे कामयाब होंगे।
4रब ने सब कुछ अपने ही मक़ासिद पूरे
करने के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले
से मुक़र्रर है जब बेदीन पर आफ़त आएगी।
5रब हर मग़रूर दिल से घिन खाता है।
यक़ीनन वह सज़ा से नहीं बचेगा।
6शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का
कफ़्फ़ारा देती हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से
इन्सान बुराई से दूर रहता है।

7अगर रब किसी इन्सान की राहों से ख़ुश
हो तो वह उस के दुश्मनों को भी उस से सुलह
कराने देता है।
8इन्साफ़ से थोड़ा बहुत कमाना नाइन्साफ़ी
से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर है।
9इन्सान अपने दिल में मन्सूबे बांधता रहता
है, लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह
आख़िरकार किस राह पर चल पड़े।
10बादशाह के होंट गोया इलाही फ़ैसले पेश
करते हैं, उस का मुँह अदालत करते वक़्त
बेवफ़ा नहीं होता।
11रब दुरुस्त तराज़ू का मालिक है, उसी ने
तमाम बाटों का इन्तिज़ाम क़ाइम किया।
12बादशाह बेदीनी से घिन खाता है, क्यूँकि
उस का तख़्त रास्तबाज़ी की बुन्याद पर
मज़बूत रहता है।
13बादशाह रास्तबाज़ होंटों से ख़ुश होता
और साफ़ बात करने वाले से मुहब्बत रखता
है।
14बादशाह का ग़ुस्सा मौत का पेशख़ैमा है,
लेकिन दानिशमन्द उसे ठंडा करने के तरीक़े
जानता है।
15जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो
मतलब ज़िन्दगी है। उस की मन्ज़ूरी मौसम-
ए-बहार के तर-ओ-ताज़ा करने वाले बादल
की मानिन्द है।
16हिक्मत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर
और समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़ कर है।
17दियानतदार की मज़बूत राह बुरे काम से
दूर रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे
वह अपनी जान बचाए रखता है।
18तबाही से पहले ग़ुरूर और गिरने से पहले
तकब्बुर आता है।
19फ़रोतनी से ज़रूरतमन्दों के दरमियान
बसना घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने
से कहीं बेहतर है।
20जो कलाम पर ध्यान दे वह ख़ुशहाल
होगा, मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।
21जो दिल से दानिशमन्द है उसे समझदार
क़रार दिया जाता है, और मीठे अल्फ़ाज़
तालीम में इज़ाफ़ा करते हैं।
22फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िन्दगी का
सरचश्मा है, लेकिन अहमक़ की अपनी ही
हमाक़त उसे सज़ा देती है।
23दानिशमन्द का दिल समझ की बातें
ज़बान पर लाता और तालीम देने में होंटों का
सहारा बनता है।
24मेहरबान अल्फ़ाज़ ख़ालिस शहद हैं, वह
जान के लिए शीरीं और पूरे जिस्म को तर-ओ-
ताज़ा कर देते हैं।
25ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक
लगती है गो उस का अन्जाम मौत है।
26मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर
मज्बूर करता, उस की भूक उसे हाँकती रहती
है।
27शरीर कुरेद कुरेद कर ग़लत काम निकाल
लेता, उस के होंटों पर झुलसाने वाली आग
रहती है।
28कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और
तोहमत लगाने वाला दिली दोस्तों में भी रख़ना
डालता है।
29ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरग़ला कर
ग़लत राह पर ले जाता है।
30जो आँख मारे वह ग़लत मन्सूबे बांध रहा
है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने
पर तुला हुआ है।
31सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो
रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।
32तहम्मुल करने वाला सूरमे से सब्क़त लेता
है, जो अपने आप को क़ाबू में रखे वह शहर
को शिकस्त देने वाले से बरतर है।
33इन्सान तो क़ुरआ डालता है, लेकिन उस
का हर फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

17 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा
सुकून के साथ खाया जाए वह उस
घर से कहीं बेहतर है जिस में लड़ाई-झगड़ा है,

ख़्वाह उस में कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यूँ न हो रही हो।

2समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर क़ाबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में मौरूसी मिलकियत तक़्सीम की जाए तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।

3सोना-चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-साफ़ की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता है।

4बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़ तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।

5जो ग़रीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उस के ख़ालिक़ की तह्क़ीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देख कर ख़ुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।

6पोते बूढ़ों का ताज और वालिदैन अपने बच्चों के ज़ेवर हैं।

7अहमक़ के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौज़ूँ नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

8रिश्वत देने वाले की नज़र में रिश्वत जादू की मानिन्द है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल जाता है।

9जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत को फ़रोग़ देता है, लेकिन जो माज़ी की ग़लतियाँ दोहराता रहे वह क़रीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता है।

10अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक़ को सौ बार मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।

11शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन उस के ख़िलाफ़ ज़ालिम क़ासिद भेजा जाएगा।

12जो अहमक़ अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो उस से दरेग़ कर, क्यूँकि उस से मिलने से बेहतर यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिस के बच्चे उस से छीन लिए गए हों।

13जो भलाई के इवज़ बुराई करे उस के घर से बुराई कभी दूर नहीं होगी।

14लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बन्द में रख़ना डालने के बराबर है। इस से पहले कि मुक़द्दमाबाज़ी शुरू हो उस से बाज़ आ।

15जो बेदीन को बेक़ुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराए उस से रब घिन खाता है।

16अहमक़ के हाथ में पैसों का क्या फ़ाइदा है? क्या वह हिक्मत ख़रीद सकता है जबकि उस में अक़्ल नहीं? हरगिज़ नहीं!

17पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है, भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा हुआ है।

18जो हाथ मिला कर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने का वादा करे वह नासमझ है।

19जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से ज़्यादा बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की दावत देता है।

20जिस का दिल टेढ़ा है वह ख़ुशहाली नहीं पाएगा, और जिस की ज़बान चालाक है वह मुसीबत में उलझ जाएगा।

21जिस के हाँ अहमक़ बेटा पैदा हो जाए उसे दुख पहुँचता है, और अक़्ल से ख़ाली बेटा बाप के लिए ख़ुशी का बाइस नहीं होता।

22ख़ुशबाश दिल पूरे जिस्म को शिफ़ा देता है, लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को ख़ुश्क कर देती है।

23बेदीन चुपके से रिश्वत ले कर इन्साफ़ की राहों को बिगाड़ देता है।

24समझदार अपनी नज़र के सामने हिक्मत रखता है, लेकिन अहमक़ की नज़रें दुनिया की इन्तिहा तक आवारा फिरती हैं।

25अहमक़ बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और माँ के लिए तल्ख़ी का सबब है।

26बेक़ुसूर पर जुर्माना लगाना ग़लत है, और शरीफ़ को उस की दियानतदारी के सबब से कोड़े लगाना बुरा है।

27जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह
इल्म-ओ-इर्फ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल
से बात करे वह समझदार है।
28अगर अहमक़ ख़ामोश रहे तो वह भी
दानिशमन्द लगता है। जब तक वह बात न
करे लोग उसे समझदार क़रार देते हैं।

18 जो दूसरों से अलग हो जाए वह
अपने ज़ाती मक़ासिद पूरे करना
चाहता और समझ की हर बात पर झगड़ने
लगता है।
2अहमक़ समझ से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होता
बल्कि सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर
ज़ाहिर करने से।
3जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ
मौजूद होती, और जहाँ रुस्वाई हो वहाँ
तानाज़नी भी होती है।
4इन्सान के अल्फ़ाज़ गहरा पानी हैं,
हिक्मत का सरचश्मा बहती हुई नदी है।
5बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का
हक़ मारना ग़लत है।
6अहमक़ के होंट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते
हैं, उस का मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा
करता है।
7अहमक़ का मुँह उस की तबाही का बाइस
है, उस के होंट ऐसा फंदा हैं जिस में उस की
अपनी जान उलझ जाती है।
8तोहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने
के लुक़्मों की मानिन्द हैं, वह दिल की तह तक
उतर जाती हैं।
9जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए,
उसे याद रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।
10रब का नाम मज़बूत बुर्ज है जिस में
रास्तबाज़ भाग कर महफ़ूज़ रहता है।
11अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा
क़िलाबन्द शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है
जिस में मैं महफ़ूज़ हूँ।
12तबाह होने से पहले इन्सान का दिल
मग़रूर हो जाता है, इज़्ज़त मिलने से पहले
लाज़िम है कि वह फ़रोतन हो जाए।
13दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना
हमाक़त है। जो ऐसा करे उस की रुस्वाई हो
जाएगी।
14बीमार होते वक़्त इन्सान की रूह जिस्म
की परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह
शिकस्ता हो तो फिर कौन उस को सहारा
देगा?
15समझदार का दिल इल्म अपनाता और
दानिशमन्द का कान इर्फ़ान का खोज लगाता
रहता है।
16तोहफ़ा रास्ता खोल कर देने वाले को बड़ों
तक पहुँचा देता है।
17जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश
करे वह उस वक़्त तक हक़-ब-जानिब लगता
है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आ कर उस
की हर बात की तहक़ीक़ न करे।
18क़ुरआ डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते
और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का ख़तरा
दूर हो जाता है।
19जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया
जाए उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबन्द शहर
पर फ़त्ह पाने से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल
करना बुर्ज के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल
है।
20इन्सान अपने मुँह के फल से सेर हो
जाएगा, वह अपने होंटों की पैदावार को जी
भर कर खाएगा।
21ज़बान का ज़िन्दगी और मौत पर
इख़तियार है, जो उसे प्यार करे वह उस का
फल भी खाएगा।
22जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली,
और उसे रब की मन्ज़ूरी हासिल हुई।
23ग़रीब मिन्नत करते करते अपना
मुआमला पेश करता है, लेकिन अमीर का
जवाब सख़्त होता है।

24कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे
भी हैं जो तुझ से भाई से ज़्यादा लिपटे रहते
हैं।

19 जो ग़रीब बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी
गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करने वाले
अहमक़ से कहीं बेहतर है।

2अगर इल्म साथ न हो तो सरगर्मी का कोई
फ़ाइदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता
रहता है।

3गो इन्सान की अपनी हमाक़त उसे भटका
देती है तो भी उस का दिल रब से नाराज़ होता
है।

4दौलतमन्द के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है,
लेकिन ग़रीब का एक दोस्त भी उस से अलग
हो जाता है।

5झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, जो झूटी
गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।

6मुतअद्दिद लोग बड़े आदमी की ख़ुशामद
करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त
है जो तोह्फ़े देता है।

7ग़रीब के तमाम भाई उस से नफ़रत करते
हैं, तो फिर उस के दोस्त उस से क्यूँ दूर न रहें।
वह बातें करते करते उन का पीछा करता है,
लेकिन वह ग़ाइब हो जाते हैं।

8जो हिक्मत अपना ले वह अपनी जान से
मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे
उसे कामयाबी होगी।

9झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी
गवाही देने वाला तबाह हो जाएगा।

10अहमक़ के लिए ऐश-ओ-इश्रत से
ज़िन्दगी गुज़ारना मौज़ूँ नहीं, लेकिन ग़ुलाम
की हुक्मरानों पर हुकूमत कहीं ज़्यादा
ग़ैरमुनासिब है।

11इन्सान की हिक्मत उसे तहम्मुल सिखाती
है, और दूसरों के जराइम से दरगुज़र करना
उस का फ़ख़र है।

12बादशाह का तैश जवान शेरबबर की
दहाड़ों की मानिन्द है जबकि उस की मन्ज़ूरी
घास पर शबनम की तरह तर-ओ-ताज़ा करती
है।

13अहमक़ बेटा बाप की तबाही और
झगड़ालू बीवी मुसलसल टपकने वाली छत
है।

14मौरूसी घर और मिलकियत बापदादा
की तरफ़ से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी
रब की तरफ़ से है।

15सुस्त होने से इन्सान गहरी नींद सो जाता
है, लेकिन ढीला शख़्स भूके मरेगा।

16जो वफ़ादारी से हुक्म पर अमल करे वह
अपनी जान महफ़ूज़ रखता है, लेकिन जो
अपनी राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।

17जो ग़रीब पर मेहरबानी करे वह रब को
उधार देता है, वही उसे अज्र देगा।

18जब तक उम्मीद की किरन बाक़ी हो
अपने बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश
में न आ कि वह मर जाए।

19जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे जुर्माना
देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर
वर्ना उस का तैश और बढ़ेगा।

20अच्छा मश्वरा अपना और तर्बियत क़बूल
कर ताकि आइन्दा दानिशमन्द हो।

21इन्सान दिल में मुतअद्दिद मन्सूबे बांधता
रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो
जाता है।

22इन्सान का लालच उस की रुस्वाई का
बाइस है, और ग़रीब दरोग़ागो से बेहतर है।

23रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का मम्बा है।
ख़ुदातरस आदमी सेर हो कर सुकून से सो
जाता और मुसीबत से महफ़ूज़ रहता है।

24काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में
डाल कर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।

25तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़
सीखेगा, समझदार को डाँट तो उस के इल्म
में इज़ाफ़ा होगा।

26जो अपने बाप पर ज़ुल्म करे और अपनी
माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म
और रुस्वाई का बाइस है।

27मेरे बेटे, तर्बियत पर ध्यान देने से बाज़ न
आ, वर्ना तू इल्म-ओ-इर्फ़ान की राह से भटक
जाएगा।
28शरीर गवाह इन्साफ़ का मज़ाक़ उड़ाता
है, और बेदीन का मुँह आफ़त की ख़बरें
फैलाता है।
29तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक़ की
पीठ के लिए कोड़ा तय्यार है।

20 मै तानाज़न का बाप और शराब
शोर-शराबा की माँ है। जो यह पी
पी कर डगमगाने लगे वह दानिशमन्द नहीं।
2बादशाह का क़हर जवान शेरबबर की
दहाड़ों की मानिन्द है, जो उसे तैश दिलाए वह
अपनी जान पर खेलता है।
3लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्ज़त का
तुर्रा-ए-इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक़
झगड़ने के लिए तय्यार रहता है।
4काहिल वक़्त पर हल नहीं चलाता, चुनाँचे
जब वह फ़सल पकते वक़्त अपने खेत पर
निगाह करे तो कुछ नज़र नहीं आएगा।
5इन्सान के दिल का मन्सूबा गहरे पानी
की मानिन्द है, लेकिन समझदार आदमी उसे
निकाल कर अमल में लाता है।
6बहुत से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र
करते हैं, लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख़्स
कहाँ पाया जाता है?
7जो रास्तबाज़ बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे
उस की औलाद मुबारक है।
8जब बादशाह तख़्त-ए-अदालत पर बैठ
जाए तो वह अपनी आँखों से सब कुछ छान
कर हर ग़लत बात एक तरफ़ कर लेता है।
9कौन कह सकता है, "मैं ने अपने दिल
को पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह
से पाक हो गया हूँ"?
10ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों
से घिन खाता है।
11लड़के का किरदार उस के सुलूक से
मालूम होता है। इस से पता चलता है कि उस
का चाल-चलन पाक और रास्त है या नहीं।
12सुनने वाले कान और देखने वाली आँखें
दोनों ही रब ने बनाई हैं।
13नींद को प्यार न कर वर्ना ग़रीब हो
जाएगा। अपनी आँखों को खुला रख तो जी
भर कर खाना खाएगा।
14गाहक दुकानदार से कहता है, "यह कैसी
नाक़िस चीज़ है!" लेकिन फिर जा कर दूसरों
के सामने अपने सौदे पर शेख़ी मारता है।
15सोना और कस्रत के मोती पाए जा सकते
हैं, लेकिन समझदार होंट उन से कहीं ज़्यादा
क़ीमती हैं।
16ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो
किसी ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया
है। अगर वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस
ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी
थी।
17धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी
को मीठी लगती है, लेकिन उस का अन्जाम
कंकरों से भरा मुँह है।
18मन्सूबे सलाह-मश्वरे से मज़बूत हो जाते
हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात
पर ध्यान दे।
19अगर तू बुह्तान लगाने वाले को हमराज़
बनाए तो वह इधर उधर फिर कर बात
फैलाएगा। चुनाँचे बातूनी से गुरेज़ कर।
20जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उस
का चराग़ घने अंधेरे में बुझ जाएगा।
21जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल
जाए वह आख़िर में बरकत का बाइस नहीं
होगी।
22मत कहना, "मैं ग़लत काम का इन्तिक़ाम
लूँगा।" रब के इन्तिज़ार में रह तो वही तेरी
मदद करेगा।
23रब झूटे बाटों से घिन खाता है, और ग़लत
तराज़ू उसे अच्छा नहीं लगता।
24रब हर एक के क़दम मुक़र्रर करता है।
तो फिर इन्सान किस तरह अपनी राह समझ
सकता है?

25इन्सान अपने लिए फंदा तय्यार करता है
जब वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद
में ही मन्नत के नताइज पर ग़ौर करने लगता
है।
26दानिशमन्द बादशाह बेदीनों को छान
छान कर उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला
ही उन पर से गुज़रने देता है।
27आदमज़ाद की रूह रब का चराग़ है जो
इन्सान के बातिन की तह तक सब कुछ की
तहक़ीक़ करता है।
28शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को महफ़ूज़
रखती हैं, शफ़क़त से वह अपना तख़्त
मुस्तहकम कर लेता है।
29नौजवानों का फ़ख़र उन की ताक़त और
बुज़ुर्गों की शान उन के सफ़ेद बाल हैं।
30ज़ख़्म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं,
ज़र्बें बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर
देती हैं।

21 बादशाह का दिल रब के हाथ में
नहर की मानिन्द है। वह जिधर
चाहे उस का रुख़ फेर देता है।
2हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में
ठीक लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-
पड़ताल करता है।
3रास्तबाज़ी और इन्साफ़ करना रब को
ज़बह की क़ुर्बानियों से कहीं ज़्यादा पसन्द है।
4मग़रूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो
बेदीनों का चराग़ हैं गुनाह हैं।
5मेहनती शख़्स के मन्सूबे नफ़ा का बाइस
हैं, लेकिन जल्दबाज़ी ग़ुर्बत तक पहुँचा देती
है।
6फ़रेबदिह ज़बान से जमा किया हुआ
ख़ज़ाना बिखर जाने वाला धुआँ और मोहलक
फंदा है।
7बेदीनों का ज़ुल्म ही उन्हें घसीट कर ले
जाता है, क्यूँकि वह इन्साफ़ करने से इन्कार
करते हैं।
8क़ुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक
शख़्स सीधी राह पर चलता है।
9झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में
रहने की निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा
करना बेहतर है।
10बेदीन ग़लत काम करने के लालच में
रहता है और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस
नहीं खाता।
11तानाज़न पर जुर्माना लगा तो सादालौह
सबक़ सीखेगा, दानिशमन्द को तालीम दे तो
उस के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।
12अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को
ध्यान में रखता है, वही बेदीन को ख़ाक में
मिला देता है।
13जो कान में उंगली डाल कर ग़रीब की
मदद के लिए चीख़ें नहीं सुनता वह भी एक
दिन चीख़ें मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं
जाएगी।
14पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का ग़ुस्सा
ठंडा हो जाता, किसी की जेब गर्म करने से
उस का सख़्त तैश दूर हो जाता है।
15जब इन्साफ़ किया जाए तो रास्तबाज़
ख़ुश हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने
लगता है।
16जो समझ की राह से भटक जाए वह एक
दिन मुर्दों की जमाअत में आराम करेगा।
17जो ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी पसन्द करे
वह ग़रीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा
हो वह अमीर नहीं हो जाएगा।
18जब रास्तबाज़ का फ़िद्या देना है तो बेदीन
को दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह
बेवफ़ा को दिया जाएगा।
19झगड़ालू और तंग करने वाली बीवी के
साथ बसने की निस्बत रेगिस्तान में गुज़ारा
करना बेहतर है।
20दानिशमन्द के घर में उम्दा ख़ज़ाना और
तेल होता है, लेकिन अहमक़ अपना सारा
माल हड़प कर लेता है।
21जो इन्साफ़ और शफ़क़त का ताक़्क़ुब
करता रहे वह ज़िन्दगी, रास्ती और इज़्ज़त
पाएगा।

22दानिशमन्द आदमी ताक़तवर फ़ौजियों
के शहर पर हम्ला करके वह क़िलाबन्दी ढा
देता है जिस पर उन का पूरा एतिमाद था।
23जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी
करे वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए
रखता है।
24मग़रूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न'
है, हर काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता
है।
25काहिल का लालच उसे मौत के घाट
उतार देता है, क्यूँकि उस के हाथ काम करने
से इन्कार करते हैं।
26लालची पूरा दिन लालच करता रहता है,
लेकिन रास्तबाज़ फ़य्याज़दिली से देता है।
27बेदीनों की क़ुर्बानी क़ाबिल-ए-घिन है,
ख़ासकर जब उसे बुरे मक़्सद से पेश किया
जाए।
28झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो
दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक
क़ाइम रहेगी।
29बेदीन आदमी गुस्ताख़ अन्दाज़ से पेश
आता है, लेकिन सीधी राह पर चलने वाला
सोच समझ कर अपनी राह पर चलता है।
30किसी की भी हिक्मत, समझ या मन्सूबा
रब का सामना नहीं कर सकता।
31घोड़े को जंग के दिन के लिए तय्यार तो
किया जाता है, लेकिन फ़त्ह रब के हाथ में है।

22 नेक नाम बड़ी दौलत से क़ीमती,
और मन्ज़ूर-ए-नज़र होना सोने-
चाँदी से बेहतर है।
2अमीर और ग़रीब एक दूसरे से मिलते
जुलते हैं, रब उन सब का ख़ालिक़ है।
3ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँप कर
छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर
उस की लपेट में आ जाता है।
4फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल
दौलत, एहतिराम और ज़िन्दगी है।
5बेदीन की राह में काँटे और फंदे होते हैं।
जो अपनी जान महफ़ूज़ रखना चाहे वह उन
से दूर रहता है।
6छोटे बच्चे को सहीह राह पर चलने की
तर्बियत कर तो वह बूढ़ा हो कर भी उस से
नहीं हटेगा।
7अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और
क़र्ज़दार क़र्ज़ख़्वाह का ग़ुलाम होता है।
8जो नाइन्साफ़ी का बीज बोए वह आफ़त
की फ़सल काटेगा, तब उस की ज़ियादती की
लाठी टूट जाएगी।
9फ़य्याज़दिल को बरकत मिलेगी, क्यूँकि
वह पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता
है।
10तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर
से निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे
की बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो
जाएगा।
11जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और
मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह
का दोस्त बनेगा।
12रब की आँखें इल्म-ओ-इर्फ़ान की देख-
भाल करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों
को तबाह होने देता है।
13काहिल कहता है, "गली में शेर है, अगर
बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़
खाएगा।"
14ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है।
जिस से रब नाराज़ हो वह उस में गिर जाता
है।
15बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है,
लेकिन तर्बियत की छड़ी उसे भगा देती है।
16एक पस्तहाल पर ज़ुल्म करता है ताकि
दौलत पाए, दूसरा अमीर को तोहफ़े देता है
लेकिन ग़रीब हो जाता है।

दानिशमन्दों की 30 कहावतें

17कान लगा कर दानाओं की बातों पर ध्यान
दे, दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18क्यूँकि

अच्छा है कि तू उन्हें अपने दिल में महफ़ूज़ रखे, वह सब तेरे होंटों पर मुस्तइद रहें। 19आज मैं तुझे, हाँ तुझे ही तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब पर रहे। 20मैं ने तेरे लिए 30 कहावतें क़लमबन्द की हैं, ऐसी बातें जो मश्वरों और इल्म से भरी हुई हैं। 21क्यूँकि मैं तुझे सच्चाई की क़ाबिल-ए-एतिमाद बातें सिखाना चाहता हूँ ताकि तू उन्हें क़ाबिल-ए-एतिमाद जवाब दे सके जिन्हों ने तुझे भेजा है।

-१-

22पस्तहाल को इस लिए न लूट कि वह पस्तहाल है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत कुचलना। 23क्यूँकि रब ख़ुद उन का दिफ़ा करके उन्हें लूट लेगा जो उन्हें लूट रहे हैं।

-२-

24ग़ुसीले शख़्स का दोस्त न बन, न उस से ज़्यादा ताल्लुक़ रख जो जल्दी से आग-बगूला हो जाता है। 25ऐसा न हो कि तू उस का चाल-चलन अपना कर अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-३-

26कभी हाथ मिला कर वादा न कर कि मैं दूसरे के कर्ज़ का ज़ामिन हूँगा। 27क़र्ज़दार के पैसे वापस न करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-४-

28ज़मीन की जो हुदूद तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं उन्हें आगे पीछे मत करना।

-५-

29क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने काम में माहिर है? वह निचले तब्क़े के लोगों की ख़िदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

-६-

23 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में शरीक हो जाए तो ख़ूब ध्यान दे कि तू किस के हुज़ूर है। 2अगर तू पेटू हो तो अपने गले पर छुरी रख। 3उस की उम्दा चीज़ों का लालच मत कर, क्यूँकि यह खाना फ़रेबदिह है।

-७-

4अपनी पूरी ताक़त अमीर बनने में सर्फ़ न कर, अपनी हिक्मत ऐसी कोशिशों से ज़ाए मत कर। 5एक नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल हो जाती है, और पर लगा कर उक़ाब की तरह आसमान की तरफ़ उड़ जाती है।

-८-

6जलने वाले की रोटी मत खा, उस के लज़ीज़ खानों का लालच न कर। 7क्यूँकि यह गले में बाल की तरह होगा। वह तुझ से कहेगा, "खाओ, पियो!" लेकिन उस का दिल तेरे साथ नहीं है। 8जो लुक़्मा तू ने खा लिया उस से तुझे क़ै आएगी, और तेरी उस से दोस्ताना बातें ज़ाए हो जाएँगी।

-९-

9अहमक़ से बात न कर, क्यूँकि वह तेरी दानिशमन्द बातें हक़ीर जानेगा।

-१०-

10ज़मीन की जो हुदूद क़दीम ज़माने में मुक़र्रर हुईं उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों के खेतों पर क़ब्ज़ा न कर। 11क्यूँकि उन का छुड़ाने वाला क़वी है, वह उन के हक़ में ख़ुद तेरे ख़िलाफ़ लड़ेगा।

-११-

12अपना दिल तर्बियत के हवाले कर और अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-१२-

13बच्चे को तर्बियत से महरूम न रख, छड़ी
से उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14छड़ी
से उसे सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट
जाएगी।

-१३-

15मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमन्द हो तो
मेरा दिल भी ख़ुश होगा। 16मैं अन्दर ही अन्दर
ख़ुशी मनाऊँगा जब तेरे होंट दियानतदार बातें
करेंगे।

-१४-

17तेरा दिल गुनाहगारों को देख कर कुढ़ता
न रहे बल्कि पूरे दिन रब का ख़ौफ़ रखने में
सरगर्म रहे। 18क्यूँकि तेरी उम्मीद जाती नहीं
रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल यक़ीनन अच्छा
होगा।

-१५-

19मेरे बेटे, सुन कर दानिशमन्द हो जा और
सहीह राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर।
20शराबी और पेटू से दरेग़ कर, 21क्यूँकि
शराबी और पेटू ग़रीब हो जाएंगे, और
काहिली उन्हें चीथड़े पहनाएगी।

-१६-

22अपने बाप की सुन जिस ने तुझे पैदा
किया, और अपनी माँ को हक़ीर न जान जब
बूढ़ी हो जाए।
23सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न
कर, उस में शामिल हिक्मत, तर्बियत और
समझ अपना ले।
24रास्तबाज़ का बाप बड़ी ख़ुशी मनाता
है, और दानिशमन्द बेटे का वालिद उस से
लुत्फ़अन्दोज़ होता है।
25चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए ख़ुशी का
बाइस हो, ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार कि तेरी माँ
जश्न मना सके।

-१७-

26मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी
आँखें मेरी राहें पसन्द करें। 27क्यूँकि कस्बी
गहरा गढ़ा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है,
28डाकू की तरह वह ताक लगाए बैठ कर मर्दों
में बेवफ़ाओं का इज़ाफ़ा करती है।

-१८-

29कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय
करता और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है?
किस को बिलावजह चोटें लगती, किस की
आँखें धुन्दली सी रहती हैं? 30वह जो रात गए
तक मै पीने और मसालेदार मै से मज़ा लेने
में मसरूफ़ रहता है। 31मै को तकता न रह,
ख़्वाह उस का सुर्ख़ रंग कितनी ख़ूबसूरती से
प्याले में क्यूँ न चमके, ख़्वाह उसे बड़े मज़े
से क्यूँ न पिया जाए। 32अन्जामकार वह तुझे
साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह डसेगी।
33तेरी आँखें अजीब-ओ-ग़रीब मन्ज़र देखेंगी
और तेरा दिल बेतुकी बातें हकलाएगा। 34तू
समुन्दर के बीच में लेटने वाले की मानिन्द
होगा, उस जैसा जो मस्तूल पर चढ़ कर लेट
गया हो। 35तू कहेगा, "मेरी पिटाई हुई लेकिन
दर्द महसूस न हुआ, मुझे मारा गया लेकिन
मालूम न हुआ। मैं कब जाग उठूँगा ताकि
दुबारा शराब की तरफ़ रुख़ कर सकूँ?"

-१९-

24 शरीरों से हसद न कर, न उन
से सोहबत रखने की आर्ज़ू रख,
2क्यूँकि उन का दिल ज़ुल्म करने पर तुला
रहता है, उन के होंट दूसरों को दुख पहुँचाते
हैं।

-२०-

3हिक्मत घर को तामीर करती, समझ उसे
मज़बूत बुन्याद पर खड़ा कर देती, 4और
इल्म-ओ-इर्फ़ान उस के कमरों को बेशक़ीमत
और मनमोहन चीज़ों से भर देता है।

-२१-

5दानिशमन्द को ताक़त हासिल होती और
इल्म रखने वाले की क़ुव्वत बढ़ती रहती है,
6क्यूँकि जंग करने के लिए हिदायत और फ़त्ह
पाने के लिए मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत
होती है।

-२२-

7हिक्मत इतनी बुलन्द-ओ-बाला है कि
अहमक़ उसे पा नहीं सकता। जब बुज़ुर्ग शहर
के दरवाज़े में फ़ैसला करने के लिए जमा होते
हैं तो वह कुछ नहीं कह सकता।

-२३-

8बुरे मन्सूबे बांधने वाला साज़िशी कहलाता
है। 9अहमक़ की चालाकियाँ गुनाह हैं, और
लोग तानाज़न से घिन खाते हैं।

-२४-

10अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हार कर
ढीला हो जाए तो तेरी ताक़त जाती रहेगी।

-२५-

11जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें
छुड़ा, जो क़साई की तरफ़ डगमगाते हुए जा
रहे हैं उन्हें रोक दे। 12शायद तू कहे, "हमें तो
इस के बारे में इल्म नहीं था।" लेकिन यक़ीन
जान, जो दिल की जाँच-पड़ताल करता है वह
बात समझता है, जो तेरी जान की देख-भाल
करता है उसे मालूम है। वह इन्सान को उस
के आमाल का बदला देता है।

-२६-

13मेरे बेटे, शहद खा क्यूँकि वह अच्छा है,
छत्ते का ख़ालिस शहद मीठा है। 14जान ले कि
हिक्मत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है।
अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं
रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल अच्छा होगा।

-२७-

15ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक
लगाए मत बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह
न कर। 16क्यूँकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर
जाए तो भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा
जबकि बेदीन एक बार ठोकर खा कर मुसीबत
में फंसा रहेगा।

-२८-

17अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो ख़ुश न हो,
अगर वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जश्न न
मनाए। 18ऐसा न हो कि रब यह देख कर तेरा
रवय्या पसन्द न करे और अपना ग़ुस्सा दुश्मन
पर उतारने से बाज़ आए।

-२९-

19बदकारों को देख कर मुश्तइल न हो जा,
बेदीनों के बाइस कुढ़ता न रह। 20क्यूँकि शरीरों
का कोई मुस्तक़बिल नहीं, बेदीनों का चराग़
बुझ जाएगा।

-३०-

21मेरे बेटे, रब और बादशाह का ख़ौफ़
मान, और सरकशों में शरीक न हो। 22क्यूँकि
अचानक ही उन पर आफ़त आएगी, किसी
को पता ही नहीं चलेगा जब दोनों उन पर हम्ला
करके उन्हें तबाह कर देंगे।

दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें

23ज़ैल में दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें
क़लमबन्द हैं।

अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात
है। 24जो क़ुसूरवार से कहे, "तू बेक़ुसूर है" उस
पर क़ौमें लानत भेजेंगी, उस की सरज़निश
उम्मतें करेंगी। 25लेकिन जो क़ुसूरवार को
मुजरिम ठहराए वह ख़ुशहाल होगा, उसे
कस्रत की बरकत मिलेगी।

26सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिन्द
है।

27पहले बाहर का काम मुकम्मल करके
अपने खेतों को तय्यार कर, फिर ही अपना
घर तामीर कर।
28बिलावजह अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़
गवाही मत दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका
देना चाहता है?
29मत कहना, "जिस तरह उस ने मेरे साथ
किया उसी तरह मैं उस के साथ करूँगा, मैं
उस के हर फ़ेल का मुनासिब जवाब दूँगा।"

30एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी
के खेत और अंगूर के बाग़ में से गुज़रा।
31हर जगह काँटेदार झाड़ियाँ फैली हुई थीं,
ख़ुदरौ पौदे पूरी ज़मीन पर छा गए थे। उस की
चारदीवारी भी गिर गई थी। 32यह देख कर मैं
ने दिल से ध्यान दिया और सबक़ सीख लिया,
33अगर तू कहे, "मुझे थोड़ी देर सोने दे,
थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ
धरे बैठने दे ताकि मैं आराम कर सकूँ" 34तो
ख़बरदार, जल्द ही ग़ुर्बत राहज़न की तरह तुझ
पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू
की तरह तुझ पर आ पड़ेगी।

सुलैमान की मज़ीद कहावतें

25 ज़ैल में सुलैमान की मज़ीद
कहावतें दर्ज हैं जिन्हें यहूदाह के
बादशाह हिज़क़ियाह के लोगों ने जमा किया।

2अल्लाह का जलाल इस में ज़ाहिर होता है
कि वह मुआमला पोशीदा रखता है, बादशाह
का जलाल इस में कि वह मुआमले की
तहक़ीक़ करता है।
3जितना आसमान बुलन्द और ज़मीन गहरी
है उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं
लगाया जा सकता।
4चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बर्तन बनाने
में कामयाब हो जाएगा, 5बेदीन को बादशाह
के हुज़ूर से दूर करो तो उस का तख़्त रास्ती
की बुन्याद पर क़ाइम रहेगा।

6बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न
कर, न इज़्ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा
जो बुज़ुर्गों के लिए मख़्सूस है। 7इस से पहले
कि शुरफ़ा के सामने ही तेरी बेइज़्ज़ती हो जाए
बेहतर है कि तू पीछे खड़ा हो जा और बाद में
कोई तुझ से कहे, "यहाँ सामने आ जाएँ।"
जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत
में पेश करने में 8जल्दबाज़ी न कर, क्यूँकि तू
क्या करेगा अगर तेरा पड़ोसी तेरे मुआमले को
झुटला कर तुझे शर्मिन्दा करे?
9अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त
वह बात बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी
में तेरे सपुर्द की, 10ऐसा न हो कि सुनने वाला
तेरी बेइज़्ज़ती करे। तब तेरी बदनामी कभी
नहीं मिटेगी।
11वक़्त पर मौज़ूँ बात चाँदी के बर्तन में
सोने के सेब की मानिन्द है। 12दानिशमन्द
की नसीहत क़बूल करने वाले के लिए सोने
की बाली और ख़ालिस सोने के गुलूबन्द की
मानिन्द है।
13क़ाबिल-ए-एतिमाद क़ासिद भेजने वाले
के लिए फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक
जैसा है, इस तरह वह अपने मालिक की जान
को तर-ओ-ताज़ा कर देता है।
14जो शेख़ी मार कर तोह्फ़ों का वादा करे
लेकिन कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की
मानिन्द है जो बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।
15हुक्मरान को तहम्मुल से क़ाइल किया
जा सकता, और नर्म ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के
क़ाबिल है।
16अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से
ज़्यादा मत खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे
क़ै आएगी।
17अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से
अपने क़दमों को रोक, वर्ना वह तंग आ कर
तुझ से नफ़रत करने लगेगा।
18जो अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ झूटी
गवाही दे वह हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर
जैसा नुक़्सानदेह है।

19मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतिबार
करना ख़राब दाँत या डगमगाते पाँओ की तरह
तक्लीफ़दिह है।
20दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही
ग़ैरमौज़ूँ है जितना सर्दियों के मौसम में क़मीस
उतारना या सोडे पर सिरका डालना।
21अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना
खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला।
22क्यूँकि ऐसा करने से तू उस के सर पर जलते
हुए कोएलों का ढेर लगाएगा, और रब तुझे
अज्र देगा।
23जिस तरह काले बादल लाने वाली हवा
बारिश पैदा करती है उसी तरह बातूनी की
चुपके से की गई बातों से लोगों के मुँह बिगड़
जाते हैं।
24झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में
रहने की निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा
करना बेहतर है।
25दूरदराज़ मुल्क की ख़ुशख़बरी प्यासे गले
में ठंडा पानी है।
26जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने
लगे, वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।
27ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न
ही ज़्यादा अपनी इज़्ज़त की फ़िक्र करना।
28जो अपने आप पर क़ाबू न पा सके वह
उस शहर की मानिन्द है जिस की फ़सील ढा
दी गई है।

26 अहमक़ की इज़्ज़त करना उतना
ही ग़ैरमौज़ूँ है जितना मौसम-ए-
गर्मा में बर्फ़ या फ़सल काटते वक़्त बारिश।
2बिलावजह भेजी हुई लानत फड़फड़ाती
चिड़िया या उड़ती हुई अबाबील की तरह
ओझल हो कर बेअसर रह जाती है।
3घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और
अहमक़ की पीठ को लाठी से तर्बियत दे।
4जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे
जवाब न दे, वर्ना तू उसी के बराबर हो जाएगा।
5जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे
जवाब दे, वर्ना वह अपनी नज़र में दानिशमन्द
ठहरेगा।
6जो अहमक़ के हाथ पैग़ाम भेजे वह उस
की मानिन्द है जो अपने पाँओ पर कुल्हाड़ी
मार कर अपने आप से ज़ियादती करता है।[a]
7अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात
मफ़्लूज की बेहरकत लटकती टाँगों की तरह
बेकार है।
8अहमक़ का एहतिराम करना ग़ुलेल के
साथ पत्थर बांधने के बराबर है।
9अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात नशे
में धुत शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की
मानिन्द है।
10जो अहमक़ या हर किसी गुज़रने वाले को
काम पर लगाए वह सब को ज़ख़्मी करने वाले
तीरअन्दाज़ की मानिन्द है।
11जो अहमक़ अपनी हमाक़त दोहराए वह
अपनी क़ै के पास वापस आने वाले कुत्ते की
मानिन्द है।
12क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आप
को दानिशमन्द समझता है? उस की निस्बत
अहमक़ के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
13काहिल कहता है, "रास्ते में शेर है, हाँ
चौकों में शेर फिर रहा है!"
14जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है
उसी तरह काहिल अपने बिस्तर पर करवटें
बदलता है।
15जब काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन
में डाल दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह
तक वापस नहीं ला सकता।
16काहिल अपनी नज़र में हिक्मत से जवाब
देने वाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा
दानिशमन्द है।
17जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में
मुदाख़लत करे वह उस आदमी की मानिन्द
है जो कुत्ते को कानों से पकड़ ले।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : ज़ियादती का प्याला पीता है।

18-19जो अपने पड़ोसी को फ़रेब दे कर बाद
में कहे, “मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था” वह
उस दीवाने की मानिन्द है जो लोगों पर जलते
हुए और मोहलक तीर बरसाता है।
20लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती
है, तोहमत लगाने वाले के चले जाने पर
झगड़ा बन्द हो जाता है।
21अंगारों में कोएले और आग में लकड़ी
डाल तो आग भड़क उठेगी। झगड़ालू को
कहीं भी खड़ा कर तो लोग मुश्तइल हो
जाएंगे।
22तोहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़
खाने के लुक़्मों जैसी हैं, वह दिल की तह तक
उतर जाती हैं।
23जलने वाले होंट और शरीर दिल मिट्टी
के उस बर्तन की मानिन्द हैं जिसे चमकदार
बनाया गया हो।
24नफ़रत करने वाला अपने होंटों से अपना
असली रूप छुपा लेता है, लेकिन उस का दिल
फ़रेब से भरा रहता है। 25जब वह मेहरबान
बातें करे तो उस पर यक़ीन न कर, क्यूँकि उस
के दिल में सात मकरूह बातें हैं। 26गो उस की
नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से छुपी रहे, लेकिन
एक दिन उस का ग़लत किरदार पूरी जमाअत
के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।
27जो दूसरों को फंसाने के लिए गढ़ा खोदे
वह उस में ख़ुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़का
कर दूसरों पर फैंकना चाहे उस पर ही पत्थर
वापस लुढ़क आएगा।
28झूटी ज़बान उन से नफ़रत करती है जिन्हें
वह कुचल देती है, ख़ुशामद करने वाला मुँह
तबाही मचा देता है।

27 उस पर शेख़ी न मार जो तू कल
करेगा, तुझे क्या मालूम कि कल
का दिन क्या कुछ फ़राहम करेगा?
2तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी
तारीफ़ न करें बल्कि वह जो तुझ से वाक़िफ़
भी न हो।
3पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो
अहमक़ तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाक़ाबिल-
ए-बर्दाश्त है।
4ग़ुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की
तरह इन्सान पर आ जाता है, लेकिन कौन
हसद का मुक़ाबला कर सकता है?
5खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर
है।
6प्यार करने वाले की ज़र्बें वफ़ा का सबूत हैं,
लेकिन नफ़रत करने वाले के मुतअद्दिद बोसों
से ख़बरदार रह।
7जो सेर है वह शहद को भी पाँओ तले रौंद
देता है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी
लगती हैं।
8जो आदमी अपने घर से निकल कर मारा
मारा फिरे वह उस परिन्दे की मानिन्द है जो
अपने घोंसले से भाग कर कभी इधर कभी
इधर फड़फड़ाता रहता है।
9तेल और बख़ूर दिल को ख़ुश करते हैं,
लेकिन दोस्त अपने अच्छे मश्वरों से ख़ुशी
दिलाता है।
10अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने
ज़ाती दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को।
तब तुझे मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद
नहीं माँगनी पड़ेगी। क्यूँकि क़रीब का पड़ोसी
दूर के भाई से बेहतर है।
11मेरे बेटे, दानिशमन्द बन कर मेरे दिल को
ख़ुश कर ताकि मैं अपने हक़ीर जानने वाले
को जवाब दे सकूँ।
12ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँप कर
छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर
उस की लपेट में आ जाता है।
13ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो
किसी ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है।
अगर वह अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो
उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने
दी थी।

14जो सुब्ह-सवेरे बुलन्द आवाज़ से अपने
पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत
ठहराई जाएगी।
15झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के
बाइस मुसलसल टपकने वाली छत की
मानिन्द है। 16उसे रोकना हवा को रोकने या
तेल को पकड़ने के बराबर है।
17लोहा लोहे को और इन्सान इन्सान के
ज़हन को तेज़ करता है।
18जो अन्जीर के दरख़्त की देख-भाल
करे वह उस का फल खाएगा, जो अपने
मालिक की वफ़ादारी से ख़िदमत करे उस का
एहतिराम किया जाएगा।
19जिस तरह पानी चेहरे को मुनअकिस
करता है उसी तरह इन्सान का दिल इन्सान
को मुनअकिस करता है।
20न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं,
न इन्सान की आँखें।
21सोना और चाँदी कुठाली में पिघला कर
पाक-साफ़ कर, लेकिन इन्सान का किरदार
इस से मालूम कर कि लोग उस की कितनी
क़दर करते हैं।
22अगर अहमक़ को अनाज की तरह
ओखली और मूसल से कूटा भी जाए तो भी
उस की हमाक़त दूर नहीं हो जाएगी।
23एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की
हालत पर ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर ख़ूब
तवज्जुह दे। 24क्यूँकि कोई भी दौलत हमेशा
तक क़ाइम नहीं रहती, कोई भी ताज नस्ल-
दर-नस्ल बरक़रार नहीं रहता। 25खुले मैदान
में घास काट कर जमा कर ताकि नई घास उग
सके, चारा पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। 26तब तू
भेड़ों की ऊन से कपड़े बना सकेगा, बकरों
की फ़रोख़्त से खेत ख़रीद सकेगा, 27और
बकरियाँ इतना दूध देंगी कि तेरे, तेरे ख़ानदान
और तेरे नौकर-चाकरों के लिए काफ़ी होगा।

28 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि
ताक़्क़ुब करने वाला कोई नहीं
होता, लेकिन रास्तबाज़ अपने आप को जवान
शेरबबर की तरह मह्फ़ूज़ समझता है।
2मुल्क की ख़ताकारी के सबब से उस
की हुकूमत की यगान्गत क़ाइम नहीं रहेगी,
लेकिन समझदार और दानिशमन्द आदमी
उसे बड़ी देर तक क़ाइम रखेगा।
3जो ग़रीब ग़रीबों पर ज़ुल्म करे वह उस
मूसलाधार बारिश की मानिन्द है जो सैलाब
ला कर फ़सलों को तबाह कर देती है।
4जिस ने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन
की तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के
ताबे रहता है वह उस की मुख़ालफ़त करता
है।
5शरीर इन्साफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के
तालिब सब कुछ समझते हैं।
6बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारने वाला ग़रीब
टेढ़ी राहों पर चलने वाले अमीर से बेहतर है।
7जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार
बेटा है, लेकिन अय्याशों का साथी अपने बाप
की बेइज़्ज़ती करता है।
8जो अपनी दौलत नाजाइज़ सूद से बढ़ाए
वह उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है,
ऐसे शख़्स के लिए जो ग़रीबों पर रहम करेगा।
9जो अपने कान में उंगली डाले ताकि
शरीअत की बातें न सुने उस की दुआएँ भी
क़ाबिल-ए-घिन हैं।
10जो सीधी राह पर चलने वालों को ग़लत
राह पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा,
लेकिन बेइल्ज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।
11अमीर अपने आप को दानिशमन्द
समझता है, लेकिन जो ज़रूरतमन्द समझदार
है वह उस का असली किरदार मालूम कर लेता
है।
12जब रास्तबाज़ फ़त्हयाब हों तो मुल्क की
शान-ओ-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब
बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।
13जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा,
लेकिन जो उन्हें तस्लीम करके तर्क करे वह
रहम पाएगा।

14मुबारक है वह जो हर वक़्त रब का ख़ौफ़
माने, लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह
मुसीबत में फंस जाएगा।
15पस्तहाल क़ौम पर हुकूमत करने वाला
बेदीन ग़ुर्राते हुए शेरबबर और हम्लाआवर रीछ
की मानिन्द है।
16जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ ज़ुल्म
होता है, लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत
हो उस की उम्र दराज़ होगी।
17जो किसी को क़त्ल करे वह मौत तक
अपने क़ुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा
फिरेगा। ऐसे शख़्स का सहारा न बन!
18जो बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे वह बचा
रहेगा, लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह
अचानक ही गिर जाएगा।
19जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह
जी भर कर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल
चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह ग़ुर्बत से सेर हो
जाएगा।
20क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी को कस्रत
की बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग
भाग कर दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे
वह सज़ा से नहीं बचेगा।
21जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इन्सान
रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम
बन जाता है।
22लालची भाग भाग कर दौलत जमा करता
है, उसे मालूम ही नहीं कि इस का अन्जाम
ग़ुर्बत ही है।
23आख़िरकार नसीहत देने वाला चापलूसी
करने वाले से ज़्यादा मन्ज़ूर होता है।
24जो अपने बाप या माँ को लूट कर कहे,
"यह जुर्म नहीं है" वह मोहलक क़ातिल का
शरीक-ए-कार होता है।
25लालची झगड़ों का मम्बा रहता है, लेकिन
जो रब पर भरोसा रखे वह ख़ुशहाल रहेगा।
26जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह
बेवुक़ूफ़ है, लेकिन जो हिक्मत की राह पर
चले वह महफ़ूज़ रहेगा।
27ग़रीबों को देने वाला ज़रूरतमन्द नहीं
होगा, लेकिन जो अपनी आँखें बन्द करके
उन्हें नज़रअन्दाज़ करे उस पर बहुत लानतें
आएँगी।
28जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते
हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों
की तादाद बढ़ जाती है।

29 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बावुजूद
हटधर्म रहे वह अचानक ही बर्बाद
हो जाएगा, और शिफ़ा का इम्कान ही नहीं
होगा।
2जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो क़ौम ख़ुश होती,
लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो क़ौम आहें
भर्ती है।
3जिसे हिक्मत प्यारी हो वह अपने बाप को
ख़ुशी दिलाता है, लेकिन कस्बियों का साथी
अपनी दौलत उड़ा देता है।
4बादशाह इन्साफ़ से मुल्क को मुस्तह्कम
करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे
तबाह करता है।
5जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह
उस के क़दमों के आगे जाल बिछाता है।
6शरीर जुर्म करते वक़्त अपने आप को
फंसा देता, लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशी मना कर
शादमान रहता है।
7रास्तबाज़ पस्तहालों के हुक़ूक़ का ख़याल
रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।
8तानाज़न शहर में अफ़रा-तफ़री मचा देते
जबकि दानिशमन्द ग़ुस्सा ठंडा कर देते हैं।
9जब दानिशमन्द आदमी अदालत में
अहमक़ से लड़े तो अहमक़ तैश में आ जाता
या क़ह्क़हा लगाता है, सुकून का इम्कान ही
नहीं होता।
10ख़ूँख़ार आदमी बेइल्ज़ाम शख़्स से
नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलने
वाला उस की बेहतरी चाहता है।
11अहमक़ अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता,
लेकिन दानिशमन्द उसे रोक कर क़ाबू में
रखता है।

12जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उस के
तमाम मुलाज़िम बेदीन होंगे।
13जब ग़रीब और ज़ालिम की मुलाक़ात
होती है तो दोनों की आँखों को रौशन करने
वाला रब ही है।
14जो बादशाह दियानतदारी से ज़रूरतमन्द
की अदालत करे उस का तख़्त हमेशा तक
क़ाइम रहेगा।
15छड़ी और नसीहत हिक्मत पैदा करती हैं।
जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के
लिए शर्मिन्दगी का बाइस होगा।
16जब बेदीन फलें फूलें तो गुनाह भी फलता
फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उन की शिकस्त
के गवाह होंगे।
17अपने बेटे की तर्बियत कर तो वह तुझे
सुकून और ख़ुशी दिलाएगा।
18जहाँ रोया नहीं वहाँ क़ौम बेलगाम हो
जाती है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत
के ताबे रहता है।
19नौकर सिर्फ़ अल्फ़ाज़ से नहीं सुधरता।
अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं
देगा।
20क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने
में जल्दबाज़ है? उस की निस्बत अहमक़ के
सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
21जो ग़ुलाम जवानी से नाज़-ओ-नेमत में
पल कर बिगड़ जाए उस का बुरा अन्जाम
होगा।
22ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता
है, ग़ुसीले शख़्स से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द
होते हैं।
23तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा
जबकि फ़रोतन शख़्स इज़्ज़त पाएगा।
24जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से
नफ़रत रखता है। गो उस से हलफ़ उठवाया
जाए कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ
नहीं बताता बल्कि हलफ़ की लानत की ज़द
में आ जाता है।
25जो इन्सान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फंस
जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह
महफ़ूज़ रहेगा।
26बहुत लोग हुक्मरान की मन्ज़ूरी के
तालिब रहते हैं, लेकिन इन्साफ़ रब ही की
तरफ़ से मिलता है।
27रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी
राह पर चलने वाले से घिन खाता है।

अजूर की कहावतें

30 ज़ैल में अजूर बिन याक़ा की
कहावतें हैं। वह मस्सा का रहने
वाला था। उस ने फ़रमाया,
ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं
थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही।
2यक़ीनन मैं इन्सानों में सब से ज़्यादा नादान
हूँ, मुझे इन्सान की समझ हासिल नहीं। 3न
मैं ने हिक्मत सीखी, न क़ुद्दूस ख़ुदा के बारे में
इल्म रखता हूँ।

4कौन आसमान पर चढ़ कर वापस उतर
आया? किस ने हवा को अपने हाथों में जमा
किया? किस ने गहरे पानी को चादर में लपेट
लिया? किस ने ज़मीन की हुदूद को अपनी
अपनी जगह पर क़ाइम किया है? उस का
नाम क्या है, उस के बेटे का क्या नाम है?
अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता!

5अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उस
में पनाह ले उस के लिए वह ढाल है।
6उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वर्ना वह
तुझे डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।

7ऐ रब, मैं तुझ से दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे
मरने से पहले इन से इन्कार न कर। 8पहले,
दरोग़गोई और झूट मुझ से दूर रख। दूसरे, न
ग़ुर्बत न दौलत मुझे दे बल्कि उतनी ही रोटी
जितनी मेरा हक़ है, 9ऐसा न हो कि मैं दौलत
के बाइस सेर हो कर तेरा इन्कार करूँ और

कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं ग़ुर्बत के बाइस चोरी करके अपने ख़ुदा के नाम की बेहुरमती करूँ।

10मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और तुझे इस का बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

11ऐसी नस्ल भी है जो अपने बाप पर लानत करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।

12ऐसी नस्ल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़ है, गो उस की ग़िलाज़त दूर नहीं हुई।

13ऐसी नस्ल भी है जिस की आँखें बड़े तकब्बुर से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।

14ऐसी नस्ल भी है जिस के दाँत तलवारें और जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ, मुआशरे के ज़रूरतमन्दों को हड़प कर लें।

15जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो चीख़ते रहते हैं, “और दो, और दो”

तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होतीं बल्कि चार हैं जो कभी नहीं कहतीं, “अब बस करो, अब काफ़ी है,” 16पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिस की प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफ़ी है।”

17जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कव्वे अपनी चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।

18तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार हैं जिन की मुझे समझ नहीं आती, 19आसमान की बुलन्दियों पर उक़ाब की राह, चटान पर साँप की राह, समुन्दर के बीच में जहाज़ की राह और वह राह जो मर्द कुंवारी के साथ चलता है।

20ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती और फिर अपना मुँह पोंछ कर कहती है, “मुझ से कोई ग़लती नहीं हुई।”

21ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार चीज़ें बर्दाश्त नहीं कर सकती, 22वह ग़ुलाम जो बादशाह बन जाए, वह अहमक़ जो जी भर कर खाना खा सके, 23वह नफ़रतअंगेज़[a] औरत जिस की शादी हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा करे।

24ज़मीन की चार मख़्लूक़ात निहायत ही दानिशमन्द हैं हालाँकि छोटी हैं। 25चूँटियाँ कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन गर्मियों के मौसम में सर्दियों के लिए ख़ुराक जमा करती हैं, 26बिज्जू कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं, 27टिड्डियों का बादशाह नहीं होता ताहम सब परे बांध कर निकलती हैं, 28छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम शाही महलों में पाई जाती हैं।

29तीन बल्कि चार जानदार पुरवक़ार अन्दाज़ में चलते हैं। 30पहले, शेरबबर जो जानवरों में ज़ोर-आवर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता, 31दूसरे, मुर्ग़ा जो अकड़ कर चलता है, तीसरे, बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलने वाला बादशाह।

32अगर तू ने मग़रूर हो कर हमाक़त की या बुरे मन्सूबे बांधे तो अपने मुँह पर हाथ रख कर ख़ामोश हो जा, 33क्यूँकि दूध बिलोने से मक्खन, नाक को मरोड़ने[b] से ख़ून और किसी को ग़ुस्सा दिलाने से लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

लमूएल की कहावतें

31 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमूएल की कहावतें हैं। उस की माँ ने उसे यह तालीम दी,

2ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? 3अपनी

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जिस से नफ़रत की जाती है।

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : दबाओ डालने।

पूरी ताक़त औरतों पर ज़ाए न कर, उन पर
जो बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।
4ऐ लमूएल, बादशाहों के लिए मै पीना
मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की
आर्ज़ू रखना मौज़ूँ नहीं। 5ऐसा न हो कि वह
पी पी कर क़वानीन भूल जाएँ और तमाम
मज़्लूमों का हक़ मारें। 6शराब उन्हें पिला जो
तबाह होने वाले हैं, मै उन्हें पिला जो ग़म
खाते हैं, 7ऐसे ही पी पी कर अपनी ग़ुर्बत और
मुसीबत भूल जाएँ।
8अपना मुँह उन के लिए खोल जो बोल
नहीं सकते, उन के हक़ में जो ज़रूरतमन्द
हैं। 9अपना मुँह खोल कर इन्साफ़ से अदालत
कर और मुसीबतज़दा और ग़रीबों के हुक़ूक़
मह्फ़ूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी
औरत मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है।
11उस पर उस के शौहर को पूरा एतिमाद है,
और वह नफ़ा से महरूम नहीं रहेगा। 12उम्र
भर वह उसे नुक़्सान नहीं पहुँचाएगी बल्कि
बरकत का बाइस होगी।
13वह ऊन और सन चुन कर बड़ी मेहनत
से धागा बना लेती है। 14तिजारती जहाज़ों की
तरह वह दूरदराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले
आती है।
15वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है
ताकि अपने घर वालों के लिए खाना और
अपनी नौकरानियों के लिए उन का हिस्सा
तय्यार करे। 16सोच-बिचार के बाद वह खेत
ख़रीद लेती, अपने कमाए हुए पैसों से अंगूर
का बाग़ लगा लेती है।
17ताक़त से कमरबस्ता हो कर वह अपने
बाज़ूओं को मज़बूत करती है। 18वह मह्सूस
करती है, "मेरा कारोबार फ़ाइदामन्द है,"
इस लिए उस का चराग़ रात के वक़्त भी
नहीं बुझता। 19उस के हाथ हर वक़्त ऊन
और कतान कातने में मसरूफ़ रहते हैं। 20वह
अपनी मुट्ठी मुसीबतज़दों और ग़रीबों के लिए
खोल कर उन की मदद करती है। 21जब बर्फ़
पड़े तो उसे घर वालों के बारे में कोई डर
नहीं, क्यूँकि सब गर्म गर्म कपड़े पहने हुए
हैं। 22अपने बिस्तर के लिए वह अच्छे कम्बल
बना लेती, और ख़ुद वह बारीक कतान और
अर्ग़वानी रंग के लिबास पहने फिरती है।
23शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुज़ुर्ग
उस के शौहर से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और जब
कभी कोई फ़ैसला करना हो तो वह भी शूरा
में शरीक होता है।
24बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें
फ़रोख़्त करती है, सौदागर उस के कमरबन्द
ख़रीद लेते हैं।
25वह ताक़त और वक़ार से मुलब्बस रहती
और हंस कर आने वाले दिनों का सामना
करती है। 26वह हिक्मत से बात करती, और
उस की ज़बान पर शफ़ीक़ तालीम रहती है।
27वह सुस्ती की रोटी नहीं खाती बल्कि अपने
घर में हर मुआमले की देख-भाल करती है।
28उस के बेटे खड़े हो कर उसे मुबारक
कहते हैं, उस का शौहर भी उस की तारीफ़
करके कहता है, 29"बहुत सी औरतें सुघड़
साबित हुई हैं, लेकिन तू उन सब पर सब्क़त
रखती है!"
30दिलफ़रेबी, धोका और हुस्न पल भर
का है, लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़
माने वह क़ाबिल-ए-तारीफ़ है। 31उसे उस की
मेहनत का अज्र दो! शहर के दरवाज़ों में उस
के काम उस की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 ज़ैल में वाइज़ के अल्फ़ाज़ क़लमबन्द हैं, उस के जो दाऊद का बेटा और यरूशलम में बादशाह है,

2वाइज़ फ़रमाता है, "बातिल ही बातिल,
बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही
बातिल है!" 3सूरज तले जो मेहनत-मशक़्क़त
इन्सान करे उस का क्या फ़ाइदा है? कुछ
नहीं! 4एक पुश्त आती और दूसरी जाती
है, लेकिन ज़मीन हमेशा तक क़ाइम रहती
है। 5सूरज तुलू और ग़ुरूब हो जाता है, फिर
सुरअत से उसी जगह वापस चला जाता है
जहाँ से दुबारा तुलू होता है। 6हवा जुनूब की
तरफ़ चलती, फिर मुड़ कर शिमाल की तरफ़
चलने लगती है। यूँ चक्कर काट काट कर वह
बार बार नुक़्ता-ए-आग़ाज़ पर वापस आती
है। 7तमाम दरया समुन्दर में जा मिलते हैं, तो
भी समुन्दर की सतह वही रहती है, क्यूँकि
दरयाओं का पानी मुसलसल उन सरचश्मों के
पास वापस आता है जहाँ से बह निकला है।
8इन्सान बातें करते करते थक जाता है और
सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता।
आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, "अब
बस करो, काफ़ी है।" कान कभी इतना नहीं
सुनता कि और न सुनना चाहे। 9जो कुछ पेश
आया वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया
गया वही दुबारा किया जाएगा। सूरज तले
कोई भी बात नई नहीं। 10क्या कोई बात है
जिस के बारे में कहा जा सके, "देखो, यह
नई है"? हरगिज़ नहीं, यह भी हम से बहुत
देर पहले ही मौजूद थी। 11जो पहले ज़िन्दा थे
उन्हें कोई याद नहीं करता, और जो आने वाले
हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो उन के बाद
आएँगे।

हिक्मत हासिल करना बातिल है

12मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इस्राईल
का बादशाह था। 13मैं ने अपनी पूरी ज़हनी
ताक़त इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान
तले किया जाता है उस की हिक्मत के
ज़रीए तफ़्तीश-ओ-तहक़ीक़ करूँ। यह काम
नागवार है गो अल्लाह ने ख़ुद इन्सान को इस
में मेहनत-मशक़्क़त करने की ज़िम्मादारी दी
है।

14मैं ने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया
जो सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला
कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के
बराबर है। 15जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो
सकता, जिस की कमी है उसे गिना नहीं जा
सकता।

16मैं ने दिल में कहा, "हिक्मत में मैं ने
इतना इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक़्क़ी की
कि उन सब से सब्क़त ले गया जो मुझ से
पहले यरूशलम पर हुकूमत करते थे। मेरे दिल

ने बहुत हिक्मत और इल्म अपना लिया है।”
17मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई
कि हिक्मत समझूँ, नीज़ कि मुझे दीवानगी
और हमाक़त की समझ भी आए। लेकिन मुझे
मालूम हुआ कि यह भी हवा को पकड़ने के
बराबर है। 18क्यूँकि जहाँ हिक्मत बहुत है वहाँ
रंजीदगी भी बहुत है। जो इल्म-ओ-इर्फ़ान में
इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा करता है।

दुनिया की ख़ुशियाँ बातिल हैं

2 मैं ने अपने आप से कहा, “आ, ख़ुशी
को आज़मा कर अच्छी चीज़ों का
तजरिबा कर!” लेकिन यह भी बातिल ही
निकला। 2मैं बोला, “हंसना बेहूदा है, और
ख़ुशी से क्या हासिल होता है?” 3मैं ने दिल में
अपना जिस्म मै से तर-ओ-ताज़ा करने और
हमाक़त अपनाने के तरीक़े ढूँड निकाले। इस
के पीछे भी मेरी हिक्मत मालूम करने की
कोशिश थी, क्यूँकि मैं देखना चाहता था कि
जब तक इन्सान आसमान तले जीता रहे उस
के लिए क्या कुछ करना मुफ़ीद है।

4मैं ने बड़े बड़े काम अन्जाम दिए, अपने
लिए मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए,
5मुतअद्दिद बाग़ और पार्क लगा कर उन में
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फलदार दरख़्त लगाए।
6फलने फूलने वाले जंगल की आबपाशी के
लिए मैं ने तालाब बनवाए। 7मैं ने ग़ुलाम और
लौंडियाँ ख़रीद लीं। ऐसे ग़ुलाम भी बहुत थे
जो घर में पैदा हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल
और भेड़-बकरियाँ मिलीं जितनी मुझ से पहले
यरूशलम में किसी को हासिल न थीं। 8मैं ने
अपने लिए सोना-चाँदी और बादशाहों और
सूबों के ख़ज़ाने जमा किए। मैं ने गुलूकार मर्द-
ओ-ख़वातीन हासिल किए, साथ साथ कस्रत
की ऐसी चीज़ें जिन से इन्सान अपना दिल
बहलाता है।

9यूँ मैं ने बहुत तरक़्क़ी करके उन सब
पर सब्क़त हासिल की जो मुझ से पहले
यरूशलम में थे। और हर काम में मेरी हिक्मत
मेरे दिल में क़ाइम रही। 10जो कुछ भी मेरी
आँखें चाहती थीं वह मैं ने उन के लिए मुहय्या
किया, मैं ने अपने दिल से किसी भी ख़ुशी का
इन्कार न किया। मेरे दिल ने मेरे हर काम से
लुत्फ़ उठाया, और यह मेरी तमाम मेहनत-
मशक़्क़त का अज्र रहा।

11लेकिन जब मैं ने अपने हाथों के
तमाम कामों का जाइज़ा लिया, उस मेहनत-
मशक़्क़त का जो मैं ने की थी तो नतीजा यही
निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को
पकड़ने के बराबर है। सूरज तले किसी भी
काम का फ़ाइदा नहीं होता।

सब का एक ही अन्जाम है

12फिर मैं हिक्मत, बेहुदगी और हमाक़त
पर ग़ौर करने लगा। मैं ने सोचा, जो आदमी
बादशाह की वफ़ात पर तख़्तनशीन होगा वह
क्या करेगा? वही कुछ जो पहले भी किया जा
चुका है!

13मैं ने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे
से बेहतर है उसी तरह हिक्मत हमाक़त से
बेहतर है। 14दानिशमन्द के सर में आँखें हैं
जबकि अहमक़ अंधेरे ही में चलता है। लेकिन
मैं ने यह भी जान लिया कि दोनों का एक ही
अन्जाम है। 15मैं ने दिल में कहा, “अहमक़
का सा अन्जाम मेरा भी होगा। तो फिर इतनी
ज़्यादा हिक्मत हासिल करने का क्या फ़ाइदा
है? यह भी बातिल है।” 16क्यूँकि अहमक़ की
तरह दानिशमन्द की याद भी हमेशा तक नहीं
रहेगी। आने वाले दिनों में सब की याद मिट
जाएगी। अहमक़ की तरह दानिशमन्द को भी
मरना ही है!

17यूँ सोचते सोचते मैं ज़िन्दगी से नफ़रत
करने लगा। जो भी काम सूरज तले किया
जाता है वह मुझे बुरा लगा, क्यूँकि सब
कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर
है। 18सूरज तले मैं ने जो कुछ भी मेहनत-
मशक़्क़त से हासिल किया था उस से मुझे
नफ़रत हो गई, क्यूँकि मुझे यह सब कुछ

उस के लिए छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी
जगह आएगा। 19और क्या मालूम कि वह
दानिशमन्द या अहमक़ होगा? लेकिन जो भी
हो, वह उन तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो
हासिल करने के लिए मैं ने सूरज तले अपनी
पूरी ताक़त और हिक्मत सर्फ़ की है। यह भी
बातिल है।

20तब मेरा दिल मायूस हो कर हिम्मत
हारने लगा, क्यूँकि जो भी मेहनत-मशक़्क़त
मैं ने सूरज तले की थी वह बेकार सी लगी।
21क्यूँकि ख़्वाह इन्सान अपना काम हिक्मत,
इल्म और महारत से क्यूँ न करे, आख़िरकार
उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है जिस
ने उस के लिए एक उंगली भी नहीं हिलाई।
यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है। 22क्यूँकि
आख़िर में इन्सान के लिए क्या कुछ क़ाइम
रहता है, जबकि उस ने सूरज तले इतनी
मेहनत-मशक़्क़त और कोशिशों के साथ सब
कुछ हासिल कर लिया है? 23उस के तमाम
दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं, रात
को भी उस का दिल आराम नहीं पाता। यह
भी बातिल ही है।

24इन्सान के लिए सब से अच्छी बात यह है
कि खाए पिए और अपनी मेहनत-मशक़्क़त
के फल से लुत्फ़अन्दोज़ हो। लेकिन मैं ने
यह भी जान लिया कि अल्लाह ही यह सब
कुछ मुहय्या करता है। 25क्यूँकि उस के बग़ैर
कौन खा कर ख़ुश हो सकता है? कोई
नहीं! 26जो इन्सान अल्लाह को मन्ज़ूर हो
उसे वह हिक्मत, इल्म-ओ-इर्फ़ान और ख़ुशी
अता करता है, लेकिन गुनाहगार को वह जमा
करने और ज़ख़ीरा करने की ज़िम्मादारी देता
है ताकि बाद में यह दौलत अल्लाह को मन्ज़ूर
शख़्स के हवाले की जाए। यह भी बातिल और
हवा को पकड़ने के बराबर है।

हर बात का अपना वक़्त है

3 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती,
आसमान तले हर मुआमले का अपना
वक़्त होता है,
2जन्म लेने और मरने का,
पौदा लगाने और उखाड़ने का,
3मार देने और शिफ़ा देने का,
ढा देने और तामीर करने का,
4रोने और हँसने का,
आहें भरने और रक़्स करने का,
5पत्थर फैंकने और पत्थर जमा करने का,
गले मिलने और इस से बाज़ रहने का,
6तलाश करने और खो देने का,
महफ़ूज़ रखने और फैंकने का,
7फाड़ने और सी कर जोड़ने का,
ख़ामोश रहने और बोलने का,
8प्यार करने और नफ़रत करने का,
जंग लड़ने और सलामती से ज़िन्दगी
गुज़ारने का,

9चुनाँचे क्या फ़ाइदा है कि काम करने वाला
मेहनत-मशक़्क़त करे?

10मैं ने वह तक्लीफ़दिह काम-काज देखा
जो अल्लाह ने इन्सान के सपुर्द किया ताकि
वह उस में उलझा रहे। 11उस ने हर चीज़
को यूँ बनाया है कि वह अपने वक़्त के लिए
ख़ूबसूरत और मुनासिब हो। उस ने इन्सान के
दिल में जाविदानी भी डाली है, गो वह शुरू
से ले कर आख़िर तक उस काम की तह तक
नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है।
12मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस
से बेहतर कुछ नहीं है कि वह ख़ुश रहे और
जीते जी ज़िन्दगी का मज़ा ले। 13क्यूँकि अगर
कोई खाए पिए और तमाम मेहनत-मशक़्क़त
के साथ साथ ख़ुशहाल भी हो तो यह अल्लाह
की बख़्शिश है।

14मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे
वह अबद तक क़ाइम रहेगा। उस में न इज़ाफ़ा
हो सकता है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ

इस लिए करता है कि इन्सान उस का ख़ौफ़ माने। 15जो हाल में पेश आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है। हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस लाता है।

इन्सान फ़ानी है

16मैं ने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत करनी है वहाँ नाइन्साफ़ी है, जहाँ इन्साफ़ करना है वहाँ बेदीनी है। 17लेकिन मैं दिल में बोला, "अल्लाह रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा, क्यूँकि हर मुआमले और काम का अपना वक़्त होता है।"

18मैं ने यह भी सोचा, "जहाँ तक इन्सानों का ताल्लुक़ है अल्लाह उन की जाँच-पड़ताल करता है ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिन्द हैं। 19क्यूँकि इन्सान-ओ-हैवान का एक ही अन्जाम है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक सा दम है, इस लिए इन्सान को हैवान की निस्बत ज़्यादा फ़ाइदा हासिल नहीं होता। सब कुछ बातिल ही है। 20सब कुछ एक ही जगह चला जाता है, सब कुछ ख़ाक से बना है और सब कुछ दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा। 21कौन यक़ीन से कह सकता है कि इन्सान की रूह ऊपर की तरफ़ जाती और हैवान की रूह नीचे ज़मीन में उतरती है?"

22ग़रज़ मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में ख़ुश रहे, यही उस के नसीब में है। क्यूँकि कौन उसे वह देखने के क़ाबिल बनाएगा जो उस के बाद पेश आएगा? कोई नहीं!

मुर्दों का हाल बेहतर है

4 मैं ने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे वह तमाम ज़ुल्म नज़र आया जो सूरज तले होता है। मज़लूमों के आँसू बहते हैं, और तसल्ली देने वाला कोई नहीं होता। ज़ालिम उन से ज़ियादती करते हैं, और तसल्ली देने वाला कोई नहीं होता। 2यह देख कर मैं ने मुर्दों को मुबारक कहा, हालाँकि वह अर्से से वफ़ात पा चुके थे। मैं ने कहा, "वह हाल के ज़िन्दा लोगों से कहीं मुबारक हैं। 3लेकिन इन से ज़्यादा मुबारक वह है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिस ने वह तमाम बुराइयाँ नहीं देखीं जो सूरज तले होती हैं।"

ग़ुर्बत में सुकून बेहतर है

4मैं ने यह भी देखा कि सब लोग इस लिए मेहनत-मशक़्क़त और महारत से काम करते हैं कि एक दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 5एक तरफ़ तो अहमक़ हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने आप को तबाही तक पहुँचाता है। 6लेकिन दूसरी तरफ़ अगर कोई मुट्ठी भर रोज़ी कमा कर सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके तो यह इस से बेहतर है कि दोनों मुट्ठियाँ सिरतोड़ मेहनत और हवा को पकड़ने की कोशिशों के बाद ही भरें।

तन्हाई की निस्बत मिल कर रहना बेहतर है

7मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल है। 8एक आदमी अकेला ही था। न उस के बेटा था, न भाई। वह बेहद मेहनत-मशक़्क़त करता रहा, लेकिन उस की आँखें कभी अपनी दौलत से मुत्मइन न थीं। सवाल यह रहा, "मैं इतनी सिरतोड़ कोशिश किस के लिए कर रहा हूँ? मैं अपनी जान को ज़िन्दगी के मज़े लेने से क्यूँ महरूम रख रहा हूँ?" यह भी बातिल और नागवार मुआमला है।

9दो एक से बेहतर हैं, क्यूँकि उन्हें अपने काम-काज का अच्छा अज्र मिलेगा। 10अगर एक गिर जाए तो उस का साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा। लेकिन उस पर अफ़्सोस जो गिर जाए और कोई साथी न हो जो उसे दुबारा खड़ा करे। 11नीज़, जब दो सर्दियों के मौसम में मिल कर बिस्तर पर लेट जाएँ तो वह गर्म

रहते हैं। जो तन्हा है वह किस तरह गर्म हो
जाएगा? 12एक शख़्स पर क़ाबू पाया जा
सकता है जबकि दो मिल कर अपना दिफ़ा
कर सकते हैं। तीन लड़ियों वाली रस्सी जल्दी
से नहीं टूटती।

क़ौम की क़बूलियत फ़ुज़ूल है

13जो लड़का ग़रीब लेकिन दानिशमन्द है
वह उस बुज़ुर्ग लेकिन अहमक़ बादशाह से
कहीं बेहतर है जो तम्बीह मानने से इन्कार
करे। 14क्यूँकि गो वह बूढ़े बादशाह की हुकूमत
के दौरान ग़ुर्बत में पैदा हुआ था तो भी वह जेल
से निकल कर बादशाह बन गया। 15लेकिन
फिर मैं ने देखा कि सूरज तले तमाम लोग
एक और लड़के के पीछे हो लिए जिसे पहले
की जगह तख़्तनशीन होना था। 16उन तमाम
लोगों की इन्तिहा नहीं थी जिन की क़ियादत
वह करता था। तो भी जो बाद में आएँगे वह
उस से ख़ुश नहीं होंगे। यह भी बातिल और
हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

5 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने
क़दमों का ख़याल रख और सुनने के
लिए तय्यार रह। यह अहमक़ों की क़ुर्बानियों
से कहीं बेहतर है, क्यूँकि वह जानते ही नहीं
कि ग़लत काम कर रहे हैं।

2बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल
अल्लाह के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी
न करे। अल्लाह आसमान पर है जबकि तू
ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम
बातें करे। 3क्यूँकि जिस तरह हद से ज़्यादा
मेहनत-मशक़्क़त से ख़्वाब आने लगते हैं उसी
तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाक़त
ज़ाहिर होती है।

4अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो
उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से
ख़ुश नहीं होता, चुनाँचे अपनी मन्नत पूरी कर।
5मन्नत न मानना मन्नत मान कर उसे पूरा न
करने से बेहतर है।

6अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे
गुनाह में फंसाए, और अल्लाह के पैग़म्बर के
सामने न कह, "मुझ से ग़ैरइरादी ग़लती हुई
है।" क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से
नाराज़ हो कर तेरी मेहनत का काम तबाह
करे?

7जहाँ बहुत ख़्वाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ुज़ूल
बातें और बेशुमार अल्फ़ाज़ होते हैं। चुनाँचे
अल्लाह का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का ज़ुल्म

8क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो
ग़रीबों पर ज़ुल्म करते, उन का हक़ मारते और
उन्हें इन्साफ़ से महरूम रखते हैं? ताज्जुब
न कर, क्यूँकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे
की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद
मुलाज़िम मुक़र्रर होते हैं। 9चुनाँचे मुल्क के
लिए हर लिहाज़ से फ़ाइदा इस में है कि ऐसा
बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी
की फ़िक्र करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

10जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुत्मइन नहीं
होगा, ख़्वाह उस के पास कितने ही पैसे क्यूँ
न हों। जो ज़रदोसत हो वह कभी आसूदा नहीं
होगा, ख़्वाह उस के पास कितनी ही दौलत
क्यूँ न हो। यह भी बातिल ही है। 11जितना
माल में इज़ाफ़ा हो उतना ही उन की तादाद
बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उस के मालिक
को उस का क्या फ़ाइदा है सिवाए इस के कि
वह उसे देख देख कर मज़ा ले? 12काम-काज
करने वाले की नींद मीठी होती है, ख़्वाह उस ने
कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर
की दौलत उसे सोने नहीं देती।

13मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात
नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए

मह्फ़ूज़ रखी वह उस के लिए नुक़्सान का
बाइस बन गई। 14क्यूँकि जब यह दौलत किसी
मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी
के हाँ बेटा पैदा हुआ तो उस के हाथ में कुछ
नहीं था। 15माँ के पेट से निकलते वक़्त वह
नंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी
जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं
होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।
16यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह
इन्सान आया उसी तरह कूच करके चला भी
जाता है। उसे क्या फ़ाइदा हुआ है कि उस
ने हवा के लिए मेहनत-मशक़्क़त की हो?
17जीते जी वह हर दिन तारीकी में खाना खाते
हुए गुज़ारता, ज़िन्दगी भर वह बड़ी रंजीदगी,
बीमारी और ग़ुस्से में मुब्तला रहता है।
18तब मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए
अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन
अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए पिए और सूरज
तले अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल का
मज़ा ले, क्यूँकि यही उस के नसीब में है।
19क्यूँकि जब अल्लाह किसी शख़्स को माल-
ओ-मता अता करके उसे इस क़ाबिल बनाए
कि उस का मज़ा ले सके, अपना नसीब क़बूल
कर सके और मेहनत-मशक़्क़त के साथ साथ
ख़ुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख़्शिश
है। 20ऐसे शख़्स को ज़िन्दगी के दिनों पर ग़ौर-
ओ-ख़ौज़ करने का कम ही वक़्त मिलता है,
क्यूँकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिला कर
मसरूफ़ रखता है।

6 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र
आई जो इन्सान को अपने बोझ तले
दबाए रखती है।
2अल्लाह किसी आदमी को माल-ओ-मता
और इज़्ज़त अता करता है। ग़रज़ उस के पास
सब कुछ है जो उस का दिल चाहे। लेकिन
अल्लाह उसे इन चीज़ों से लुत्फ़ उठाने नहीं
देता बल्कि कोई अजनबी उस का मज़ा लेता
है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत है। 3हो
सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा
हों और वह उम्ररसीदा भी हो जाए, लेकिन
ख़्वाह वह कितना बूढ़ा क्यूँ न हो जाए, अगर
अपनी ख़ुशहाली का मज़ा न ले सके और
आख़िरकार सहीह रुसूमात के साथ दफ़नाया
न जाए तो इस का क्या फ़ाइदा? मैं कहता हूँ
कि उस की निस्बत माँ के पेट में ज़ाए हो गए
बच्चे का हाल बेहतर है। 4बेशक ऐसे बच्चे का
आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच
करके चला जाता बल्कि उस का नाम तक
अंधेरे में छुपा रहता है। 5लेकिन गो उस ने न
कभी सूरज देखा, न उसे कभी मालूम हुआ
कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे मज़कूरा आदमी
से कहीं ज़्यादा आराम-ओ-सुकून हासिल है।
6और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता रहे,
लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुत्फ़अन्दोज़ न
हो सके तो क्या फ़ाइदा है? सब को तो एक
ही जगह जाना है।
7इन्सान की तमाम मेहनत-मशक़्क़त का
यह मक़्सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस
की भूक कभी नहीं मिटती। 8दानिशमन्द को
क्या हासिल है जिस के बाइस वह अहमक़
से बरतर है? इस का क्या फ़ाइदा है कि
ग़रीब आदमी ज़िन्दों के साथ मुनासिब सुलूक
करने का फ़न सीख ले? 9दूरदराज़ चीज़ों के
आरज़ूमन्द रहने की निस्बत बेहतर यह है कि
इन्सान उन चीज़ों से लुत्फ़ उठाए जो आँखों
के सामने ही हैं। यह भी बातिल और हवा को
पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता

10जो कुछ भी पेश आता है उस का नाम
पहले ही रखा गया है, जो भी इन्सान वुजूद
में आता है वह पहले ही मालूम था। कोई
भी इन्सान उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता
जो उस से ताक़तवर है। 11क्यूँकि जितनी भी
बातें इन्सान करे उतना ही ज़्यादा मालूम होगा
कि बातिल हैं। इन्सान के लिए इस का क्या
फ़ाइदा?

12किस को मालूम है कि उन थोड़े और
बेकार दिनों के दौरान जो साय की तरह गुज़र
जाते हैं इन्सान के लिए क्या कुछ फ़ाइदामन्द
है? कौन उसे बता सकता है कि उस के चले
जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश आएगा?

अच्छा क्या है?

7 अच्छा नाम ख़ुश्बूदार तेल से और मौत
का दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।
2ज़ियाफ़त करने वालों के घर में जाने की
निस्बत मातम करने वालों के घर में जाना
बेहतर है, क्यूँकि हर इन्सान का अन्जाम मौत
ही है। जो ज़िन्दा हैं वह इस बात पर ख़ूब ध्यान
दें। 3दुख हंसी से बेहतर है, उतरा हुआ चेहरा
दिल की बेहतरी का बाइस है। 4दानिशमन्द
का दिल मातम करने वालों के घर में ठहरता
जबकि अहमक़ का दिल ऐश-ओ-इश्रत करने
वालों के घर में टिक जाता है।
5अहमक़ों के गीत सुनने की निस्बत
दानिशमन्द की झिड़कियों पर ध्यान देना
बेहतर है। 6अहमक़ के क़हक़हे देगची तले
चटख़ने वाले काँटों की आग की मानिन्द हैं।
यह भी बातिल ही है।
7नारवा नफ़ा दानिशमन्द को अहमक़ बना
देता, रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।
8किसी मुआमले का अन्जाम उस की
इब्तिदा से बेहतर है, सब्र करना मग़रूर होने
से बेहतर है।
9ग़ुस्सा करने में जल्दी न कर, क्यूँकि ग़ुस्सा
अहमक़ों की गोद में ही आराम करता है।
10यह न पूछ कि आज की निस्बत पुराना
ज़माना बेहतर क्यूँ था, क्यूँकि यह हिक्मत की
बात नहीं।
11अगर हिक्मत के इलावा मीरास में
मिलकियत भी मिल जाए तो यह अच्छी बात
है, यह उन के लिए सूदमन्द है जो सूरज देखते
हैं। 12क्यूँकि हिक्मत पैसों की तरह पनाह देती
है, लेकिन हिक्मत का ख़ास फ़ाइदा यह है कि
वह अपने मालिक की जान बचाए रखती है।
13अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो
कुछ उस ने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा
सकता है?
14ख़ुशी के दिन ख़ुश हो, लेकिन मुसीबत
के दिन ख़याल रख कि अल्लाह ने यह दिन
भी बनाया और वह भी इस लिए कि इन्सान
अपने मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न
कर सके।

इन्तिहापसन्दों से दरेग़ कर

15अपनी अबस ज़िन्दगी के दौरान मैं
ने दो बातें देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़
अपनी रास्तबाज़ी के बावुजूद तबाह हो जाता
जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन अपनी बेदीनी के
बावुजूद उम्ररसीदा हो जाता है। 16न हद से
ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से ज़्यादा
दानिशमन्दी। अपने आप को तबाह करने की
क्या ज़रूरत है? 17न हद से ज़्यादा बेदीनी, न
हद से ज़्यादा हमाक़त दिखा। मुक़र्ररा वक़्त
से पहले मरने की क्या ज़रूरत है? 18अच्छा
है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न
छोड़े। जो अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह दोनों
ख़तरों से बच निकलेगा।
19हिक्मत दानिशमन्द को शहर के दस
हुक्मरानों से ज़्यादा ताक़तवर बना देती है।
20दुनिया में कोई भी इन्सान इतना रास्तबाज़
नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी
गुनाह न करे।
21लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न
हो कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह
तुझ पर करता है। 22क्यूँकि दिल में तू जानता
है कि तू ने ख़ुद मुतअद्दिद बार दूसरों पर लानत
भेजी है।

कौन दानिशमन्द है?

23हिक्मत के ज़रीए मैं ने इन तमाम
बातों की जाँच-पड़ताल की। मैं बोला, "मैं
दानिशमन्द बनना चाहता हूँ," लेकिन हिक्मत
मुझ से दूर रही। 24जो कुछ मौजूद है वह दूर

और निहायत गहरा है। कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? 25चुनाँचे मैं रुख़ बदल कर पूरे ध्यान से इस की तहक़ीक़-ओ-तफ़्तीश करने लगा कि हिक्मत और मुख़्तलिफ़ बातों के सहीह नताइज क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाक़त और बेहुदगी की दीवानगी मालूम करना चाहता था।

26मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तल्ख़ वह औरत है जो फंदा है, जिस का दिल जाल और हाथ ज़न्जीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मन्ज़ूर हो वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उस के जाल में उलझ जाएगा।

27वाइज़ फ़रमाता है, "यह सब कुछ मुझे मालूम हुआ जब मैं ने मुख़्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ मुन्सलिक कीं ताकि सहीह नताइज तक पहुँचूँ। 28लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हज़ार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं।[a]

29मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह ने इन्सानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई क़िस्म की चालाकियाँ ढूँड निकालते हैं।"

8 कौन दानिशमन्द की मानिन्द है? कौन बातों की सहीह तश्रीह करने का इल्म रखता है? हिक्मत इन्सान का चेहरा रौशन और उस के मुँह का सख़्त अन्दाज़ नर्म कर देती है।

हुक्मरान का इख़तियार

2मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्यूँकि तू ने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया है। 3बादशाह के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे मुआमले में मुब्तला न हो जा, क्यूँकि उसी की मर्ज़ी चलती है। 4बादशाह के फ़रमान के पीछे उस का इख़तियार है, इस लिए कौन उस से पूछे, "तू क्या कर रहा है?" 5जो उस के हुक्म पर चले उस का किसी बुरे मुआमले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्यूँकि दानिशमन्द दिल मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह जानता है।

6क्यूँकि हर मुआमले के लिए मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इन्सान को दबाए रखती है, 7क्यूँकि वह नहीं जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता सकता है। 8कोई भी इन्सान हवा को बन्द रखने के क़ाबिल नहीं।[b] इसी तरह किसी को भी अपनी मौत का दिन मुक़र्रर करने का इख़तियार नहीं। यह उतना यक़ीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिग़ नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।

9मैं ने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती हैं, जहाँ इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़्सान पहुँचाने का इख़तियार रखता है।

दुनिया में नाइन्साफ़ी

10फिर मैं ने देखा कि बेदीनों को इज़्ज़त के साथ दफ़नाया गया। यह लोग मक़्दिस के पास आते जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उन की याद शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।

11मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इस लिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मन्सूबों से भर जाते हैं। 12गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो भी उम्ररसीदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की ख़ैर होगी, उन की जो अल्लाह के चेहरे से डरते हैं। 13बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्यूँकि वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िन्दगी के दिन ज़्यादा नहीं बल्कि साय जैसे आरिज़ी होंगे। 14तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है,

[a] 'दियानतदार' इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

[b] एक और मुमकिना तर्जुमा : कोई भी इन्सान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह अज्र मिलता है जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए। यह देख कर मैं बोला, "यह भी बातिल ही है।"

15चुनाँचे मैं ने ख़ुशी की तारीफ़ की, क्यूँकि सूरज तले इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए पिए और ख़ुश रहे। फिर मेहनत-मशक़्क़त करते वक़्त ख़ुशी उतने ही दिन उस के साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उस के लिए मुक़र्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाक़ाबिल-ए-फ़हम है

16मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिक्मत जान लूँ और ज़मीन पर इन्सान की मेहनतों का मुआइना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन रात नींद नहीं आती। 17तब मैं ने अल्लाह का सारा काम देख कर जान लिया कि इन्सान उस तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है। ख़्वाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यूँ न करे तो भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमन्द दावा करे, "मुझे इस की पूरी समझ आई है," लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।

9 इन तमाम बातों पर मैं ने दिल से ग़ौर किया। इन के मुआइने के बाद मैं ने नतीजा निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमन्द और जो कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। ख़्वाह मुहब्बत हो ख़्वाह नफ़रत, इस की भी समझ इन्सान को नहीं आती, दोनों की जड़ें उस से पहले माज़ी में हैं। 2सब के नसीब में एक ही अन्जाम है, रास्तबाज़ और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक के, क़ुर्बानियाँ पेश करने वाले के और उस के जो कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शख़्स और गुनाहगार का एक ही अन्जाम है, हलफ़ उठाने वाले और इस से डर कर गुरेज़ करने वाले की एक ही मन्ज़िल है।

3सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर एक के नसीब में एक ही अन्जाम है। इन्सान का मुलाहज़ा कर। उस का दिल बुराई से भरा रहता बल्कि उम्र भर उस के दिल में बेहुदगी रहती है। लेकिन आख़िरकार उसे मुर्दों में ही जा मिलना है।

4जो अब तक ज़िन्दों में शरीक है उसे उम्मीद है। क्यूँकि ज़िन्दा कुत्ते का हाल मुर्दा शेर से बेहतर है। 5कम अज़ कम जो ज़िन्दा हैं वह जानते हैं कि हम मरेंगे। लेकिन मुर्दे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद कोई अज्र नहीं मिलना है। उन की यादें भी मिट जाती हैं। 6उन की मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब कुछ बड़ी देर से जाती रही है। अब वह कभी भी उन कामों में हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते हैं।

ज़िन्दगी के मज़े ले!

7चुनाँचे जा कर अपना खाना ख़ुशी के साथ खा, अपनी मै ज़िन्दादिली से पी, क्यूँकि अल्लाह काफ़ी देर से तेरे कामों से ख़ुश है। 8तेरे कपड़े हर वक़्त सफ़ेद[a] हों, तेरा सर तेल से महरूम न रहे। 9अपने जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा है ज़िन्दगी के मज़े लेता रह। सूरज तले की बातिल ज़िन्दगी के जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए हैं उन्हें इसी तरह गुज़ार! क्यूँकि ज़िन्दगी में और सूरज तले तेरी मेहनत-मशक़्क़त में यही कुछ तेरे नसीब में है। 10जिस काम को भी हाथ लगाए उसे पूरे जोश-ओ-ख़ुरोश से कर, क्यूँकि पाताल में जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है, न मन्सूबा, न इल्म और न हिक्मत।

[a] यानी ख़ुशी मनाने के कपड़े।

दुनिया में हिक्मत की क़दर नहीं की जाती

11मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक़ीनी
बात नहीं कि मुक़ाबले में सब से तेज़ दौड़ने
वाला जीत जाए, कि जंग में पहलवान फ़त्ह
पाए, कि दानिशमन्द को ख़ुराक हासिल हो,
कि समझदार को दौलत मिले या कि आलिम
मन्ज़ूरी पाए। नहीं, सब कुछ मौक़े और
इत्तिफ़ाक़ पर मुन्हसिर होता है। 12नीज़, कोई
भी इन्सान नहीं जानता कि मुसीबत का वक़्त
कब उस पर आएगा। जिस तरह मछलियाँ
ज़ालिम जाल में उलझ जाती या परिन्दे फंदे
में फंस जाते हैं उसी तरह इन्सान मुसीबत में
फंस जाता है। मुसीबत अचानक ही उस पर
आ जाती है।

13सूरज तले मैं ने हिक्मत की एक और
मिसाल देखी जो मुझे अहम लगी।

14कहीं कोई छोटा शहर था जिस में थोड़े
से अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर
बादशाह उस से लड़ने आया। उस ने उस
का मुहासरा किया और इस मक़्सद से उस
के इर्दगिर्द बड़े बड़े बुर्ज खड़े किए। 15शहर
में एक आदमी रहता था जो दानिशमन्द
अलबत्ता ग़रीब था। इस शख़्स ने अपनी
हिक्मत से शहर को बचा लिया। लेकिन बाद
में किसी ने भी ग़रीब को याद न किया। 16यह
देख कर मैं बोला, "हिक्मत ताक़त से बेहतर
है," लेकिन ग़रीब की हिक्मत हक़ीर जानी
जाती है। कोई भी उस की बातों पर ध्यान
नहीं देता। 17दानिशमन्द की जो बातें आराम
से सुनी जाएँ वह अहमक़ों के दरमियान रहने
वाले हुक्मरान के ज़ोरदार एलानात से कहीं
बेहतर हैं। 18हिक्मत जंग के हथियारों से
बेहतर है, लेकिन एक ही गुनाहगार बहुत कुछ
जो अच्छा है तबाह करता है।

मुख़्तलिफ़ हिदायात

10 मरी हुई मक्खियाँ ख़ुश्बूदार तेल
ख़राब करती हैं, और हिक्मत और
इज़्ज़त की निस्बत थोड़ी सी हमाक़त का
ज़्यादा असर होता है।

2दानिशमन्द का दिल सहीह राह चुन लेता
है जबकि अहमक़ का दिल ग़लत राह पर आ
जाता है। 3रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक़
समझ से ख़ाली है, जिस से भी मिले उसे
बताता है कि वह बेवुक़ूफ़ है।[a]

4अगर हुक्मरान तुझ से नाराज़ हो जाए
तो अपनी जगह मत छोड़, क्यूँकि पुरसुकून
रवय्या बड़ी बड़ी ग़लतियाँ दूर कर देता है।

5मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र
आई जो अक्सर हुक्मरानों से सरज़द होती
है। 6अहमक़ को बड़े उह्दों पर फ़ाइज़ किया
जाता है जबकि अमीर छोटे उह्दों पर ही रहते
हैं। 7मैं ने ग़ुलामों को घोड़े पर सवार और
हुक्मरानों को ग़ुलामों की तरह पैदल चलते
देखा है।

8जो गढ़ा खोदे वह ख़ुद उस में गिर सकता
है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि साँप उसे
डसे। 9जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग
सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़ख़्मी हो
जाने के ख़तरे में है।

10अगर कुल्हाड़ी कुन्द हो और कोई उसे
तेज़ न करे तो ज़्यादा ताक़त दरकार है।
लिहाज़ा हिक्मत को सहीह तौर से अमल में
ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

11अगर इस से पहले कि सपेरा साँप पर
क़ाबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने
का क्या फ़ाइदा?

12दानिशमन्द अपने मुँह की बातों से दूसरों
की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन
अहमक़ के अपने ही होंट उसे हड़प कर लेते
हैं। 13उस का बयान अहमक़ाना बातों से शुरू
और ख़तरनाक बेवुक़ूफ़ियों से ख़त्म होता है।

[a]इब्रानी ज़ूमानी है। दूसरा मतलब 'कि मैं बेवुक़ूफ़ हूँ' हो सकता है।

14ऐसा शख़्स बातें करने से बाज़ नहीं आता,
गो इन्सान मुस्तक़बिल के बारे में कुछ नहीं
जानता। कौन उसे बता सकता है कि उस के
बाद क्या कुछ होगा? 15अहमक़ का काम उसे
थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं
जानता।

16उस मुल्क पर अफ़्सोस जिस का
बादशाह बच्चा है और जिस के बुज़ुर्ग सुब्ह
ही ज़ियाफ़त करने लगते हैं। 17मुबारक है वह
मुल्क जिस का बादशाह शरीफ़ है और जिस
के बुज़ुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब
वक़्त पर और नज़्म-ओ-ज़ब्त के साथ खाना
खाते हैं।

18जो सुस्त है उस के घर के शहतीर झुकने
लगते हैं, जिस के हाथ ढीले हैं उस की छत से
पानी टपकने लगता है।

19ज़ियाफ़त करने से हंसी-ख़ुशी और मै
पीने से ज़िन्दादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा
ही सब कुछ मुहय्या करता है।

20ख़यालों में भी बादशाह पर लानत न कर,
अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न
भेज, ऐसा न हो कि कोई परिन्दा तेरे अल्फ़ाज़
ले कर उस तक पहुँचाए।

मेहनत का फ़ाइदा

11 अपनी रोटी पानी पर फैंक कर
जाने दे तो मुतअद्दिद दिनों के
बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। 2अपनी
मिलकियत सात बल्कि आठ मुख़्तलिफ़
कामों में लगा दे, क्यूँकि तुझे क्या मालूम कि
मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर
बारिश ज़रूर होगी। दरख़्त जुनूब या शिमाल
की तरफ़ गिर जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

4जो हर वक़्त हवा का रुख़ देखता रहे वह
कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता
रहे वह कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

5जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम
हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह
तश्कील पाता है उसी तरह तू अल्लाह का
काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल
में लाता है।

6सुब्ह के वक़्त अपना बीज बो और शाम
को भी काम में लगा रह, क्यूँकि क्या मालूम
कि किस काम में कामयाबी होगी, इस में, उस
में या दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फ़अन्दोज़ हो

7रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों
के लिए कितना ख़ुशगवार है। 8जितने भी
साल इन्सान ज़िन्दा रहे उतने साल वह
ख़ुशबाश रहे। साथ साथ उसे याद रहे कि
तारीक दिन भी आने वाले हैं, और कि उन
की बड़ी तादाद होगी। जो कुछ आने वाला है
वह बातिल ही है।

9ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है ख़ुश रह
और जवानी के मज़े लेता रह। जो कुछ तेरा
दिल चाहे और तेरी आँखों को पसन्द आए वह
कर, लेकिन याद रहे कि जो कुछ भी तू करे
उस का जवाब अल्लाह तुझ से तलब करेगा।
10चुनाँचे अपने दिल से रंजीदगी और अपने
जिस्म से दुख-दर्द दूर रख, क्यूँकि जवानी और
काले बाल दम भर के ही हैं।

12 जवानी में ही अपने ख़ालिक़ को
याद रख, इस से पहले कि मुसीबत
के दिन आएँ, वह साल क़रीब आएँ जिन के
बारे में तू कहेगा, "यह मुझे पसन्द नहीं।"
2उसे याद रख इस से पहले कि रौशनी तेरे
लिए ख़त्म हो जाए, सूरज, चाँद और सितारे
अंधेरे हो जाएँ और बारिश के बाद बादल
लौट आएँ। 3उसे याद रख, इस से पहले
कि घर के पहरेदार थरथराने लगें, ताक़तवर
आदमी कुबड़े हो जाएँ, गन्दुम पीसने वाली
नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम करना
छोड़ दें और खिड़कियों में से देखने वाली
ख़वातीन धुन्दला जाएँ। 4उसे याद रख, इस से
पहले कि गली में पहुँचाने वाला दरवाज़ा बन्द
हो जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता

हो जाए। जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू
जाग उठेगा, लेकिन तमाम गीतों की आवाज़
दबी सी सुनाई देगी। 5उसे याद रख, इस से
पहले कि तू ऊँची जगहों और गलियों के
ख़तरों से डरने लगे। गो बादाम का फूल खिल
जाए, टिड्डी बोझ तले दब जाए और करीर का
फूल फूट निकले, लेकिन तू कूच करके अपने
अबदी घर में चला जाएगा, और मातम करने
वाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

6अल्लाह को याद रख, इस से पहले कि
चाँदी का रस्सा टूट जाए, सोने का बर्तन टुकड़े
टुकड़े हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश
हो जाए और कुएँ का पानी निकालने वाला
पहिया टूट कर उस में गिर जाए। 7तब तेरी
ख़ाक दुबारा उस ख़ाक में मिल जाएगी जिस
से निकल आई और तेरी रूह उस ख़ुदा के
पास लौट जाएगी जिस ने उसे बख़्शा था।

8वाइज़ फ़रमाता है, "बातिल ही बातिल!
सब कुछ बातिल ही बातिल है!"

ख़ातमा

9दानिशमन्द होने के इलावा वाइज़ क़ौम
को इल्म-ओ-इर्फ़ान की तालीम देता रहा।
उस ने मुतअद्दिद अम्साल को सहीह वज़न
दे कर उन की जाँच-पड़ताल की और उन्हें
तरतीबवार जमा किया। 10वाइज़ की कोशिश
थी कि मुनासिब अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करे और
दियानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

11दानिशमन्दों के अल्फ़ाज़ आँकुस की
मानिन्द हैं, तरतीब से जमाशुदा अम्साल
लकड़ी में मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी
हैं। यह एक ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

12मेरे बेटे, इस के इलावा ख़बरदार रह।
किताबें लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म
नहीं हो जाएगा, और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी
से जिस्म थक जाता है।

13आओ, इख़तिताम पर हम तमाम तालीम
के ख़ुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान
और उस के अह्काम की पैरवी कर। यह हर
इन्सान का फ़र्ज़ है। 14क्यूँकि अल्लाह हर काम
को ख़्वाह वह छुपा ही हो, ख़्वाह बुरा या भला
हो अदालत में लाएगा।

ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 सुलैमान की ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात।
2 वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्यूँकि
तेरी मुहब्बत मै से कहीं ज़्यादा राहतबख़्श है।

3 तेरी इत्र की ख़ुश्बू कितनी मनमोहन है,
तेरा नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है।
इस लिए कुंवारियाँ तुझे प्यार करती हैं।

4 आ, मुझे खैंच कर अपने साथ ले जा! आ,
हम दौड़ कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने
कमरों में ले जाए, और हम बाग़ बाग़ हो कर
तेरी ख़ुशी मनाएँ। हम मै की निस्बत तेरे प्यार
की ज़्यादा तारीफ़ करें। मुनासिब है कि लोग
तुझ से मुहब्बत करें।

मुझे हक़ीर न जानो

5 ऐ यरूशलम की बेटियो, मैं सियाहफ़ाम
लेकिन मनमोहन हूँ, मैं क़ीदार के ख़ैमों जैसी,
सुलैमान के ख़ैमों के पर्दों जैसी ख़ूबसूरत
हूँ। 6 इस लिए मुझे हक़ीर न जानो कि मैं
सियाहफ़ाम हूँ, कि मेरी जिल्द धूप से झुलस
गई है। मेरे सगे भाई मुझ से नाराज़ थे, इस
लिए उन्हों ने मुझे अंगूर के बाग़ों की देख-भाल
करने की ज़िम्मादारी दी, अंगूर के अपने ज़ाती
बाग़ की देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7 ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता
कि भेड़-बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें
दोपहर के वक़्त कहाँ आराम करने बिठाता
है? मैं क्यूँ निक़ाबपोश की तरह तेरे साथियों
के रेवड़ों के पास ठहरी रहूँ?

8 क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सब
से ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकल कर खोज
लगा कि मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली
गई हैं, अपने मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों
के पास चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

9 मेरी मह्बूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तश्बीह
दूँ? तू फ़िरऔन का शानदार रथ खैंचने वाली
घोड़ी है!
10 तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी
गर्दन मोती के गुलूबन्द से कितनी दिलफ़रेब
लगती है।
11 हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे
जिस में चाँदी के मोती लगे होंगे।

12 जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक
था मेरे बालछड़ की ख़ुश्बू चारों तरफ़ फैलती
रही।

13मेरा मह्बूब गोया मुर की डिबिया है, जो
मेरी छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।
14मेरा मह्बूब मेरे लिए मेहंदी के फूलों का
गुच्छा है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बाग़ों से
लाया गया है।

15मेरी मह्बूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत है,
कितनी हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16मेरे मह्बूब, तू कितना ख़ूबसूरत है,
कितना दिलरुबा! सायादार हरियाली हमारा
बिस्तर 17और देवदार के दरख़्त हमारे घर के
शहतीर हैं। जूनीपर के दरख़्त तख़्तों का काम
देते हैं।

तू लासानी है

2 मैं मैदान-ए-शारून का फूल और
वादियों की सोसन हूँ।

2लड़कियों के दरमियान मेरी मह्बूबा
काँटेदार पौदों में सोसन की मानिन्द है।

3जवान आदमियों में मेरा मह्बूब जंगल में
सेब के दरख़्त की मानिन्द है। मैं उस के साय
में बैठने की कितनी आरज़ूमन्द हूँ, उस का
फल मुझे कितना मीठा लगता है।

मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ

4वह मुझे मैकदे[a] में लाया है, मेरे ऊपर उस
का झंडा मुहब्बत है।
5किशमिश की टिक्कियों से मुझे तर-ओ-
ताज़ा करो, सेबों से मुझे तक़वियत दो, क्यूँकि
मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ।
6उस का बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता
और दहना बाज़ू मुझे गले लगाता है।
7ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और
खुले मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ
कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे
न जगाओगी, न बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8सुनो, मेरा मह्बूब आ रहा है। वह देखो,
वह पहाड़ों पर फलाँगता और टीलों पर से
उछलता कूदता आ रहा है।
9मेरा मह्बूब ग़ज़ाल या जवान हिरन की
मानिन्द है। अब वह हमारे घर की दीवार के
सामने रुक कर खिड़कियों में से झाँक रहा,
जंगले में से तक रहा है।

10वह मुझ से कहता है, "ऐ मेरी ख़ूबसूरत
मह्बूबा, उठ कर मेरे साथ चल!
11देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है,
बारिशें भी ख़त्म हो गई हैं।
12ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत
का वक़्त आ गया है, कबूतरों की ग़ूँ ग़ूँ हमारे
मुल्क में सुनाई देती है।
13अन्जीर के दरख़्तों पर पहली फ़सल का
फल पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल
ख़ुश्बू फैला रहे हैं। चुनाँचे आ मेरी हसीन
मह्बूबा, उठ कर आ जा!
14ऐ मेरी कबूतरी, चटान की दराड़ों में छुपी
न रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि
मुझे अपनी शक्ल दिखा, मुझे अपनी आवाज़
सुनने दे, क्यूँकि तेरी आवाज़ शीरीं, तेरी शक्ल
ख़ूबसूरत है।"

15हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन
छोटी लोमड़ियों को जो अंगूर के बाग़ों को
तबाह करती हैं। क्यूँकि हमारी बेलों से फूल
फूट निकले हैं।

16मेरा मह्बूब मेरा ही है, और मैं उसी की
हूँ, उसी की जो सोसनों में चरता है।

[a]मैकदे से मुराद ग़ालिबन महल का वह हिस्सा है
जिस में बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

17ऐ मेरे मह्बूब, इस से पहले कि शाम की
हवा चले और साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ
ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह संगलाख़
पहाड़ों का रुख़ कर!

रात को मह्बूब की आर्ज़ू

3 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो
मैं ने उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा
है, मैं ने उसे ढूँडा लेकिन न पाया।
2मैं बोली, "अब मैं उठ कर शहर में घूमती,
उस की गलियों और चौकों में फिर कर उसे
तलाश करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।"
मैं ढूँडती रही लेकिन वह न मिला।
3जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्हों
ने मुझे देखा। मैं ने पूछा, "क्या आप ने उसे
देखा है जो मेरी जान का प्यारा है?"
4आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो
मेरी जान का प्यारा है। मैं ने उसे पकड़ लिया।
अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी
माँ के घर में न ले जाऊँ, उस के कमरे में न
पहुँचाऊँ जिस ने मुझे जन्म दिया था।

5ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और
खुले मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ
कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे
न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह
सीधा हमारे पास चला आ रहा है? उस से
चारों तरफ़ मुर, बख़ूर और ताजिर की तमाम
ख़ुशबूएँ फैल रही हैं।
7यह तो सुलैमान की पालकी है जो इस्राईल
के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।
8सब तलवार से लेस और तजरिबाकार
फ़ौजी हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात
के हौलनाक ख़तरों का सामना करने के लिए
तय्यार कर रखा है।
9सुलैमान बादशाह ने ख़ुद यह पालकी
लुबनान के देवदार की लकड़ी से बनवाई।
10उस ने उस के पाए चाँदी से, पुश्त सोने
से, और निशस्त अर्ग़वानी रंग के कपड़े से
बनवाई। यरूशलम की बेटियों ने बड़े प्यार
से उस का अन्दरूनी हिस्सा मुरस्साकारी से
आरास्ता किया है।

11ऐ सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और
सुलैमान बादशाह को देखो। उस के सर पर
वह ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी
के दिन उस के सर पर पहनाया, उस दिन जब
उस का दिल बाग़ बाग़ हुआ।

तू कितनी हसीन है!

4 मेरी मह्बूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत,
कितनी हसीन है! निक़ाब के पीछे तेरी
आँखों की झलक कबूतरों की मानिन्द है। तेरे
बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती
कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।
2तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई
हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ
है, एक भी गुम नहीं हुआ।
3तेरे होंट क़िर्मिज़ी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह
कितना प्यारा है। निक़ाब के पीछे तेरे गालों की
झलक अनार के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई
देती है।
4तेरी गर्दन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरुबा
है। जिस तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से
पहलवानों की हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह
तेरी गर्दन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।
5तेरी छातियाँ सोसनों में चरने वाले ग़ज़ाल
के जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द हैं।
6इस से पहले कि शाम की हवा चले और
साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के
पहाड़ और बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।
7मेरी मह्बूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझ में
कोई नुक़्स नहीं है।

दुल्हन का जादू

8आ मेरी दुल्हन, लुबनान से मेरे साथ आ!
हम कोह-ए-अमाना की चोटी से, सनीर और
हर्मून की चोटियों से उतरें, शेरों की मान्दों और
चीतों के पहाड़ों से उतरें।

9मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू ने मेरा दिल चुरा
लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से,
अपने गुलूबन्द के एक ही जौहर से तू ने मेरा
दिल चुरा लिया है।

10मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तेरी मुहब्बत
कितनी मनमोहन है! तेरा प्यार मै से कहीं
ज़्यादा पसन्दीदा है। बल्सान की कोई भी
ख़ुश्बू तेरी महक का मुक़ाबला नहीं कर
सकती।

11मेरी दुल्हन, जिस तरह शहद छत्ते से
टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास
टपकती है। दूध और शहद तेरी ज़बान तले
रहते हैं। तेरे कपड़ों की ख़ुश्बू सूँघ कर लुबनान
की ख़ुश्बू याद आती है।

दुल्हन नफ़ीस बाग़ है

12मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू एक बाग़ है
जिस की चारदीवारी किसी और को अन्दर
आने नहीं देती, एक बन्द किया गया चश्मा
जिस पर मुहर लगी है।
13बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर
लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहंदी के पौदे भी
उग रहे हैं।
14बालछड़, ज़ाफ़रान, ख़ुश्बूदार बेद,
दारचीनी, बख़ूर की हर क़िस्म का दरख़्त,
मुर, ऊद और हर क़िस्म का बल्सान बाग़ में
फलता फूलता है।
15तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा
मम्बा जिस का ताज़ा पानी लुबनान से बह कर
आता है।

16ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी
हवा, आ! मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि
वहाँ से चारों तरफ़ बल्सान की ख़ुश्बू फैल
जाए। मेरा मह्बूब अपने बाग़ में आ कर उस
के लज़ीज़ फलों से खाए।

5 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, अब मैं अपने
बाग़ में दाख़िल हो गया हूँ। मैं ने अपना
मुर अपने बल्सान समेत चुन लिया, अपना
छत्ता शहद समेत खा लिया, अपनी मै अपने
दूध समेत पी ली है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ
और पियो, मुहब्बत से सरशार हो जाओ!

रात को मह्बूब की तलाश

2मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा।
सुन! मेरा मह्बूब दस्तक दे रहा है,
"ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा
खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी,
मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी ज़ुल्फ़ें
रात की शबनम से भीग गई हैं।"

3"मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं
किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने
पाँओ धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह
दुबारा मैला करूँ?"

4मेरे मह्बूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख़
में से अन्दर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प
उठा।
5मैं उठी ताकि अपने मह्बूब के लिए
दरवाज़ा खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उंगलियाँ
मुर की ख़ुश्बू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी
खोलने आई।
6मैं ने अपने मह्बूब के लिए दरवाज़ा खोल
दिया, लेकिन वह मुड़ कर चला गया था। मुझे
सख़्त सदमा हुआ। मैं ने उसे तलाश किया
लेकिन न मिला। मैं ने उसे आवाज़ दी, लेकिन
जवाब न मिला।
7जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन से
मेरा वास्ता पड़ा, उन्हों ने मेरी पिटाई करके

मुझे ज़ख़्मी कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी छीन ली।

8ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि अगर मेरा महबूब मिला तो उसे इत्तिला दोगी, मैं मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।

9तू जो औरतों में सब से हसीन है, हमें बता, तेरे महबूब की क्या ख़ासियत है जो दूसरों में नहीं है? तेरा महबूब दूसरों से किस तरह सब्क़त रखता है कि तू हमें ऐसी क़सम खिलाना चाहती है?

10मेरे महबूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है। हज़ारों के साथ उस का मुक़ाबला करो तो उस का आला किरदार नुमायाँ तौर पर नज़र आएगा।

11उस का सर ख़ालिस सोने का है, उस के बाल खजूर के फूलदार गुच्छों[a] की मानिन्द और कव्वे की तरह सियाह हैं।

12उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों की मानिन्द हैं, जो दूध में नहलाए और कसत के पानी के पास बैठे हैं।

13उस के गाल बल्सान की क्यारी की मानिन्द, उस के होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे हैं।

14उस के बाज़ू सोने की सलाखें हैं जिन में पुखराज[b] जड़े हुए हैं, उस का जिस्म हाथीदाँत का शाहकार है जिस में संग-ए-लाजवर्द[c] के पत्थर लगे हैं।

15उस की रानें मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस सोने के पाइयों पर लगे हैं। उस का हुल्या लुबनान और देवदार के दरख़्तों जैसा उम्दा है।

16उस का मुँह मिठास ही है, ग़रज़ वह हर लिहाज़ से पसन्दीदा है।

ऐ यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, मेरा दोस्त।

6 ऐ तू जो औरतों में सब से ख़ूबसूरत है, तेरा महबूब किधर चला गया है? उस ने कौन सी सिम्त इख़तियार की ताकि हम तेरे साथ उस का खोज लगाएँ?

2मेरा महबूब यहाँ से उतर कर अपने बाग़ में चला गया है, वह बल्सान की क्यारियों के पास गया है ताकि बाग़ों में चरे और सोसन के फूल चुने।

3मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है, वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

4मेरी महबूबा, तू तिर्ज़ा शहर जैसी हसीन, यरूशलम जैसी ख़ूबसूरत और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है।

5अपनी नज़रों को मुझ से हटा ले, क्यूँकि वह मुझ में उलझन पैदा कर रही हैं।

तेरे बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।

6तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

7निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।

8गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ और बेशुमार कुंवारियाँ हों 9लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ की वाहिद बेटी है, जिस ने उसे जन्म दिया उस की पाक लाडली है। बेटियों ने

[a] इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।
[b] topas
[c] lapis lazuli

उसे देख कर उसे मुबारक कहा, रानियों और दाश्ताओं ने उस की तारीफ़ की,

10“यह कौन है जो तुलू-ए-सुब्ह की
तरह चमक उठी, जो चाँद जैसी ख़ूबसूरत,
आफ़्ताब जैसी पाक और अलमबरदार दस्तों
जैसी रोबदार है?”

मह्बूबा के लिए आर्ज़ू

11मैं अख़रोट के बाग़ में उतर आया ताकि
वादी में फूटने वाले पौदों का मुआइना करूँ। मैं
यह भी मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर
की कोंपलें निकल आई या अनार के फूल लग
गए हैं।

12लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ,
मेरी आर्ज़ू ने मुझे मेरी शरीफ़ क़ौम के रथों के
पास पहुँचाया।

मह्बूबा की दिलकशी

13ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़ कर
लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यूँ देखना चाहती हो?
हम लश्करगाह का लोकनाच देखना चाहती
हैं!

7 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का
तेरा अन्दाज़ कितना मनमोहन है! तेरी
ख़ुशवज़ा रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरात की
मानिन्द हैं।

2तेरी नाफ़ प्याला है जो मै से कभी नहीं
महरूम रहती। तेरा जिस्म गन्दुम का ढेर है
जिस का इहाता सोसन के फूलों से किया गया
है।

3तेरी छातियाँ ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की
मानिन्द हैं।

4तेरी गर्दन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें
हस्बोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम
के दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनार-ए-
लुबनान की मानिन्द है जिस का मुँह दमिश्क़
की तरफ़ है।

5तेरा सर कोह-ए-कर्मिल की मानिन्द है,
तेरे खुले बाल अर्ग़वान की तरह क़ीमती और
दिलकश हैं। बादशाह तेरी ज़ुल्फ़ों की ज़न्जीरों
में जकड़ा रहता है।

मह्बूबा के लिए आर्ज़ू

6ऐ ख़ुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी
हसीन है, कितनी दिलरुबा!

7तेरा क़द-ओ-क़ामत खजूर के दरख़्त सा,
तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।

8मैं बोला, “मैं खजूर के दरख़्त पर चढ़ कर
उस के फूलदार गुच्छों[a] पर हाथ लगाऊँगा।”
तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिन्द हों,
तेरे साँस की ख़ुश्बू सेबों की ख़ुश्बू जैसी हो।

9तेरा मुँह बेहतरीन मै हो, ऐसी मै जो सीधी
मेरे मह्बूब के मुँह में जा कर नर्मी से होंटों और
दाँतों में से गुज़र जाए।

मह्बूब के लिए आर्ज़ू

10मैं अपने मह्बूब की ही हूँ, और वह मुझे
चाहता है।

11आ, मेरे मह्बूब, हम शहर से निकल कर
देहात में रात गुज़ारें।

12आ, हम सुब्ह-सवेरे अंगूर के बाग़ों में जा
कर मालूम करें कि क्या बेलों से कोंपलें निकल
आई हैं और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के
दरख़्त खिल रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी
मुहब्बत का इज़हार करूँगी।

13मर्दुमगयाह[b] की ख़ुश्बू फैल रही, और
हमारे दरवाज़े पर हर क़िस्म का लज़ीज़ फल
है, नई फ़सल का भी और गुज़री का भी।
क्यूँकि मैं ने यह चीज़ें तेरे लिए, अपने मह्बूब
के लिए मह्फ़ूज़ रखी हैं।

---

[a] इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।

[b] एक पौदा जिस के बारे में सोचा जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

काश हम अकेले हों

8 काश तू मेरा सगा भाई[a] होता, तब
अगर बाहर तुझ से मुलाक़ात होती तो
मैं तुझे बोसा देती और कोई न होता जो यह
देख कर मुझे हक़ीर जानता।
2मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के
घर में ले जाती, उस के घर में जिस ने मुझे
तालीम दी। वहाँ मैं तुझे मसालेदार मै और
अपने अनारों का रस पिलाती।

3उस का बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता
और दायाँ बाज़ू मुझे गले लगाता है।
4ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि
जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न
जगाओगी, न बेदार करोगी।

मह्बूब की आख़िरी बात

5यह कौन है जो अपने मह्बूब का सहारा
ले कर रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख़्त तले मैं ने तुझे जगा दिया,
वहाँ जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ
उस ने दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो कर तुझे पैदा
किया।

6मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने
बाज़ू पर लगाए रख! क्यूँकि मुहब्बत मौत
जैसी ताक़तवर, और उस की सरगर्मी पाताल
जैसी बेलचक है। वह दहकती आग, रब का
भड़कता शोला है।
7पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा
नहीं सकता, बड़े दरया भी उसे बहा कर ले
जा नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को
पाने के लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश
भी करे तो भी उसे जवाब में हक़ीर ही जाना
जाएगा।

मह्बूबा की आख़िरी बात

8हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम
अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उस
से रिश्ता बांधने आए?
9अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी
का क़िलाबन्द इन्तिज़ाम बनाएँगे। अगर वह
दरवाज़ा हो तो हम उसे देवदार के तख़्ते से
मह्फ़ूज़ रखेंगे।

10मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत
मीनार हैं। अब मैं उस की नज़र में ऐसी ख़ातून
बन गई हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलैमान से ज़्यादा दौलतमन्द

11बाल-हामून में सुलैमान का अंगूर का बाग़
था। इस बाग़ को उस ने पहरेदारों के हवाले
कर दिया। हर एक को उस की फ़सल के लिए
चाँदी के हज़ार सिक्के देने थे।

12लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे
सामने ही मौजूद है। ऐ सुलैमान, चाँदी के
हज़ार सिक्के तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के
उन के लिए जो उस की फ़सल की पहरादारी
करते हैं।

मुझे ही पुकार

13ऐ बाग़ में बसने वाली, मेरे साथी तेरी
आवाज़ पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी
आवाज़ सुनने दे।

14ऐ मेरे मह्बूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की
तरह बल्सान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने
दूध पिलाया होता।